YUKTI®

YUKTI®

NCERT, SCERT एवं उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा
परिषद्, प्रयागराज के दिशा निर्देशों के अनुसार

उत्तर प्रदेश अध्यापक पात्रता परीक्षा-2019

UPTET-2019

UTTAR PRADESH TEACHER ELIGIBILITY TEST

हिन्दी

HINDI

PAPER - I & II

अब तक के

- साल्वड पेपर्स
- पाठ्यक्रम पर आधारित अध्यायवार थ्योरी व प्रश्न
- गत वर्षों की UPTET परीक्षाओं में आये हुए अध्यायवार प्रश्न
- CTET व अन्य राज्यों की परीक्षाओं में आये हुए अध्यायवार प्रश्न

@UPSC_THOUGHT

Buy directly from
www.yuktipublication.com
/yuktibooks
/yuktibooks



YUKTI®

NCERT, SCERT एवं उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा
परिषद्, प्रयागराज के दिशा निर्देशों के अनुसार

उत्तर प्रदेश अध्यापक पात्रता परीक्षा-2019

UPTET-2019

UTTAR PRADESH TEACHER ELIGIBILITY TEST

हिन्दी

HINDI

PAPER - I & II

@UPSC_THOUGHT

Buy directly from
www.yuktipublication.com
/yuktibooks
/yuktibooks



@UPSC_THOUGHT

विषय–सूची

- **सॉल्वड पेपर्स** v-xvi
1. **हिन्दी भाषा** 1
2. **हिन्दी व्याकरण** 3
   - 2.1 संज्ञा 4
   - 2.2 सर्वनाम 4
   - 2.3 विशेषण 4
   - 2.4 क्रिया 4
   - 2.5 अव्यय 5
3. **शब्द रचना** 6
   - 3.1 सन्धि 6
   - 3.2 समास 7
   - 3.3 उपसर्ग 9
   - 3.4 प्रत्यय 10
4. **हिन्दी शब्दावली** 12
   - 4.1 हिन्दी शब्द समूह 12
   - 4.2 पारिभाषिक शब्दावली 14
   - 4.3 पर्यायवाची शब्द 17
   - 4.4 विलोम शब्द 20
   - 4.5 समश्रुत शब्द 24
   - 4.6 अनेकार्थी शब्द 26
   - 4.7 वाक्यांश के लिए एक शब्द 31
5. **वर्तनी एवं विराम चिह्न** 38
   - 5.1 वर्तनी 38
   - 5.2 विराम चिह्न 42
6. **वाक्य विचार** 43
   - 6.1 रचना की दृष्टि से वाक्य भेद 43
   - 6.2 अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद 44
   - 6.3 वाच्य के आधार पर वाक्य भेद 44
   - 6.4 प्रयोग के आधार पर वाक्य भेद 44
7. **मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ** 46
   - प्रमुख मुहावरे एवं वाक्य प्रयोग 47
   - कुछ प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ एवं उनके वाक्य प्रयोग 53
8. **काव्यशास्त्र** 60
   - 8.1 रस 60
   - 8.2 काव्य सम्प्रदाय 61
   - 8.3 पाश्चात्य काव्यशास्त्र 62
   - 8.4 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ और उनके रचयिता 64
   - 8.5 छन्द 66
   - 8.6 अलंकार 67
9. **हिन्दी साहित्य का इतिहास** 70
   - 9.1 आदिकाल 71
   - 9.2 भक्तिकाल 72
   - 9.3 रीतिकाल 75
   - 9.4 आधुनिक काल 76
     - 1. आधुनिक काल की कविता (पद्य) 76
       - (i) भारतेन्दु युग 77
       - (ii) द्विवेदी युग 77
       - (iii) छायावादी युग 79
       - (iv) प्रगतिवादी युग 80
       - (v) प्रयोगवाद एवं नयी कविता 80
       - (vi) नवगीत 82
     - 2. आधुनिक काल की विभिन्न विधाएँ (गद्य) 83
       - (i) उपन्यास 83
       - (ii) आत्मकथाएँ 85
       - (iii) जीवनी 86
       - (iv) नाटक 87
       - (v) एकांकी 87
       - (vi) रेखाचित्र संस्मरण 88
       - (vii) यात्रावृत्त 89
       - (viii) आलोचना 90
       - (ix) निबन्ध 91
       - (x) हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ 92
   - पुरस्कृत रचनाएँ 93
10. **अपठित बोध** 96

© All rights reserved with publisher

YUKTI®

YUKTI PUBLICATIONS

Head Office : 14/132, First Floor
Garhaiya Hakiman Lane,
Hospital Road, Agra - 282003

Ph. : +91 7500029885, 9837259933
0562-2263135

e-mail : yuktipublication@gmail.com

www.yuktipublication.com

Buy directly from our website

www.yuktipublication.com

Also available on

Flipkart

amazon

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning or otherwise without the prior written permission of the publishers. Yukti Publications has acquired the information contained in this book from the sources believed to reliable. However Yukti publications or its authors or the editors don't take any responsibility for the absolute accuracy of the information published and the damages suffered due to the use of this information. All disputes are subject to Agra (U.P.) jurisdiction only.

@UPSC_THOUGHT

YUKTI

युक्ति का प्रण और लक्ष्य...

युक्ति मात्र एक प्रकाशन संस्थान ही नहीं, एक सोच है। वह सोच जो आपके लक्ष्य की प्राप्ति में उतनी ही सहायक है जितने आपके शिक्षक और माता–पिता। हमारा अस्तित्व ही आप और आपकी सफलता है तथा यही हमारा एकमात्र और अन्तिम लक्ष्य भी। हम आपको बताना चाहते हैं कि हर समय इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हम अनवरत जी-तोड़ मेहनत करते रहते हैं।

नित नये पैटर्न, नित नयी सोच, नित नये कलेवर। सबके पीछे उद्देश्य वही– कैसे भी आप बस सफल हो जायें। हमारी हर पुस्तक का केन्द्र केवल आपकी सफलता है।

धनोपार्जन आवश्यकता भर है, उद्देश्य नहीं।

कैसे कम-से-कम शब्दों में अपनी बात आप तक पहुँचायें, कैसे किसी टॉपिक को सरल से सरल ढंग से प्रस्तुत करें। कैसे 800 पेज का निचोड़ मात्र 80 पेज में दे दें। विश्वास कीजिये युक्ति के हर प्रयास का लक्ष्य, आप और आपकी सफलता ही है।

आपका समय चाहे वह दिन हो या रात हमारे लिए अनमोल है, हमें विश्वास है कि हमारी बात भविष्य के किसी IAS ऑफिसर, बैंक मैनेजर, रेलवे अधिकारी या देश के लिए मर मिटने वाले किसी जांबाज नौजवान से हो रही है। आप से ही यह देश है। आप ही इसका आज और आप ही इसका कल हैं। आपकी सफलता की चमक हमारी आँखों में है और हमारी आँखों की चमक हमारी हर पुस्तक में आपको स्पष्ट दिखेगी।

हमारे बहुत-से पाठकों व पुस्तक विक्रेताओं की यह शिकायत रहती है कि युक्ति की पुस्तकें होती तो बहुत अच्छी हैं, पर देर से आती हैं। हम आपको बताना चाहते हैं कि युक्ति की हर पुस्तक गहन शोध, जाँच के बाद ही प्रकाशित होती है। हमारा प्रयास रहता है कि एक-एक अक्षर, शब्द और वाक्य पूर्णतः सही हो। जब तक हम संतुष्ट नहीं होते, पुस्तक प्रकाशित नहीं करते हैं। पुस्तक भले ही देरी से आये, पर वह शुद्धता और श्रेष्ठता में सर्वश्रेष्ठ हो, इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हम प्रयासरत रहते हैं।

यही प्रयास और समर्पण युक्ति पब्लिकेशन्स की रीढ़ है।

प्रकाशन एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर देश के भावी कलाम, बोस व टैगोर बनाने का दायित्व है, हम अपना दायित्व जानते हैं। इसीलिए हम उत्कृष्ट पुस्तकों के प्रकाशन हेतु प्रतिबद्ध हैं, जो न केवल परीक्षा में आपकी सहायक बनें बल्कि भविष्य का रास्ता भी कदम-कदम पर प्रकाशित करती रहें।

असीमित प्रेम और स्नेह के साथ

युक्ति परिवार

@UPSC_THOUGHT

YUKTI®

प्रतियोगी परीक्षाओं में निश्चित सफलता हेतु YUKTI® की अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की शृंखला

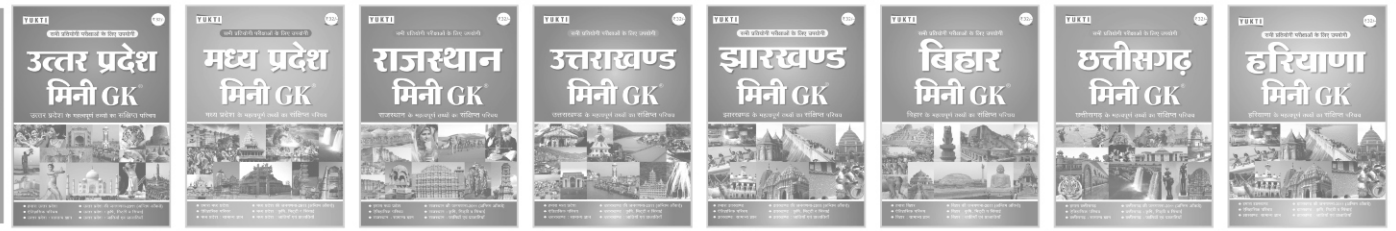
फास्ट ट्रैक शृंखला



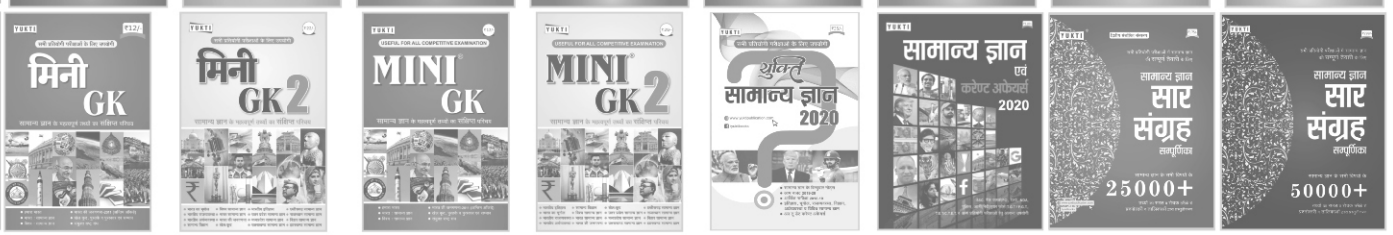
भर्ती शृंखला



मिनी शृंखला



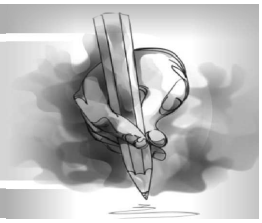
सामान्य ज्ञान शृंखला



UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, 18 नवम्बर, 2018



@UPSC_THOUGHT

भाग–II

भाषा-1 : हिन्दी

1. 'प्रागैतिहासिक' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(a) प्रा (b) प्राक्
(c) प्राग (d) प्रागैति

2. 'तुलसीदास' किसकी कविता है?
(a) हरिवंशराय बच्चन (b) मुक्तिबोध
(c) अज्ञेय (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

3. 'बहिष्कार' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(a) बहिः + कार (b) बहिः + ष्कार
(c) बहिष् + अकार (d) बहिर् + कार

4. 'वैदेही वनवास' किसकी रचना है?
(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) श्रीधर पाठक

5. निम्न में से पुल्लिंग शब्द का चयन कीजिए–
(a) पखावज (b) पहिया
(c) लिखावट (d) मझधार

निर्देश– (प्र. सं. 6 और 7) दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्न प्रश्नों के सही विकल्प छाँटिए

स्पष्टता, आत्मविश्वास, विषय की अच्छी पकड़ और प्रभावशाली भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना ही सम्प्रेषण–कला है, जो निरन्तन अभ्यास से निखारी जा सकती है। एक दिन में कोई अच्छा वक्ता नहीं बन सकता तथा भाषा पर अनायास ही किसी की पकड़ नहीं हो पाती। इसी अभ्यास से स्वामी विवेकानन्द ने जिस सम्प्रेषण–कला का विकास किया था, उसने विश्वधर्म–सम्मेलन में लाखों अमेरिकी निवासियों को चकित और मोहित कर दिया था।

6. सम्प्रेषण–कला क्या नहीं है?
(a) प्रभावशाली भाषा
(b) अलंकरण
(c) आत्मविश्वास
(d) विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना

7. सम्प्रेषण–कला का विकास किससे होता है?
(a) अनायास (b) अभ्यास
(c) भाषण (d) विषय की अच्छी पकड़

8. निम्न में संयुक्त व्यंजन कौनसा नहीं है?
(a) त्र (b) य
(c) क्ष (d) ज्ञ

9. 'मृत्युंजय' पद में कौनसा समास है?
(a) बहुव्रीहि (b) द्विगु
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व

10. 'अलंकार' में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
(a) अलन् (b) अल्
(c) अल (d) अलम्

11. यह पुस्तक किसकी है? में रेखांकित शब्द का पद–परिचय दीजिए–
(a) गुणवाचक विशेषण (पुस्तक विशेष्य), एकवचन
(b) सार्वनामिक विशेषण (पुस्तक विशेष्य), एकवचन, स्त्रीलिंग
(c) सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग
(d) सम्बोधन अव्यय

12. 'विश्लेषण' शब्द का विलोम होगा–
(a) व्याख्या (b) विवेचन
(c) संश्लेषण (d) विभाजित

13. जिनका उच्चारण ऊपर के दाँतों पर जीभ लगाने से होता है, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) मूर्धन्य (b) कंठ्य
(c) दन्त्य (d) अनुनासिक

14. निम्नलिखित में से 'ऊष्म व्यंजन' कौनसे हैं?
(a) च–छ–ज (b) श–ष–स
(c) अ–ब–स (d) य–र–ल

15. 'अत्यधिक' का विलोम क्या है?
(a) अनधिगत (b) अत्यल्प
(c) अत्याधिक (d) अनधीन

16. 'ऋत' का विलोम क्या है?
(a) विकीर्ण (b) अनृत
(c) वक्र (d) अनैक्य

17. 'संकल्प' शब्द में उपसर्ग बताइए–
(a) सन् (b) सम्
(c) सक् (d) सन्क

18. 'मुझसे खड़ा भी हुआ नहीं जाता।' इस वाक्य का वाच्य होगा–
(a) कर्तृवाच्य (b) भाववाच्य
(c) कर्मवाच्य (d) अन्य

19. तद्भव और उसके तत्सम का कौनसा मेल गलत है?
(a) लुनाई–लावण्यता (b) लौंग–लवंग
(c) आँत–अन्त्र (d) आयसु–आदेश

20. लेखक और उसकी रचना का कौनसा जोड़ा गलत है?
(a) स्कन्द गुप्त – लक्ष्मीनारायण मिश्र
(b) संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) रसज्ञ–रंजन – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(d) अशोक के फूल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

21. कवि और उसकी रचना का कौनसा जोड़ा सही नहीं है?
(a) परिमल – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

@UPSC_THOUGHT

(b) शिवराज भूषण — भूषण
(c) शब्द रसायन — देव
(d) उद्धव शतक — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

22. लेखक और उसकी कृति के युग्म में कौनसा युग्म गलत है?
(a) आर्यों का आदि देश — डॉ. सम्पूर्णानन्द
(b) वोल्गा से गंगा — राहुल सांकृत्यायन
(c) सूरज का सातवाँ घोड़ा — धर्मवीर भारती
(d) दर्शन दिग्दर्शन — रामचन्द्र शुक्ल

23. विराम-चि की दृष्टि से कौनसा वाक्य अशुद्ध है?
(a) हाँ मेरा यही विचार है।
(b) वह ईमानदार, परिश्रमी, कर्मठ और मृदुभाषी है।
(c) उसके पास धन–वैभव, नौकर–चाकर आदि सभी कुछ था।
(d) आप हमारे घर आना चाहते हैं, तो आइए; ठहरना चाहते हैं, तो ठहरिए।

24. कौनसा शब्द भिन्न अर्थ और प्रकृति का है?
(a) सनातन (b) चिरंतन
(c) शाश्वत (d) अधुनातन

25. 'अर्वाचीन' शब्द का विलोम होगा–
(a) अधुनातन (b) प्राचीन
(c) अद्यतन (d) सनातन

26. व्याकरण की दृष्टि से कौनसा शब्द अशुद्ध है?
(a) विभीषण (b) विरहणी
(c) गृहिणी (d) जगद्गुरु

27. निम्न में से कौनसा युग्म गलत है?
(a) मुट्ठी गरम करना — रिश्वत देना
(b) लुटिया डूबना — सारा काम चौपट होना
(c) सब्ज बाग दिखलाना — हरा–भरा करना
(d) माई का लाल — साहसी व्यक्ति

28. मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होय।।
उपरोक्त दोहे में कौनसा अलंकार है?
(a) श्लेष (b) अन्योक्ति
(c) यमक (d) रूपक

29. 'गौशाला' में कौनसा समास है?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु

30. 'देशभक्ति' में कौनसा समास है?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

उत्तरमाला

1. (b)	**2.** (d)	**3.** (a)	**4.** (b)	**5.** (b)	**6.** (b)	**7.** (b)	**8.** (b)	**9.** (a)	**10.** (d)
11. (b)	**12.** (c)	**13.** (c)	**14.** (b)	**15.** (b)	**16.** (b)	**17.** (b)	**18.** (b)	**19.** (c)	**20.** (a)
21. (d)	**22.** (d)	**23.** (a)	**24.** (d)	**25.** (b)	**26.** (b)	**27.** (c)	**28.** (a)	**29.** (b)	**30.** (a)

व्याख्या/हल

1. प्रागैतिहासिक में 'प्राक्' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। इसमें मूल शब्द इतिहास तथा 'इक' प्रत्यय है। अतः प्राक् + इतिहास + इक शब्द के योग से प्रागैतिहासिक शब्द बना है।

2. 'तुलसीदास' नामक कविता में तुलसीदास के रूप में निराला ने आधुनिक कवि के स्वाधीनता सम्बन्धी भावों के उद्गम और विकास का चित्रण किया है।

3. विसर्ग सन्धि के नियम अनुसार, जब विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में क, ख, प, फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है। अतः बहिः (इ) + कार (क) = बहिष्कार। यहाँ विसर्ग 'ष्' में परिवर्तित हो गया है।

4. 'वैदेही वनवास' में कुल 18 सर्ग हैं। इसमें रामकथा के वैदेही वनवास 'प्रसंग' को आधार बनाया गया और करुण रस की निष्पत्ति कराई गई है।

8. 'य' संयुक्त व्यंजन नहीं है बल्कि अन्तस्थ व्यंजन है।

9. जब दो पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, तब बहुव्रीहि समास होता है। जैसे–मृत्युंजय–मृत्यु को जीतने वाला अर्थात् शिव। यहाँ मृत्यु और जय मिलकर तीसरे पद शिव की ओर संकेत करते हैं। अतः मृत्युंजय में बहुव्रीहि समास है।

13. जिन व्यंजनों का उच्चारण ऊपर के दाँतों पर जीभ लगाने से होता है, उन्हें दन्त्य व्यंजन कहते हैं। जैसे–त, थ, द, ध, स आदि।

14. जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख में विशेष प्रकार की गर्म (ऊष्मा) वायु निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में श्वास की प्रबलता रहती है। श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन है।

16. ऋत का अर्थ है–सत्य तथा अनृत का अर्थ है–झूठ। अतः ऋत का विलोम अनृत होगा।

19. दिए गए विकल्पों में तद्भव और तत्सम शब्दों का गलत मेल आँत–अन्त्र है, अन्त्र के स्थान पर आन्त्र शब्द होना चाहिए। अतः अन्य तीनों विकल्पों का मेल नहीं है।

21. दिए गए विकल्पों में उद्धव शतक–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जोड़ा सही नहीं है, क्योंकि उद्धव शतक जगन्नाथ दास रत्नाकर की रचना है।

22. दिए गए विकल्पों में दर्शन दिग्दर्शन–रामचन्द्र शुक्ल का युग्म गलत है, क्योंकि दर्शन दिग्दर्शन राहुल सांकृत्यायन की रचना है।

23. जब हाँ अथवा नहीं को शेष वाक्य से अलग किया जाता है, तो उसके बाद अल्प विराम चिह्न का प्रयोग होता है।

24. सनातन, चिरंतन तथा शाश्वत के क्रमशः अर्थ हैं–परम्परानुसार, चला जाता हुआ, बहुत दिनों से चला आता रहने वाला तथा सदा रहने वाला। अतः ये तीनों शब्द समान अर्थ प्रकृति के हैं, जबकि अधुनातन शब्द भिन्न अर्थ प्रकृति का शब्द है।

25. अर्वाचीन शब्द का विलोम प्राचीन होगा, क्योंकि अर्वाचीन का अर्थ है–नया और प्राचीन का अर्थ है–पुराना।

26. व्याकरण की दृष्टि से विरहणी शब्द अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप विरहिणी होगा।

27. 'सब्ज बाग दिखलाना' मुहावरे का अर्थ है–लालच देकर बहकाना।

28. प्रस्तुत पंक्तियों में श्लेष अलंकार है, क्योंकि जब एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। यहाँ हरित शब्द के दो अर्थ हैं–हरा रंग और प्रसन्न होना।

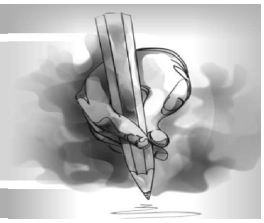
29. गौशाला का समास विग्रह 'गौ (गाय) के लिए शाला' होगा। अतः गौशाला में तत्पुरुष समास है।

30. देशभक्ति का समास विग्रह देश के लिए भक्ति होगा। अतः देशभक्ति शब्द में तत्पुरुष समास है।

UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, अक्टूबर, 2017



@UPSC_THOUGHT

भाग–II

भाषा-1 : हिन्दी

1. 'निमिष' शब्द का पर्याय है
(a) प्रकाश (b) छिद्र
(c) पूर्ण (d) क्षण

2. 'निष्कपट' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) निः + कपट (b) निष् + कपट
(c) नि + कपट (d) निश् + कपट

3. 'अत्यन्त' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है
(a) अत् (b) अ
(c) अत्य (d) अति

4. 'मुझसे उठा नहीं गया' वाक्य में कौन-सा वाच्य है
(a) कर्तृवाच्य (b) कर्मवाच्य
(c) भाववाच्य (d) इनमें से कोई नहीं

5. निम्न में से किस शब्द की वर्तनी सही नहीं है?
(a) अनुग्रहीत (b) अनुगृहीत
(c) अनग्रहीत (d) अनुग्रहित

6. 'उपत्यका' का अर्थ है
(a) सूर्य जिस पर्वत के पीछे से निकलता है
(b) प्राणियों के पेट का एक अंग
(c) पर्वत का शिखर
(d) पर्वत के पास की भूमि

7. 'जिसकी पूर्व से कोई आशा न हो' के लिए एक शब्द है
(a) प्रत्याशा (b) अप्रत्याशित
(c) अपरिमेय (d) अपेक्षित

8. 'अपेक्षा' का विशेषण रूप क्या है?
(a) सापेक्ष (b) उपेक्षा
(c) निरपेक्ष (d) अपेक्षित

9. 'ङ्' का उच्चारण स्थान होता है
(a) नासिक्य (b) कण्ठौष्ठ्य
(c) मूर्धन्य (d) कण्ठतालव्य

10. 'गोधूम' शब्द का तद्भव है
(a) गेहूँ (b) गाय
(c) गोबर (d) गोधन

11. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान क्या है?
(a) दन्त (b) मूर्द्धा
(c) तालु (d) दन्तालु

12. 'चार गज मलमल' में कौन-सा विशेषण है?
(a) संख्यावाचक (b) गुणवाचक
(c) परिमाणबोधक (d) सार्वनामिक

13. 'सीस' का तम्सम रूप क्या है?
(a) शीशा (b) शीर्ष
(c) सिरा (d) शीर्षक

14. निम्नलिखित में से किस देश में हिन्दी भाषा का प्रयोग लिखने एवं बोलने में किया जाता है?
(a) ऑस्ट्रेलिया (b) दक्षिण अमेरिका
(c) पाकिस्तान (d) मॉरिशस

15. 'चौराहा' शब्द का समास है
(a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) द्विगु (d) अव्ययीभाव

16. 'सूरसागर' किस भाषा की रचना है?
(a) अवधी (b) बुन्देली
(c) ब्रज (d) छत्तीसगढ़ी

17. 'आँख की किरकिरी होना' का अर्थ है?
(a) अप्रिय लगना (b) धोखा देना
(c) कष्टदायक होना (d) बहुत प्रिय होना

18. निम्नलिखित में मौखिक अभिव्यक्ति का रूप है
(a) शुद्ध वर्तनी (b) सुलेख
(c) श्रुतलेख (d) आशु भाषण

19. 'वीरों का कैसा हो वसन्त' कविता किसने लिखी है?
(a) सुमित्रा कुमारी चौहान (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'

20. हिन्दी भाषा में कितनी बोलियाँ है?
(a) 15 (b) 25
(c) 18 (d) 22

21. निम्नलिखित में से कौन-सी व्याकरण और वर्तनी से शुद्ध भाषा कहलाती है?
(a) साहित्यिक भाषा (b) प्रांजल भाषा
(c) व्याकरणिक भाषा (d) मानक भाषा

22. भारतेन्दु युग में निकलने वाली पत्रिका-युग्म है
(a) कविवचन सुधा–हिन्दी प्रदीप (b) सरस्वती–माधुरी
(c) कल्पना–ज्ञानोदय (d) नवनीत–कादम्बिनी

23. निम्नलिखित में से कौन-सा रासो 'आल्हाखण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है?
(a) पृथ्वीराज रासो (b) खुमान रासो
(c) परमाल रासो (d) बीसलदेव रासो

24. 'तद्भव' पत्रिका के सम्पादक का नाम है
(a) लीलाधर जगूड़ी (b) विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
(c) हरे प्रकाश उपाध्याय (d) अखिलेश

@UPSC_THOUGHT

25. "बारह बरस लौ कूकर जीवै, अरू तेरह लौ जियै सियार।" यह पंक्ति किसकी है?
(a) विद्यापति (b) चन्द वरदाई
(c) नरपति नाल्ह (d) जगनिक

निर्देश–(प्रश्न संख्या 26-30) दिए गए गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प छाँटिए।

आदिम आर्य घुमक्कड़ ही थे। यहाँ से वहाँ वे घूमते ही रहते थे। घूमते भटकते ही वे भारत पहुँचे थे। यदि घुमक्कड़ी का बाना उन्होंने न धारण किया होता, यदि वे एक स्थान पर ही रहते, तो आज भारत में उनके वंशज न होते। भगवान बुद्ध घुमक्कड़ तथा भगवान महावीर घुमक्कड़ थे। वर्षा-ऋतु के कुछ महीनों को छोड़कर एक स्थान में रहना बुद्ध के वश का नहीं था। 35 वर्ष की आयु में उन्होंने बुद्धत्व प्राप्त किया। 35 वर्ष से 80 वर्ष की आयु तक जब उनकी मृत्यु हुई, 45 वर्ष तक वे निरन्तर घूमते ही रहे। अपने आपको समाज सेवा और धर्म प्रचार में लगाए रहे। अपने शिष्यों से उन्होंने कहा था 'चरथ भिक्खने चारिक' हे भिक्षुओ! घुमक्कड़ी करो यद्यपि बुद्ध कभी भारत के बाहर नहीं गए, किन्तु उनके शिष्यों ने उनके वचनों को सिर आँखों पर लिया और पूर्व में जापान, उत्तर में मंगोलिया, पश्चिम में मकदूनिया और दक्षिण में बाली द्वीप तक धावा मारा। श्रावण महावीर ने स्वच्छन्द विचरण के लिए अपने वस्त्रों तक को त्याग दिया। दिशाओं को उन्होंने अपना अम्बर बना लिया, वैशाली में जन्म लिया, पावा में शरीर त्याग किया। जीवनपर्यंत घूमते रहे। मानव के कल्याण के लिए मानवों के राह प्रदर्शन के लिए और शंकराचार्य बारह वर्ष की अवस्था में संन्यास लेकर कभी केरल, कभी मिथिला कभी कश्मीर और कभी बद्रिकाश्रम में घूमते रहे।

कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक समस्त भारत को अपना कर्मक्षेत्र समझा। सांस्कृतिक एकता के लिए, समन्वय के लिए, श्रुति धर्म की रक्षा के लिए शंकराचार्य के प्रयत्नों से ही वैदिक धर्म का उत्थान हो सका।

26. 'घुमक्कड़' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
(a) अक्कड़ (b) ड़
(c) अड़ (d) कड़

27. महावीर स्वमी का जन्म कहाँ हुआ था?
(a) पावापुरी (b) वैशाली
(c) कुशीनगर (d) पारसौली

28. 'स्वच्छन्द' में कौन-सी सन्धि है?
(a) विसग्र (b) दीर्घ
(c) गुण (d) व्यंजन

29. महात्मा बुद्ध ने जब बुद्धत्व प्राप्त किया तब उनकी अवस्था कितनी थी?
(a) 12 वर्ष (b) 35 वर्ष
(c) 45 वर्ष (d) 80 वर्ष

30. 'श्रुति धर्म' का क्या अर्थ है?
(a) जैन धर्म (b) बौद्ध धर्म
(c) मुस्लिम धर्म (d) वैदिक धर्म

उत्तरमाला

1. (d)	**2.** (a)	**3.** (d)	**4.** (c)	**5.** (b)	**6.** (d)	**7.** (b)	**8.** (d)	**9.** (a)	**10.** (a)
11. (c)	**12.** (c)	**13.** (b)	**14.** (d)	**15.** (c)	**16.** (c)	**17.** (c)	**18.** (d)	**19.** (b)	**20.** (c)
21. (d)	**22.** (a)	**23.** (c)	**24.** (d)	**25.** (d)	**26.** (a)	**27.** (b)	**28.** (d)	**29.** (b)	**30.** (d)

व्याख्या/हल

1. 'निमिष' शब्द का पर्याय 'क्षण' है। निमिष का अर्थ पलक झपकने की क्रिया भी होता है। इसके अतिरिक्त, विपल, पल आदि भी 'निमिष' के पर्याय हैं।

2. 'निष्कपट' शब्द का संधि-विच्छेद निः+कपट है। इसमें विसर्ग संधि है। विसर्ग संधि में यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में 'क', 'ख', 'प', 'फ', 'त' में से कोई वर्ण हो विसर्ग ष् में बदल जाता है।

3. 'अन्त' मूल शब्द में 'अति' उपसर्ग के योग से (अति + अन्त) अत्यन्त शब्द बनता है।

4. 'मुझसे उठा नहीं गया' वाक्य में भाव वाच्य है। भाव वाच्यों में भावों की प्रधानता होती है तथा अकर्मक क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

5. अनुगृहीत शब्द की वर्तनी सही है। इसका अर्थ है–जिस पर अनुग्रह किया गया हो।

9. 'ङ्' का उच्चारण स्थान नासिक्य होता है। इसके अतिरिक्त अं, अँ, ञ्, ण्, न् तथा म् ध्वनियों का उच्चारण स्थान भी नासिक्य है। नासिक ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु नाक से होकर निकलती है।

10. 'गोधूम' शब्द का तद्भव गेहूँ है। गोधूम एक संस्कृत शब्द है जिसमें थोड़ा परिवर्तन कर गेहूँ तद्भव शब्द बना है।

11. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान तालु (तालव्य) है। इसके अलावा इ, ई, च, छ, ज, झ तथा य ध्वनियों का उच्चारण स्थल भी तालु (तालव्य) है।

13. 'सीस' का तत्सम रूप 'शीर्ष' अथवा 'सिर' होता है।

15. 'चौराहा' शब्द का समास विग्रह होगा–'चार राहों का समूह'। जिस शब्द का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है।

20. हिन्दी भाषा में 18 बोलियाँ हैं–मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, खड़ी बोली, बाँगरू, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, कुमाऊँनी, गढ़वाली तथा नेपाली।

21. 'मानक भाषा' व्याकरण तथा वर्तनी से शुद्ध भाषा कहलाती है। मानक भाषा आदर्श, श्रेष्ठ व परिनिष्ठित भाषा होती है।

22. भारतेन्दु युग में प्रकाशित होने वाली पत्रिका–युग्म 'कविवचन सुधा– हिन्दी प्रदीप' हैं।

23. 'परमाल रासो' 'आल्हाखण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। यह जगनिक द्वारा रचित है। इसमें आल्हा तथा ऊदल की वीरता का वर्णन है।

24. 'तद्भव' पत्रिका के सम्पादक अखिलेश हैं। इस पत्रिका का सम्पादन सन् 1999 में लखनऊ से किया गया।

25. यह पंक्ति जगनिक की है। यह जगनिक द्वारा रचित परमाल रासो (आल्हाखण्ड) से ली गई है।

26. 'घुमक्कड़' शब्द में 'अक्कड़' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है।

27. महावीर स्वामी का जन्म वैशाली में हुआ था।

28. 'स्वच्छन्द' में 'व्यंजन' सन्धि है। जब व्यंजन को व्यंजन अथवा स्वर से मिलाने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। जैसे–स्व + छन्द = स्वच्छन्द।

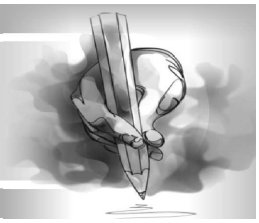
29. महात्मा बुद्ध ने जब बुद्धत्व प्राप्त किया तब उनकी अवस्था 35 वर्ष थी।

30. 'श्रुतिधर्म' का अर्थ वैदिक धर्म से है। सांस्कृतिक एकता, समन्वय एवं श्रुतिधर्म की रक्षा के लिए शंकराचार्य के प्रयत्नों से ही वैदिक धर्म का उत्थान हुआ।

UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, 18 दिसम्बर, 2016



@UPSC_THOUGHT

भाग–II

भाषा-1 : हिन्दी

1. 'समष्टि' का विपरीतार्थी शब्द है–
(a) विशिष्ट (b) अशिष्ट
(c) अपुष्टि (d) व्यष्टि

2. 'कर्पट' का तद्भव रूप है–
(a) कपट (b) कारपेट
(c) कपूर (d) कपड़ा

3. निम्नलिखित में वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द युग्म शब्द है?
(a) बरात, बसंत (b) बारात, बसंत
(c) बरात, वसंत (d) बारात, वसंत

4. 'अर्ध-स्वर' हैं–
(a) य, व (b) इ, उ
(c) ऋ, लृ (d) ऋ, ष

5. 'चोर की दाड़ी में तिनका' मुहावरे का सही अर्थ है–
(a) अपराधी का अपनी दाड़ी खुजलाना
(b) अपराधी का शंकाग्रस्त रहना
(c) अपराधी की पहचान हो जाना
(d) अपराधी का अपनी पहचान छिपाना

6. 'एक बार कही बात को दुहराते रहना' वाक्यांश के लिए एक शब्द है–
(a) आगार (b) प्राक्कथन
(c) पिष्टपेषण (d) प्रस्तावना

7. 'बुद्धिहीन' शब्द व्याकरण की दृष्टि से किस संवर्ग में है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) क्रिया

8. 'छत से ईंट गिरी' वाक्य में कौन-सा कारक है?
(a) अपादान (b) सम्बन्ध
(c) अधिकरण (d) सम्प्रदान

9. 'महोर्मि' का सन्धि-विच्छेद है–
(a) महत् + उर्मि (b) महा + उर्मि
(c) महा + ऊर्मि (d) महत् + मर्मि

10. चराचरम् (जगत्) में कौन-सा समास है?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय

11. 'अभ्यागत' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) अ (b) अभ्य
(c) अभि (d) अभ्या

12. 'रमणीय' में कौन-सा प्रत्यय है?
(a) अनीय (b) ईय
(c) रम (d) णीय

13. "बोरों सबै रघुवंश कुठार की धार में, बारन बजि सरत्थहिं।
बान की वायु उड़ाव कै लच्छन लच्छ, करौं अरिहा समरत्थहिं।।"
इन काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) रौद्र रस (b) भयानक रस
(c) वीभत्स रस (d) वीर रस

14. "श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
बरनउ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि।।"
में छन्द है–
(a) दोहा (b) सोरठा
(c) रोला (d) बरवै

15. वाक्य शुद्ध है–
(a) मोहन और गीता गा रही है (b) गीता और मोहन गा रहा है
(c) मोहन और गीता गा रहे हैं (d) मोहन और गीता गा रही हैं

16. इन शब्दों में से कौन-सा शब्द हिन्दी शब्दकोश में सबसे अन्त में आएगा?
(a) क्लीव (b) क्रम
(c) कृषक (d) कृशानु

17. हिन्दी गद्य-शिक्षण की पाठ-योजना में उद्देश्य कथन आता है–
(a) पूर्वज्ञान के पश्चात् (b) प्रस्तावना प्रश्न के पश्चात्
(c) आदर्श वाचन के पश्चात् (d) मौन वाचन के पहले

18. शब्द का अर्थ स्पष्ट करने हेतु कौन-सा तरीका सर्वाधिक उपयुक्त है?
(a) वाक्य प्रयोग (b) व्याख्यान
(c) भ्रमण (d) चित्र-निर्माण

19. भाषा-शिक्षण की पद्धति नहीं है–
(a) किण्डरगार्टन (b) मॉण्टेसरी
(c) डैक्राली (d) अभिक्रमित अनुदेशन

20. "बालक की प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में दी जाए" यह मानना है–
(a) मॉण्टेसरी का (b) महात्मा गाँधी का
(c) फ्रॉबेल का (d) किलपैट्रिक का

21. व्याकरण-शिक्षण के लिए उपयुक्त नहीं है–
(a) आगमन प्रणाली (b) निगमन प्रणाली
(c) अव्याकृति प्रणाली (d) कक्षाभिनय प्रणाली

22. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से होता है?
(a) बनारस (b) मिर्जापुर

YUKTI

(c) इलाहाबाद (d) लखनऊ

23. आदिकाल की रचना है–
(a) अखरावट (b) छत्रसाल दशक
(c) दीपशिखा (d) खुमान रासो

24. "काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, तेरे ही नालि सरोवर पानी"। पंक्ति के रचनाकार कौन हैं?
(a) जायसी (b) रैदास
(c) कबीर (d) दादू

25. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध संग्रह है–
(a) माटी का फूल (b) चिन्तामणि
(c) क्षण बोले कण मुसकाए (d) आलोक पर्व

26. राष्ट्रवादी कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' को 'उर्वशी' के लिए 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' किस वर्ष प्रदान किया गया?
(a) सन् 1971 ई. में (b) सन् 1972 ई. में
(c) सन् 1973 ई. में (d) सन् 1974 ई. में

27. 'निरामिष' किसे कहते हैं?
(a) माँस रहित भोजन (b) मोक्ष का इच्छुक
(c) रात्रि में विचरण करने वाला (d) मृत्यु का इच्छुक

28. 'शहद' शब्द है–
(a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) आगत

29. 'वनिता' का प्रयोग किस अर्थ में होता है?
(a) जंगल (b) स्त्री
(c) पुस्तक (d) व्यवसायी

30. 'मुकुंद' किसका पर्याय है?
(a) विष्णु (b) शिव
(c) सूर्य (d) कामदेव

उत्तरमाला

1. (d)	**2.** (d)	**3.** (c)	**4.** (a)	**5.** (b)	**6.** (c)	**7.** (c)	**8.** (a)	**9.** (c)	**10.** (d)
11. (c)	**12.** (a)	**13.** (a)	**14.** (a)	**15.** (c)	**16.** (a)	**17.** (b)	**18.** (a)	**19.** (d)	**20.** (b)
21. (d)	**22.** (b)	**23.** (d)	**24.** (c)	**25.** (b)	**26.** (b)	**27.** (a)	**28.** (d)	**29.** (b)	**30.** (a)

व्याख्या/हल

1. समष्टि का विपरीतार्थी शब्द व्यष्टि है, क्योंकि समष्टि का अर्थ है समाज तथा व्यष्टि का अर्थ है व्यक्ति।

13. इन पंक्तियों में स्थायी भाव क्रोध है अतः इन पंक्तियों में रौद्र रस है।

14. इसमें दोहा छन्द है जिसके प्रथम और तृतीय चरण में 13 - 13 मात्राएँ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 11 - 11 मात्राएँ होती हैं।

22. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका मिर्जापुर से प्रकाशित होती थी। इसके सम्पादक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' थे।

23. आदिकाल की रचना 'खुमान रासो' है, इसके रचयिता दलपति विजय हैं।

28. यह शब्द हिन्दी में अरबी भाषा से आया है अतः 'शहद' आगत शब्द है।

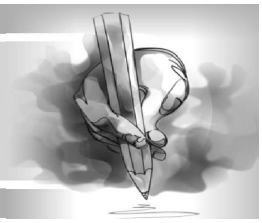
●●

@UPSC_THOUGHT

UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, 2 फरवरी, 2015



@UPSC_THOUGHT

भाग-II

भाषा-1 : हिन्दी

1. अष्टछाप के कवि नहीं है–
(a) नाभादास (b) कृष्णदास
(c) परमानन्ददास (d) नन्ददास

2. जो वाणी द्वारा व्यक्त न किया जा सके–
(a) आत्मसाक्षात्कार (b) स्वानुभूति
(c) अनिर्वचनीय (d) रहस्य

3. 'आचरण की सभ्यता' किसका निबन्ध है?
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) सरदार पूर्णसिंह
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) पद्मसिंह

4. 'भूषण' किस काल के कवि हैं?
(a) वीरगाथाकाल (b) भक्तिकाल
(c) रीतिकाल (d) आदिकाल

5. 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?
(a) करुण (b) वीर
(c) हास्य (d) शृंगार

6. 'कवितावली' के रचनाकार हैं–
(a) सूरदास (b) जायसी
(c) तुलसीदास (d) घनानन्द

7. विनय पत्रिका की भाषा कौन-सी है?
(a) अवधी (b) खड़ी बोली
(c) ब्रज भाषा (d) अपभ्रंश

8. 'ट' वर्ग में किस प्रकार के व्यंजन हैं?
(a) कंठ्य (b) तालव्य
(c) मूर्धन्य (d) दन्त्य

9. 'अन्धेर-नगरी' के लेखक हैं–
(a) प्रतापनारायण मिश्र (b) हरिकृष्ण प्रेमी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) रामकुमार वर्मा

10. आदिकाल में पहेलियाँ लिखने वाले कवि थे–
(a) जगनिक (b) खुसरो
(c) सरहपा (d) गोरखनाथ

11. 'पेड़ से बन्दर कूदा', वाक्य में कौन-सा कारक है?
(a) अपादान कारक (b) कर्म कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) करण कारक

12. शृंगार रस का स्थायी भाव है–
(a) हास (b) रति
(c) क्रोध (d) उत्साह

13. निम्नलिखित में तद्भव शब्द है–
(a) भ्रमर (b) अग्नि
(c) मस्तक (d) मछली

14. 'चौपाई' छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
(a) चौबीस (b) सोलह
(c) ग्यारह (d) तेरह

15. 'तेरी बरछी ने बर छीने हैं, खलन का' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) यमक

16. 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का सम्पादन किया है–
(a) बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

17. 'सूर्योदय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है–
(a) सूर्यो + दय (b) सूर्य + उदय
(c) सूर्यः + उदय (d) सूर्ये + उदय

18. यथाशक्ति में समास है–
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्विगु (d) कर्मधारय

19. इनमें कौन-सा शब्द तद्भव है?
(a) मधुप (b) भ्रमर
(c) मधुकर (d) भँवरा

20. 'मुदरी' का तत्सम रूप है–
(a) मुद्री (b) मुन्दरी
(c) मुदरिका (d) मुद्रिका

21. निम्नलिखित में से कौन-सा निबन्ध हजारीप्रसाद द्विवेदी का नहीं है?
(a) अशोक के फूल (b) कुटज
(c) विचार प्रवाह (d) वृत्त और विकास

22. 'परमाल रासो' किसके द्वारा रचित है?
(a) नल्लसिंह (b) नरपति नाल्ह
(c) चन्दरबरदाई (d) जगनिक

23. ''दुल्हिन गावहु मंगलाचार, हम घर आए राजा राम भरतार।'' ये किसकी पंक्तियाँ हैं?
(a) तुलसीदास (b) कबीरदास
(c) सूरदास (d) रैदास

24. 'मृगावती' किसकी रचना है?
(a) उसमान (b) मंझन
(c) कुतुबन (d) जायसी

25. निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है–
(a) अन्तर्राष्ट्रीय (b) अन्तरराष्ट्रीय

(c) अर्न्तराष्ट्रीय (d) अन्तराष्ट्रीय

26. 'आगे कुआँ पीछे खाई' का अर्थ है–
(a) चारों तरफ जल ही जल होना (b) रास्ते का बन्द होना
(c) दोनों ओर मुसीबत (d) बीच में निकल भागना

27. 'रामचरितमानस' की भाषा क्या है?
(a) अवधी (b) ब्रज
(c) खड़ी बोली (d) भोजपुरी

28. आदिकाल के लिए 'वीरगाथाकाल' नाम किसने प्रस्तावित किया है?
(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) महापण्डित राहुल सांकृत्यायन
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

29. 'उत्कर्ष' शब्द का विलोम लिखिए–
(a) पतन (b) अपकर्ष
(c) अपभ्रष्ट (d) विकर्ष

30. 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक कौन थे?
(a) बाबू महादेव सेठ
(b) चन्द्रधर शर्मा, 'गुलेरी'
(c) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
(d) अम्बिकाप्रसाद व्यास

उत्तरमाला

1. (a)	**2.** (c)	**3.** (b)	**4.** (c)	**5.** (b)	**6.** (c)	**7.** (c)	**8.** (c)	**9.** (c)	**10.** (b)
11. (a)	**12.** (b)	**13.** (d)	**14.** (b)	**15.** (d)	**16.** (b)	**17.** (b)	**18.** (a)	**19.** (d)	**20.** (d)
21. (d)	**22.** (d)	**23.** (b)	**24.** (c)	**25.** (a)	**26.** (c)	**27.** (a)	**28.** (c)	**29.** (b)	**30.** (c)

व्याख्या/हल

1. अष्टछाप के कवियों में सूरदास, कुम्भन दास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, नन्ददास, चतुर्भुजस्वामी, कृष्णदास तथा परमानन्द दास प्रमुख हैं।

3. 'आचरण की सभ्यता' सरदार पूर्ण सिंह द्वारा रचित निबन्ध है। 'कर्तव्य और सभ्यता', 'सच्ची वीरता', 'मजदूरी और प्रेम' आदि अन्य निबन्धों की रचना भी सरदार पूर्णसिंह द्वारा की गई।

4. महाकवि भूषण रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। 17वीं शताब्दी में रचित 'शिवराज भूषण', छत्रसाल दशक, शिवाबावनी आदि भी इन्हीं की रचनाएँ हैं। रीतिकाल के अन्य प्रमुख कवित बिहारी, रहीम, घनानन्द, मतिराम, केशवदास, भिखारी दास, रसिक गोविन्द, पद्माकर आदि हैं।

5. वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। शृंगार रस का स्थायी भाव रति, करूण रस का स्थायी भाव शोक तथा हास्य रस का स्थायी भाव हास है।

6. 'कवितावली' के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास है। उनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ, 'विनय–पत्रिका', 'कृष्ण–गीतावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'रामचरितमानस' आदि हैं।

7. 'विनय–पत्रिका' ब्रजभाषा में लिखी गई है। इसमें शान्त रस की अधिक प्रधानता है तथा इसमें 280 पद हैं।

9. 'अन्धेर नगरी' के लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। इनके अन्य मौलिक नाटक 'नीलदेवी', भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति आदि हैं।

10. आदिकाल में पहेलियाँ लिखने वाले कवि खुसरो थे। आदिकाल के लौलिक साहित्य के प्रमुख कवियों में अमीर खुसरो तथा विद्यापति का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इन दोनों ने ही अपनी पहेलियों में खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

11. 'पेड़ से बन्दर कूदा।' इस वाक्य में अपादान कारक है, क्योंकि इस वाक्य में 'से' परसर्ग अलग होने के भाव को दर्शाता है।

13. मछली तद्भव शब्द है, इसका तत्सम मत्स्य होता है। भ्रमर, अग्नि तथा मस्तक तत्सम शब्द है।

18. यथाशक्ति अर्थात् शक्ति के अनुसार। इसमें अव्ययीभाव समास है क्योंकि इसमें यथा एक अव्यय है।

22. 'परमाल रासो' की रचना जगनिक ने की। यह एक आल्हा खण्ड है।' इसमें 13वीं शताब्दी में महोबा के राजा परमालदेव के सामन्त आल्हा और ऊदल की वीरता का वर्णन है।

24. 'मृगावती' कुतुबन की रचना है। इसमें 1503 ई. में मृगावती तथा राजकुँवर की प्रेमकथा का अलौकिक वर्णन है।

27. 'रामचरितमानस' की भाषा अवधी है। इसकी रचना 1574 ई. में गोस्वामी तुलसीदास ने की थी। यह भगवान राम के सम्पूर्ण जीवन चरित्र पर आधारित है।

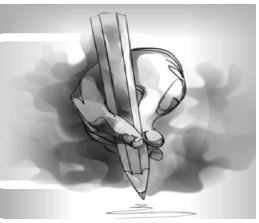
28. आदिकाल को अनेक विद्वानों ने अलग–अलग नाम दिए हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे वीरगाथा काल कहा है तो डा. रामकुमार वर्मा ने इसे चारणकाल कहा है। राहुल सांकृत्यायन ने इसे सिद्ध सामन्तकाल कहा है तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे आदिकाल ही कहा है।

@UPSC_THOUGHT

UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, 23 फरवरी, 2014



@UPSC_THOUGHT

भाग-II

भाषा-1 : हिन्दी

1. संकर शब्द किसे कहते हैं?
(a) ग्रामीण भाषा का शब्द
(b) संस्कृत भाषा का शब्द
(c) ग्रामीण व संस्कृत भाषा के कुछ विशेष शब्द
(d) दो भाषा के शब्दों से मिलकर बना शब्द

2. 'सुत्' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग होगा?
(a) ईय (b) ई
(c) इक (d) आ

3. 'नाक का बाल होना' मुहावरे का अर्थ है–
(a) अधिक समीप होना (b) कष्ट देना
(c) अधिक प्रिय होना (d) पालतू होना

4. 'अश्व' का पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?
(a) घोड़ा (b) घोटक
(c) कटक (d) हय

5. 'जो एक स्थान पर टिककर नहीं रहता' वाक्य के लिए एक शब्द कौन-सा है?
(a) अस्थिर (b) अडिग
(c) यायावर (d) गतिशील

6. "बुन्देले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता कौन हैं?
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) सुभद्राकुमारी चौहान
(c) सोहनलाल द्विवेदी (d) रामनरेश त्रिपाठी

7. 'समास' का अर्थ है–
(a) संक्षेप (b) विच्छेद
(c) विस्तार (d) नवीन अर्थ

8. भाषा के सम्बन्ध में उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है–
(a) भाषा प्रयोग सम्बन्धी कठिनाइयों की पहचान तथा उनका निदान
(b) बच्चों को व्यस्त रखना
(c) बच्चों को श्रेणीवार विभक्त करना
(d) बच्चों की त्रुटियों की केवल सूची बनाना

9. प्रमुख भाषायी कौशल के अन्तर्गत इनमें से कौन एक नहीं आता है?
(a) सुनना (b) बोलना
(c) हँसना (d) लिखना

10. 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है–
(a) 14 सितम्बर को (b) 05 सितम्बर को
(c) 02 अक्टूबर को (d) 26 जनवरी को

11. काव्य शिक्षण का उद्देश्य है–
(a) भाषा में प्रयुक्त होने वाले विराम चिह्नों से परिचित कराना
(b) व्याकरणिक नियमों की जानकारी देना
(c) संगीत कला में निपुण बनाना
(d) रसानुभूति एवं आनन्दानुभूति कराना

12. निम्न में से किस वाक्य में विशेषण का प्रयोग हुआ है?
(a) राम जाता है (b) सीता फल खाती है
(c) मेरी गाय काली है (d) जल्दी उठना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है

13. नाटक शिक्षण में 'कक्षाभिनय प्रणाली' के प्रयोग से–
(a) शिक्षक एवं बच्चों का समय व्यर्थ होता है
(b) पात्रानुसार बच्चों द्वारा अभिनय से सीखने की प्रक्रिया में तेजी आती है
(c) बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

14. निम्न शब्द में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है–
(a) वाहनारूढ़ (b) सत्ताधीश
(c) गंगाजल (d) रेखाचित्र

15. किस रस को 'रसराज' कहा जाता है?
(a) शृंगार रस (b) वीर रस
(c) हास्य रस (d) इनमें से कोई नहीं

16. घनानन्द को किस युग का कवि माना जाता है?
(a) आदिकाल (b) भक्तिकाल
(c) रीतिकाल (d) भारतेन्दु काल

17. निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है–
(a) आशिर्वाद (b) आशीरवाद
(c) आशीर्वाद (d) आर्शिवाद

18. 'को' से किस कारक चिन्ह का बोध होता है?
(a) कर्म कारक (b) करण कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) अधिकरण कारक

19. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन का उपनाम है–
(a) हरिऔध (b) निराला
(c) अज्ञेय (d) गुलेरी

@UPSC_THOUGHT

20. 'बिहारी' के प्रसिद्ध हैं–
(a) कवित्त (b) सवैया
(c) पद (d) दोहा

21. 'पुनर्जन्म' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है–
(a) पुनः + जन्म (b) पुनर् + जन्म
(c) पुन् + जन्म (d) पुनः + आजन्म

22. 'शोक' किस रस का स्थायी भाव है?
(a) शान्त (b) करुण
(c) हास्य (d) वीर

23. 'सूरदास' ने किस भाषा में 'सूरसागर' की रचना की?
(a) अवधी (b) ब्रज
(c) खड़ी बोली (d) राजस्थानी

24. 'दोहा' में कितनी मात्राएँ होती हैं?
(a) चौबीस (b) छब्बीस
(c) अट्ठाइस (d) तीस

25. 'जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो' इस शब्द समूह के लिए एक शब्द क्या है?
(a) कुलीन (b) समृद्ध
(c) धनी (d) कृपण

26. 'दाता' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द क्या है?
(a) दाती (b) दातृ
(c) दात्री (d) धात्री

27. 'लड़का पेड़ से गिरा' में कौन-सा कारक है?
(a) अपादान कारक (b) सम्प्रदान कारक
(c) कर्म कारक (d) अधिकरण कारक

28. 'पापी' में कौन-सा विशेषण है?
(a) संख्यावाचक विशेषण (b) सार्वनामिक विशेषण
(c) गुणवाचक विशेषण (d) परिमाणवाचक विशेषण

29. 'नवल सुन्दर श्याम-शरीर की, सजल नीरद-सी कल-कान्ति थी।' में कौन-सा अलंकार है?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा

30. 'बीजक' किसकी रचना है?
(a) सूर (b) तुलसी
(c) कबीर (d) जायसी

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (d)	**3.** (c)	**4.** (c)	**5.** (c)	**6.** (b)	**7.** (c)	**8.** (a)	**9.** (c)	**10.** (a)
11. (d)	**12.** (c)	**13.** (b)	**14.** (a)	**15.** (a)	**16.** (c)	**17.** (c)	**18.** (a)	**19.** (c)	**20.** (d)
21. (a)	**22.** (b)	**23.** (b)	**24.** (a)	**25.** (a)	**26.** (c)	**27.** (a)	**28.** (c)	**29.** (a)	**30.** (c)

व्याख्या/हल

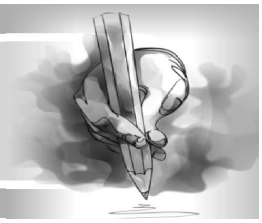
7. अनेक पद मिलकर जब एक पद बनता है, तो उसे समास कहते हैं समास को संक्षेप भी कहा जाता है।

10. 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारतीय संविधान में मान्यता मिली। अतः 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप मनाया जाता है।

UP-TET

पेपर-1 (कक्षा I-V)

सॉल्वड पेपर, 27 जून, 2013



@UPSC_THOUGHT

भाग-II

भाषा-1 : हिन्दी

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य की पहली आत्मकथा के लेखक कौन माने जाते हैं?
(a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) देवेन्द्र सत्यार्थी
(c) हरिवंशराय बच्चन (d) जयशंकर प्रसाद

2. 'कार्य के आरम्भ में ही विघ्न पड़ना' किस मुहावरे का अर्थ है?
(a) सिर मारना (b) सिर पर सेहरा बँधा होना
(c) सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना (d) सिर पर शैतान सवार होना

3. किस कवि को 'कवियों का कवि' कहा जाता है?
(a) धर्मवीर भारती (b) शमशेर बहादुर सिंह
(c) रघुवीर सहाय (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

4. 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना
राम नाम का मरम है आना' किस रचनाकार की पंक्तियाँ हैं?
(a) तुलसीदास (b) कबीर
(c) केशवदास (d) सूरदास

5. हिन्दी का पहला पत्र है–
(a) उदंत मार्तण्ड (b) इतिहास तिमिरनाशक
(c) बनारस अखबार (d) हरिश्चन्द्र मैगज़ीन

6. 'अति सूधो सनेह को मारग है' किसकी पंक्ति है?
(a) आलम (b) बोधा
(c) ठाकुर (d) घनानन्द

7. 'कालिन्दी' का पर्यायवाची क्या है?
(a) सरस्वती (b) लक्ष्मी
(c) गंगा (d) यमुना

8. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?
(a) मुंशी सदासुख लाल (b) सदल मिश्र
(c) लल्लू लाल जी (d) रामप्रसाद निरंजनी

9. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं?
(a) तीन (3) (b) चार (4)
(c) पाँच (5) (d) छः (6)

10. हिन्दी के शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है?
(a) प्रत्यय (b) संज्ञा
(c) क्रिया (d) सर्वनाम

11. कारक के कितने भेद होते हैं?
(a) 7 (सात) (b) 8 (आठ)
(c) 9 (नौ) (d) 10 (दस)

12. 'घ' का उच्चारण स्थान कौन-सा है?
(a) मूर्द्धा (b) कण्ठ
(c) तालु (d) दंत

13. 'चिन्तामणि' किसका निबन्ध संग्रह है?
(a) बालमुकुन्द गुप्त (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) श्यामसुन्दर दास

14. 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना किस वर्ष हुई?
(a) 1893 ई. (b) 1900 ई.
(c) 1903 ई. (d) 1905 ई.

15. कवि का स्त्रीलिंग है–
(a) कविइत्री (b) कवित्री
(c) कवयित्री (d) कवियित्री

16. 'तरणि' का पर्यायवाची शब्द है–
(a) सूर्य (b) नाम
(c) युवती (d) नदी

17. 'मीन' का पर्यायवाची शब्द है–
(a) शिखी (b) शापक
(c) विभावरी (d) मत्स्य

18. दिए हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है–
(a) आत्मजा (b) नन्दिनी
(c) भार्या (d) कन्या

19. अनुपम का पर्यायवाची शब्द है–
(a) स्वर्गीय (b) लौकिक
(c) पार्थिव (d) अद्वितीय

20. कान का कच्चा होने का अर्थ है–
(a) कम सुनना (b) सुनी बात पर विश्वास करना
(c) दूसरे की बात मानना (d) कान का कमजोर होना

21. 'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?
(a) क् + ष (b) क् + च
(c) क् + छ (d) क् + श

22. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए–
(a) अस्प्रस्यता (b) अस्पृष्यता

(c) अस्पृश्यता (d) अस्प्रश्यता

23. पवन का सन्धि-विच्छेद है–
(a) प + अवन (b) प + वन
(c) पो + अन (d) पौ + अन

24. पुनर्जन्म का सन्धि-विच्छेद है–
(a) पुनर + जन्म (b) पुः + नरजन्म
(c) पुनः + जन्म (d) पुनर् + आजन्म

25. 'इत्यादि' शब्द में कौन-सी सन्धि है?
(a) यण् सन्धि (b) वृद्धि सन्धि
(c) गुण सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

26. 'नाक रगड़ना' का क्या अर्थ है?
(a) नाक में चोट लगना (b) इज्जत देना
(c) दीनतापूर्वक प्रार्थना करना (d) चापलूसी करना

27. 'उन्मूलन' का विलोम क्या है?
(a) उत्थान (b) उत्कर्ष
(c) रोपण (d) अवनति

28. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को क्या संज्ञा दी है?
(a) चारणकाल (b) आदिकाल
(c) वीरकाल (d) बीजवपनकाल

29. कपटी मित्र के लिए सही मुहावरा है–
(a) दाँत काटी रोटी (b) आस्तीन का साँप
(c) अक्ल की दुम (d) आबनूस का कुन्दा

30. इन्द्रियों को जीतने वाले के लिए एक शब्द है–
(a) दूरदर्शी (b) दत्तचित्त
(c) कुशाग्रबुद्धि (d) जितेन्द्रिय

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (c)	**3.** (c)	**4.** (b)	**5.** (a)	**6.** (d)	**7.** (d)	**8.** (c)	**9.** (c)	**10.** (c)
11. (b)	**12.** (b)	**13.** (c)	**14.** (a)	**15.** (c)	**16.** (a)	**17.** (d)	**18.** (c)	**19.** (d)	**20.** (b)
21. (a)	**22.** (c)	**23.** (c)	**24.** (c)	**25.** (a)	**26.** (c)	**27.** (c)	**28.** (d)	**29.** (b)	**30.** (d)

व्याख्या/हल

1. हरिवंशराय बच्चन आत्मकथा लेखक के रूप में जाने जाते हैं। उनकी आत्मकथा का नाम है–क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।

5. उदन्त मार्तण्ड (सम्पादक पं. युगल किशोर) कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। यह हिन्दी का पहला समाचार-पत्र माना जाता है।

6. दी गई काव्य-पंक्ति रीतिकाल की स्वच्छन्द धारा के कवि घनानन्द की है। ''अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयानप बांक नहीं।''

9. संज्ञा के पाँच भेद माने जाते हैं–व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक।

10. हिन्दी शब्दों का लिंग निर्धारण क्रिया के आधार पर होता है। वह जाता है। 'वह' पुल्लिंग है, क्योंकि जाता क्रिया पुल्लिंग है।
वह जाती है। 'वह' स्त्रीलिंग है, क्योंकि जाती क्रिया स्त्रीलिंग है।

11. हिन्दी में आठ कारक माने गए हैं–कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

12. 'घ' का उच्चारण कण्ठ से होता है यह कण्ठ्य वर्ण (क ख ग घ ङ) का वर्ण है।

19. अनुपम = जिसकी कोई उपमा (समानता) न हो। अतः अद्वितीय इसका पर्यायवाची है। अर्थ है–जिसके समान दूसरा न हो।

@UPSC_THOUGHT

हिन्दी

@UPSC_THOUGHT

अध्याय 1. हिन्दी भाषा

- हिन्दी भाषा का प्रादुर्भाव कब हुआ? **—1000 ई. के आस-पास**
- भाषाओं का विकास क्रम किस प्रकार है?
  संस्कृत → पाली → प्राकृत → अपभ्रंश → हिन्दी
- हिन्दी से ठीक पहले की भाषा कौन सी थी? **—अपभ्रंश**
- हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है? **—देवनागरी लिपि में**

> YUKTI ***ज्ञान***—*हिन्दी भारत की 'राजभाषा' (सरकारी कामकाज की भाषा) है। संविधान के भाग 17, अध्याय 1 की धारा 343 (i) में हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया है, जिसकी लिपि देवनागरी होगी।*

- **हिन्दी भारत के लगभग 70 करोड़ लोग बोलते-समझते हैं। इसलिए यह देश के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है और इसी कारण यह भारत की राष्ट्रभाषा कही जाती है।**
- हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है? **—14 सितम्बर**

> YUKTI ***ज्ञान***—*14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, क्योंकि संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को 'हिन्दी' भारत की राजभाषा होगी—यह प्रस्ताव पास किया था।*

- हिन्दी उत्तर भारत के कितने प्रान्तों की भाषा है? **—10**

> YUKTI ***ज्ञान***—*हिन्दी उत्तर भारत के 10 प्रान्तों की भाषा है। इनके नाम हैं— हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखण्ड। इसे हिन्दी क्षेत्र अथवा हिन्दी प्रदेश भी कहा जाता है।*

- हिन्दी के अन्तर्गत पाँच उपभाषाएँ और 18 बोलियाँ हैं। इनके नाम हैं—
  - **(i)** पश्चिमी हिन्दी; उपभाषा—ब्रज, खड़ी बोली, कन्नौजी, बुंदेली, बांगरू।
  - **(ii)** पूर्वी हिन्दी; उपभाषा—अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
  - **(iii)** बिहारी हिन्दी; उपभाषा—भोजपुरी, मैथिली, मगही।
  - **(iv)** राजस्थानी हिन्दी; उपभाषा—मेवाती, मालवी, मारवाड़ी, जयपुरी।
  - **(v)** पहाड़ी हिन्दी; उपभाषा—गढ़वाली, कुमायूँनी, नेपाली।
- हिन्दी में प्रकाशित भारत का पहला समाचार-पत्र कौन-सा था? **—उदन्त मार्तण्ड**



> YUKTI ***ज्ञान***—*'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार-पत्र था, जो कलकत्ता से 1826 ई. में पं. जुगल किशोर के सम्पादन में प्रकाशित हुआ था।*

- पश्चिमी हिन्दी और उसकी बोलियों का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ, जबकि पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- पंजाब, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र, आन्ध्र में भी प्रान्तीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी बोली-समझी जाती है।
- हिन्दी फिल्मों, टेलीविजन कार्यक्रमों, रेडियो एवं टीवी पर प्रसारित होने वाली हिन्दी खेल कमेंटरी ने हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में विशेष सहायता की है।
- वर्तमान में हिन्दी अखबारों की संख्या 300 से 350 के आस-पास है। इतनी बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकाएँ किसी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित की जातीं।
- हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा भी है, क्योंकि दो भिन्न प्रान्तीय भाषाएँ बोलने वाले लोग पारस्परिक सम्पर्क के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं।
- कुम्भ मेले में, जहाँ पूरे देश के लोग आते हैं, सम्पर्क के लिए हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।
- संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं का उल्लेख है? **—22**

> YUKTI ***ज्ञान***—*संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है— **1.** असमिया, **2.** गुजराती, **3.** कन्नड़, **4.** कोंकणी, **5.** मणिपुरी, **6.** नेपाली, **7.** पंजाबी, **8.** सिन्धी, **9.** तेलुगु, **10.** बोडो, **11.** संथाली, **12.** बंगला, **13.** हिन्दी, **14.** कश्मीरी, **15.** मलयालम, **16.** मराठी, **17.** उड़िया, **18.** संस्कृत, **19.** तमिल, **20.** उर्दू, **21.** मैथिली, **22.** डोगरी।*

- हिन्दी किस परिवार के अन्तर्गत आती है? **—भारोपीय परिवार**

> YUKTI ***ज्ञान***—*हिन्दी भारोपीय परिवार के अन्तर्गत आने वाली आर्य भाषा है। आर्य भाषा काल के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ इस प्रकार हैं—*
> - *प्राचीन आर्य भाषा—संस्कृत।*
> - *मध्यकालीन आर्य भाषाएँ—पाली, प्राकृत, अपभ्रंश।*
> - *आधुनिककालीन आर्य भाषाएँ हैं— **1.** हिन्दी, **2.** पंजाबी, **3.** मराठी, **4.** बंगला, **5.** सिन्धी, **6.** गुजराती, **7.** उड़िया, **8.** असमिया।*

- उत्तर भारत में आर्य भाषाएँ बोली जाती हैं, तो दक्षिण भारत में द्रविड़ परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनकी संख्या चार है—
  1. तेलुगु (आन्ध्र प्रदेश में), **3.** तमिल (तमिलनाडु में),
  2. कन्नड़ (कर्नाटक में), **4.** मलयालम (केरल में)।
- *वर्तमान में जो हिन्दी शिक्षा, संचार, प्रशासन आदि में प्रयुक्त हो रही है, उसका मूल आधार खड़ी बोली है, जो पश्चिमी हिन्दी की एक बोली है तथा दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, सहारनपुर की बोली है। यह शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है।*
- **देवनागरी वर्णमाला—**
  ध्यान रहे यह सरकारी देवनागरी वर्णमाला नहीं है। इसमें कुल 52 वर्ण हैं जिसमें से स्वर वर्ण 11 हैं तथा शेष 41 वर्ण व्यंजन हैं। यथा—

- **स्वर** – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = 11
- **अनुस्वार** – अं = 1
- **विसर्ग** – अः = 1
- व्यंजन – क, ख, ग, घ, ङ –कंठ्य
  च, छ, ज, झ, ञ –तालव्य
  ट, ठ, ड, ढ, ण –मूर्धन्य } स्पर्श व्यंजन
  त, थ, द, ध, न –दंत्य
  प, फ, ब, भ, म –ओष्ठ्य
  य, र, ल, व –अंतस्थ – 4
  श, ष, स, ह –ऊष्म – 4
  क्ष, त्र, ज्ञ, श्र –संयुक्त व्यंजन – 4
  ड़, ढ़ –उत्क्षिप्त अथवा द्विगुण व्यंजन

टिप्पणी–

1. भाषा की न्यूनतम इकाई ध्वनि है।
2. ध्वनियों से मिलकर वर्ण बनते हैं।
3. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहा जाता है।
4. हिन्दी देवनागरी वर्णमाला में लिखी जाती है।
5. अनुस्वार, विसर्ग को किशोरी दास वाजपेयी ने अयोगवाह नाम देकर इन्हें व्यंजन माना है, स्वर नहीं।
6. ड़, ढ़, ड और ढ की अनुपूरक ध्वनियाँ हैं। ड, ढ का प्रयोग शब्द के प्रारम्भ में तथा ड़, ढ़ का प्रयोग शब्द के मध्य में या अन्त में होता है। यथा–
   डलिया, ढाल
   लड़का, पढ़ना
   लड़ा, पढ़ा
7. सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अतः वहाँ कुल वर्णों की संख्या 52 – 3 = 49 ही मानी गयी है।
8. देवनागरी में कुल कितने वर्ण हैं। इस पर विद्वान एकमत नहीं हैं,
9. संयुक्त व्यंजन – दो व्यंजनों के मेल से बने हैं।
   क्ष = क् + ष
   त्र = त् + र
   ज्ञ = ज् + ञ
   श्र = श् + र

✦ **देवनागरी वर्णमाला–(सरकारी)**

- **स्वर**–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- **अनुस्वार**–अं
- **विसर्ग**–अः
- **व्यंजन**– क, ख, ग, घ, ङ –कण्ठ्य
  च, छ, ज, झ, ञ –तालव्य
  ट, ठ, ड, ढ, ण –मूर्धन्य
  त, थ, द, ध, न –दंत्य
  प, फ, ब, भ, म –ओष्ठ्य
  य, र, ल, व –अंतस्थ
  श, ष, स, ह –ऊष्म
  क्ष, त्र, ज्ञ –संयुक्त व्यंजन

YUKTI ***ज्ञान***–*1. देवनागरी वर्णमाला (सरकारी स्तर) में 11 स्वर हैं। 2. देवनागरी वर्णमाला में 38 व्यंजन हैं। 3. देवनागरी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन मिलाकर कुल 49 वर्ण हैं।*

- 'अं' को अनुस्वार, 'अः' को विसर्ग माना गया है। ये दोनों स्वर न होकर व्यंजन ध्वनियाँ हैं। तीसरी ध्वनि अनुनासिक भी है। जैसे–
  अनुस्वार– अंगद, अंग, अंक
  विसर्ग– दुःख
  अनुनासिक– आँगन, आँवला, हँसना
- 'श्र' को सरकारी देवनागरी में स्थान प्राप्त नहीं है।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. साहित्यिक अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी किसने कहा था ?

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) शिवसिंह सेंगर (d) राहुल सांकृत्यायन

उत्तर—(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

2. हिन्दी का सम्बन्ध किससे है ?

(a) शौरसेनी अपभ्रंश (b) अपभ्रंश
(c) प्राकृत (d) पश्चिमी प्राकृत

उत्तर—(a) शौरसेनी अपभ्रंश (डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा)

3. इनमें से कौन-सी रचना अवधी में नहीं है ?

(a) पद्मावत (b) मधुमालती
(c) कवितावली (d) हंस जवाहिर

उत्तर—(c) कवितावली

YUKTI ***ज्ञान***–*कवितावली, ब्रजभाषा में तुलसीदास द्वारा रचित मुक्तक काव्य है।*

4. भोजपुरी, मगही, मैथिली किस उपभाषा की बोलियाँ हैं ?

छत्तीसगढ़ प्राध्यापक

(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी
(c) बिहारी (d) राजस्थानी

उत्तर—(c) बिहारी

YUKTI ***ज्ञान***–*भोजपुरी, मैथिली, मगही बिहारी उपभाषा की बोलियाँ हैं।*

5. छत्तीसगढ़ी बोली किस उपभाषा की है ? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

उत्तर—(a) पूर्वी हिन्दी

YUKTI ***ज्ञान***–*पूर्वी हिन्दी की तीन बोलियाँ हैं– अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।*

6. ब्रजभाषा का विकास किस अपभ्रंश से हुआ ?

(a) शौरसेनी (b) मागधी

@UPSC_THOUGHT

(c) अर्द्धमागधी (d) पैशाची

उत्तर—(a) शौरसेनी

YUKTI ज्ञान—*ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी की बोली है जो शूरसेन प्रदेश में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।*

7. हिन्दी को राजभाषा कब घोषित किया गया?

(a) 26 जनवरी, 1950 (b) 14 सितम्बर, 1949

(c) 15 अगस्त, 1947 (d) 14 सितम्बर, 1965

उत्तर—(b) 14 सितम्बर, 1949

YUKTI ज्ञान—*14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा और इसकी लिपि देवनागरी होने का प्रस्ताव पास किया था।*

8. नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष है—

(a) 1980 ई. (b) 1890 ई.

(c) 1893 ई. (d) 1917 ई.

उत्तर—(c) 1893 ई.

YUKTI ज्ञान—*1893 ई. में श्यामसुन्दर दास, पं. रामनारायण मिश्र, ठाकुर शिवकुमार सिंह ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। इसके प्रथम सभापति राधाकृष्णदास बनाए गए।*

9. 'खालिकबारी' किसकी रचना है?

(a) मुल्ला दो प्याजा (b) रहीम

(c) अमीर खुसरो (d) अकबर

उत्तर—(c) अमीर खुसरो

YUKTI ज्ञान—*खालिकबारी हिन्दी खड़ी बोली के प्रथम कवि अमीर खुसरो की रचना है, वस्तुतः यह तुर्की, अरबी, फारसी के शब्दों का हिन्दी अर्थ बताने वाला शब्द-कोश है।*

10. कौन-सी बोली उत्तर प्रदेश में नहीं बोली जाती है ?

(a) कन्नौजी (b) ब्रज

(c) खड़ी बोली (d) मैथिली

उत्तर—(d) मैथिली

YUKTI ज्ञान—*मैथिली बिहार के मिथिला क्षेत्र में बोली जाती है और बिहारी उपभाषा के अन्तर्गत आती हैं, शेष तीनों पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ हैं और उ. प्र. में बोली जाती हैं।*

11. इसमें से कौन-सा वर्ण कण्ठ्य है? **उ.प्र. बी.एड.**

(a) य (b) प

(c) ग (d) त

उत्तर—(c) ग

YUKTI ज्ञान—*व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान, उच्चारण प्रयत्न के आधार पर दिया गया है। कंठ्य व्यंजनों का उच्चारण कंठ से होता है। 'क' वर्ग के सभी व्यंजन कंठ्य हैं अतः 'ग' कठ्य व्यंजन है, शेष तीनों कंठ्य ध्वनियाँ नहीं हैं य– अंतस्थ, प–ओष्ठ्य, त–दंत्य व्यंजन है।*

12. संयुक्त व्यंजन क्ष किन दो ध्वनियों के मेल से बना है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) क् + ष (b) क् + थ

(c) च् + छ (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) क् + ष

YUKTI ज्ञान—*क्ष संयुक्त व्यंजन है जिसमें क् + ष ध्वनियाँ समाविष्ट हैं। यथा– पक्षी = PAKSHI, शेष अशुद्ध हैं।*

13. देवनागरी (सरकारी) वर्णमाला में कुल कितने वर्ण हैं। **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) 50 (b) 51

(c) 49 (d) 52

उत्तर—(c) 49

YUKTI ज्ञान—*सरकारी देवनागरी वर्णमाला में कुल 49 वर्ष है। वहाँ ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है।*

14. देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियों की संख्या है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) 10 (b) 11

(c) 12 (d) 13

उत्तर—(b) 11

YUKTI ज्ञान—*देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियाँ 11 हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।*

15. अघोष व्यंजन कौन-सा है? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) ग (b) द

(c) क (d) ब

उत्तर—(c) क

YUKTI ज्ञान—*अघोष व्यंजन – 'क' है क्योंकि इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियाँ निकट नहीं होतीं। शेष तीनों अघोष ध्वनियाँ हैं।*

नोट— स्वरों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है—

1. **ह्रस्व स्वर** – अ, इ, उ, ऋ, **दीर्घ स्वर —** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
2. **मूल स्वर** – अ, इ, उ, ऋ, **संयुक्त स्वर —** ए = अ + इ
ऐ = अ + ए
ओ = अ + उ
औ = अ + ओ
3. **अग्रस्वर** — इ, ई, ए, ऐ, **मध्य स्वर —** अ,
पश्च स्वर — आ, उ, ऊ, ओ, औ
4. व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान, प्रयत्न के आधार पर किया गया है।

   प्रयत्न के आधार पर— स्पर्श, स्पर्श संघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, प्रकम्पित, उत्क्षिप्त, संघर्षी, संघर्षहीन, अप्रवाह।
5. **उच्चारण स्थान के आधार पर**— ओष्ठ्य, दंत्य, कंठ्य, वर्त्स्य, तालव्य जिह्वामूलीय, स्वरयंत्रमुखी, पूर्व तालव्य, पश्च तालव्य।

अध्याय 2. हिन्दी व्याकरण

✦ हिन्दी का पहला व्याकरण ग्रन्थ किसने लिखा? **—जे. जे. केटलर ने**

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

YUKTI ***ज्ञान***–*हिन्दी का पहला व्याकरण ग्रन्थ* ***जे. जे. केटलर*** *ने लिखा। इनके अतिरिक्त सन् 1921 में कामताप्रसाद गुरु ने 'हिन्दी व्याकरण' और सन् 1928 में किशोरीदास वाजपेयी ने 'हिन्दी शब्दानुशासन' नामक प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ लिखे।*

- हिन्दी व्याकरण के पाँच प्रमुख तत्त्व हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय। इनमें से प्रथम चार विकारी हैं और अन्तिम अविकारी।

2.1 संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के प्रमुखतः तीन भेद हैं—

(1) व्यक्तिवाचक, **(2)** जातिवाचक, **(3)** भाववाचक।

(1) किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु का बोध कराने वाली संज्ञा 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कही जाती है; यथा—राम, आगरा, गोदान।

(2) जो संज्ञाएँ किसी एक ही प्रकार की समस्त वस्तुओं का बोध कराती हैं, उन्हें 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे—लड़की, नदी, पुस्तक।

(3) जो संज्ञा किसी भाव का बोध कराती है, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहा जाता है; जैसे—प्रेम, क्रोध, दया, मिठास।

- हिन्दी में **लिंग** दो प्रकार के होते हैं—पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग। संस्कृत में जो शब्द नपुंसक लिंग थे, वे हिन्दी में या तो पुल्लिग बन गये या स्त्रीलिंग।
- हिन्दी में **वचन** दो प्रकार के होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन।
- हिन्दी में आठ कारक हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

2.2 सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थानापन्न होते हैं, वे **सर्वनाम** कहलाते हैं।

- हिन्दी में सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं। इनकी तालिका इस प्रकार है—

1.	पुरुषवाचक	— (अ) उत्तम पुरुष—मैं, हम (ब) मध्यम पुरुष—तू, तुम, आप (आदरार्थ) (स) अन्य पुरुष—वह, वे
2.	निश्चयवाचक	— (अ) निकटवर्ती—यह, ये (ब) दूरवर्ती—वह, वे
3.	अनिश्चयवाचक	— (अ) प्राणिबोधक—कोई (ब) वस्तुबोधक—कुछ
4.	सम्बन्धवाचक	— जो, सो
5.	प्रश्नवाचक	— (अ) प्राणिबोधक—कौन (ब) वस्तुबोधक—क्या
6.	निजवाचक	— स्वयं, आप ही

2.3 विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द **विशेषण** कहे जाते हैं। जिसकी विशेषता बतायी जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं और जो शब्द विशेषता बताते हैं, वे **विशेषण** कहे जाते हैं। काला घोड़ा शब्द में 'घोड़ा' विशेष्य (संज्ञा) है और 'काला' उसका विशेषण है।

- विशेषण चार प्रकार के होते हैं—

1.	गुणवाचक	— नया, पुराना, लाल, पीला, मोटा, पतला, अच्छा, बुरा, गोल, चौकोर आदि।
2.	संख्यावाचक	— बीस, पचास, दस, सौ—निश्चित संख्यावाचक; कुछ, कई—अनिश्चित संख्यावाचक।
3.	परिमाण बोधक	— दस किलो, पाँच क्विण्टल, दस लीटर, बहुत-सा, थोड़ा, अधिक।
4.	सार्वनामिक विशेषण	— **वह** घर मेरा है। 'वह' सार्वनामिक विशेषण। **कोई** आदमी आ रहा है। 'कोई' सार्वनामिक विशेषण। **ऐसा** आदमी नहीं देखा। 'ऐसा' सार्वनामिक विशेषण।

2.4 क्रिया

जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाये, उसे **क्रिया** कहते हैं। जैसे—हँसना, खाना, पीना, जाना, चढ़ना, रोना, लिखना आदि।

- क्रिया मूलतः दो प्रकार की होती है—अकर्मक एवं सकर्मक। जिन क्रियाओं का कर्म होता है या हो सकता है, वे **सकर्मक क्रियाएँ** कही जाती हैं, जैसे–खाना (रोटी खाना), पीना (दूध पीना) आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं, किन्तु जिनका कर्म हो ही नहीं सकता, जैसे—रोना, सोना, हँसना, आदि। इनका कर्म सम्भव ही नहीं है। अतः ये **अकर्मक क्रियाएँ** कहलाती हैं।

YUKTI ***ज्ञान***–*क्रिया का मूल रूप* ***धातु*** *(Root) कहा जाता है।*

- **वाच्य** क्रिया का रूपान्तरण है। यह तीन प्रकार का होता है—कर्तृवाच्य (कर्ता की प्रधानता) यथा—मोहन ने दूध पीया। कर्मवाच्य (कर्म की प्रधानता) यथा–**लेख** लिखा गया। भाववाच्य (भाव की प्रधानता) यथा–मुझसे **चला** नहीं जाता।
- वाक्य में क्रिया किसका अनुसरण कर रही है—इस आधार पर तीन प्रकार के **प्रयोग** होते हैं—कर्तरि प्रयोग (क्रिया कर्ता के अनुसार), कर्मणि प्रयोग (क्रिया कर्म के अनुसार), भावे प्रयोग (क्रिया सदैव पुल्लिग, एकवचन अन्य पुरुष की होती है)।
- क्रिया तीन कालों की हो सकती है–वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्य काल, इन कालों के निम्न भेद हैं–

1. वर्तमान काल के पांच भेद माने गए हैं–

(क) सामान्य वर्तमान – राम पढ़ता है।
(ख) तात्कालिक वर्तमान – राम पढ़ रहा है।
(ग) पूर्ण वर्तमान – राम पढ़ चुका है।
(घ) संदिग्ध वर्तमान – राम पढ़ता होगा।
(ङ) संभाव्य वर्तमान – शायद राम पढ़ता हो।

2. भूतकाल के छः भेद है–

(क) सामान्य भूतकाल – राम गया।
(ख) आसन्न भूतकाल – राम गया है।

(ग) पूर्ण भूतकाल – राम गया था।
(घ) अपूर्ण भूतकाल – राम जा रहा था।
(ङ) संदिग्ध भूतकाल – राम गया होगा।
(च) हेतुहेतुमद् भूतकाल – राम जाता।

3. भविष्यत् काल के तीन भेद हैं–

(क) सामान्य भविष्यत् काल – राम जायेगा।
(ख) सम्भाव्य भविष्यत् काल – संभव है, राम जाए।
(ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल – मोहन आए, तो राम जाए।

2.5 अव्यय

ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, **अव्यय** कहलाते हैं।

- अव्यय **चार** प्रकार के होते हैं—
  (1) क्रिया-विशेषण, (2) सम्बन्धबोधक,
  (3) समुच्चयबोधक, (4) विस्मयादिबोधक।
- क्रिया-विशेषण (अव्यय) चार प्रकार के होते हैं। यथा—
  1. रीतिवाचक (ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे, तेज, अचानक, कदाचित् आदि)
  2. स्थानवाचक (यहाँ, वहाँ, भीतर, इधर, उधर, दायें, बायें)
  3. कालवाचक (आज, कल, अभी, तुरन्त),
  4. परिमाणवाचक (बहुत, अत्यंत, जरा, थोड़ा, कम, अधिक)।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. सभी श्रोता **यथास्थान** बैठे थे। रेखांकित (काला) शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**
(a) अव्यय (b) क्रिया-विशेषण
(c) संज्ञा (d) विशेषण
उत्तर—(a) अव्यय,

YUKTI ***ज्ञान***–*क्योंकि यह शब्द विकृत नहीं होता। यथा– राम यथास्थान बैठा था। सीता यथास्थान बैठी थी। लड़के यथास्थान बैठे थे।*

2. कवि का स्त्रीलिंग शब्द है— **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**
(a) कवीषा (b) कवियत्री
(c) कवियित्री (d) कवयित्री
उत्तर—(d) कवयित्री

YUKTI ***ज्ञान***–यथा– महादेवी वर्मा हिन्दी की छायावादी कवयित्री हैं।

3. जटिल विशेषण के लिए उपयुक्त विशेष्य क्या है?
(a) दृष्टि (b) प्रश्न
(c) समस्या (d) स्थिति
उत्तर—(c) समस्या

YUKTI ***ज्ञान***–*विशेष्य–उस शब्द को कहते हैं जिसकी विशेषता कोई विशेषण बताता है इसलिए विशेष्य – या तो संज्ञा होती है या सर्वनाम जटिल समस्या शब्द में 'जटिल' विशेषण है और 'समस्या' संज्ञा है।*

4. मानव से बनी उपयुक्त भाववाचक संज्ञा है— **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**
(a) मनस्वी (b) मानवता
(c) मनुष्यत्व (d) आदमीयत
उत्तर—(b) मानवता

YUKTI ***ज्ञान***–*'ता' प्रत्ययान्त शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। इसलिए मानव संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनेगी – मानवता।*

5. उत्तम पुरुष बहुवचन का सम्बन्ध कारक है—
(a) तुम्हारा (b) उसका
(c) मेरा (d) हमारा
उत्तर—(d) हमारा

YUKTI ***ज्ञान***–*उत्तम पुरुष बहुवचन का सम्बन्ध कारक है– 'हमारा' क्योंकि 'तुम्हारा' मध्यम पुरुष एकवचन का सम्बन्ध कारक है, 'मेरा' उत्तम पुरुष एकवाचक और 'उसका' अन्य पुरुष एकवचन का कारक है।*

6. 'परिश्रमी' किस प्रकार का विशेषण है ? **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**
(a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक
(c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक
उत्तर—(a) गुणवाचक

YUKTI ***ज्ञान***–*परिश्रमी का अर्थ है परिश्रम करने वाला – यह गुणवाचक विशेषण का उदाहरण है।*

7. 'ध्यानपूर्वक' शब्द है—
(a) संज्ञा (b) विशेषण
(c) रीतिवाचक क्रिया–विशेषण (d) परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण
उत्तर—(c) रीतिवाचक क्रिया–विशेषण

YUKTI ***ज्ञान***–*'ध्यानपूर्वक' रीतिवाचक क्रिया विशेषण है क्योंकि उसने ध्यानपूर्वक पढ़ा। इस वाक्य में 'ध्यानपूर्वक' पढ़ने (क्रिया) की रीति को बता रहा है।*

8. कमरे में **कोई** छिपा हुआ है; में रेखांकित शब्द क्या है ?
(a) प्रश्नवाचक सर्वनाम (b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(c) निजवाचक सर्वनाम (d) सम्बन्धवाचक सर्वनाम
उत्तर—(b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

YUKTI ***ज्ञान***–*कोई शब्द अनिश्चयवाचक, प्राणिबोधक है, अतः यह अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।*

9. मोहन प्रकाश जी ..... हिन्दी पढ़ाते हैं। रिक्त स्थान की पूर्ति अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम से कीजिए।
(a) मुझे (b) तुम्हें
(c) उन्हें (d) हमें
उत्तर—(c) उन्हें

YUKTI ***ज्ञान***–*मुझे – उत्तम पुरुषवाचक एक वचन सर्वनाम*
तुम्हें – मध्यम पुरुषवाचक एक वचन सर्वनाम
उन्हें – अन्य पुरुषवाचक बहुवचन सर्वनाम
हमें – उत्तम पुरुषवाचक, बहुवचन सर्वनाम

10. हमें **गरीबों** पर दया करनी चाहिए; में रेखांकित शब्द है—

@UPSC_THOUGHT

(a) विशेषण (b) अव्यय
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम
उत्तर—(c) संज्ञा

11. सर्वनाम के कितने भेद होते हैं ? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) 4 (b) 5
(c) 6 (d) 3
उत्तर—(c) 6

YUKTI ***ज्ञान***—*सर्वनाम के छः भेद हैं— (1) पुरुषवाचक, (2) निश्चयवाचक, (3) अनिश्चयवाचक, (4) संबंधवाचक, (5) निजवाचक, (6) प्रश्नवाचक सर्वनाम।*

12. 'लड़का' किस प्रकार की संज्ञा है? उ.प्र. बी.एड.
(a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) द्रव्यवाचक (d) भाववाचक
उत्तर—(b) जातिवाचक

YUKTI ***ज्ञान***—*लड़का—जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी 'लड़का जाति' वालों का बोधक है।*

13. वह **धीरे-धीरे** चल रहा था, इस वाक्य में रेखांकित शब्द है—
(a) विशेषण (b) क्रिया विशेषण
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम
उत्तर—(b) क्रिया विशेषण

YUKTI ***ज्ञान***—*'धीरे-धीरे' रीतिवाचक क्रिया विशेषण है क्योंकि यह चलना क्रिया की रीति (विशेषता) बता रहा है।*

14. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) चार (b) पाँच
(c) छह (d) आठ
उत्तर—(a) चार

YUKTI ***ज्ञान***—*विशेषण चार प्रकार के होते हैं — (1) गुणवाचक, (2) संख्यावाचक, (3) सार्वनामिक, (4) परिमाणवाचक विशेषण।*

15. चाय में **कुछ** पड़ा है? इस वाक्य में रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) विशेषण (b) सर्वनाम
(c) संज्ञा (d) अव्यय
उत्तर—(b) सर्वनाम

YUKTI ***ज्ञान***—*'कुछ' अनिश्चयवाचक अप्राणिबोधक सर्वनाम है।*

अध्याय 3. शब्द रचना

हिन्दी में नवीन शब्दों की रचना (निर्माण) सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय द्वारा की जाती है।

3.1 सन्धि

दो शब्दों का मेल होने पर जब दो वर्ण पास-पास आते हैं, तब उनमें विकार सहित जो मेल होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

✦ सन्धि तीन प्रकार की होती है—
1. स्वर सन्धि, **2.** व्यंजन सन्धि, **3.** विसर्ग सन्धि।

1. स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं—दीर्घ, गुण, यण, वृद्धि, अयादि स्वर सन्धि।

i. **दीर्घ सन्धि के उदाहरण**—हिमालय (हिम + आलय), गिरीश (गिरि + ईश), रवीन्द्र (रवि + इन्द्र), कवीन्द्र (कवि + इन्द्र), वधु + उत्सव = वधूत्सव, शिव + आलय = शिवालय।
दीर्घ सन्धि के अन्य उदाहरण—कपि + ईश = कपीश, भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, परम + अर्थ = परमार्थ, महा + आत्मा = महात्मा, पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, भानु + उदय = भानूदय।

ii. **गुण सन्धि के उदाहरण**—मृगेन्द्र (मृग + इन्द्र), महेश (महा + ईश), सत्येन्द्र (सत्य + इन्द्र), गजेन्द्र (गज + इन्द्र), भाग्योदय (भाग्य + उदय), देवर्षि (देव + ऋषि), महा + ऋषि = महर्षि, नयन + उत्सव = नयनोत्सव।
गुण सन्धि के अन्य उदाहरण—सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र, रमा + ईश = रमेश, मानव + इन्द्र = मानवेन्द्र, यथा + इष्ट = यथेष्ट, शीत + ऋतु = शीतर्तु, सप्त + ऋषि = सप्तर्षि, आत्मा + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग, पद + उन्नत्ति = पदोन्नति।

iii. **यण सन्धि के उदाहरण**—इत्यादि (इति + आदि), स्वागत (सु + आगत), पित्रादेश (पितृ + आदेश), यद्यपि (यदि + अपि), अत्यधिक (अति + अधिक), प्रत्युपकार (प्रति + उपकार), अनु + एषण = अन्वेषण।
यण सन्धि के अन्य उदाहरण— अनु + इति = अन्विति, अति + उत्साह = अत्युत्साह, अति + औदार्य = अत्यौदार्य, तनु + अंगी = तन्वंगी, सु + अच्छ = स्वच्छ।

iv. **वृद्धि सन्धि के उदाहरण**—एकैक (एक + एक), मतैक्य (मत + ऐक्य), सदैव (सदा + एव), महौध (महा + ओध), परमौषध (परम + ओषध)।
वृद्धि सन्धि के अन्य उदाहरण—परम + ओजस्वी = परमौजस्वी, अधुना + एव = अधुनेव, महा + ओजस्वी = महौजस्वी, पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा, एक + औषधि = एकौषधि।

v. **अयादि सन्धि के उदाहरण**—पवन (पो + अन), पावन (पौ + अन), नयन (ने + अन), नायक (नै + अक), नायिका (नै + इका), भो + अन = भवन, भौ + उक = भावुक।
अयादि सन्धि के अन्य उदाहरण—शै + अक = शायक, शे + अन = शयन, चे + अन = चयन, पौ + अक = पावक, पौ + अस = पावस।

2. व्यंजन सन्धि—व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रूपान्तरण होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। यथा—जगत् + नाथ (जगन्नाथ), सत् + चरित्र (सच्चरित्र), अनु + स्थान (अनुष्ठान), शरत् + चन्द्र (शरच्चन्द्र), आ + छादन (आच्छादन), षट् + मास = षण्मास।

3. विसर्ग सन्धि—विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यथा—मनः + रथ (मनोरथ), दुः + गम (दुर्गम), मनः + ज (मनोज), मनः + अनुकूल (मनोनुकूल), दुः + साहस (दुस्साहस), पुनः + च (पुनश्च), निः + पक्ष = निष्पक्ष, दुः + बल = दुर्बल।

@UPSC_THOUGHT

विसर्ग सन्धि के अन्य उदाहरण—मनः + योग = मनोयोग, निः + धन = निर्धन, तमः + गुण = तमोगुण, पुरः + कार = पुरस्कार, दुः + दशा = दुर्दशा, दुः + आत्मा = दुरात्मा।

3.2 समास

समास का अर्थ है, संक्षिप्त करना। जब दो सार्थक पद पास-पास आते हैं और उनका एक पद में सम्यक् निक्षेप होता है, तब उसे समास कहा जाता है। समास बनाने की प्रक्रिया में विभक्तियाँ और योजक चिह्नों का लोप हो जाता है।

✦ हिन्दी में छह समास माने गये हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्विगु, द्वन्द्व।

1. **अव्ययीभाव समास**—अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होता है और समस्त पद अव्यय की भाँति काम करते हैं। जैसे—यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), आजीवन (जीवन-पर्यन्त), यथाक्रम (क्रम के अनुसार), अतीन्द्रिय (इन्द्रियों से परे), अत्यधिक (अधिक से भी अधिक), अनुस्मारक (स्मृति दिलाने वाला)।

   अव्ययीभाव समास के अन्य उदाहरण—यथाविधि = विधि के अनुसार, भरपेट = पेट भरकर, आजन्म = जन्म पर्यन्त, प्रतिदिन = प्रत्येक दिन, हरघड़ी = हरेक घड़ी।

2. **तत्पुरुष समास**—तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—राजकुमार (राजा का कुमार), घुड़सवार (घोड़े पर सवार), जेबकट (जेब को काटने वाला), तुलसीकृत (तुलसी द्वारा रचित), ऋणमुक्त (ऋण से मुक्त), हस्तलिखित, (हाथ से लिखा हुआ), प्रत्यक्ष (आँख के आगे)।

   तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण—यशप्राप्त = यश को प्राप्त, कठफोड़वा = काठ को फोड़ने वाला, कष्टसाध्य = कष्ट से साध्य, मदांध = मद से अंधा, बलिपशु = बलि के लिए पशु, देवालय = देव के लिए आलय, श्रापमुक्त = श्राप से मुक्त, भाग्यहीन = भाग्य से हीन, भावातीत = भाव से अतीत, सेनापति = सेना का पति, मंत्रिपरिषद = मंत्रियों की परिषद, नराधम = नरों में अधम, शिलालेख = शिला पर लिखा लेख, गृहस्थ = गृह में स्थित, सुखदायी = सुख को देने वाला, पादप = पैर से (जलधारा) पीने वाला।

3. **कर्मधारय समास**—कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण—विशेष्य या उपमेय—उपमान सम्बन्ध होता है। यथा—नीलकमल (नीला है जो कमल), पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम), महापुरुष (महान् है जो पुरुष), शुभागमन (शुभ है जो आगमन), कमलनयन (कमल जैसे नेत्र), घनश्याम (घन जैसा श्याम)।

   कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण—नवयुवक = नव है जो युवक, हताश = हत है जिसकी आशा, सज्जन = सत् है जो जन, बहुमूल्य = बहुत है जिसका मूल्य, कुकृत्य = कुत्सित है जो कृत्य, परमात्मा = परम है जो आत्मा, पीताम्बर = पीत है जिसका अम्बर, नवागंतुक = नव है जो आगंतुक।

4. **बहुव्रीहि समास**—यह अन्य पद प्रधान समास है, जैसे—गजानन (गज के समान है आनन जिसका वह अर्थात् गणेश), पंचानन (पाँच हैं मुख जिसके वह अर्थात् शंकर जी), चतुर्मुख (चार हैं मुख जिसके वह अर्थात् ब्रह्मा जी), हंसवाहिनी (हंस है वाहन जिसका वह अर्थात् सरस्वती), चक्रधर (चक्र को धारण करने वाले अर्थात् विष्णु)।

   बहुव्रीहि समास के अन्य उदाहरण—दशानन = दश हैं जिसके आनन वह अर्थात् रावण, त्रिनेत्र = तीन हैं नेत्र जिसके वह अर्थात् शंकर जी, चंद्रशेखर = चंद्रमा है शिखर (ललाट) पर जिसके वह अर्थात् शंकर जी, सज्जन = सत है जो जन, मंदाग्नि = मंद है जो अग्नि, महासागर = महान है जो सागर।

5. **द्विगु समास**—इसका पहला पद संख्यावाची होता है और पूरा पद समाहार का बोधक होता है। यथा—त्रिपदी (तीन पैरों वाली तिपाई), अठन्नी (आठ आनों का समूह), त्रिभुज (तीन हैं भुजाएँ जिसकी ऐसी आकृति), सप्तर्षि (सात ऋषियों का समूह), पंचतत्व (पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि, वायु का समाहार), त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आँवला का समाहार), पंचवटी (पाँच वट वृक्षों का समाहार)।

   द्विगु समास के अन्य उदाहरण—द्विगु = दो गायों का समूह, सप्ताह = सात दिनों का समूह, चौराहा = चार रास्तों का समाहार, नवरत्न = नौरत्नों का समाहार, चतुर्युग = चार युगों का समाहार।

6. **द्वन्द्व समास**—द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा इनके बीच योजक चिह्न लगा होता है जो या तो विकल्प सूचक होता है या समाहार सूचक। यथा—माता-पिता (माता और पिता), हानि-लाभ (हानि या लाभ), राम-लक्ष्मण (राम और लक्ष्मण), भाई-बहन (भाई और बहन), राजा-रंक (राजा या रंक)।

   द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण—नर-नारी = नर और नारी, ऊँच-नीच = ऊँचा और नीचा कुल का, बाप-दादा = बाप और दादा, मोटा-पतला = मोटा या पतला, मेल-मिलाप = मेल और मिलाप, अन्न-जल = अन्न और जल, राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'ज्ञानोदय' में कौन-सी सन्धि है?
   (a) विसर्ग सन्धि (b) गुण सन्धि
   (c) अयादि सन्धि (d) व्यंजन सन्धि
   उत्तर—(b) गुण सन्धि

   YUKTI *ज्ञान—ज्ञानोदय = ज्ञान + उदय (अ + उ = ओ) गुण संधि है।*

2. 'निराधार' का सन्धि विच्छेद है—
   (a) निरा + आधार (b) निस् + आधार
   (c) निर + आधार (d) निः + आधार
   उत्तर—(d) निः + आधार

   YUKTI *ज्ञान—निराधार = निः + आधार— विसर्ग संधि है।*

3. 'भानूदय' में कौन-सी सन्धि है?
   (a) गुण (b) अयादि
   (c) वृद्धि (d) दीर्घ
   उत्तर—(d) दीर्घ सन्धि

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

YUKTI **ज्ञान**—*भानूदय = भानु + उदय— दीर्घ संधि है।*

4. विसर्ग सन्धि किस शब्द में है ?

(a) अतएव (b) नरेन्द्र

(c) सज्जन (d) सदैव

उत्तर—(a) अतएव

YUKTI **ज्ञान**—*अतएव = अतः + एवं— विसर्ग संधि है। नरेन्द्र में गुणसंधि, सज्जन में व्यंजन संधि और सदैव में वृद्धि संधि।*

5. हाथों-हाथ में कौन-सा समास है?

(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष

(c) द्वन्द्व (d) द्विगु

उत्तर—(a) अव्ययीभाव

6. 'पीताम्बर' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव

(c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

उत्तर—(c)

YUKTI **ज्ञान**—*बहुव्रीहि—पीले हैं वस्त्र जिसके वह अर्थात् विष्णु। पीताम्बर – पीला है जो वस्त्र– कर्णधारय। पीला है जिसका वस्त्र वह विष्णु– बहुवीहि समास*

7. 'चरणकमल' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व

उत्तर—(b) कर्मधारय

YUKTI **ज्ञान**—*चरणकमल – कमल जैसे चरण – कर्मधारय समास*

8. 'घुड़सवार' में समास है—

(a) द्विगु (b) कर्मधारय

(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

उत्तर—(c) तत्पुरुष (घोड़े पर सवार)

9. 'नवरत्न' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) द्विगु (d) द्वन्द्व

उत्तर—(c) द्विगु

YUKTI **ज्ञान**—*नवरत्न = नौरत्नों का समूह – पहला पद संख्यावाची है, अतः द्विगु समास है।*

10. 'जलोष्मा' में सन्धि, समास बताइये— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) गुण, तत्पुरुष (b) दीर्घ, कर्मधारय

(c) अयादि, बहुव्रीहि (d) द्विगु, अव्ययीभाव

उत्तर—(a) गुण सन्धि

तत्पुरुष समास— जल की ऊष्मा

YUKTI **ज्ञान**—*जलोष्मा = जल + ऊष्मा – गुणसंधि है क्योंकि अ + उ = ओ*

11. 'आजीवन' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) द्विगु (d) अव्ययीभाव

उत्तर—(d) अव्ययीभाव

YUKTI **ज्ञान**—*आजीवन – जीवन पर्यन्त— अव्ययीभाव समास है, पूरा पद अव्यय है।*

12. 'चक्रपाणि दर्शनार्थ' में समास है—

(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय

(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

उत्तर—(c) अव्ययीभाव

YUKTI **ज्ञान**—*चक्रपाणि दर्शनार्थ – चक्रपाणि के दर्शन के लिए – पूरा पद अव्यय है, अतः अव्ययीभाव समास है।*

13. 'लम्बोदर' उदाहरण है—

(a) बहुव्रीहि का (b) तत्पुरुष का

(c) द्वन्द्व का (d) कर्मधारय का

उत्तर—(a) बहुव्रीहि

YUKTI **ज्ञान**—*लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका वह अर्थात गणेश जी – बहुव्रीहि समास (अन्य पद प्रधान)*

14. 'कमलनयन' में कौन-सा समास है?

(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व

(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

उत्तर—(c) कर्मधारय

YUKTI **ज्ञान**—*कमलनयन – कमल रूपी नयन – कर्मधारय (उपमेय उपमान सम्बन्ध)*

15. 'तिरंगा' में समास है—

(a) द्वन्द्व (b) द्विगु

(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

उत्तर—(b) द्विगु

YUKTI **ज्ञान**—*तिरंग = तीन रंगों का समूह – द्विगु (पहला पद संख्यावाची है)*

16. 'पुनर्गठन' का सन्धि विच्छेद होगा—

(a) पुनः + गठन (b) पुनर् + गठन

(c) पुन + गठन (d) पुनर + गठन

उत्तर—(a) पुनः + गठन

YUKTI **ज्ञान**—*पुनर्गठन = पुनः + गठन – विसर्ग संधि*

17. 'भवन' में कौन-सी सन्धि होगी? **उत्तर प्रदेश टी.ई.टी.**

(a) गुण (b) यण

(c) अयादि (d) दीर्घ

उत्तर—(c) अयादि सन्धि

YUKTI **ज्ञान**—*भवन = भो + अन – अयादि संधि*

18. विद्यार्थी का सही सन्धि विच्छेद है—

(a) विद्या + अर्थी (b) विद्या + र्थी

(c) विदा + अर्थी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) विद्या + अर्थी

> YUKTI ***ज्ञान***—*विद्यार्थी = विद्या + अर्थी – दीर्घ संधि (आ + अ = आ)*

19. सम् + गठन की सन्धि होगी—

(a) समगठन (b) संगठन

(c) सगठन (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) संगठन

> YUKTI ***ज्ञान***—*सम + गठन = संगठन – व्यंजन संधि है।*

20. इनमें किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

(a) अतएव (b) नरेन्द्र

(c) पावन (d) सज्जन

उत्तर—(a) अतएव

> YUKTI ***ज्ञान***—*अतएव = अतः + एवं = विसर्ग संधि है*
>
> *नरेन्द्र = नर + इन्द्र = गुण संधि*
>
> *पावन = पौ + अन = अयादि संधि*
>
> *सज्जन = सत् + जन = व्यंजन संधि*

3.3 उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं। जैसे—प्र + हार = प्रहार, वि + हार = विहार, उप + हार = उपहार। यहाँ प्र, वि, उप उपसर्ग हैं।

> YUKTI ***ज्ञान***—*हिन्दी भाषा में संस्कृत उपसर्गों के साथ-साथ हिन्दी के अपने उपसर्ग एवं अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के कुछ उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं।*

- संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं, जिनमें से 21 का प्रयोग हिन्दी में होता है। इन उपसर्गों की सूची इस प्रकार है—अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत, उन, दुर्, दुस्, नि, निर्, निस्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु। 'अभि' उपसर्गों का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता है।
- उपसर्ग से बने कुछ शब्द हैं—अत्यधिक, अभ्यर्थी, आजन्म, अवरोध, अपवर्तन, अपमान, निःसंदेह, उन्नति, उन्नीस, परामर्श, परिवार, प्रत्यक्ष, संशय, सुपुत्र, सुयोग्य।
- हिन्दी के कुछ उपसर्ग—अ (अभाव), अध (अधखिला), अन (अनजान), उन (उन्नीस), औ (औगुन), उ (उनींदा), क (कपूत), दु (दुबला), नि (निडर), पर (परलोक), स (सदय), चौ (चौराहा), ति (तिपाई), दु (दुगुना)।
- अरबी-फारसी उपसर्ग—अल (अलगरज), कम (कमजोर), खुश (खुशबू), गैर (गैर-हाजिर), बद (बदबू), बा (बाइज्जत), बे (बेइज्जत), बिला (बिलावजह), ला (लाचार), दर (दरकिनार), ना (नालायक), सर (सरपंच), हम (हम-उम्र), हर (हरेक)।
- अंग्रेजी उपसर्ग—सब (सब-रजिस्ट्रार), हाफ (हाफपैंट), डिप्टी (डिप्टीसाब), हैड (हैडमुनीम), चीफ (चीफ साहब)।
- जो शब्दांश स्वतन्त्र रूप से किसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वे उपसर्ग नहीं कहे जा सकते, क्योंकि उपसर्ग का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता।

कुछ प्रमुख उपसर्गों से निर्मित शब्द

संस्कृत उपसर्ग—

1.	**अति**	अत्यन्त, अत्यधिक, अतिरिक्त, अतीन्द्रिय, अत्यल्प
2.	**अधि**	अधिकार, अध्यक्ष, अध्यात्म, अधिनायक, अधिसूचना
3.	**अनु**	अन्वय, अनुरूप, अनुशासन, अनुकूल, अनूदित
4.	**अप**	अपमान, अपयश, अपकार, अपव्यय, अपहरण
5.	**अभि**	अभ्यर्थी, अभ्यागत, अभीष्ट, अभियन्ता, अभिमान
6.	**अव**	अवगुण, अवसान, अवनति, अवधान, अवसाद
7.	**आ**	आजन्म, आजीवन, आमरण, आयात, आजीविका
8.	**उत्**	उन्नति, उत्कर्ष, उन्मुख, उच्चारण, उल्लंघन
9.	**उप**	उपभाषा, उपमन्त्री, उपवन, उपयोग, उपचार
10.	**दुर्**	दुर्बल, दुर्जन, दुराचार, दुर्गम, दुर्लभ
11.	**दुस्**	दुस्साहस, दुष्प्राप्य, दुश्चरित्र, दुष्कर्म
12.	**नि**	निपात, निडर, निगम, निबन्ध, निवास
13.	**निर्**	निरपराध, निर्बल, निर्जन, निर्गुण, निराहार
14.	**निस्**	निस्सार, निश्चल, निष्पादन, निष्कासन, निस्तारण
15.	**परा**	पराभव, परामर्श, पराधीन, पराकाष्ठा
16.	**परि**	परिपूर्ण, परिमाप, परीक्षा, पर्यवेक्षक, पर्यटन
17.	**प्र**	प्रबल, प्रयोग, प्रसार, प्रकीर्ण, प्रमाद
18.	**प्रति**	प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रत्यक्ष, प्रतिष्ठा, प्रत्यर्पण
19.	**वि**	विशेष, विज्ञान, विवाद, वियोग, व्यसन
20.	**सम्**	सम्यक्, संयोग, संयम, संचार, संजय
21.	**सु**	सुकर्म, सुपुत्र, सुयश, स्वागत, सुपरिचित

हिन्दी उपसर्ग—

1.	**अन**	अनपढ़, अनजान, अनमोल, अनगिनत, अनहोनी, अनभल
2.	**अ**	अथाह, अजान, अचेत, अधीन, अमर, अछूत, अपच
3.	**अध**	अधपरा, अधमरा, अधखिला, अधकचरा, अधपार
4.	**उन**	उनसठ, उनईस, उन्तीस, उनतालीस, उनचास, उनासी
5.	**औ**	औगुण, औसर, औघड़, औतार
6.	**उ**	उनीदा, उथला, उभरना, उचक्का
7.	**कु**	कुमार्ग, कुठौर, कुरूप, कुकर्म, कुदृष्टि, कुढंग
8.	**पूर्व**	पूर्वाह्न, पूर्वार्द्ध, पूर्वोक्त, पूर्वापर
9.	**स**	सफल, सहज, सशक्त, सगुण, सस्वर
10.	**सह**	सहयात्री, सहगामी, सहयोग, सहधर्मिणी, सहकर्मी
11.	**स्व**	स्वदेश, स्वगत, स्वचालित, स्वरचित, स्वरूप, स्वधर्म
12.	**न**	नास्तिक, नपुंसक, नेति

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

विदेशी उपसर्ग–

1.	**कम**	कमजोर, कमबख्त, कमसिन, कमअक्ल
2.	**खुश**	खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी
3.	**गैर**	गैरबाजिब, गैरहाजिर, गैरसरकारी, गैरकानूनी, गैरजिम्मेदार
4.	**ब**	बदस्तूर, बमुश्किल, बतौर, बखूबी, बशर्ते, बदौलत
5.	**बद**	बदमाश, बदनाम, बदबू, बदतमीज, बदजबान, बदजात
6.	**बे**	बेइज्जत, बेखटका, बेजुबान, बेसहारा, बेरहम
7.	**बा**	बाइज्जत, बाकायदा, बाअदब, बामशक्कत, बामुलाहिजा।
8.	**दर**	दरअसल, दरहकीकत, दरकिनार, दरवेश, दरकार
9.	**ना**	नालायक, नाराज, नापाक, नाचीज, नाबालिग, नाखुश
10.	**हम**	हमराज, हमबिस्तर, हमउम्र, हमवतन, हमजुल्फ, हमसफर
11.	**हर**	हरदम, हरवक्त, हररोज, हरएक, हरघड़ी, हरतरफ

3.4 प्रत्यय

प्रत्यय वह शब्दांश है, जो किसी शब्द के बाद (पीछे) जुड़ता है और उसके अर्थ में विशिष्टता ला देता है। जैसे—एरा (ममेरा, लुटेरा), ई (बेईमानी), आलु (दयालु, कृपालु) आदि।

- बेईमानी शब्द में बे उपसर्ग है, ईमान (मूल शब्द), ई प्रत्यय है। इनसे मिलकर बेईमानी शब्द बना है।

> YUKTI ***ज्ञान***–*संस्कृत में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—तद्धित प्रत्यय एवं कृत प्रत्यय।*

- जो प्रत्यय किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द में जुड़ते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहे जाते हैं; जैसे—दया + आलु = दयालु। यहाँ आलु तद्धित प्रत्यय है, क्योंकि यह दया संज्ञा में जुड़ा है और इससे बना शब्द—दयालु तद्धितांत कहलायेगा।
- जो प्रत्यय किसी धातु में जुड़ते हैं वे 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं और इनके जोड़ने से जो शब्द बनता है, उसे कृदन्त कहते हैं। जैसे—चल (धातु) + अक (कृत प्रत्यय) = चालक (कृदन्त शब्द)।

> YUKTI ***ज्ञान***–*हिन्दी प्रत्ययों को डॉ. भोलानाथ तिवारी ने चार वर्गों में बाँटा है—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी प्रत्यय।*

- **तत्सम** प्रत्यय के कुछ उदाहरण—अक (निन्दक), अनीय (पठनीय), आ (युवा), य (देय), इक (आलंकारिक), इल (पंकिल), इमा (मधुरिमा), एय (कौन्तेय), वती (भाग्यवती), धर (विद्याधर)।
- **तद्भव** प्रत्यय के कुछ उदाहरण—आई (पढ़ाई), आका (लड़ाका), आर (सुनार), आस (मिठास), ऐला (विषैला), ता (सोता), नी (ओढ़नी), ल (मंजुल), वान (गाड़ीवान), अक्कड़ (पियक्कड़), आटा (सन्नाटा)।
- **विदेशी** प्रत्यय के कुछ उदाहरण—आना (जुर्माना), इन्दा (वाशिन्दा), ईन (संगीन), खाना (दवाखाना), खोर (घूसखोर), सार (मिलनसार), बीन (तमाशबीन), दान (खानदान), ची (नकलची), दार (दुकानदार), इज्म (बुद्धिज्म), इस्ट (कम्युनिस्ट)।
- संज्ञा से विशेषण तथा विशेषण से संज्ञा बनाने में प्रत्ययों का प्रयोग होता है। यथा—शिष्ट (विशेषण) से शिष्टता (संज्ञा), काला (विशेषण) से कालिया (संज्ञा), निशा (संज्ञा) से नैश (विशेषण), फल (संज्ञा) से फलित (विशेषण), बाजार (संज्ञा) से बाजारू (विशेषण)। प्रत्ययों से बने कुछ अन्य शब्द—ठाकुर से ठकुरा, कोठा से कोठरी, खाट से खटिया, सोना से सुनहरा, कड़वा से कड़वाहट, आनन्द से आनन्दित, कुन्ती से कौन्तेय, मूर्ख से मूर्खता, लोक से लौकिक, माँस से माँसल, देहात से देहाती, धन से धनवान।

कुछ प्रमुख प्रत्ययों से बने शब्द इस प्रकार हैं–

- **अक** निंदक, पाचक, हिंसक, पाठक, लेखक
- **अनीय** पठनीय, दर्शनीय, कथनीय, रमणीय, पूजनीय
- **आ** इच्छा, पूजा, कथा, व्यथा, शिक्षा
- **अ** कौशल, पौरुष, गौरव, मौन
- **इक** आलंकारिक, धार्मिक, आर्थिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक
- **इत** फलित, हर्षित, पल्लवित, मुकुलित, पठित
- **इमा** मधुरिमा, गरिमा, महिमा, कालिमा, नीलिमा
- **इल** पंकिल, फेनिल, धूमिल, कुटिल, चोटिल
- **ईन** कुलीन, शौकीन, ग्रामीण, प्राचीन, नवीन
- **ईय** भवदीय, भारतीय, परकीय, नारकीय, स्वकीय
- **एय** कौन्तेय, राधेय, गांगेय, भागिनेय, आंजनेय
- **तया** सामान्यतया, विशेषतया, मुख्यतया
- **ता** शूरता, वीरता, निडरता, कायरता, नवीनता
- **कार** साहित्यकार, स्वर्णकार, पक्षकार, पत्रकार, चित्रकार
- **ज** अम्बुज, नीरज, आत्मज, अग्रज, अनुज
- **वती** भाग्यवती, रूपवती, प्रभावती
- **दायी** सुखदायी, कष्टदायी, दुखदायी, उत्तरदायी
- **आई** पढ़ाई, लिखाई, लड़ाई, सिलाई, बुराई
- **अन** चलन, कहन, सुवन, पालन, मिलन
- **आर** सुनार, गँवार, लुहार
- **आस** मिठास, खटास, प्यास, निंदास
- **आल** ससुराल, ननिहाल, घड़ियाल, ददिआल
- **आवना** लुभावना, डरावना, सुहावना
- **आवट** सजावट, तरावट, मिलावट, बनावट
- **इयल** मरियल, अड़ियल, सड़ियल
- **इन** पुजारिन, तेलिन, साँपिन, पापिन, बाघिन, लोहारिन
- **इया** लुटिया, डिबिया, मुखिया, रसिया, छलिया
- **ईला** पथरीला, चमकीला, नुकीला, जहरीला
- **एरा** सँपेरा, ममेरा, चचेरा, घनेरा, बहुतेरा
- **ऐत** डकैत, लठैत, अल्हैत
- **ऐला** विषैला, कसैला, मटैला, बनैला
- **नी** ओढ़नी, वरनी, चटनी, मिलनी
- **पन** बचपन, लड़कपन, बालपन, पागलपन
- **ल** मंजुल

@UPSC_THOUGHT

- **वान** गाड़ीवान, कोचवान, मेजवान, मेहरवान
- **वाल** कोतवाल,
- **हरा** इकहरा, दोहरा, तिहरा
- **अक्कड़** भुलक्कड़, सुवक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़
- **आक** तैराक, तड़ाक, खटाक, धड़ाक
- **इयत** इंसानियत, हैवानियत, असलियत
- **आना** जुर्माना, नजराना, सालाना
- **ईन** संगीन, रंगीन, नमकीन, बेहतरीन
- **खोर** सूदखोर, हरामखोर, घूसखोर, आदमखोर
- **ची** नकलची, बन्दूकची, मशालची, तबलची
- **बीन** तमाशबीन, खुर्दबीन, दूरबीन
- **कार** पक्षकार, जानकार, सलाहकार, पैरोकार, कास्तकार,
- **मन्द** हुनरमन्द, दौलतमन्द, सेहतमन्द, फायदेमन्द
- **बन्द** बख्तरबन्द, कलमबन्द, बाजूबन्द, मोहरबन्द
- **नाक** दर्दनाक, खौफनाक, खतरनाक, शर्मनाक
- **जादा** रईसजादा, पीरजादा, शाहजादा, हरामजादा
- **साज** घड़ीसाज, कारसाज, जिल्दसाज, जालसाज
- **वर** ताकतवर, नामवर, दिलवर
- **दार** इज्जतदार, सरदार, जमींदार, दुकानदार
- **दान** पानदान, खानदान, पीकदान
- **गार** मददगार, यादगार, खिदमदगार, रोजगार, कामगार, गुनाहगार
- **इन्दा** बाशिन्दा, परिन्दा, कारिन्दा, शर्मिन्दा, जिन्दा
- **उआ** गेरुआ, फगुआ, बबुआ, नउआ
- **ऊ** पेटू, खाऊ, चालू, ढालू, दब्बू, नक्कू
- **ओला** मँझोला, सँपोला, खटोला
- **औना** बिछौना, खिलौना, दिठौना
- **हरा** इकहरा, दोहरा, तिहरा, सुनहरा
- **हारा** लकड़हारा, पनिहारा,
- **हार** कहार, मनिहार, होनहार, भूमिहार
- **नशीन** परदानशीन, गद्दीनशीन, तख्तनशीन

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'अप्रत्याशित' शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय अलग अलग कीजिए—

(a) अ, प्रति, इत (b) अ, प्रत्य, त

(c) अ, प्रत्या, शित (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) अ, प्रति, इत

YUKTI ***ज्ञान***—*अ, प्रति, उपसर्ग हैं, इत प्रत्यय है। मूल शब्द आशा है। प्रति + आशा = प्रत्याशा, इत प्रत्यय जोड़कर शब्द बनेगा प्रत्याशित और इसमें अ उपसर्ग जोड़कर शब्द बनेगा अप्रत्याशित।*

2. किस शब्द में प्रत्यय है?

(a) ससुराल (b) बेहाल

(c) बहाल (d) बेअदब

उत्तर—(a) ससुराल

YUKTI ***ज्ञान***—*ससुराल में ससुर (प्रकृति) + आल (प्रत्यय) है। शेष शब्दों में उपसर्ग जुड़ा है।*

3. 'उच्छिष्ट' शब्द से उपसर्ग अलग कीजिए—

(a) उ (b) उच्

(c) उत् (d) उच्छि्

उत्तर—(c) उत्

YUKTI ***ज्ञान***—उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

4. 'अध्यक्ष' में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) अ (b) अधि

(c) अध्य (d) अक्ष

उत्तर—(b) अधि

YUKTI ***ज्ञान***—अधि + अक्ष = अध्यक्ष—यण सन्धि

5. इसमें कौन-सा प्रत्यय नहीं है ?

(a) ई (b) पन

(c) ता (d) अनु

उत्तर—(d) अनु

YUKTI ***ज्ञान***—अनु उपसर्ग है, शेष तीनों प्रत्यय हैं।

6. 'बेईमान' में उपसर्ग बताइये—

(a) बे (b) बा

(c) बेई (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) बे

7. कौन-सा शब्द उपसर्ग रहित है?

(a) संगम (b) क्रोध

(c) अभ्यर्थी (d) प्रत्यर्पण

उत्तर—(b) क्रोध

YUKTI ***ज्ञान***—*क्रोध उपसर्ग रहित है। संगम में सम् उपसर्ग, अभ्यर्थी में अभि उपसर्ग, प्रत्यर्पण में प्रति उपसर्ग है।*

8. 'लठैत' शब्द में प्रत्यय बताइये—

(a) त (b) ऐत

(c) एत (d) ठैत

उत्तर—(b) ऐत, लाठी (प्रकृति) + ऐत प्रत्यय = लठैत

9. 'गुरुत्व' में प्रत्यय बताइये—

(a) गुरु (b) त्व

(c) व (d) अ

उत्तर—(b) त्व

10. कौन-सा उपसर्ग 'प्रत्यागमन' में है ?

(a) प्र (b) प्रत्य

(c) प्रति (d) प्रत्या

उत्तर—(c) प्रति

YUKTI ज्ञान—*प्रति। प्रति + आगमन = प्रत्यागमन। मूल शब्द गमन है जिसमें पहले आ उपसर्ग जोड़ा, फिर आगमन में प्रति उपसर्ग जोड़ा है। शब्द बना—प्रत्यागमन।*

11. अभ्यर्पण में कौन-सा उपसर्ग है? **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) अभि (b) अ

(c) अभ्य (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) अभि

12. अधमरा में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) अ (b) अध

(c) मरा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) अध

13. इनमें से कौन-सा शब्द उपसर्ग रहित है?

(a) संगम (b) बैर

(c) विमोचन (d) प्रत्यर्पण

उत्तर—(b) बैर

14. इनमें से कौन-सा प्रत्यय कृत प्रत्यय नहीं है? **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**

(a) मान (b) आऊ

(c) अक्कड़ (d) ओड़

उत्तर—(a) मान

15. 'निशा' से बना विशेषण शब्द है—

(a) निशि (b) निशित

(c) नैश (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(c) नैश

16. 'ससुराल' में कौन-सा प्रत्यय है?

(a) राल (b) ल

(c) लु (d) आल

उत्तर—(d) आल

17. 'पूजनीय' में कौन-सा प्रत्यय है? **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) नीय (b) य

(c) अनीय (d) पूजा

उत्तर—(c) अनीय

18. शब्द के अन्त में जुड़ता है—

(a) उपसर्ग (b) प्रत्यय

(c) निपात (d) सन्धि

उत्तर—(b) प्रत्यय

19. उज्ज्वल में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) उ (b) उत्

(c) उज् (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) उत्

20. 'उन्नति' में कौन-सा उपसर्ग है ?

(a) उ (b) उन्

(c) उत् (d) उन्न

उत्तर—(c) उत्

अध्याय 4. हिन्दी शब्दावली

भाषा की न्यूनतम इकाई वाक्य, वाक्य की न्यूनतम इकाई शब्द और शब्द की न्यूनतम इकाई वर्ण (ध्वनि) है।

✦ बनावट के आधार पर हिन्दी शब्द तीन प्रकार के होते हैं—
1. रूढ़, **2.** यौगिक, **3.** योगरूढ़ शब्द।

1. रूढ़ शब्द—जिन शब्दों के सार्थक खण्ड न हो सकें, वे रूढ़ शब्द कहे जाते हैं, जैसे—पानी में पा + नी सार्थक खण्ड नहीं है, अतः पानी रूढ़ शब्द है।

2. यौगिक शब्द—जो शब्द दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके सार्थक खण्ड हो सकते हैं, **यौगिक शब्द** कहे जाते हैं, जैसे—दूधवाला = दूध + वाला, घुड़सवार = घोड़ा + सवार। यहाँ दोनों खण्ड सार्थक हैं।

3. योगरूढ़ शब्द—जो शब्द यौगिक तो होते हैं, पर अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक बन जाते हैं, **योगरूढ़ शब्द** कहे जाते हैं; जैसे—जलज = जल + ज = जल में उत्पन्न अर्थात् कमल। जल में बहुत सारी चीजें उत्पन्न होती हैं, किन्तु परम्परा से इसका अर्थ केवल कमल ही लिया जाता है अतः यह योगरूढ़ शब्द है।

4.1 हिन्दी शब्द समूह

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द चार प्रकार के हैं—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी।

1. तत्सम—वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी ध्वनि परिवर्तन के संस्कृत से आये हैं, तत्सम शब्द हैं, जैसे—अग्नि, राजा, उलूक, गर्दभ, अश्रु, पंक्ति, पौत्र, धूम्र, घटक।

2. तद्भव—वे शब्द जो अनेक ध्वनि परिवर्तनों के बाद हिन्दी में आये हैं, तद्भव शब्द कहे जाते हैं, जैसे—धरती, नाक, नाई, नंगा, उल्लू, गधा, घोड़ा, कोयल, ऊँट, उक्त शब्द क्रमशः धरित्री, नासिका, नापित, नग्न, उलूक, गर्दभ, घोटक, कोकिल, उष्ट्र तत्सम से बने हैं।

3. देशज—वे शब्द जो आवश्यकतानुसार ध्वन्यात्मक अनुकरण के आधार पर गढ़ लिये गये हैं, इस वर्ग के शब्द हैं। यथा—फटफटिया (फट-फट की आवाज के कारण), गोड़, कबड्डी, झंझट, टट्टू, थोथा, भोंपू, खर्राटा, खचाखच आदि।

4. विदेशी—वे शब्द जो हिन्दी में विदेशी भाषाओं से आये हैं, इस वर्ग में आते हैं। भारत पर मुसलमानों एवं अंग्रेजों का बहुत दिनों तक शासन रहा, अतः हिन्दी में अरबी-फारसी, अंग्रेजी के बहुत सारे शब्द आ गये हैं। यहाँ ऐसे कुछ शब्दों की सूची प्रस्तुत है—

• **अरबी-फारसी शब्द**—अखबार, अदालत, अमीर, आदमी, औरत, किताब, खबर, तरक्की, तकदीर, जुलूस, मजहब, मतलब, हिसाब, हकीम, अदा, आराम, आमदनी, आवाज, जिगर, दफ्तर, दर्जी, दवा, दरवाजा, दीवार, मजदूरी, साहब, अगर, अदालत, किशमिश, कारीगर, इशारा, इनाम, सराय, गर्द, गवाह, बेरहम, दुकान, मकान, सूद, लाल, शराब, शहर, दिमाग, दावत, बुखार, सौदागर आदि।

@UPSC_THOUGHT

- **अंग्रेजी शब्द**—अपील, अफसर, अस्पताल, कमेटी, रजिस्टर, पेन, कमीशन, कण्डक्टर, स्टील, पेन्सिल, पैण्ट, रेडियो, सिनेमा, लाइन, रेल, मोटर, कार, फाइल, जज, रबर, टीवी, मोबाइल, फ्रिज, कूलर, स्टील, टेरालीन, कोट, शर्ट, साइकिल, स्कूटर, राशन, पास, फेल, प्रेस, बटन, बॉस, डाक्टर, क्लर्क, प्रिंसिपल, ड्राइवर, प्लेन आदि

- **तुर्की शब्द**—तोप, तमगा, तमाशा, उर्दू, कालीन, कुली, कैंची, खंजर, चम्मच, बेगम, बारूद, आका, चेचक, चमचा, बहादुर, मुगल लफंगा, सराय, दारोगा आदि
- **फ्रेंच शब्द**—बेसिन, लैम्प, कप, मेयर, मादाम, मार्शल, सूप, पिकनिक, कारतूस, मीनू।

तत्सम तद्भव रूपान्तरण

तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग
अक्षत	अच्छत
अंगुष्ठ	अँगूठा
अम्लिका	इमली
अष्ट	आठ
अंगुलि	उँगली
अट्टालिका	अटारी
आदित्यवार	इतवार
आश्चर्य	अचरज
आभीर	अहीर
आमलक	आँवला
आम्र	आम
इक्षु	ईख
इष्टिका	ईंट
ओष्ठ	ओठ
कपोत	कबूतर
कपाट	किवाड़
कर्ण	कान
काष्ठ	काठ
कुम्भकार	कुम्हार
कृषक	किसान
काक	काग
कार्य	काज
कंकण	कंगन
जिह्वा	जीभ
जंघा	जांघ
ज्योति	जोत
त्रयोदशी	तेरस, तेरहवीं
तृण	तिनका
तिक्त	तीता
तप्त	ताता
तूर्य	तुरही
गोत्र	गोत
गुहा	गुफा
गौर	गोरा
घट	घड़ा

तत्सम	तद्भव
कदली	केला
कोकिल	कोयल
कूप	कुआँ
गर्दभ	गधा
गृह	घर
गम्भीर	गहरा
गोपालक	ग्वाला
गोस्वामी	गुसाईं
उष्ट्र	ऊँट
उलूक	उल्लू
उच्च	ऊँचा
उज्ज्वल	उजला
उपरि	ऊपर
उपालंभ	उलाहना
चक्र	चाक
चन्द्र	चाँद
चंचु	चोंच
चित्रकार	चितेरा
चतुष्पद	चौपाया
चतुष्पदी	चौपाई
चर्म	चमड़ा
चतुर्थ	चौथा
चूर्ण	चूरन, चून
छिद्र	छेद
परीक्षा	परख
प्रस्वेद	पसीना
दक्षिण	दाहिना
दधि	दही
दुग्ध	दूध
दुर्बल	दुबला
दीपक	दीआ
दृष्टि	दीठ
दंश	डंक
दूर्वा	दूब
बालुका	बालू
भ्रमर	भौंरा

तत्सम	तद्भव
घोटक	घोड़ा
घृत	घी
धैर्य	धीरज
धात्री	धाय
नक्षत्र	नखत
नासिका	नाक
नव्य	नया
निष्ठुर	निठुर
नग्न	नंगा
निद्रा	नींद
निम्बु	नीबू
निम्ब	नीम
पत्र	पत्ता
पश्चाताप	पछताना
पक्वान्न	पकवान
प्रहर	पहर
पारद	पारा
विकार	बिगाड़
वाष्प	भाप
वृश्चिक	बिच्छू
व्याघ्र	बाघ
वारिद	बादल
श्वास	सांस
शृंगार	सिंगार
शुष्क	सूखा
शर्करा	शक्कर
स्कंध	कन्धा
मकर	मगर
मिष्टान्न	मिष्ठान्न
मयूर	मोर
मुक्ता	मोती
यज्ञ	जग्य
युक्ति	जुगति

तत्सम	तद्भव
भ्रातृजाया	भौजाई
भाद्रपद	भादौं
भगिनी	बहन
भिक्षा	भीख
भक्त	भगत
मक्षिका	मक्खी
मस्तक	माथा
पृष्ठ	पीठ
पौत्र	पोता
पुच्छ	पूँछ
पुष्कर	पोखर
परश्व	परसों
प्राण	प्रान
प्रण	पन
बधिर	बहरा
बिन्दु	बूँद
राजपुत्र	राजपूत
रुदन	रोना
रुष्ट	रूठा
लक्षण	लच्छन
लोमक्ष	लोमड़ी
हर्ष	हरख
ऋक्ष	रीछ
शिक्षा	सीख
श्याली	साली
श्रेष्ठी	सेठ
शुक	सुआ
शाप	सराप
सर्प	साँप
स्वर्णकार	सुनार
सूत्र	सूत
साक्षी	साखी
होलिका	होली

@UPSC_THOUGHT

• यकृत	जिगर	• हस्तिनी	हथिनी
• रक्षा	राखी	• हरिद्रा	हल्दी
• रिक्त	रीता	• क्षत्रिय	खत्री
• हीरक	हीरा	• स्फूर्ति	फुर्ती
• क्षीर	खीर	• स्नेह	नेह
• क्षेत्र	खेत	• सप्त	सात
• संध्या	सांझ	• सप्तशती	सतसई

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'विदेशी' शब्द कौन.सा है? **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) वजीर (b) काजल

(c) अँगुली (d) अगणित

उत्तर—(a) वजीर

2. इनमें से 'तद्भव' शब्द कौन.सा है? **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) अंश (b) अनन्य

(c) अमृत (d) अमिय

उत्तर—(d) अमिय–जो अमृत का तद्भव है।

3. निम्नलिखित में 'तत्सम' शब्द छाँटिए— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) नौकर (b) नवाब

(c) वर्ग (d) नाच

उत्तर—(c) वर्ग

4. इनमें से 'देशज' शब्द कौन-सा है?

(a) बच्चा (b) अगम्य

(c) धब्बा (d) अन्धकार

उत्तर—(c) धब्बा

5. कर्पट का 'तद्भव' रूप बताइये— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) कपड़ा (b) कपट

(c) कारपेट (d) कपूर

उत्तर—(a) कपड़ा

6. अगहन का 'तद्भव' है— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) अग्रासन (b) आग्रहण

(c) अग्रहायण (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(c) अग्रहायण

7. 'तद्भव' शब्द पहचानिए—

(a) गोमल (b) हरिद्रा

(c) पर्यंक (d) तीखा

उत्तर—(d) तीखा

8. कौन-सा शब्द 'तत्सम' है?

(a) सूरज (b) सावन

(c) रूक्ष (d) बिच्छू

उत्तर—(c) रूक्ष

9. कौन.सा शब्द 'तद्भव' है ?

(a) मधुप (b) मधुवन

(c) भ्रमर (d) भँवरा

उत्तर—(d) भँवरा

10. हल्दी का 'तत्सम' है—

(a) हरदी (b) हरिद्रा

(c) हल्दिया (d) हरटिका

उत्तर—(b) हरिद्रा

4.2 पारिभाषिक शब्दावली

वे शब्द जो किसी सुनिश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, 'पारिभाषिक' शब्द कहे जाते हैं।

YUKTI ***ज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी*** *के अनुसार, "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप में परिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से परिभाषित होने के कारण ही इन्हें 'पारिभाषिक' शब्द कहा जाता है।*

- पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र में होता है, अर्थात् विज्ञान, भूगोल, दर्शन, प्रशासन, विधि के क्षेत्रों में अलग-अलग पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिनका अर्थ सुनिश्चित होता है और उसमें लचीलापन या संदिग्धता नहीं होती। एक अर्थ को व्यक्त करने वाला एक ही पारिभाषिक शब्द होता है।
- पारिभाषिक शब्दों के अर्थ में अस्पष्टता, दुर्बोधता और संदिग्धता नहीं होती।
- स्रोत भाषा (जिससे शब्द लिया गया है) में यदि कोई पारिभाषिक शब्द एकशब्दीय में है तो लक्ष्य भाषा (जिसमें शब्द लिया गया है) में भी वह शब्द एकशब्दीय ही होगा।
- पारिभाषिक शब्द यथासम्भव छोटा (संक्षिप्त), सरल, व्याकरणिक नियमों के अनुरूप होना चाहिए।
- पारिभाषिक शब्द सार्थक होना आवश्यक है।
- पारिभाषिक शब्द का उच्चारण सरलता एवं सुगमता से किया जाना चाहिए।
- पारिभाषिक शब्दों की रचना उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि, समास द्वारा की जाती है।
- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने वैज्ञानिक शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, विधि शब्दावली आदि प्रकाशित की हैं, जो पारिभाषिक शब्दों को प्रस्तुत करती हैं।

कुछ पारिभाषिक शब्दों की सूची यहाँ प्रस्तुत है—

• Allotment	आवण्टन	• Agency	अभिकरण
• Adultration	अपमिश्रण	• Ability	योग्यता
• Abstract	सार	• Academic	शैक्षणिक
• Accord	अभिसन्धि	• Adverse	प्रतिकूल
• Agenda	कार्य-सूची	• Adjourn	स्थगित

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

- Affirm पुष्टि
- Acting कार्यकारी
- Accused अभियुक्त
- Agreement अनुबन्ध
- Adult वयस्क
- Amendment संशोधन
- Academic शैक्षिक
- Adverse प्रतिकूल
- Agent अभिकर्ता
- Abscond फरार
- Address पता, सम्बोधन
- Affidavit शपथ-पत्र
- Autonomous स्वायत्त
- Accountant लेखाकार
- Activity गतिविधि
- Appendix परिशिष्ट
- Assets परिसम्पत्ति
- Bilateral द्विपक्षीय
- Basic Pay मूल वेतन
- Banned प्रतिबन्धित
- Bigamy द्विविवाह
- Bonus अधिलाभांश
- Bribe रिश्वत
- By Law उपविधि
- Bench खण्डपीठ
- Bequest वसीयत
- Bonus अधिलाभांश
- Brokerage दलाली
- Bau प्रतिबंध
- Body निकाय
- Bail जमानत
- By Election उपचुनाव
- Bilateral द्विपक्षीय
- Ballot मतपत्र
- Condone माफ करना
- Ceilling उच्चतम सीमा
- Charge sheet आरोप पत्र
- Concise संक्षिप्त
- Convict दोषी
- Corporation निगम
- Culprit अपराधी
- Convention रूढ़ि
- Calculator संगणक
- Convene संयोजन
- Context सन्दर्भ
- Customs सीमा-शुल्क
- Conservation संरक्षण
- Claim दावा
- Constitution संविधान
- Cuvator संग्रहालयाध्यक्ष
- Coordinator समन्वयक
- Cancel निरस्त
- Commission आयोग
- Council परिषद्
- Domicile अधिवासी
- Duty कर्तव्य, शुल्क
- Destination गंतव्य
- Dismiss पदच्युत
- Day Book दैनिकी
- Dead Lock गतिरोध
- Dissent असहमति
- Demolish नष्ट करना
- Data आँकड
- Damage क्षति
- Dejure विधितः
- Duly यथाविधि
- Democracy लोकतन्त्र
- Decentralisation विकेन्द्रीकरण
- Duty शुल्क
- Defacto वस्तुतः
- Destination गन्तव्य
- Department विभाग
- Departmental विभागीय
- Director निदेशक
- Defender प्रतिरक्षक
- Director महानिदेशक
- Estimate प्राकलन
- Elimination छंटनी
- Exempt मुक्त
- Eudorcement पृष्ठांकन
- Emoluments परिलब्धियाँ
- Extract सार
- Embezelment गबन
- Expedile शीघ्रनिष्पादन
- Exccutive कार्यकारी अधिशासी
- Exgratia अनुग्रह राशि
- Enemity अनबन
- Election चुनाव
- Emigrent उत्प्रवासी
- Extention विस्तार
- Folio पृष्ठ
- Findings उपपत्ति
- Forbidden निषिद्ध
- Freight भाड़ा
- Figures आंकड़े
- Forced बलात्कृत
- Face Value अंकित मूल्य
- Fit उपयुक्त
- Fraud कपट
- Fund निधि
- Forbidden निषिद्ध
- Gross Income सकल आय
- Grant अनुदान
- Gallary दीर्घा
- Geologist भूगर्भवेत्ता
- Guardian संरक्षक
- Gazetted राजपत्रित
- Grievance शिकायत
- Guilty अपराधी
- Governor राज्यपाल
- Generator जनित्र
- Honorarium मानदेय
- Habeas Corpus बन्दी प्रत्यक्षीकरण
- Head Office प्रधान कार्यालय
- Head मुख्य
- Homage श्रद्धांजलि
- Hard & Fast दृढ़
- Hindrance व्यवधान
- Heir उत्तराधिकारी
- Home Secretary गृहसचिव
- Information सूचना
- Instructor अनुदेशक
- Judiciary न्यायपालिका
- Junior अवर, कनिष्ठ
- Judgement निर्णय
- Justice न्यायमूर्ति
- Kidnapper अपहरणकर्ता
- Kelnif सचेतक
- Lapse समापन
- Lien ग्रहणाधिकार
- Ledger खाता
- Migrant प्रवासी
- Merge विलय
- Memorandum ज्ञापन
- Minister मन्त्री
- Manager प्रबन्धक
- Manual शारीरिक
- Mayor महापौर
- Notified अधिसूचित
- Norms परिनियम
- Negotiation वार्तालाप
- Observer पर्यवेक्षक
- Oblige कृतज्ञ
- Organisation संगठन
- Privilege विशेषाधिकार
- Prision कारागार
- Principal मूलधन, प्रमुख
- Pledge गिरवी
- Public लोक (जनता)
- Pagination पृष्ठांकन
- Probation परिवीक्षाकाल
- Pledge गिरवी
- Priority प्राथमिकता
- Project परियोजना
- Proforma प्रपत्र
- Parity समानता
- Protection संरक्षा
- Posting पदस्थापन
- Probation परिवीक्षा
- Prescribed निर्धारित
- Procedure कार्य विधि
- Prime Minister प्रधानमन्त्री
- Public Service लोक सेवा

@UPSC_THOUGHT

- Pleader अधिवक्ता
- Quarterly त्रैमासिक
- Quash समापन
- Quota नियतांश
- Quautity मात्रा
- Quality गुणवत्ता
- Qurom गणपूर्ति
- Quotation उद्धरण
- Report प्रतिवेदन
- Ration रसद
- Resume पुनरारम्भ
- Retired सेवानिवृत्त
- Regret खेद
- Recipient प्रापक
- Revert पदावनत
- Routine नैत्यिक
- Revenue राजस्व
- Redemplion पुनर्मोचन
- Recognition मान्यता
- Relieved कार्यमुक्त
- Recommended संस्तुत
- Registration पंजीयन
- Registrar पंजीयक
- Registered पंजीकृत
- Scheduled अधिसूचित
- Substitute प्रतिस्थानी
- Supplimentary अनुपूरक
- System प्रणाली
- Session सत्र
- Suit वाद
- Scarcity कमी
- Statute विधान
- Statictics सांख्यिकी
- Suspand निलम्बित
- Sale deed विक्रय लेख
- Scientific वैज्ञानिक
- Surplus अतिरिक्त
- Surcharge अधिभार
- Standard मानक
- Summary सार-संक्षेप
- Subsidy अनुदान
- Supervision पर्यवेक्षण
- Social सामाजिक
- Secretary सचिव
- Trustee न्यासी
- Toll Tax पथकर
- Tender निविदा
- Transit संक्रमण
- Travelling यात्रा
- Trust न्यास
- Tenure अवधि
- Time barred कालातीत
- Testament इच्छापत्र
- Testimony परिसाक्ष्य
- Treasury कोषागार
- Tender निविदा
- Translator अनुवादक
- Ultimately अन्ततोगत्वा
- Under Trial विचाराधीन
- Unilateral एकपक्षीय
- Unofficial अनौपचारिक
- Ultimatum अंतिम चेतावनी
- Up to date अद्यावधि
- Unavoidable अपरिहार्य
- Urgent अविलम्ब (आवश्यक)
- Unit इकाई
- Unavoidable अनिवार्य
- Valid वैध
- Verified सत्यापित
- Veto निषेधाधिकार
- Verdict अभिमत
- Visa पारपत्र
- Violation अतिक्रमण
- Ward पाल्य
- Withdraw प्रत्याहरण
- Writ याचिका (आदाता)
- Zone मण्डल
- Zonal मण्डलीय

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्न अंग्रेजी शब्दों के उपयुक्त हिन्दी पर्याय लिखिए—

1. Registration उ.प्र. टी.ई.टी.

(a) पंजीकृत (b) पंजीयन

(c) पंजिका (d) पंजीयक

उत्तर—(b) पंजीयन

YUKTI **ज्ञान**—*Registration — पंजीयन, पंजीकृत के लिए Resistered*

2. Accountant उ.प्र. टी.ई.टी.

(a) लेखक (b) बहीखाता

(c) खातेदार (d) लेखाकार

उत्तर—(d) लेखाकार

YUKTI **ज्ञान**—*Accountant — लेखाकार, बहीखाता के लिए Account book*

3. Agent

(a) दलाल (b) मध्यस्थ

(c) अभिकर्ता (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(c) अभिकर्ता

4. Dissent

(a) असहमति (b) सहमति

(c) विपदा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) असहमति

5. Affidavit

(a) शपथ (b) शपथ-पत्र

(c) अनुबन्ध (d) बिल

उत्तर—(b) शपथ-पत्र

6. Polling Officer—

(a) मतदान अधिकारी (b) पीठासीन अधिकारी

(c) चुनाव अधिकारी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) मतदान अधिकारी

YUKTI **ज्ञान**—*Polling Officer = मतदान अधिकारी Presiding officer — पीठासीन अधिकारी, Election officer = चुनाव अधिकारी*

7. Notification

(a) सूचना (b) अधिसूचना

(c) निविदा (d) ज्ञापन

उत्तर—(b) अधिसूचना

YUKTI **ज्ञान**—*Notification = अधिसूचना, Notice = सूचना, Memorandum = ज्ञापन, Tender = निविदा*

8. Gazetted—

(a) राजपत्रित (b) राजपत्र

(c) अधिकारी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) राजपत्रित

> YUKTI *ज्ञान—Gazetted = राजपत्रित क्योंकि Gazett = राजपत्र। जो गजट में छपा हो वह राजपत्रित।*

निम्न हिन्दी शब्दों के उपयुक्त अंग्रेजी पर्याय बताइये—

9. अभिकरण— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) Registration (b) Registered
(c) Agent (d) Agency

उत्तर—(d) Agency

10. अपराधी— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) Accused (b) Culprit
(c) Jailed (d) None

उत्तर—(a) Accused

11. शैक्षिक—

(a) Academic (b) Educational
(c) Trained (d) None

उत्तर—(a) Academic

12. पंजीयन—

(a) Registration (b) Registered
(c) Registar (d) None

उत्तर—(a) Registration

13. अधिलाभांश—

(a) Bonus (b) Culprit
(c) Adverse (d) Agent

उत्तर—(a) Bonus

14. प्रतिकूल— **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**

(a) Accident (b) Opposit
(c) Banned (d) Adverse

उत्तर—(d) Adverse

15. संस्तुत—

(a) Recommend (b) Recommended
(c) Recommendation (d) None

उत्तर—(b) Recommended

4.3 पर्यायवाची शब्द

वे शब्द, जो अर्थ के स्तर पर समान होते हैं, अर्थात् जिनके अर्थ एक समान होते हैं, पर्यायवाची (Synonyms) कहलाते हैं। यथा—नेत्र, चक्षु, लोचन, दृग, नयन, आदि शब्दों का एक ही अर्थ आँख (नेत्र) है। अतः ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं।

✦ पर्यायवाची शब्द मोटे तौर पर ही समानार्थी होते हैं। वस्तुतः उनमें सूक्ष्म अन्तर (अर्थगत अन्तर) होता है, यथा—राजीव, इन्दीवर, पुण्डरीक तीनों कमल हैं, परन्तु राजीव लाल रंग का, इन्दीवर नीले रंग का और पुण्डरीक श्वेत रंग वाला कमल होता है। अतः इनमें रंग का अन्तर है वैसे हैं तीनों कमल ही। इसी प्रकार जल में जो पवित्रता, शुद्धता है वह पानी में नहीं है। इसी कारण पूजा में जल चाहिए, किन्तु खेत की सिंचाई पानी से होती है। स्पष्ट है कि जल, पानी में सूक्ष्म अर्थगत अन्तर है।

प्रमुख पर्यायवाची शब्दों की सूची प्रस्तुत है—

- **अभिलाषा** इच्छा, कामना, मनोरथ, चाह, लालसा।
- **आनन्द** मोद, प्रसन्नता, हर्ष, आह्लाद, प्रमोद।
- **अग्नि** अनल, पावक, वह्नि, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर।
- **असुर** दनुज, राक्षस, निशाचर, दैत्य, दानव, रजनीचर।
- **अर्जुन** धनञ्जय, पार्थ, भारत, कौन्तेय, गाण्डीवधारी, सव्यसाची, गुडाकेश।
- **अरण्य** वन, जंगल, कान्तार, कानन, विपिन।
- **अक्षि** आँख, नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, विलोचन।
- **अश्व** घोड़ा, घोटक, सैंधव, हय, बाजि, तुरंग।
- **अनाज** शस्य, धान्य, गल्ला, खाद्यान्न, अन्न।
- **अमृत** पीयूष, सुधा, सोम, सुरभोग, अमिय।
- **अतिथि** पाहुन, अभ्यागत, आगन्तुक, मेहमान।
- **अलंकार** आभूषण, आभरण, भूषण, जेवर, गहना।
- **अहंकार** मद, गर्व, दर्प, दम्भ, घमण्ड, गुमान, अभिमान।
- **आम** आम्र, रसाल, पिकबल्लभ, अतिसौरभ, अमृतफल, पिकबन्धु।
- **आकाश** नभ, गगन, अम्बर, व्योम, अनन्त, शून्य, आसमान, तारापथ।
- **आँख** नेत्र, चक्षु, लोचन, दृग, नयन।
- **आश्चर्य** अचरज, अचंभा, कौतूहल, कुतूहल।
- **आकर्षक** सुन्दर, मनोहर, भव्य, मोहक, मनोहारी।
- **इन्द्र** सुरेश, सुरपति, सुरेन्द्र, शचीपति, देवेन्द्र, देवराज, वासव, पुरन्दर।
- **इच्छा** कामना, आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा, वांछा, अभिलाषा।
- **इच्छुक** उत्सुक, आतुर, लालायित, अभिलाषी, उत्कंठित।
- **ईर्ष्या** मत्सर, द्वेष, डाह, कुढ़न, जलन।
- **इन्द्रधनुष** सुरचाप, सुरधनु, इन्द्रचाप, सप्तवर्ण।
- **ईश्वर** ईश, प्रभु, परमात्मा, जगन्नाथ, जगदीश, ब्रह्मा, विभु।
- **उन्नति** प्रगति, उत्कर्ष, उत्थान, उन्नयन, अभ्युदय, विकास।
- **उपवन** बाग, बगीचा, उद्यान, आराम, वाटिका।
- **उत्तम** श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, अच्छा, प्रवर, प्रकृष्ट।
- **उत्साह** उमंग, स्फूर्ति, हौसला, उछाह।
- **उपाय** युक्ति, जुगति, ढंग, तरीका, तरकीब।
- **उद्दण्ड** दुष्ट, दुर्विनीत, क्रूर, असभ्य, दुराचारी।
- **ऊँट** उष्ट्र, क्रमेलक, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
- **ऐश्वर्य** वैभव, विभूति, समृद्धि, सम्पन्नता।
- **एकत्र** संचित, समवेत, समेकित, पुंजीभूत, संकलित, इकट्ठा।
- **कबूतर** कपोत, पारावत, रक्तलोचन, हारीत, परेवा।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

- **कमल** राजीव, जलज, पंकज, नीरज, इन्दीवर, पुण्डरीक, सरोज, नलिन, तामरस, कञ्ज, शतदल, अरविन्द, अम्बुज, सरसिज।
- **कामदेव** मनोज, रतिनाथ, रतिपति, काम, मन्मथ, मार, अनंग, मदन, कन्दर्प, मीनकेतु।
- **केला** कदली, भानुफल, रंभा, मोचा, कुंजरासना।
- **कोयल** पिक, कोकिल, श्यामा, वसंतदूती, कोकिला, पाली।
- **कृष्ण** श्याम, मोहन, गोविंद, राधावल्लभ, गोपीनाथ, यशोदानन्दन, माधव, कंसारि, वंशीधर, मुरलीधर, मधुसूदन, गिरिधर, गोपाल, वासुदेव, मुकुन्द, दामोदर।
- **कौआ** काग, काक, करटक, करट, पिशुन, वायस।
- **कपट** छल, छद्म, प्रवंचना, धोखा, दगा, फरेब।
- **किनारा** तट, तीर, कूल, पुलिन, छोर।
- **कृतज्ञ** अहसानमंद, कृतार्थ, उपकृत, आभारी, अनुग्रहीत।
- **कोष** खजाना, आकर, भण्डार, निधि।
- **क्रूर** निर्दय, निर्मम, निष्ठुर, नृशंस, बर्बर।
- **खल** नीच, दुष्ट, पामर, दुर्जन, कुटिल, धूर्त।
- **खिड़की** वातायन, गवाक्ष, झरोखा, बारी, दरीचा।
- **गणेश** विनायक, एकदन्त, गौरीसुत, लम्बोदर, गजपति, गजानन, विघ्नहर्ता, गजवदन, मोदकप्रिय, पार्वतीनन्दन, भवानी-नन्दन।
- **गधा** गर्दभ, गदहा, वैशाखनन्दन, खर, धूसर।
- **गंगा** भागीरथी, मन्दाकिनी, विष्णुपदी, देवापगा, देवनदी, सुरसरिता, सुरसरि, जाह्नवी।
- **गृह** घर, सदन, निलय, आवास, भवन, आलय, धाम, मन्दिर, आगार, आयतन।
- **गर्व** अहं, अहंकार, दर्प, दंभ, अभिमान, घमण्ड।
- **गाय** धेनु, गौ, सुरभी, गैया, पयस्विनी, गो।
- **गरीब** दीन, अकिंचन, निर्धन, दरिद्र, कंगाल।
- **चन्द्रमा** राकेश, राकापति, मयंक, सोम, शशि, इन्दु, मृगांक, हिमकर, कलानिधि, सुधाकर, सुधांशु, निशाकर, हिमांशु, शशांक।
- **चोर** दस्यु, तस्कर, रजनीचर, खनिक, साहसिक।
- **चांदनी** चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, उजियारी, उजेरी, चंदनियाँ
- **चंदन** मलय, गंधराज, श्रीखण्ड, गंधसार।
- **चतुर** पटु, दक्ष, कुशल, विज्ञ, नागर, निपुण।
- **चरण** पैर, याद, पद, पग, पाँव।
- **चांदी** रजत, रूपा, रौप्या, कलधौत, जातरूप।
- **जगत्** संसार, जग, दुनिया, विश्व, भव, जगती।
- **जीभ** जिह्वा, रसना, रसिका, रसला, रसज्ञा, जवान।
- **जमुना** यमुना, कालिन्दी, रविजा, तरणितनूजा, अर्कजा, रविसुता, यमी, कृष्णा।
- **जल** पानी, नीर, तोय, अम्बु, वारि, सलिल, जीवन, उदक, पय, अमृत।
- **जड़** निश्चेष्ट, निर्जीव, गतिहीन, निष्क्रिय, स्थावर।
- **तालाब** सर, सरोवर, तड़ाग, जलाशय, पुष्कर, ह्रद।
- **दास** सेवक, भृत्य, किंकर, नौकर, परिचारक, अनुचर।
- **दूध** दुग्ध, पय, क्षीर, अमृत, स्तन्य, गोरस।
- **द्रोपदी** कृष्णा, पांचाली, याज्ञसेनी, सैरंध्री, द्रुपदसुता।
- **दुर्गा** शांभवी, सिंहवाहिनी, शक्ति, कल्याणी, सुभद्रा, महागौरी, चण्डिका, महिषासुर मर्दिनी।
- **धनुष** धनु, चाप, शरासन, कमान, पिनाक, कोदण्ड।
- **नदी** सरिता, तटिनी, आपगा, निम्नगा, तरंगिणी।
- **नारी** स्त्री, औरत, महिला, अबला, वनिता, कामिनी, रमणी।
- **निशा** रात्रि, रात, यामिनी, विभावरी, निशि, शर्वरी, क्षणदा, रैन।
- **पत्नी** भार्या, गृहिणी, दारा, वामा, जाया, परिणीता, बल्लभा, कुलांगना, अर्द्धांगिनी।
- **पृथ्वी** भू, भूमि, उर्वि, इला, धरती, धरित्री, मेदिनी, अचला, वसुधा, वसुंधरा।
- **पति** बल्लभ, भर्ता, स्वामी, नाथ, सैंया, साजन, प्राणनाथ।
- **पण्डित** मनीषी, विद्वान्, प्राज्ञ, सुधी, विचक्षण।
- **पुत्री** सुता, बेटी, तनया, आत्मजा, तनुजा, नंदिनी, दुहिता।
- **पुत्र** सुत, बेटा, तनय, आत्मज, नन्दन, अपत्य, पूत।
- **पत्थर** पाषाण, शिला, प्रस्तर, उपल, अश्म।
- **पार्वती** उमा, गौरी, शिवप्रिया, शैलजा, स्कंदमाता, अपर्णा, अन्नपूर्णा।
- **पक्षी** खग, विहग, द्विज, पखेरू, नभचर, शकुंत, चिड़िया।
- **पुष्प** कुसुम, सुमन, फूल, प्रसून, पुहुप।
- **प्रकाश** ज्योति, प्रभा, कान्ति, द्युति, उजाला।
- **ब्रह्मा** विधि, विधाता, स्वयम्भू, चतुरानन, चतुर्मुख, कमलासन, पितामह।
- **ब्राह्मण** द्विज, भूसुर, भूदेव, विप्र, पण्डित।
- **बादल** मेघ, जलधर, जलद, वारिद, अम्बुद, पयोधर, वारिधर, तोयद।
- **बन्दर** कपि, वानर, मर्कट, हरि, शाखामृग।
- **बाण** नाराच, शर, विशिख, तीर, शिलीमुख।
- **बलराम** हलधर, श्यामवीर, रेवतीरमण, हलायुध, बलदाऊ, बलभद्र।
- **बिजली** चपला, चंचला, सौदामिनी, तड़ित, दामिनी, विद्युत, क्षणप्रभा।
- **बसंत** माधव, मधुमास, ऋतुराज, कुसुमाकर, पिकमित्र।
- **भ्रमर** भौंरा, अलि, षटपद, भँवरा, भृंग, मधुप, मधुकर।
- **भय** डर, त्रास, आतंक, भीति।
- **महेश** शिव, शंकर, महेश, चन्द्रशेखर, भूतनाथ, चन्द्रमौलि, रुद्र, भोले, त्रिनेत्र, त्रिलोचन, कामारि, आशुतोष, पशुपति, शम्भु।
- **मयूर** मोर, नीलकण्ठ, शिखी, शिवसुतवाहन, कलापी, केकी।
- **मदिरा** शराब, वारुणी, कादम्ब, मधु, हाला, मद्य, दारू।

@UPSC_THOUGHT

- **मुर्गा** कुक्कुट, ताम्रचूड़, अरुणशिखा, उपाकर, ताम्रशिखा।
- **मछली** मत्स्य, मीन, झष, शफरी, मकर।
- **मृत्यु** निधन, स्वर्गवास, गोलोकवास, देहान्त, मरण, देहावसान, मौत।
- **मार्ग** पथ, रास्ता, पाट, मग, पन्थ।
- **मूंगा** प्रवाल, विद्रुप, रक्तमणि, रक्तांग, रक्ताभ।
- **यमराज** यम, कृतांत, रविसुत, धर्मराज, काल, अंतक, जीवितेश, सूर्यपुत्र।
- **राजा** नृप, महीप, महीपति, भूपति, भूप, नरेश, नरेन्द्र, नृपति।
- **राम** दशरथ नन्दन, कौशल्या नन्दन, राघव, रघुपति, रावणारि, सीतापति, रामचन्द्र, जानकीवल्लभ, जानकीनाथ, सीताकान्त, रघुराज, रघुनन्दन।
- **राधा** श्यामा, कृष्णप्रिया, राधिका, वृषभानुजा, वृषभानुदुलारी, राधे, ब्रजरानी।
- **रोगी** रुग्ण, अस्वस्थ, व्याधिग्रस्त, रोगिल, बीमार।
- **रावण** दशानन, लंकापति, दशकंध, लंकेश, दशकंधर।
- **रात्रि** निशा, विभावरी, यामिनी, रजनी, शर्वरी, क्षणदा, रैन।
- **लक्ष्मी** रमा, विष्णुप्रिया, चंचला, कमला, पद्मा, कमलासना, इन्दिरा, हरिप्रिया।
- **लक्ष्मण** रामानुज, सुमित्रानंदन, लखन, शेषावतार, सौमित्र, शेष।
- **विष्णु** अच्युत, चक्रपाणि, शेषशायी, चतुर्भुज, मधुरिपु, हरि, उपेन्द्र, नारायण, मुकुन्द, जनार्दन।
- **वृक्ष** तरु, विटप, पेड़, पादप, द्रुम, रूख।
- **विष** हलाहल, कालकूट, गरल, जहर।
- **वन** जंगल, अरण्य, अटवी, विपिन, कांतार, कानन।
- **विवाह** परिणय, ब्याह, पाणिग्रहण।
- **शिकारी** आखेटक, अहेरी, ब्याध, लुब्धक, बहेलिया।
- **शिव** भोले, रुद्र, हर, चन्द्रशेखर, त्रिनेत्र, चन्द्रमौलि, शंकर, महेश।
- **शुभ्र** शुक्ल, सफेद, श्वेत, धवल, अवदात।
- **शिष्ट** सभ्य, सुसंस्कृत, सुशील विनीत।
- **सुगन्ध** सुरभि, सौरभ, सुवास, खुशबू।
- **सागर** समुद्र, रत्नाकर, नदीश, वारिधि, उदधि, जलनिधि, पारावार, सिन्धु।
- **सर्प** नाग, भुजंग, पन्नग, उरग, व्याल, विषधर, अहि, फणी, फणधर।
- **सरस्वती** शारदा, वाणी, वाग्देवी, वागीश, गिरा, महाश्वेता, हंसवाहिनी, भारती।
- **सूर्य** रवि, अर्क, भानु, दिनेश, दिनमणि, दिवाकर, प्रभाकर, सविता, आदित्य, पूषा।
- **सिंह** शेर, व्याघ्र, शार्दूल, केहरी, केशरी, मृगेन्द्र, मृगपति, पंचमुख, मृगराज।
- **सोना** स्वर्ण, कांचन, कंचन, कनक, हेम, सुवर्ण, जातरूप, हाटक।
- **सुन्दर** रुचिर, चारु, मनोज्ञ, रम्य, रमणीक, ललित, मनभावन, मंजुल, कलित।
- **स्तन** उरोज, पयोधर, कुच, वक्षोज।
- **सेवक** दास, नौकर, परिचारक, भृत्य, किंकर, अनुचर।
- **समूह** गण, समुदाय, वृन्द, संघ, कुंज, दल।
- **हिमालय** नगराज, गिरिवर, गिरीश, गिरेन्द्र, पर्वतराज, हिमाद्रि, हिमगिरि, हिमवान।
- **हाथी** हस्ती, कुञ्जर, सिंधुर, नाग, करि, द्विरद, गयंद, गज, मतंग।
- **हिरन** हरिण, कुरंग, सारंग, मृग, सुरभी।
- **हनुमान** पवनसुत, मारुति, पवन पुत्र, वज्रांग, बजरंगी, महावीर, आञ्जनेय, पवन तनय, रामदूत, अञ्जनि पुत्र, पवनसुत।
- **हंस** मराल, चक्रांग, कलहंस, मानसीक।
- **हितैषी** शुभेच्छु, मंगलाकांक्षी, शुभचिन्तक, हितचिन्तक, हितकारी।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'असुर' का समानार्थी है—
(a) पापी (b) भूत
(c) राक्षस (d) उद्दण्ड
उत्तर—(c) राक्षस

2. 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है—
(a) नीरधि (b) पंकज
(c) सरोज (d) पुण्डरीक
उत्तर—(a) नीरधि

YUKTI *ज्ञान— नीरधि = सागर होता है, कमल नहीं। शेष तीनों कमल के पर्यायवाची हैं।*

3. 'अहि' का पर्यायवाची नहीं है—
(a) उरग (b) सरीसृप
(c) पवनाश (d) सिंधुर
उत्तर—(d) सिंधुर

4. सरस्वती का पर्यायवाची नहीं है—
(a) वीणापाणि (b) महाश्वेता
(c) पद्मा (d) भारती
उत्तर—(c) पद्मा

YUKTI *ज्ञान—शेष तीनों का अर्थ सरस्वती है।*

5. 'सूरज' किसका पर्यायवाची है ? **राजस्थान टी.ई.टी.**
(a) अंशुमाली (b) आदित्य
(c) भास्कर (d) इन सभी का
उत्तर—(d) इन सभी का

6. 'शिव' का पर्यायवाची है—
(a) शिवालय (b) रुद्र
(c) रुद्राक्ष (d) हरि
उत्तर—(b) रुद्र

7. किस शब्द के पर्यायवाची गलत हैं ? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) कमल–जलज, पंकज, सरोज (b) पुष्प–कुसुम, फूल, सुमन

(c) सरस्वती–गिरा, भारती, वाणी (d) सूर्य–दिवा, दिन, वासर

उत्तर—(d) सूर्य–दिवा, दिन, वासर

YUKTI **ज्ञान**—*सूर्य के पर्यायवाची गलत हैं क्योंकि ये सूर्य के पर्यायवाची न होकर ये सभी दिन के पर्यायवाची हैं शेष तीनों के पर्यायचावी सही हैं। सूर्य का पर्यायवाची रवि, भानु, दिनेश, दिवाकर, प्रभाकर, सविता आदि हैं।*

8. 'पत्थर' का पर्यायवाची है— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) हिमालय (b) पाषाण

(c) गिरि (d) शैल

उत्तर—(b) पाषाण

9. कौन-से शब्द का अर्थ बाकी तीन से अलग है?

(a) उत्सव (b) पर्व

(c) उत्साह (d) समारोह

उत्तर—(c) उत्साह

YUKTI **ज्ञान**—*उत्सव, पर्व, समारोह, समानार्थी हैं परन्तु उत्साह = हौसला*

10. इनमें से 'अमृत' का पर्यायवाची नहीं है—

(a) सुधा (b) अमी

(c) पीयूष (d) अम्बुज

उत्तर—(d) अम्बुज

YUKTI **ज्ञान**—*अम्बुज = कमल शेष तीनों का अर्थ अमृत है।*

11. जो शब्द पत्नी का पर्याय न हो उसे इंगित कीजिए— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) कलत्र (b) दौहित्र

(c) भार्या (d) जाया

उत्तर—(b) दौहित्र

YUKTI **ज्ञान**—*दौहित्र = धेवता (पुत्री का पुत्र)*

12. 'अतिथि' का पर्यायवाची है—

(a) आम्र (b) आगन्तुक

(c) अनल (d) रंभा

उत्तर—(b) आगन्तुक

13. कौन-सा शब्द 'अग्नि' का पर्यायवाची है ? **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) अनल (b) अनिल

(c) राजीव (d) प्रस्तर

उत्तर—(a) अनल

14. कौन-सा शब्द बाकी तीन से अलग है ? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) गयंद (b) करि

(c) भानुफल (d) गज

उत्तर—(c) भानुफल

YUKTI **ज्ञान**—*भानुफल = केला; जबकि बाकी तीनों हाथी के पर्यायवाची हैं।*

15. इनमें से कौन-सा शब्द 'हनुमान' का वाचक है ?

(a) बजरंगी (b) पवनसुत

(c) मारुति (d) ये सभी

उत्तर—(d) ये सभी

4.4 विलोम शब्द

अर्थ के स्तर पर विपरीत भाव व्यक्त करने वाले शब्द 'विलोम' शब्द कहे जाते हैं। इन्हें 'विपरीतार्थ' या 'प्रतिलोम' शब्द भी कहा जाता है। जैसे—अंधकार का विलोम प्रकाश है तो राजा का विलोम रंक है।

- विलोमता के लिए चार बातों पर विचार किया जाता है—विषम संदर्भता, विषम संरचना, विषम घटकता, भौतिक संदर्भता।
- विलोम शब्द दो प्रकार के होते हैं—सामान्य विलोम एवं निर्मित विलोम। जैसे—सुख–दुःख, माता–पिता, युवा–वृद्ध, आदमी–औरत, राजा–रंक सामान्य विलोम हैं; किन्तु—

  यश–अपयश, मान–अपमान, उर्वर–अनुर्वर, सुपुत्र–कुपुत्र निर्मित विलोम हैं, क्योंकि पहले शब्द में उपसर्ग जोड़कर (या उपसर्ग बदलकर) इनका निर्माण किया गया है।
- कभी-कभी शब्दों की विविधता के कारण एक शब्द के कई विलोम भी हो सकते हैं, यथा—

  राजा–रंक (धनवान–निर्धन के सन्दर्भ में)

  राजा–प्रजा (शासक–शासित के सन्दर्भ में)

  राजा–रानी (पुल्लिग–स्त्रीलिंग के सन्दर्भ में)
- कभी-कभी एक शब्द के एक से अधिक अर्थ होने पर उनके विलोम भी एक से अधिक होते हैं। यथा—उत्तर का विलोम **प्रश्न** भी है, **दक्षिण** भी (दिशा का अर्थ लेने पर)।

विलोम शब्दों की सूची

यहाँ कुछ प्रमुख विलोम शब्दों की सूची दी जा रही है :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	अग्र	पश्च
अमृत	विष	अंधकार	प्रकाश
अँधेरा	उजाला	आयात	निर्यात
आरोहण	अवरोहण	अनुराग	विराग
अवनि	अम्बर	अपमान	सम्मान
अग्रज	अनुज	आस्था	अनास्था
आर्द्र	शुष्क	अधुनातन	पुरातन
आरोह	अवरोह	आदान	प्रदान
असूया	अनसूया	आर्य	अनार्य
अनाथ	सनाथ	इष्ट	अनिष्ट
अघ	अनघ	अधम	उत्तम
अपकार	उपकार	अकाल	सुकाल
अनुचित	उचित	अनेकता	एकता
अर्थ	अनर्थ	आकाश	पाताल
आदर	अनादर	आकर्षण	विकर्षण
आविर्भाव	तिरोभाव	अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अतिवृष्टि	अनावृद्धि	अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

शब्द	विलोम
अनिवार्य	ऐच्छिक
अर्पण	ग्रहण
ईद	मोहर्रम
ईश	अनीश
इति	अथ
ईप्सित	अनीप्सित
इकट्ठा	बिखरा
इत	उत
उत्थान	पतन
उन्नति	अवनति
उन्मूलन	रोपण
श्रोता	वक्ता
उधार	नकद
उपत्यका	अधित्यका
उत्तम	अधम
उत्साह	अनुत्साह
उत्तरायण	दक्षिणायन
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उन्मुख	विमुख
उपकार	अपकार
उत्कृष्ट	निकृष्ट
एकता	अनेकता
एकल	बहुल
एकपक्षीय	बहुपक्षीय
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
औपचारिक	अनौपचारिक
ऋण	उऋण
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
क्रोध	क्षमा
कृत्रिम	अकृत्रिम
कल्पित	यथार्थ
खरा	खोटा
कृपण	दानी
कुख्यात	विख्यात
कुलीन	अकुलीन
कृतज्ञ	कृतघ्न
क्रिया	प्रतिक्रिया
कर्ता	अकर्ता
कठिन	सरल
खण्डन	मण्डन

शब्द	विलोम
अवर	प्रवर
इच्छा	अनिच्छा
ईश्वर	अनीश्वर
इहलोक	परलोक
ईहा	अनीहा
इधर	उधर
इसका	उसका
उग्र	सौम्य
उपसर्ग	परसर्ग
उद्धत	विनीत
उन्मीलन	निमीलन
उपयुक्त	अनुपयुक्त
एक	अनेक
उदात्त	अनुदात्त
उष्ण	शीत
उच्च	निम्न
उपमान	उपमेय
उदार	अनुदार
उत्कर्ष	अपकर्ष
उदयाचल	अस्ताचल
एकत्र	विकीर्ण
एकाग्र	चंचल
एकाधिकार	सर्वाधिकार
ऐषणा	अनेषणा
एकांगी	अनकांगी
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
ऋजु	वक्र
ऋत	अनृत
कुटिल	सरल
कृपा	कोप
करुण	निष्ठुर
कोमल	कठोर
कुलदीप	कुलांगार
कृष्ण	शुक्ल
कृश	पुष्ट, स्थूल
क्रूर	अक्रूर
क्रय	विक्रय
कुलटा	पतिव्रता
खाद्य	अखाद्य
गम्भीर	वाचाल

शब्द	विलोम
गुप्त	प्रकट
गुण	दोष
गरल	सुधा
गुरु	लघु
ग्राह्य	त्याज्य
ग्रहीत	त्यक्त
घृणा	प्रेम
चेतन	अचेतन
चिर	अचिर
चेतन	अचेतन
चर	अचर
चपल	गंभीर
चैन	बेचैन
चिकना	खुरदरा
छली	निश्छल
छाया	धूप
जड़	चेतन
जाग्रत	सुप्त
जागरण	सुषुप्ति
जंगम	स्थावर
जन्म	मृत्यु
जागृति	सुषुप्ति
ज्योति	तम
तृष्णा	तृप्ति
तीव्र	मन्द
तीक्ष्ण	कुंठित
त्याग	ग्रहण
तम	ज्योति
तिक्त	मधुर
त्याज्य	ग्राह्य
तामसिक	सात्विक
दुरात्मा	महात्मा
दूषित	स्वच्छ
द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व
देव	दानव
दिन	रात
दुर्जन	सज्जन
दूषित	स्वच्छ
दुष्प्राप्य	सुप्राप्य
द्वैत	अद्वैत

शब्द	विलोम
ग्रहण	त्याग
गृहस्थ	संन्यासी
गर्मी	सर्दी
गौरव	लाघव
गोचर	अगोचर
ग्राम्य	नागर
घोष	अघोष
चिरंतन	नश्वर
चोर	साहूकार
चिंतित	निश्चिंत
चंचल	स्थिर
चतुर	मूर्ख
चढ़ना	उतरना
चिरायु	अल्पायु
चल	अचल
छरहरा	थुलथुला
जय	पराजय
जटिल	सरल
ज्येष्ठ	कनिष्ठ
ज्वार	भाटा
जीवन	मरण
जंगम	स्थावर
ताप	शीत
तुच्छ	महान्
दण्ड	पुरस्कार
तृप्त	अतृप्त
तरल	ठोस
ताना	बाना
तर्क	कुतर्क
त्याग	ग्रहण
दुःख	सुख
दुराचार	सदाचार
दुर्लभ	सुलभ
तरुण	वृद्ध, तरुणी
दिवस	रात्रि
दीर्घ	ह्रस्व
दुराचारी	सदाचारी
दैहिक	आध्यात्मिक
दुःशील	सुशील
दानी	कृपण

@UPSC_THOUGHT

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दुष्ट	विनीत	दक्षिण	उत्तर
दुर्भाग्य	सौभाग्य	धृष्ट	विनीत
धन	ऋण	ध्वंस	निर्माण
धवल	कृष्ण	धनी	निर्धन
धर्म	अधर्म	धीर	अधीर
धनात्मक	ऋणात्मक	नित्य	अनित्य
निर्मल	मलिन	नूतन	पुरातन
नश्वर	चिरन्तन	निरर्थक	सार्थक
नगर	ग्राम	निर्लज्ज	सलज्ज
न्यून	अधिक	नीरस	सरस
निरामिष	सामिष	निषिद्ध	विहित
नैसर्गिक	कृत्रिम	निष्काम	सकाम
निष्क्रिय	सक्रिय	निराकार	साकार
निन्दा	स्तुति	नया	पुराना
निर्दय	सदय	नागरिक	ग्रामीण
निर्यात	आयात	निरक्षर	साक्षर
नख	शिख	निर्दोष	सदोष
निष्फल	सफल	निःस्वार्थ	स्वार्थ
निर्दिष्ट	अनिर्दिष्ट	नीरोग	रोगी
याचक	दाता	निर्धन	धनवान
निद्रा	जागरण, अनिद्रा	नकारात्मक	सकारात्मक
निष्ठा	अनिष्ठा	न्याय	अन्याय
परुष	कोमल	पण्डित	मूर्ख
प्रलय	सृष्टि	परतन्त्र	स्वतन्त्र
पाप	पुण्य	प्रश्न	उत्तर
प्रसार	संकोच	प्रमुख	गौण
पूर्व (पूरब)	पश्चिम	पुरस्कार	दण्ड
पक्ष	विपक्ष	पूर्ववर्ती	परवर्ती
प्रवेश	निर्गम	बहिरंग	अन्तरंग
पतन	उत्थान	पवित्र	अपवित्र
परिग्रह	अपरिग्रह	परिणत	अपरिणत
पाक	नापाक	पावन	अपावन
पारदर्शी	अपारदर्शी	परकीया	स्वकीया
पुरस्कृत	तिरस्कृत	पार्थिव	अपार्थिव
पटु	अपटु	पूर्णिमा	अमावस्या
प्रीति	वैर	प्रवृत्ति	निवृत्ति
पठित	अपठित	पृथक	संयुक्त
पेय	अपेय	पाश्चात्य	पौर्वात्य
पिता	माता	प्रकट	गुप्त
प्रफुल्ल	म्लान	प्रसारण	संकुचन

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
प्रगति	अगति	प्रार्थी	प्रार्थिनी
बाह्य	आन्तरिक	बद्ध	मुक्त
बैर	प्रीति	बंजर	उर्वर
बाढ़	सूखा	बर्बर	सभ्य
बध्य	अबध्य	बढ़िया	घटिया
बेमेल	संगत	बन्धन	मोक्ष
भावी	अतीत	भूषण	दूषण
भौतिक	आध्यात्मिक	मधुर	कटु
मृसण	रूक्ष	महात्मा	दुरात्मा
मानव	दानव	मूक	वाचाल
मृदुल	कठोर	मौखिक	लिखित
योगी	भोगी	यथार्थ	आदर्श
यश	अपयश	बुराई	भलाई
यौवन	बुढ़ापा	योग	भोग
योगी	भोगी	युवा	वृद्ध
याचक	दाता	युद्ध	शान्ति
राजा	रंक, प्रजा	रोगी	निरोग
राग	विराग	रक्षक	भक्षक
रात	दिन	रात्रि	दिवस
रिक्त	पूर्ण	रक्षक	भक्षक
रुदन	हास्य	रात्रि	दिवस
रूप	कुरूप	रात	दिन
लौकिक	अलौकिक	लघु	गुरु
लिप्त	निर्लिप्त	लाभ	हानि
लिखित	अलिखित	लचीला	कठोर
लोभी	निर्लोभ	लोकतंत्र	राजतंत्र
विकीर्ण	संकीर्ण	विपन्न	सम्पन्न
विख्यात	कुख्यात	विशिष्ट	सामान्य
विपत्ति	सम्पत्ति	विभव	पराभव
विधवा	सधवा, विधुर	विस्तृत	संक्षिप्त
वृष्टि	अनावृष्टि	वैमनस्य	सौमनस्य
वैयक्तिक	सार्वजनिक	शिष्ट	अशिष्ट
विस्तार	संक्षेप	शासक	शासित
श्वेत	श्याम	श्यामल	गौर
शालीन	अशालीन	शुष्क	आर्द्र
शोषक	पोषक, शोषित	साकार	निराकार
शाश्वत	क्षणिक	संक्षिप्त	विस्तृत
श्लील	अश्लील	स्वार्थ	परमार्थ
सजीव	निर्जीव	सदाचारी	दुराचारी
सहयोगी	प्रतियोगी	सूक्ष्म	स्थूल

@UPSC_THOUGHT

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
• सामान्य	विशिष्ट	• संगठित	असंगठित
• सादर	निरादर	• सक्षम	अक्षम
• सत्कर्म	दुष्कर्म	• सुधा	गरल
• साकार	निराकार	• संकोच	प्रसार
• सुपंथ	कुपंथ	• स्वस्थ	अस्वस्थ
• स्तुति	निन्दा	• सौम्य	उग्र
• स्थिर	अस्थिर	• सृजन	संहार
• सौभाग्य	दुर्भाग्य	• ह्रास	वृद्धि
• सृष्टि	प्रलय	• हर्ष	विषाद
• ह्रस्व	दीर्घ	• क्षुद्र	विराट
• हास	रुदन	• क्षम्य	अक्षम्य
• क्षणिक	शाश्वत	• ज्ञेय	अज्ञेय
• क्षमा	दण्ड	• ज्ञात	अज्ञात

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'हर्ष' का विपरीतार्थ शब्द है—

(a) उल्लास (b) विषाद

(c) कष्ट (d) दुःख

उत्तर—(b) विषाद

YUKTI **ज्ञान**—*उल्लास = प्रसन्नता, कष्ट = शरीरिक असुविधा, दुख = मानसिक कष्ट*

2. 'उत्थान' का विलोम है—

(a) प्रस्थान (b) विस्थापन

(c) पतन (d) अनुत्थान

उत्तर—(c) पतन

YUKTI **ज्ञान**—*उत्थान = प्रगति, पतन = अवनति*

3. 'यथार्थ' का विलोम है—

(a) अनुमानित (b) कल्पित

(c) सत्य (d) मनोवांछित

उत्तर—(b) कल्पित

YUKTI **ज्ञान**—*यथार्य = जो यथा स्थिति है, कल्पित = जो कल्पना की वस्तु है।*

4. 'शुष्क' का विलोम है—

(a) सुगंध (b) आर्द्र

(c) सक्रिय (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) आर्द्र

YUKTI **ज्ञान**—*आर्द्र = गीला, सुगंध = दुर्गन्ध का विलोम है जबकि सक्रिय = निष्क्रय का विलोम है।*

5. 'अनादर' का विलोम है—

(a) मान (b) सम्मान

(c) आदर (d) सत्कार

उत्तर—(c) आदर

YUKTI **ज्ञान**—*अनादर = आदर न देने का भाव अतः यह आदर का विलोम है। मान, सम्मान, आदर क्रमशः पर्यायवाची हैं।*

6. 'कृतज्ञ' का विलोम है—

(a) कृतघ्न (b) कृतार्थ

(c) निन्दक (d) प्रत्युपकार

उत्तर—(a) कृतघ्न

YUKTI **ज्ञान**—*कृतज्ञ = जो किए हुए उपकार को मानता है, कृतघ्न = जो किए हुए उपकार को नहीं मानता है।*

7. 'कृत्रिम' का विपरीतार्थक शब्द है—

(a) सहज (b) यथार्थ

(c) प्राकृतिक (d) निर्मित

उत्तर—(c) प्राकृतिक

YUKTI **ज्ञान**—*कृत्रिम = जो मनुष्य ने बनाया है, प्राकृतिक = जो प्रकृति ने बनाया है।*

8. 'विग्रह' का विपरीत शब्द है—

(a) सन्धि (b) समास

(c) आग्रह (d) परिग्रह

उत्तर—(a) सन्धि

YUKTI **ज्ञान**—*विग्रह = अलग–अलग करना, इसका विलोम समास होगा क्योंकि समास का विलोम विग्रह होता है।*

9. सृष्टि का विलोम है—

(a) विनाश (b) मिटाना

(c) प्रलय (d) विध्वंस

उत्तर—(c) प्रलय

YUKTI **ज्ञान**—*सृष्टि = निर्माण करना, प्रलय = विध्वंस करना अतः ये एक दूसरे के विलोम हैं। यथा – परमात्मा ही सृष्टि करता है और वही प्रलय करता है।*

10. 'प्रत्यक्ष' का विलोम होगा—

(a) परोक्ष (b) पीछे

(c) ओझल (d) नेपथ्य

उत्तर—(a) परोक्ष

YUKTI **ज्ञान**—*प्रत्यक्ष = जो आँखों के सामने हो, परोक्ष = जो हमारे पीछे हो। अंग्रेजी में प्रत्यक्ष को Direct और परोक्ष को Indirect कहते हैं।*

11. 'मुख्य' का विलोम है–

(a) अनिवार्य (b) गौण

(c) संक्षिप्त (d) स्वतन्त्र

उत्तर—(b) गौण

YUKTI **ज्ञान**—*मुख्य = जो प्रमुख है, गौण = जो महत्वहीन अर्थात प्रमुख नहीं है।*

12. 'अर्वाचीन' का विलोम है–

(a) नवीन (b) प्राचीन

(c) आधुनिक (d) अधुनातन

उत्तर—(b) प्राचीन

YUKTI **ज्ञान**–*अर्वाचीन = नया, प्राचीन = पुराना*

13. 'पुरस्कार' का विलोम है–

(a) पारितोषिक (b) कोप

(c) कृपा (d) दण्ड

उत्तर—(d) दण्ड

YUKTI **ज्ञान**–*पुरस्कार = अच्छा काम करने पर मिलता है जबकि, दण्ड = अपराध करने पर दिया जाता है।*

14. 'प्रसार' का विलोम है–

(a) संकुचित (b) एकत्रित

(c) एकत्र (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) संकुचित

YUKTI **ज्ञान**–*प्रसार = फैलाना, संकुचित = समेट लेना अतः ये दूसरे के विलोम हैं।*

15. 'सम्पत्ति' का विलोम है–

(a) सम्पदा (b) विपदा

(c) विपत्ति (d) निर्धनता

उत्तर—(c) विपत्ति

YUKTI **ज्ञान**–*सम्पत्ति = धन, विपत्ति = दुख, ज्यादातर विपत्तियाँ सम्पत्ति होने पर नष्ट हो जाती हैं, अतः सम्पत्ति का विलोम विपत्ति है।*

4.5 समश्रुत शब्द

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जो सुनने में एक जैसे लगते हैं, क्योंकि उनकी ध्वनियों में बहुत थोड़ा अन्तर होता है, परन्तु वे भिन्नार्थी होते हैं। ऐसे शब्दों को समश्रुत शब्द या समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है। जैसे—अनल (आग), अनिल (हवा), उपयुक्त (ठीक), उपर्युक्त (ऊपर कहा हुआ) आदि। इन शब्दों के सही अर्थ को जानकर ही उनका प्रयोग किया जाना चाहिए। **ऐसे समश्रुत शब्दों में से कुछ प्रमुख शब्दों की अर्थ सहित सूची यहाँ प्रस्तुत है—**

समश्रुत शब्द	अर्थ	समश्रुत शब्द	अर्थ
अनिल	हवा	अनल	आग
अगम	जहाँ पहुँचा न जा सके	आगम	शास्त्र
आयत	एक रेखाकृति	आयात	बाहर (विदेश) से माल मँगाना
अर्चना	पूजा	अर्जन	कमाई
आदि	प्रारम्भ	आदी	आदत वाला
अम्ब	माता	अम्बु	जल
अक्ष	धुरी	अक्षि	आँख
अमल	निर्मल, आदत	अम्ल	तेजाब
अंश	भाग	अंस	कंधा
अशक्त	निर्बल	आसक्त	मोहित
अयश	अपयश	अयस	लोहा
उदार	कृपालु	उधार	ऋण
उपयोग	काम में लेना	उपभोग	भोग करना
उपयुक्त	ठीक	उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
ऋत	सत्य	ऋतु	मौसम
कुल	वंश	कूल	किनारा
कल	मशीन, बीता हुआ या आगामी दिन	काल	मृत्यु
कोश	शब्दकोश	कोष	खजाना
कपिश	मटमैला	कपीश	हनुमान
कर्कट	केकड़ा	करकट	कूड़ा-करकट
करण	साधन	कर्ण	कुन्ती पुत्र
कुट	घड़ा	कूट	चोटी (पर्वत की)
कर्म	काम	क्रम	क्रमानुसार
कृपण	कंजूस	कृपाण	तलवार
कंकाल	अस्थि पंजर	कंगाल	निर्धन
कोट	किला	कोटि	करोड़
चरण	पैर	चारण	भाट कवि
क्षति	हानि	क्षिति	पृथ्वी
क्षात्र	क्षत्रिय का धर्म	छात्र	विद्यार्थी
ग्रह	नक्षत्र	गृह	घर
चार	एक संख्या	चारु	सुन्दर
चपल	चञ्चल	चपला	बिजली
चतुष्पथ	चौराहा	चतुष्पद	चौपाया
छत	मकान की छत	क्षत	घाव
जलज	कमल	जलद	बादल
तप्त	गर्म	तृप्त	संतुष्ट
तरंग	लहर	तुरंग	घोड़ा
तक्र	मट्ठा	तर्क	विचार
तरुण	युवक	तरणि	सूर्य
तरुणी	युवती	तरणी	नाव
तरु	वृक्ष	तर	गीला
तन	शरीर	तनु	पतला
द्रव्य	धन	द्रव	तरल
देव	देवता	दैव	विधाता
दश	दस	दंश	डंक
दवा	दवाई	दबा	दबाना

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

समश्रुत शब्द	अर्थ	समश्रुत शब्द	अर्थ
दिन	दिवस	दीन	निर्धन
दारा	पत्नी	द्वारा	माध्यम
धान्य	अनाज	धान	चावल
निधन	मृत्यु	निर्धन	गरीब
नहर	नदी से पानी ले जाने वाली नहरें	नाहर	शेर
नदी	सरिता	नन्दी	शिव का वाहन
निसान	झण्डा	निशान	चिह्न
नियत	निश्चित	नीयत	मन का भाव
नियति	भाग्य		
निहित	छिपा हुआ	निहत	मरा हुआ
पद	चरण	पाद	अपान वायु
पद्य	कविता	पद्म	कमल
परुष	कठोर	पुरुष	आदमी
पवन	हवा	पावन	पवित्र
पति	भर्ता	पत	लज्जा
पर्ण	पत्ता	प्रण	प्रतिज्ञा
प्रवाह	बहना	परवाह	चिन्ता
प्रहर	समय की इकाई	प्रहार	आघात
परिणाम	फल	परिमाण	नाप-तोल
प्रधान	प्रमुख	परिधान	पोशाक
परिच्छेद	अध्याय	परिच्छद	पोशाक
प्रणय	प्रेम	परिणय	विवाह
बात	बातचीत	वात	हवा
बलि	न्योछावर	बली	ताकतवर
बाढ़	जल की अधिकता	बाड़	रोक
वहन	भार उठाना	बहन	भगिनी
वदन	मुख	बदन	शरीर
बन्दी	कैदी	वन्दी	भाट कवि
भारती	सरस्वती	भारतीय	भारत का
भवन	मकान	भुवन	लोक
वन	जंगल	बन	बनना
मन्दर	पर्वत	मन्दिर	देव स्थान
मेघ	बादल	मेध	यज्ञ
मास	महीना	माँस	गोश्त
मोर	मयूर	मौर	मुकुट
मद्य	शराब	मद	अहंकार
रत	संलग्न	रति	प्रेम, कामदेव की पत्नी
रीति	ढंग		
रेचक	पाचक	रोचक	रुचिकर

समश्रुत शब्द	अर्थ	समश्रुत शब्द	अर्थ
लग्न	मुहूर्त	लगन	प्रेम, उत्साह
लक्ष	लाख	लक्ष्य	उद्देश्य
व्याधि	रोग	व्याध	बहेलिया
रक्त	खून	रिक्त	खाली
वय	अवस्था	व्यय	खर्च
वसन	वस्त्र	व्यसन	बुरी आदत
वर्ण	रंग	व्रण	घाव
वाद्य	बाजा	वाद	तर्क, सम्प्रदाय
शची	इन्द्राणी	शुचि	पवित्र
शकल	टुकड़े	सकल	सम्पूर्ण
सुर	देवता	सूर	सूरदास
शुक्ल	सफेद	शुल्क	फीस
शीशा	दर्पण	सीसा	एक धातु
श्वजन	कुत्ता	स्वजन	बन्धु-बान्धव
शारदा	सरस्वती	शरद	शरदऋतु
सर्वदा	सदैव	सर्वथा	पूर्णतः
सुत	पुत्र	सूत	धागा
सबल	बलवान	शबल	चितकबरा
स्रोत	उद्गम	स्तोत्र	स्तुति के मन्त्र
सत्व	सारतत्व	स्वत्व	अधिकार
सबल	ताकतवर	सम्बल	सहारा
सम्मति	राय	सन्मति	अच्छी बुद्धि
समर्थ	सामर्थवान	सामर्थ्य	क्षमता
सुरति	याद	सुरीति	अच्छी तरह
स्वपच	स्वयंपाकी	श्वपच	चाण्डाल
स्पृहा	इच्छा	स्पर्द्धा	प्रतिस्पर्द्धा
शाप	अभिशाप	साँप	विषधर (सर्प)
सर्ग	अध्याय	स्वर्ग	देवलोक
शंकर	महादेव	संकर	मिश्रित
हरण	चुराना	हिरण	मृग
हस्त	हाथ	हस्ती	हाथी
हाल	दशा	हाला	शराब
हरा	एक रंग	हीरा	एक रत्न
हंस	एक पक्षी	हँस	हँसना
हिम	बर्फ	हेम	स्वर्ण
शम	शान्ति	सम	बराबर
साला	पत्नी का भाई	शाला	विद्यालय
सवर्ण	उच्च जाति का	स्वर्ण	सोना
इंदिरा	लक्ष्मी	इंद्रा	इंद्राणी
चक्रवाक	चकवा पक्षी	चक्रवात	तूफान, बबंडर

समश्रुत शब्द	अर्थ	समश्रुत शब्द	अर्थ
संग	साथ	संघ	समुदाय (समूह)
आवास	निवास	आयास	प्रयत्न
हय	घोड़ा	हिय	हृदय
श्रमण	जैन या बौद्ध साधु	श्रवण	सुनना
शशधर	चन्द्रमा	शशिधर	शंकर
क्रांति	विद्रोह	कान्ति	चमक

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्न शब्दों के अन्तर को अर्थ द्वारा स्पष्ट कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. संकर, शंकर

(a) शिव, मिश्रित (b) मिश्रित, शिव

(c) बाजरा, गेहूँ (d) गेहूँ, बाजरा

उत्तर—(b) मिश्रित, शिव

> YUKTI ***ज्ञान***—*संकर = मिश्रित। दो के मेल से संकर शब्द या बीज बनता है जैसे — संकर बाजरा, या रेलगाड़ी में दो भाषाओं अंग्रेजी — रेल, हिन्दी — गाड़ी के शब्दों का मेल है। शंकर = शिवजी*

2. अनल, अनिल

(a) आग, हवा (b) पानी, आग

(c) हवा, आग (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) आग, हवा

3. हंस, हँस

(a) एक पक्षी, हँसना क्रिया (b) हँसना, हंस

(c) प्रसन्नता, चकोर (d) चकोर, प्रसन्नता

उत्तर—(a) एक पक्षी, हँसना क्रिया

4. वसन, वासन

(a) कपड़ा, बर्तन (b) बर्तन, भाँडे

(c) बर्तन, कपड़े (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) कपड़ा, बर्तन

5. शुक्ल, शुल्क

(a) श्वेत, फीस (b) फीस, श्वेत

(c) काला, पीला (d) सफेद, काला

उत्तर—(a) श्वेत, फीस

6. रक्त, रिक्त

(a) खाली, खून (b) खून, खाली

(c) लाल, पीला (d) पीला, लाल

उत्तर—(b) खून, खाली

7. चपल, चपला

(a) बिजली, चञ्चल (b) चञ्चल, बिजली

(c) लक्ष्मी, विष्णु (d) विष्णु, लक्ष्मी

उत्तर—(a) बिजली, चंचल

8. वदन, बदन

(a) मुख, शरीर (b) शरीर, मुख

(c) स्त्री, पुरुष (d) पुरुष, स्त्री

उत्तर—(a) मुख, शरीर

9. बात, वात

(a) बातचीत, हवा (b) हवा, बातचीत

(c) पानी, बिजली (d) बिजली, पानी

उत्तर—(a) बातचीत, हवा

10. ग्रह, गृह

(a) नक्षत्र, घर (b) घर, नक्षत्र

(c) भूत-प्रेत, वाटिका (d) निशाचर, भूत-प्रेत

उत्तर—(a) नक्षत्र, घर

11. हिम, हेम—

(a) सोना, बर्फ (b) बर्फ, सोना

(c) चाँदी, स्वर्ण (d) स्वर्ण, चाँदी

उत्तर—(b) बर्फ, सोना

12. श्वजन, स्वजन

(a) कुत्ता, बन्धु-बान्धव (b) बन्धु-बान्धव, कुत्ता

(c) परिवारीजन, भेड़िया (d) भेड़िया, परिवारीजन

उत्तर—(a) कुत्ता, बन्धु-बान्धव

13. मोर, मौर

(a) मयूर, मुकुट (b) मुकुट, मयूर

(c) जंगल, उपवन (d) उपवन, जंगल

उत्तर—(a) मयूर, मुकुट

14. वहन, बहन

(a) भगिनी, भार उठाना (b) भार उठाना, भगिनी

(c) भाई, बहिन (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) भार उठाना, भगिनी

15. हस्त, हस्ती

(a) हाथ, हाथी (b) हाथी, हाथ

(c) हाथी, घोड़ा (d) घोड़ा, हाथी

उत्तर—(a) हाथ, हाथी

4.6 अनेकार्थी शब्द

वे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, अर्थात् जो श्लिष्ट शब्द होते हैं, 'अनेकार्थक शब्द' कहे जाते हैं, जैसे—'सारंग' अनेकार्थी शब्द है जिसके अर्थ हैं—मोर, बादल, सर्प, मेढक आदि। अतः सारंग अनेकार्थी शब्द है। इसी प्रकार द्विज शब्द चार अर्थों में प्रयुक्त होता है—ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चन्द्रमा। अतः द्विज अनेकार्थक शब्द है।

✦ अनेकार्थक शब्द भले ही अनेक अर्थों को व्यक्त करें, किन्तु एक प्रसंग में उनका एक ही अर्थ होता है। वे किस अर्थ में प्रयुक्त हैं इसका पता सन्दर्भ-प्रसंग से ही चल पाता है।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

यहाँ कुछ अनेकार्थी शब्दों की सूची प्रस्तुत है—

- **अमृत** जल, सुधा, दूध, अन्न, स्वर्ण, घृत।
- **अर्थ** धन, कारण, प्रयोजन, के लिए, मतलब।
- **अधर** नीचे का होठ, नीचे, मध्य।
- **आपत्ति** विपत्ति, एतराज।
- **आकर** भण्डार, कोष, खान, स्रोत।
- **आन** शपथ, दूसरा, टेक।
- **अच्छा** सकुशल, भला, बढ़िया।
- **अंगद** बालि का पुत्र, बाजूबन्द।
- **अंतर** भेद, फासला।
- **अशोक** एक वृक्ष, शोकरहित।
- **अग्र** आगे, श्रेष्ठ, मुख्य, सिरा, अगुआ।
- **अपवाद** जहाँ नियम लागू न हो, कलंक।
- **अनी** सेना, नोक।
- **अलि** भ्रमर, सखी।
- **आराम** विश्राम, बाग, रोग में राहत।
- **आदी** अभ्यस्त, अदरख।
- **आत्मा** जीवात्मा, प्राण, अग्नि, सूर्य, परमात्मा।
- **अंकुश** नियन्त्रण, हाथी को हाँकने वाला लोहे का काँटा।
- **अन्त** समापन, मृत्यु, सीमा।
- **अंक** गोद, संख्या।
- **अंश** भाग, डिग्री।
- **अक्ष** धुरी, सर्प, पासा।
- **अविनाशी** ब्रह्म, शिव, वर्ण।
- **अरुण** लाल, सूर्य, सूर्य का सारथि।
- **अज** दशरथ के पिता, बकरा, ब्रह्मा।
- **अम्बर** आकाश, वस्त्र, केसर।
- **अर्क** सूर्य, अरक (रस)।
- **अहि** सर्प, सूर्य, राहु।
- **आम** एक फल (आम्र), सामान्य।
- **इन्दु** चन्द्रमा, कपूर।
- **इन्द्र** देवेन्द्र, श्रेष्ठ।
- **ईश** ईश्वर, राजा, समर्थ, महादेव, परमेश्वर, उपनिषद्।
- **उषा** अरुणोदय की लालिमा, वाणासुर की कन्या का नाम।
- **उत्तम** श्रेष्ठ, विष्णु, ध्रुव का सौतेला भाई।
- **उमा** पार्वती, दुर्गा, हल्दी।
- **उपचार** इलाज, उपाय।
- **उत्तर** एक दिशा, जबाव, विराट का पुत्र।
- **उपल** ओले, बादल, पत्थर।
- **ऋषभ** बैल, संगीत का दूसरा स्वर, एक तीर्थंकर (ऋषभदेव)।
- **करभ** हाथी का बच्चा, ऊँट का बच्चा, हाथी की सूँड़।
- **कुश** एक घास, राम का पुत्र, जल।
- **कुकुभ** एक पेड़, एक राग, छंद, एक दिशा।
- **कोटि** करोड़, वर्ग, धनुष का सिरा।
- **कच** केश, बृहस्पति का पुत्र।
- **कनक** सोना, धतूरा।
- **कपि** बन्दर, सूर्य, हाथी।
- **कर** टैक्स, हाथ, सूँड़, किरण।
- **कर्ण** कान, कुन्ती पुत्र।
- **कल** मशीन, चैन, आगामी या बीता हुआ दिन।
- **काण्ड** अध्याय, दुर्घटना।
- **काल** समय, मृत्यु।
- **कुंजर** हाथी, पीपल।
- **कुम्भ** घड़ा, एक राशि, कुम्भ मेला।
- **कुमार** स्कंद, तोता, अविवाहित।
- **कटाक्ष** तिरछी चितवन, व्यंग्य।
- **काम** कार्य, इच्छा, वासना।
- **कौशिक** विश्वामित्र, उल्लू।
- **कपिल** एक मुनि, महादेव, सूर्य, विष्णु।
- **कूर्म** कछुआ, विष्णु का एक अवतार।
- **कोश** शब्दकोश, म्यान।
- **केतु** पताका, एक अशुभ ग्रह।
- **कोक** चकवा, कोयल, मेढक।
- **खर** गधा, तेज।
- **खेचरी** दुर्गा, अप्सरा।
- **खेचर** ग्रह, पक्षी, वायु, बादल, विमान, देवता।
- **खोट** दुष्ट, मिलावट।
- **खत** चिट्ठी, कलम को तिरछा काटना, लिखावट।
- **खाली** रिक्त, बेरोजगार, जो व्यस्त न हो।
- **खग** पक्षी, वाण, वायु, बादल, चन्द्रमा।
- **खं** आकाश, स्वर्ग, सूर्य।
- **खून** रक्त, हत्या।
- **गति** मोक्ष, दया, हाल–चाल।
- **ग्रहण** राहु द्वारा सूर्य का चंद्रमा को ग्रस्त कर लेना, पकड़ना।
- **गायत्री** एक मन्त्र, एक छन्द, दुर्गा।
- **गण** वर्ग, संघ, शिव के गण, तीन वर्णों का समूह (छन्दशास्त्र में)।
- **गुण** धर्म, डोरी, रस्सी, कौशल, शील।
- **गुरु** आचार्य, बृहस्पति, भारी, दीर्घ, घर, बादल।
- **गैरिक** गेरू, सोना।
- **गो** गाय, किरण, इन्द्रिय, धरती।
- **गोपति** गोस्वामी, ग्वाला, विष्णु, कृष्ण।

@UPSC_THOUGHT

- **गोपाल** कृष्ण, ग्वाला, अहीर, राजा।
- **गौरी** पार्वती, तुलसी।
- **घन** ठोस, घन, बादल।
- **घृत** घी, जल।
- **घोष** ध्वनि, अहीरों का गाँव।
- **घात** हत्या, चोट, दांव।
- **घड़ियाल** मगरमच्छ, बड़ा घंटा।
- **घाट** नदी का घाट, कम, स्थान।
- **चण्ड** उग्र, शिव, स्कंद।
- **चन्द्र** जल, कपूर, चाँद।
- **चक** चकवा, जमीन का टुकड़ा, चक्र।
- **चपला** चंचला, लक्ष्मी, बिजली।
- **चपल** चंचल, पारा, मछली, पपीहा।
- **चक्र** पहिया, एक हथियार, एक व्यूह।
- **चोटी** पर्वत की चोटी, बालों की चोटी, शिखा।
- **चश्मा** ऐनक, झरना।
- **चाप** धनुष, परिधि का एक भाग।
- **चीर** चीरा लगाना (चीरना), वस्त्र।
- **चारा** उपाय, पशुओं का चारा।
- **चूना** कलई, टपकना।
- **चीनी** शक्कर, चीन का।
- **चौकी** पुलिस चौकी, लकड़ी की चौकी, सेना की चौकी, पहरा, पड़ाव।
- **चौथ** चतुर्थी तिथि, कर या आतंक से रूप में वसूली करना।
- **चुनना** तोड़ना, उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना, चिनाई करना।
- **चूर** चूर्ण, निमग्न (मद में चूर)।
- **छत्र** छतरी, कुकुरमुत्ता।
- **छन्द** काव्य के छंद, छलछंद (कपट), बहाना (बहाने बनाना)।
- **जम्बुक** जामुन, गीदड़।
- **जड़** मूल, मूर्ख, निश्चेष्ट (गतिहीन)।
- **जन** व्यक्ति, सेवक, लोक।
- **जनक** पिता, सीरध्वज।
- **जरा** बुढ़ापा, थोड़ा-सा।
- **जलज** कमल, मोती, शंख, मछली।
- **जाली** नकली, गवाक्ष।
- **जोड़** योग, सन्धि, पैबंद।
- **जलधर** बादल, समुद्र।
- **ज्या** धनुष की डोरी, वृत्त की त्रिज्या।
- **ज्वार** एक अनाज, ज्वार (समुद्र में उठने वाला)।
- **जलद** बादल, कपूर, मोथा।
- **जिला** जनपद, जीवनदान।
- **जाल** फरेब, शिकारी का जाल।
- **जय** विजय, महाभारत, सूर्य, अर्जुन, विष्णु के दो द्वारपालों में से एक (जय–विजय)।
- **जलना** ईर्ष्या करना, जल जाना, प्रकाशित करना (दीपक जलना)।
- **जमना** द्रव का ठोस बनना (पानी बर्फ के रूप में जम जाता है), उगना (बीज का जमना), दूध का दही बनना (जमना), स्थिर होना (नए पद पर जमने में समय लगेगा)।
- **जेठ** एक महीने का नाम, पति का बड़ा भाई।
- **जीवन** जिन्दगी, जल, वायु, पुत्र।
- **टीका** तिलक, एक आभूषण, इन्जेक्शन।
- **टीन** कनस्तर, लोहे की पतली चादर।
- **टेक** सहारा, गीत की टेक।
- **टेसू** पलाश, मूर्ख, टेसू (झांझी)।
- **ठाकुर** विष्णु, एक जाति (क्षत्रिय), नाई।
- **डण्डी** शाखा, तराजू की डण्डी।
- **ढिबरी** बोल्ट, दीपक (तेल का दीपक)।
- **तख्त** लकड़ी का तख्त, राजगद्दी।
- **तड़का** सवेरा (भोर), बघार।
- **तनु** शरीर, पतला।
- **तम** अंधकार, तमोगुण, राहु।
- **तत्व** यथार्थ, ब्रह्म, मूल, सार, पंचभूत।
- **तात** पिता, बेटा, भाई, गुरु।
- **तरणि** सूर्य, नौका।
- **तारा** नक्षत्र, आँख की पुतली।
- **ताल** तालाब, संगीत की ताल।
- **तूल** रुई, आकाश।
- **तेज** चमक, फुर्तीला, महँगा।
- **तीर** किनारा, वाण।
- **दण्ड** जुर्माना, सजा, डण्डा।
- **दल** पत्ता, समूह, सेना।
- **दस्त** हाथ, पाखाना।
- **दानी** दान करने वाला, दानव।
- **दारु** काष्ठ, पीतल, शिल्पी।
- **दाम** मूल्य, माला, रस्सी।
- **दैव** भाग्य, विधाता।
- **द्विज** ब्राह्मण, पक्षी, चन्द्रमा, दाँत।
- **दारू** दवा-दारू, शराब, बारूद।
- **दिनेश** सूर्य, समीप, आधार।
- **धवल** उजला, सफेद, साफ, निष्कलंक।
- **ध्रुव** स्थिर, उत्तानपाद का पुत्र, एक तारा।

@UPSC_THOUGHT

- **ध्वनि** आवाज, व्यंग्यार्थ।
- **नजर** दृष्टि, दया।
- **नल** दमयन्ती का पति, पानी की मशीन।
- **नाक** नासिका, स्वर्ग।
- **नागरी** चतुर स्त्री, देवनागरी लिपि।
- **नाग** हाथी, काला सर्प।
- **नाना** विविध, माता का पिता।
- **नार** गर्दन, नाड़ा, नाला।
- **नारी** स्त्री, मोटी रस्सी, नाड़ी।
- **नाल** बन्दूक की नली, घोड़े की नाल।
- **नित्य** प्रतिदिन, शाश्वत (सदैव)।
- **नग** पर्वत, रत्न, वृक्ष।
- **निशाचर** राक्षस, गीदड़, चोर।
- **नीलकण्ठ** शिव, एक पक्षी।
- **पक्ष** पंख, पाख।
- **पट** वस्त्र, परदा, किवाड़।
- **पटना** एक नगर, तय होना, छत पटना।
- **पट्टी** तख्ती, ड्रेसिंग, एक खाद्य वस्तु।
- **पतंग** सूर्य, कनकौआ, पक्षी, विष्णु।
- **पोत** जहाज, मोती।
- **पात्र** बर्तन, उचित व्यक्ति, चरित्र।
- **पत्र** चिट्ठी, पत्ता।
- **पद** पैर, ओहदा।
- **पद्म** कमल, एक पुराण का नाम, एक बड़ी संख्या।
- **पर** पंख, परन्तु।
- **पय** दूध, जल, ओज, अन्न।
- **परी** अप्सरा, लेटी, द्रव पदार्थ नापने की छोटी-सी परी (उपकरण)।
- **पुष्कर** एक तीर्थ-स्थल, कमल, तालाब।
- **पाग** चाशनी, पगड़ी।
- **पानी** जल, आब, इज्जत।
- **पास** उत्तीर्ण, निकट, स्वीकृत।
- **पुतली** आँख की पुतली, कठपुतली।
- **पयोधर** बादल, स्तन, नारियल।
- **प्रत्यय** बाद में जुड़ने वाला शब्द, विश्वास, ज्ञान।
- **पृष्ठ** पीठ, पन्ना, पीछे का भाग।
- **फल** परिणाम, फल-फ्रूट।
- **बलि** दैत्यराज बलि, न्योछावर।
- **बाग** उपवन, लगाम।
- **बार** केश, दफा।
- **बाल** बच्चा, केश।
- **बाली** सुग्रीव का भाई, गेहूँ आदि की बाली (बाल)।
- **बिन्दी** शून्य, माथे की बिन्दी।
- **बिल** चूहे का बिल, माल खरीद का बिल।
- **बुध** एक ग्रह का नाम, बुद्धिमान, देवता, सप्ताह का एक दिन।
- **बंशी** बाँसुरी, मछली फंसाने का काँटा।
- **बट्टा** मूल्य में कटौती, सिल-बट्टा की लोढ़ी।
- **बरी** मंगोड़ी, दोषमुक्त।
- **बैठक** ड्राइंग रूम (बैठने का कमरा), अधिवेशन, सोहबत।
- **बौराना** पागलपन, बौर आ जाना।
- **बदली** हल्के बादल, तबादला, परिवर्तन।
- **बरसाती** ऊपर का चारों ओर से खुला कमरा जिसमें केवल छत होती है, बरसात में पहनने का ओवर कोट (जो वाटरप्रूफ होता है।), वर्षाकाल का, यथा – बरसाती मेढक।
- **भंग** टूटना, भांग।
- **भव** शंकर, संसार।
- **भीम** एक पाण्डव, शिव, भयंकर।
- **भूत** भूतकाल, प्रेत।
- **भौंरा** भ्रमर, लट्टू।
- **मंगल** एक ग्रह, एक दिन, कल्याण।
- **मधु** शहद, शराब, बसन्त, एक दैत्य।
- **महावीर** हनुमान, वीर, सिंह, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर।
- **मित्र** सूर्य, दोस्त।
- **मुद्रा** अँगूठी, सिक्का।
- **मूल** जड़, मूलधन, मुख्य।
- **मण्डल** घेरा, वृत्त, रीजन (यथा—आगरा मण्डल)।
- **मंगल** एक ग्रह, एक दिन, कल्याण।
- **मूल** जड़, मूलधन।
- **मूक** गूँगा, विवश।
- **महाजन** सूदखोर, साहूकार, बड़ा आदमी, एक जाति विशेष।
- **महावीर** हनुमान, जैन तीर्थंकर, विष्णु, गरुड़, वज्र।
- **मित्र** सूर्य, दोस्त।
- **मुद्रा** अंगूठी, सिक्का, भावमुद्रा।
- **मद** नशा, मस्ती, अहंकार, कस्तूरी।
- **मोहर** सील (ठप्पा), छापा, अशर्फी।
- **मोर** मयूर, मेरा।
- **योग** जोड़, योग साधना।
- **रंग** वर्ण, मौज-आनन्द।
- **रस** काव्यानन्द, जूस।
- **राशि** ढेर, राशियाँ।
- **रास** लगाम, रासलीला, एक नृत्य।
- **रूपक** एक अलंकार, नाटक।
- **रसाल** आम, रसीला, ईख।

@UPSC_THOUGHT

- **राय** मत, एक उपाधि (रायसाहब)।
- **रूढ़** प्रसिद्ध अर्थ (रूढ़ अर्थ), अविभाज्य (रूढ़ संख्या), आरूढ़।
- **लगन** शुभ मुहूर्त, प्रेम, धुन।
- **लाल** पुत्र, लाल रंग, माणिक्य।
- **लंगर** जहाज का लंगर (रुकना), गुरुद्वारों का लंगर (जहाँ भोजन बँटता है) निशुल्क।
- **वंश** बाँस, कुल।
- **वत्स** पुत्र, बछड़ा।
- **वर** श्रेष्ठ, दूल्हा, वरदान।
- **वर्ण** रंग, अक्षर, उच्च वर्ण, निम्न वर्ण (जाति)।
- **विधि** विधाता, ढंग।
- **विवर** बिल, गड्ढा, गुफा।
- **वृंदा** तुलसी, राधा।
- **व्यंजन** व्यंजन वर्ण, खाद्य व्यंजन।
- **व्यास** त्रिज्या (radius) का दुगुना, एक ऋषि, कृष्ण द्वैपायन व्यास (वेदव्यास)।
- **वृत्त** गोल घेरा, वृतांत, छन्द (वर्ण वृत्त)।
- **विग्रह** शरीर, समास-विग्रह, मूर्ति (देव विग्रह)।
- **वास** निवास, दुर्गन्ध।
- **बिहार** एक प्रदेश, बौद्ध भिक्षुकों के मठ।
- **वृक** भेड़िया, गीदड़, कौवा, उल्लू, चोर, बज्र, एक असुर।
- **वर्ग** कक्षा, एक आयत जिसकी सभी भुजाएँ समान होती हैं।
- **वाद** सिद्धांत, तर्क, दावा (मुकदमा)।
- **विषय** गणित, साहित्य आदि विषय (Subject) इन्दिय ग्राह्य पदार्थ।
- **शिखी** मोर, ब्राह्मण, पर्वत, अग्नि।
- **शेर** सिंह, उर्दू के शेर।
- **श्याम** काला, श्रीकृष्ण।
- **शाल** एक वृक्ष, ऊनी या रेशमी चादर।
- **शुद्ध** स्वच्छ, पवित्र, साफ, ठीक।
- **शूर** वीर, योद्ध, विष्णु, सिंह।
- **श्री** शोभा, लक्ष्मी, सम्पत्ति।
- **श्रुति** वेद, कान।
- **सर** सरोवर, बाण, प्रमुख (यथा–सरपंच)।
- **सन्धि** जोड़, दरार, नाट्य सन्धियाँ, मेल (दो वर्णों का मेल)।
- **स्वरंग** मोर, हिरन, सिंह, हाथी, भ्रमर, कोयल आदि।
- **सुदर्शन** भगवान विष्णु का चक्र, सुन्दर, मछली, जामुन।
- **सुधा** अमृत, दूध, जल, शहद।
- **सैंधव** घोड़ा, नमक।
- **सोम** स्वर्ण, शयन करना।
- **स्नेह** घृत, तेल, प्रेम।
- **सुरभि** गाय, सुगन्ध, शराब, तुलसी।
- **सोना** चन्द्रमा, एक देवता।
- **हार** पराजय, माला।
- **हंस** सूर्य, एक पक्षी।
- **हर** हरण करना, शिवजी।
- **हरि** विष्णु, इन्द्र, सूर्य, सिंह।
- **हल** समाधान, खेत जोतने का हल।
- **हेम** स्वर्ण, धतूरा।
- **हस्ती** हाथी, हैसियत।
- **हलधर** बलराम, बैल, किसान।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

कौन-सा अर्थ दिये गये शब्द का नहीं है—

1. सारंग—

(a) धनुष (b) हिरन

(c) मेघ (d) कृष्ण

उत्तर—(d) कृष्ण

YUKTI ***ज्ञान***–*धनुष, हिरन, मेघ है, परन्तु सारंग का अर्थ कृष्ण नहीं है।*

2. सुरभि—

(a) गाय (b) सुगन्ध

(c) मदिरा (d) चन्द्रमा

उत्तर—(d) चन्द्रमा

YUKTI ***ज्ञान***–*सुरभि = गाय, सुगंध, मदिरा है पर सुरभि का अर्थ चन्द्रमा नहीं है।*

3. स्नेह—

(a) बुढ़ापा (b) घृत

(c) तेल (d) प्रेम

उत्तर—(a) बुढ़ापा

YUKTI ***ज्ञान***–*स्नेह = तेल, घृत, प्रेम है परन्तु स्नेह का अर्थ बुढ़ापा नहीं है।*

4. सुधा—

(a) अमृत (b) सागर

(c) दूध (d) जल

उत्तर—(b) सागर

YUKTI ***ज्ञान***–*सुधा = अमृत, दूध, जल है परन्तु सुधा का अर्थ सागर नहीं है*

5. सुदर्शन—

(a) सुदर्शन चक्र (b) सुन्दर

(c) मछली (d) सर्प

उत्तर—(d) सर्प

YUKTI ***ज्ञान***–*सुदर्शन = सुदर्शन चक्र, मछली, सुन्दर है परन्तु सुदर्शन का अर्थ सर्प नहीं है।*

6. दण्ड—

(a) जुर्माना (b) सजा

(c) डण्डा (d) जेल

उत्तर—(d) जेल

YUKTI *ज्ञान—डण्डा, जुर्माना, सजा है परन्तु दण्ड का अर्थ जेल नहीं है।*

7. तात—

(a) बेटा (b) स्त्री

(c) पिता (d) गुरु

उत्तर—(b) स्त्री

YUKTI *ज्ञान—तात-बेटा, पिता, गुरु के लिए प्रयुक्त शब्द है पर स्त्री के लिए नहीं।*

8. तरणि—

(a) सूर्य (b) नौका

(c) सूर्य और नौका दोनों (d) गंगा

उत्तर—(d) गंगा

YUKTI *ज्ञान—तरणि = सूर्य, नौका, है परन्तु गंगा नहीं है।*

9. जनक—

(a) पिता (b) सीता के पिता

(c) विदेहराज (d) लंकापति

उत्तर—(d) लंकापति

YUKTI *ज्ञान—जनक = सीता के पिता, विदेहराज, पिता के लिए प्रयुक्त होता है परन्तु लंकापति के लिए नहीं।)*

10. गोपाल—

(a) वसुदेव (b) कृष्ण

(c) अहीर (d) ग्वाला

उत्तर—(a) वसुदेव

YUKTI *ज्ञान—गोपाल = कृष्ण, ग्वाला, अहीर परन्तु वसुदेव के लिए यह प्रयुक्त नहीं होगा।*

11. 'स्नेह' के दो अर्थ हैं—

(a) प्रेम, तेल (b) गंगा, यमुना

(c) पृथ्वी, आकाश (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) प्रेम, तेल

YUKTI *ज्ञान—प्रेम, तेल परन्तु स्नेह = गंगा, यमुना या पृथ्वी आकाश नहीं है।*

12. 'श्रुति' के दो अर्थ हैं—

(a) स्मृति, सुषुति (b) वेद, कान

(c) चन्द्रमा, सोमरस (d) अमृत, विष

उत्तर—(b) वेद, कान

13. 'वास' के दो अर्थ हैं—

(a) सुगन्ध, आवास (b) मकान, छत

(c) निवास, दुर्गन्ध (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(c) निवास, दुर्गन्ध

14. 'वर्ण' के दो अर्थ हैं—

(a) रंग, अक्षर (b) विधाता, विष्णु

(c) शंकर, कामदेव (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) रंग, अक्षर

15. सैंधव के दो अर्थ हैं—

(a) नमक, घोड़ा (b) रथ, सारथी

(c) हाथी, घोड़ा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) नमक, घोड़ा

4.7 वाक्यांश के लिए एक शब्द

कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहने के लिए ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं, जो किसी वाक्यांश के अर्थ को पूरी तरह व्यक्त करने में समर्थ होते हैं। यहाँ ऐसे शब्दों की सूची प्रस्तुत है, जो वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त किये जाते हैं—

अतिथि	जिसके आने की कोई तिथि (पहले से) पता न हो।
अज्ञ	जो कुछ भी नहीं जानता हो।
अल्पज्ञ	जो बहुत कम जानता हो।
अप्रत्याशित	जिसकी आशा न की गई हो।
आशातीत	आशा से अधिक।
अधिनियम	विधायिका द्वारा स्वीकृत नियम।
अनित्य	जो नित्य न हो (नाशवान)।
अध्यादेश	निश्चित अवधि के लिए लागू किया गया आदेश।
अतुलनीय	जिसकी तुलना न की जा सके।
अनुपम	जिसकी उपमा न की जा सके।
अपठित	जो पहले पढ़ा हुआ न हो।
अपठनीय	जिसे पढ़ा न जा सके।
अस्तबल	जहाँ घोड़े बाँधे जाते हों।
अस्त्रागार	जहाँ अस्त्र रखे जाते हों।
अंतेवासी	वे शिष्य जो आचार्य के पास (गुरुकुल) में रहते हैं।
अप्सरा	स्वर्ग की सुन्दरी।
अगोचर	जो इन्द्रियों से परे हो।
अविवेकी	जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो।
आपादमस्तक	पैर से लेकर मस्तक तक।
अन्तरिक्ष	धरती और आकाश के बीच का स्थान।
आधुनिक	जिसकी सोच नए जमाने की हो।
अनाहूत	जिसे बुलाया न गया हो।
अद्वितीय	जिसके समान कोई दूसरा न हो।
अनिर्वचनीय	जिसे वाणी द्वारा व्यक्त न किया जा सके।
अभूतपूर्व	जैसा पहले कभी न हुआ हो।
अजातशत्रु	जिसका कोई शत्रु उत्पन्न ही न हुआ हो।
अन्तर्यामी	जो मन की बात जानता हो।
आध्यात्मिक	जिसका सम्बन्ध अध्यात्म से हो।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

आत्मिक	जिसका सम्बन्ध आत्मा से हो।
अप्रवासी	देश का वह व्यक्ति जो विदेश में रहता हो।
अपव्ययी	व्यर्थ का खर्च करने वाला।
अयाचित	जिसकी याचना न की गयी हो।
आजानुबाहु	घुटनों तक लम्बी बाँहों वाला।
आलोचक	गुण-दोष का विवेचक।
अन्त्यज	जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हो।
अधोहस्ताक्षरी	जिसके नीचे हस्ताक्षर हैं।
अनुवाद	एक भाषा के भाव-विचार दूसरी भाषा में व्यक्त करना।
अनामिका	कनिष्ठिका और मध्यमा के बीच की अँगुली।
अधिसूचना	सरकारी गजट में छपी सूचना।
अपराह्न	दोपहर के बाद का समय।
अपरिहार्य	जिसका परिहार करना सम्भव न हो।
अनायास	बिना प्रयास के।
अग्रज	पहले जन्म लेने वाला।
अनुज	पीछे (बाद में) जन्म लेने वाला।
आशुकवि	जो तुरंत कविता कर सके।
अवज्ञा	आदेश की अवहेलना।
अभियुक्त	जिस पर अभियोग लगाया गया हो।
अपराधी	जिसका अपराध सिद्ध हो गया हो।
अपरिग्रह	आवश्यकता से अधिक ग्रहण न करने की वृत्ति।
आक्रान्ता	जिसने आक्रमण किया हो।
आद्योपान्त	आदि से अन्त तक।
अंकशायिनी	वह स्त्री जो (पति या नायक की) गोद में सोती है।
अश्वारोही	घोड़े पर सवार व्यक्ति।
अपारदर्शी	जिसके आर-पार न देखा जा सके।
अस्त्र	फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।
अवैध	जो विधिसम्मत न हो।
अवध्य	जो वध करने योग्य न हो।
अनिश्चित	जिसके बारे में कुछ निश्चित हो।
अच्युत	जो कभी च्युत (स्थान से गिरना) न हुआ हो।
अनुगामी	पीछे चलने वाला।
अनर्घ्य	जिसकी कीमत कम हो।
अणिमा	वह सिद्धि जिससे शरीर को अत्यंत सूक्ष्म (छोटा) बनाया जा सके।
अकथित	जो कहा न गया हो।
अटल	जो अपनी बात से न टले।
अनिवार्य	जिसका निवारण न किया जा सके।
अजेय	जिसे जीता न जा सके, न जीतने योग्य।
अनुर्वर	जिस जमीन में कुछ उपजता न हो।
आग्नेयी	पूर्व–दक्षिण के बीच की दिशा, अग्नि की पत्नी (स्वाहा)

आजीवन	जीवन पर्यन्त
अंतर्कथा	कथा (या प्रसंग) के बीच में आने वाली कथा।
अंडज	जो अंडे से जन्म लेता है।
आप्तकाम	जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों।
आद्यंत	आदि से अंत तक।
आमंत्रित	जिसे किसी ने निमंत्रित किया हो।
आसेतु हिमालय	सेतुबंध (रामेश्वर) से लेकर हिमालय तक।
आबालवृद्ध	बालक से वृद्ध तक सभी।
आगतपतिका	वह नायिका (स्त्री) जिसका पति परदेश से आ गया हो।
अंतक	जीवन का अंत करने वाला (यमराज)।
अंजलिका	हाथ जोड़कर प्रणाम करने की क्रिया।
अंतपुर	राजमहल के भीतर का भाग (रनिवास)।
अंतरिम	दो कालों के बीच का समय।
अंतेवासी	गुरु के समीप (आश्रम में) रहने वाला छात्र।
आयात	विदेश से सामान मँगाना।
इन्दीवर	नीले रंग का कमल।
ईशान	उत्तर-पूर्व के बीच का कोण (दिशा)।
ईर्ष्यालु	जो दूसरों से ईर्ष्या करता है।
इन्द्रजीत	जिसने इन्द्र को जीत लिया हो।
इन्द्रियातीत	इन्द्रियों से परे।
इतिवृत्त	वह कथा जो क्रमानुसार हो।
इहलौकिक	जो इस लोक से सम्बन्धित हो।
ईप्सा	मन की इच्छा।
इच्छुक	मन में कोई इच्छा रखने वाला।
इन्द्र	देवताओं में जो श्रेष्ठ है (सुरेन्द्र)।
इमामवाड़ा	ताजिए रखने की जगह।
इमाम	मस्जिद में नमाज पढ़ाने वाला।
ऊसर	जिस भूमि में कुछ भी पैदा न होता हो।
उर्वर	उपजाऊ भूमि।
उरग	छाती के बल चलने वाला।
उदयाचल	वह पर्वत जहाँ से सूर्य उदित होता है।
उच्छिष्ट	भोजन के बाद बची जूठन।
उऋण	जिसने ऋण चुका दिया हो।
उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ।
उपरिलिखित	ऊपर लिखा हुआ।
उल्लेख	ऊपर लिखा गया लेख।
उभयनिष्ठ	जिसकी निष्ठा दोनों ओर हो।
उपकृत	किसी के उपकार से दबा हुआ।
उद्धारक	उद्धार करने वाला।
उदारमना	जिसका मन उदार हो।

@UPSC_THOUGHT

उषाकाल	अरुणोदय पूर्व की लालिमा का समय।
उपमान	जिससे उपमा दी जाय।
उपमेय	जिसकी उपमा उपमान से दी जाए, उपमा देने योग्य।
उपासक	जो उपासना करता है।
उपास्य	जिसकी उपासना की जाए, उपासना करने योग्य।
उपकारी	जो उपकार करने की वृत्ति रखता है।
उद्भिज	धरती फोड़कर जन्म लेने वाला (वृक्ष)।
उपादान	वह सामग्री जो वस्तुओं के निर्माण में काम आती है।
उत्क्षिप्त	ऊपर की ओर फैंका गया।
उच्चतम	जो सबसे ऊँचा (बड़ा) हो।
उच्छ्वास	ऊपर की ओर आने (ली जाने) वाली सांस।
ऊर्ध्वगामी	ऊपर की ओर जाने वाला।
ऐरावत	इन्द्र का हाथी।
ऐन्द्रिक	जिसका सम्बन्ध इन्द्रियों से हो।
एकपक्षीय	एक पक्ष से सम्बन्धित।
एकाक्षी	एक आँख वाला।
ऐहिक	जो इस लोक से सम्बन्धित हो।
कसेरा	बर्तन बेचने वाला।
कुशाग्र	तीव्र बुद्धि वाला।
कूपमण्डूक	बहुत कम जानने वाला, अपने स्थान पर सीमित।
कृतसंकल्प	जिसने संकल्प किया है।
कृतज्ञ	उपकार को मानने वाला।
कृतघ्न	उपकार को न मानने वाला।
किंकर्तव्यविमूढ़	जिसे कर्तव्य का बोध न हो।
कुलटा	चरित्रहीन स्त्री।
कली	बिना खिला फूल।
कुमारी	अभी जिसका विवाह न हुआ हो ऐसी कन्या।
कुलीन	जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो।
कुलांगार	कुल को नष्ट (या कलंकित) करने वाला।
कृतार्थ	जिसने अपना कर्तव्य कर लक्ष्य प्राप्त कर लिया हो।
कृतकृत्य	कार्य पूरा करने पर जो प्रसन्न हो।
खाद्यान्न	खाने योग्य अन्न।
खण्डित	जिसका कोई भाग टूट गया हो।
खण्डिता	वह नायिका, जिसका पति किसी अन्य स्त्री के साथ रात बिताकर प्रातःकाल रमण के चिह्नों से युक्त होकर घर लौटा हो।
खग्रास	ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य पूरा ढक गया हो।
खाद्य	जो खाने योग्य हो।
खेचर	जो आकाशचारी हो।
खड्गहस्त	जो सदैव हाथ में तलवार रखता हो।
गरिष्ठ	शीघ्र न पचने वाला भोजन।
गोचर	जहाँ तक इन्द्रियों की पहुँच हो।
गेय	जिसे गाया जा सके।
गोधूलि	संध्या और रात्रि के बीच की वेला।
गंगोत्री	गंगा का उद्गम स्थल।
गूंगा	जो बोल न सके।
गणिका	शरीर बेचने वाली स्त्री (वेश्या)।
ग्रामीण	गाँव का निवासी।
गोपनीय	छिपाने योग्य विषय या बात।
गुरुत्वाकर्षण	पृथ्वी की वह शक्ति, जिससे वह किसी वस्तु को अपनी ओर खींचती है।
गीतिनाट्य	अभिनय एवं गायन के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली नाट्य रचना।
गगनचुंबी	आकाश को छूने वाला (बहुत ऊँचा)।
गांगेय	गंगा के पुत्र (भीष्म या देवव्रत)।
गुरुडम	दूसरों से पूजा करवाने की वृत्ति।
गुरुमुखी	पंजाबी भाषा की लिपि।
गीतिरूपक	वह रूपक जिसमें गद्य रूप कम हो, गेयता अधिक हो।
गीतिकाव्य	वह काव्य जिसमें गीति तत्व (गेयता) अधिक हो।
घृणित	जो घृणा का पात्र हो।
घृणास्पद	जो घृणा के योग्य हो।
घूसखोर	घूस (रिश्वत) लेने वाला व्यक्ति।
घसियारा	घास खोदकर जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति।
घनश्याम	बादल की तरह रंग वाला (कृष्ण)
चक्रवात	चक्राकार घूमती तेज हवाएँ।
चन्द्रशेखर	जिसके मस्तक पर चन्द्रमा हो।
चिरंतन	जो चिरकाल से चला आ रहा है।
चिन्तनीय	चिन्ता करने योग्य।
चिरंजीव	जो चिरकाल तक जीवित रहे।
चम्पू	गद्य-पद्य मिश्रित रचना।
चन्द्रमौलि	जिसके मस्तक पर चन्द्रमा हो।
चिह्नित	जिस पर चिन्ह लगाया गया हो।
चतुष्पद	जिसके चार पैर हों (जानवर)।
चतुष्पथ	चार रास्ते जहाँ मिलते हों।
चर्चित	जो चर्जा का विषय हो।
चितचोर	चित्त को चुराने वाला।
चतुर्वेदी	चारों वेदों को जानने वाला।
छापामार	छिपकर आक्रमण करने वाला।
छिद्रान्वेषी	दूसरों के दोष ढूँढ़ने वाला।
जिजीविषा	जीवित रहने की इच्छा।
जिज्ञासा	जानने की इच्छा।

@UPSC_THOUGHT

जिगीषा	जीतने की इच्छा।
जलचर	जल में रहने वाला प्राणी।
जठराग्नि	पेट की वह आग जो भोजन को पचाती है।
जनश्रुति	लोगों से सुनी हुई बात।
जितेन्द्रिय	जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो।
जलद	जल बरसाने (देने) वाला।
टकसाल	जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं।
त्रिवेणी	गंगा, यमुना, सरस्वती (नदियों) का संगम।
तस्कर	चोरी-छिपे माल ले जाने वाला।
त्रैमासिक	जिसकी आवृत्ति तीन महीने में एक बार होती हो।
तीर्थंकर	ज्ञान में प्रवेश का मार्गदर्शन करने वाला।
त्रिकालदर्शी	भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों को देख सकने वाला।
त्यागपत्र	पद-त्याग हेतु भेजा गया पत्र।
तितीर्षा	तैरने की इच्छा।
तुलनीय	तुलना करने योग्य।
तुरंग	वेग से चलने वाला (घोड़ा)।
तटस्थ	निष्पक्ष रहने वाला।
तत्वबोधिनी	वह साधना जिसके द्वारा तत्व ज्ञान प्राप्त हो सके।
त्याज्य	जो त्यागने योग्य हो।
तूणीर	बाण रखने का खोल (तरकस)।
त्राता	जिसने किसी आर्त व्यक्ति की पुकार सुनकर उसकी रक्षा की हो।
दुराचारी	जो बुरा आचरण करता है।
दुर्बोध	जो कठिनाई से समझ में आए।
दुराग्रह	अनुचित बात के लिए किया गया आग्रह।
दु:साध्य	जिसका उपचार कठिन हो।
दुर्व्यसनी	जिसमें तमाम व्यसन हों।
दुष्कर	जिसे कर पाना कठिन हो।
दावाग्नि	वन (जंगल) में लगने वाली आग।
दुस्तर	जिसे पार करना कठिन हो।
दुर्दम्य	जिसका दमन करना कठिन हो।
दम्पति	पति-पत्नी का युग्म।
दत्तक	जिसे गोद लिया गया हो।
दुर्निवार	जिसका निवारण करना कठिन हो।
दुर्गम	जहाँ जाना (पहुँचना) कठिन हो।
दुर्भिक्ष	वह समय जब कठिनाई से भिक्षा मिलती है (काल)।
दामोदर	जिसके पेट में, माँ ने रस्सी बाँध दी हो (कृष्ण)।
दुभाषिया	दोनों पक्षों (व्यक्तियों) की भाषा समझकर एक–दूसरे की भाषा में अनुवाद करके समझाने वाला।
देवनागरी	हिन्दी भाषा की लिपि
दावानल	जंगल में लगने वाली आग।
दीक्षांत	दीक्षा के अंत में होने वाला समारोह।
दौहित्र	पुत्री का पुत्र।
दौहित्री	पुत्री की पुत्री।
द्विपद	दो पैरों वाला (आदमी)
दिदृक्षा	देखने की इच्छा।
दित्सा	देने की इच्छा।
दुर्भाग्या	जिस स्त्री का भाग्य खराब हो।
द्वैपायन	जिसका जन्म द्वीप पर हुआ हो।
द्विवेदी	दो वेदों का जानकार।
दुरभिसंधि	दुष्टता से की गई साजिश।
दशानन	दश आनन वाला (रावण)।
दुष्पाच्य	जो कठिनाई से पचता हो।
द्रुतगामी	तीव्र गति से चलने वाला।
दुर्लभ	जो कठिनाई से प्राप्त हो।
दीर्घसूत्री	जो विलम्ब से काम करे।
धर्मादा	धर्म के लिए दिया जाने वाला धन।
धर्मशाला	जहाँ यात्रियों को निःशुल्क ठहराया जाता हो वह स्थान।
धनुर्धारी	धनुष को धारण करने वाला।
धीरोदात्त	ऐसा नायक जिसमें धैर्य के साथ-साथ उदात्त गुण हों।
ध्रुव	जो अपने स्थान पर अटल रहे।
नवोढ़ा	ऐसी नायिका जिसमें लज्जा की अधिकता हो।
नववधू	ऐसी स्त्री जिसका विवाह अभी हुआ हो।
निरापद	जिससे कोई हानि न हो।
निशीथ	अर्द्धरात्रि का आकाश।
निर्निमेष	बिना पलक झपकाए एकटक देखना।
नास्तिक	जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता हो।
निर्विकार	जो विकार रहित हो।
नश्वर	जो नाशवान हो।
नवजात	जो अभी (नया-नया) उत्पन्न हुआ है।
निर्मम	जो ममता से रहित हो।
निर्दय	जो दया से रहित हो।
निर्धन	जो धन से रहित हो।
निन्दनीय	जो निन्दा करने योग्य हो।
निशाचर	जो रात्रि में विचरण करता हो।
निरुद्देश्य	जिसका कोई उद्देश्य न हो।
निरुत्साह	जिसमें उत्साह न हो।
नीतिज्ञ	जो नीति का ज्ञाता हो।
निर्जीव	जिसमें जीवन न हो।

@UPSC_THOUGHT

निर्मत्सर	जिसके मनमें मत्सर (ईर्ष्या) न हो।
नवोदित	जिसका उदय अभी हाल में हुआ हो।
निस्पृह	जिसमें कोई स्पृहा (इच्छा) न हो।
नेपथ्य	रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान।
नि:संतान	जिसके कोई संतान ही न हो।
नि:शुल्क	जिस काम के लिए कोई शुल्क न दिया (लिया) जाय।
ननिहाल	नाना–नानी का घर।
नासेतुद	जिसके शरीर पर आघात न लगे।
निरीस	जो बड़ों का आदर करना न जानता हो।
परिव्राजक	घूमने-फिरने वाला साधु।
परकीया	परपुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री।
पदच्युत	जिसे पद से हटा दिया गया हो।
पाण्डुलिपि	पुस्तक का हाथ से लिखा गया मसौदा।
परोक्ष	जो प्रत्यक्ष न हो।
प्रत्यक्ष	जो आँख के सामने हो।
पारदर्शी	जिसके आर-पार देखा जा सके।
पथ्य	रोगी का भोजन।
पथभ्रष्ट	जो अपने पथ (लक्ष्य) से भटक गया हो।
पाशविक	पशुओं जैसा आचरण करने वाला।
पेय	जिसे पिया जा सके।
पैतृक	जो पिता से प्राप्त हो।
प्रदोष	रात्रि का प्रथम प्रहर।
पाथेय	रास्ते का भोजन जो यात्री साथ लाते हैं।
प्रवासी	देश का वह व्यक्ति जो परदेश में रहता हो।
प्रत्युत्पन्नमति	जिसे तुरन्त उत्तर सूझ जाए।
प्रत्यागत	जो लौट गया हो।
पृष्टव्य	जो पूछने योग्य हो।
प्रधानमंत्री	मंत्रियों में प्रधान (Prime Minister)
प्रोषितपतिका	जिस नायिका (स्त्री) का पति परदेश गया हो।
प्राध्यापक	प्रकृष्ट (बड़ा) अध्यापक जो किसी कालेज या विश्वविद्यालय में पढ़ाता हो।
प्रयोगशाला	वैज्ञानिक प्रयोग जहाँ किए जाते हैं, वह स्थान।
पेय	जो पीने योग्य हो।
बंध्या	ऐसी स्त्री जो सन्तान को जन्म ही न दे सके।
बेरोजगार	जो किसी भी रोजगार से रहित हो।
बहुभाषाविद्	बहुत सारी भाषाओं को जानने वाला।
बड़वाग्नि	समुद्र में लगने वाली आग।
बहुश्रुत	ऐसा व्यक्ति जिसने बहुत से शास्त्र सुने हों।
बहुमूल्य	जिसका मूल्य बहुत अधिक हो।
बेखबर	जिसे किसी बात की खबर न हो।
बहिष्कृत	जिसे जाति या समाज से बाहर निकाल दिया गया हो।
बीतराग	जो सभी राग–द्वेषों से मुक्त हो।
ब्रह्ममुहूर्त	सूर्योदय से पूर्व की दो घड़ी का समय।
भूतपूर्व	जो पहले (पद पर) था।
भूगर्भवेत्ता	जिसे पृथ्वी के भीतर की जानकारी हो।
भैरवी	प्रात:काल गायी जाने वाली रागिनी।
भुक्तभोगी	जो किसी स्थिति को पहले भोग चुका हो।
मध्याह्न	दोपहर का समय।
मुमुक्षु	मोक्ष का इच्छुक।
मद्यप	शराब पीने वाला।
मृत्युंजय	जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।
मरुस्थल	जहाँ केवल रेत हो।
मूकदर्शी	चुपचाप (बिना हस्तक्षेप किये) देखने वाला।
मेघनाद	मेघ के समान नाद (गर्जना) करने वाला।
महात्मा	जिनकी आत्मा महान् हो।
मृगनयनी	मृग जैसे नेत्रों वाली।
मितव्ययी	सीमित व्यय करने वाला।
मातृहन्ता	माता को मारने वाला।
मृदुभाषी	मृदु वचन बोलने वाला।
मधुभाषी	मधुर वचन बोलने वाला।
मुमूर्षा	मरने (मृत्यु) की इच्छा।
मनोवृत्ति	मन की वृत्ति।
महत्वाकांक्षी	जिसकी इच्छाएँ बहुत हों।
मेघनाद	मेघ की तरह नाद करने वाला।
मेधावी	असाधारण मेधा (बुद्धि) वाला व्यक्ति।
मातृहंता	माता की हत्या करने वाला।
महामना	जिसका मन महान हो।
मीनाक्षी	मीन जैसे नेत्रों वाली।
मुख्यमंत्री	किसी प्रदेश के मंत्रियों का प्रधान (मुख्य)।
मुकदमेबाज	जो मुकदमा लड़ता रहता हो।
माननीय	जो मान के योग्य हो।
यायावर	निरन्तर यात्रा करते रहने वाला व्यक्ति।
युयुत्सा	युद्ध की इच्छा।
युधिष्ठिर	युद्ध में स्थिर (बुद्धि) रहने वाला।
युगद्रष्टा	अपने युग का ज्ञान रखने वाला।
यूप	बलि पशु को बाँधने वाला खम्भा।
यथाविधि	विधि के अनुसार।
यौवन	युवा होने की अवस्था।
यशस्वी	यश प्राप्त व्यक्ति।
युद्धपोत	नौसेना का जहाज।

@UPSC_THOUGHT

यथासाध्य	जहाँ तक सध सके।
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार।
युयुत्सु	युद्ध का इच्छुक।
रोमांचकारी	जिसे देखकर रोमांच हो जाए।
रंगशाला	जहाँ बैठकर नाटक देखा जाता है।
राजस्व	कर से प्राप्त सरकारी धन।
रतौंधी	रात में दिखाई न देने वाला रोग।
राजपत्र	सरकार द्वारा प्रकाशित गजट।
राष्ट्रपति	किसी देश का सबसे बड़ा राज्याधिकारी (President)।
रंगमंच	जहाँ नाटक का मंचन होता है।
रेचक	खाली करने वाला/वाली।
रिक्थ	उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति।
राजद्रोह	राजा/राज्य के प्रति किया गया द्रोह।
रक्तरंजित	रक्त से सना हुआ।
राजनीतिज्ञ	राजनीति की जानकारी रखने वाला।
राजदंड	वह दंड जिससे राज्य चलाया जाता है।
लोमहर्षक	जिसे देखकर रोम (लोम) खड़े हो जाएँ।
लाइलाज	जिस रोग का कोई इलाज न हो।
लौकिक	इस लोक से सम्बन्धित।
लोकगीत	लोक में प्रचलित गीत।
लब्धप्रतिष्ठ	जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली हो।
लौहपुरुष	जो पुरुष लोहे जैसा दृढ़ (मजदूत) इरादे वाला है।
लिप्सा	पाने की इच्छा।
लोकतंत्र	वह शासन प्रणाली जो लोक (मत) पर आधृत है।
लकड़हारा	लकड़ी काटकर जीवन-यापन करने वाला।
विधुर	जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो।
विधवा	जिस स्त्री का पति मर गया हो।
वीणापाणि	जिसके हाथ में वीणा हो।
विकलांग	जिसका कोई अंग दोषपूर्ण अथवा टूटा-फूटा हो।
वैष्णव	विष्णु का उपासक (भक्त)।
विश्वसनीय	जो विश्वास करने योग्य हो।
वैध	जो विधि के अनुकूल हो।
विदुषी	विद्वान् एवं ज्ञानी महिला।
वंदनीय	जो वंदना के योग्य हो।
वाचाल	बहुत ज्यादा बोलने वाला।
विस्थापित	जिसे अपने मूल स्थान से हटाकर अन्यत्र बसाया गया हो।
विवादित	जो विवाद का विषय हो।
विवक्षा	बोलने की इच्छा।
विपक्षी	प्रतिपक्षी व्यक्ति।
विधिप्रदत्त	विधि द्वारा प्रदत्त।
विधिसंगत	जो विधि द्वारा उपयुक्त (संगत) ठहराया गया हो।
विजित	जो जीत लिया गया हो।
वायुयान	वायु में चलने वाला यान।
वाहक	सामान ढोने वाला व्यक्ति।
व्याख्याता	जो किसी विषय की व्याख्या करे।
व्यभिचारी	परस्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला।
शरणागत	जो शरण में आया हो।
शरणार्थी	जो शरण का इच्छुक (प्रार्थी) हो।
शासकीय	जिसका सम्बन्ध शासन से हो।
शाश्वत्	जो सदैव रहता है।
शताब्दी	सौ वर्ष का समय।
शैव	भगवान शिव का भक्त (उपासक)।
शाक्त	जो शक्ति का उपासक (भक्त) हो।
शिलालेख	शिला (पत्थर) पर लिखा लेख।
श्मशान	वह स्थान जहाँ मुर्दे (शव) जलाए जाते हैं।
शयनागार	सोने का कमरा (Bed Room)।
शिक्षक	जो शिक्षा प्रदान करे।
शाकाहारी	जो शाक (सब्जी) खाता हो, निरामिषभोजी।
शूर्पणखा	जिसके नख सूर्प (सूप) के समान हों।
शिक्षार्थी	जिसका प्रयोजन शिक्षा प्राप्त करना हो।
शिरोधार्य	सिर पर धारण करने योग्य।
शहीद	देश पर मरने वाला।
सर्वज्ञ	सब कुछ जानने वाला।
सार्वजनिक	जिसका सम्बन्ध सर्वजन (जनता) से हो।
समशीतोष्ण	समान रूप से ठण्डा और गर्म।
सनातन	जो सदा से चला आ रहा हो।
संक्रामक	संक्रमण से फैलने वाला (रोग)।
समदर्शी	समान दृष्टि से देखने वाला।
सहोदर	एक ही माँ की सन्तान।
सपत्नीक	पत्नी के साथ।
सव्यसाची	जो बाएँ हाथ से बाण चलाने में कुशल हो।
स्त्रैण	स्त्रियों जैसी आदत वाला।
संगीतज्ञ	संगीत जानने वाला।
सँपेरा	साँप को पकड़ने वाला तथा साँप का खेल दिखाने वाला।
सुलभ	जो आसानी से प्राप्त हो।
संदिग्ध	जिसके संबंध में संदेह हो।
सहोदर	एक ही उदर से जन्म लेने वाले।
सुपाठ्य	जो आसानी से पढ़ा जा सके।
सूत्रधार	जो कठपुतली का सूत्र धारण करता है।

@UPSC_THOUGHT

संश्लेषण	अलग–अलग अवयवों को परस्पर जोड़ना।
सद्य: प्रसूता	जिसने अभी–अभी बच्चे को जन्म दिया हो।
संगम	जहाँ दो या अधिक नदियाँ मिलती हों।
सारस्वत	जो सरस्वती से सम्बन्धित हो।
स्थानापन्न	जिसने आकर किसी दूसरे का स्थान लिया हो।
सार्वभौम	जिसका सम्बन्ध सम्पूर्ण भूमि से हो।
समकालीन	एक ही समय के व्यक्ति।
हवि	हवन की जाने वाली सामग्री।
हस्तगत	जो हाथ में आ गया हो।
हंसवाहिनी	हंस जिसका वाहन हो ऐसी स्त्री।
हंसगामिनी	हंस की तरह चलने वाली स्त्री।
हस्तलिखित	जो हाथ से लिखा गया है।
हस्तक्षेप	अन्य के कार्य में दखल देना।
हस्तान्तरित	दूसरे के हाथ सौंपना।
हितैषी	हित की इच्छा रखने वाला।
हरावल	सेना का वह दस्ता जो सबसे आगे रहता है।
हास्यास्पद	हँसने योग्य।
हस्तलाघव	हाथ की चतुराई।
हौदा	हाथी की पीठ पर बैठने के लिए रखी जाने वाली चौकी।
क्षम्य	क्षमा करने योग्य।
क्षणभंगुर	क्षण में टूट जाने वाला।
क्षुधातुर	जो भूख से व्याकुल हो।
त्रिपथगा	तीन पथों से जाने वाली (गंगा)।
त्रिवेदी	तीन वेदों को जानने वाला।
त्रिकालज्ञ	तीनों कालों की बात जानने वाला।
त्रिकुटी	दोनों भौंहों के बीच का स्थान।
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों वाला (भगवान शंकर)।
त्रिपदी	तीन टाँगों (पैरों) वाली तिपाई।
ज्ञेय	जो जाना जा सके।
ज्ञाता	जिसे पता हो (जानकारी हो)।
ज्ञातव्य	जो जानने योग्य है।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. जिसके पास कुछ भी न हो—

(a) निर्धन (b) अकिंचन

(c) दीनहीन (d) गरीब

उत्तर—(b) अकिंचन

2. जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो सके—

(a) अनुभूति (b) गोचर

(c) अगोचर (d) अतीन्द्रिय

उत्तर—(c) अगोचर

YUKTI ***ज्ञान***—*गो का अर्थ इन्द्रियाँ है।*

3. जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ है—

(a) कुलीन (b) शूद्र

(c) अधिकारी (d) ब्राह्मण

उत्तर—(a) कुलीन

4. उपकार को मानने वाला—

(a) उपकारी (b) कृतज्ञ

(c) कृतघ्न (d) उपकृत

उत्तर—(b) कृतज्ञ

5. हवन में जलाने वाली लकड़ी—

(a) हवि (b) समिधा

(c) यूप (d) बलि

उत्तर—(b) समिधा

6. किये हुये उपकार को न मानने वाला— **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**

(a) कृतज्ञ (b) कृतघ्न

(c) दुराचारी (d) दुर्जन

उत्तर—(b) कृतघ्न

YUKTI ***ज्ञान***—*कृतघ्न = जो अहसान फरामोश हो अर्थात किए हुए उपकार को न माने, कृतज्ञ = जो किए उपकार को मानता है। दुराचारी = जिसका आचारण खराब हो, दुर्जन = बुरा आदमी।*

7. तीनों कालों को जानने वाला—

(a) सर्वज्ञ (b) सार्वभौम

(c) त्रिकालदर्शी (d) त्रिकालज्ञ

उत्तर—(d) त्रिकालज्ञ

YUKTI ***ज्ञान***—*सार्वभौम = सम्पूर्ण भूमि से सम्बन्धित, सर्वज्ञ = सब कुछ जानने वाला, त्रिकादर्शी = तीनों कालों को देखने वाला, त्रिकालज्ञ = तीनों कालों को जानने वाला।*

8. युद्ध की इच्छा वाला—

(a) जिगीषु (b) युयुत्सु

(c) युयुत्सा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) युयुत्सु

YUKTI ***ज्ञान***—*जिगीषु = जीतने की इच्छा, युयुत्सु = युद्ध की इच्छा वाला, युयुत्सा = युद्ध की इच्छा।*

9. जो खाने योग्य हो—

(a) खाद्य (b) पेय

(c) गेय (d) खाद्यान्न

उत्तर—(a) खाद्य

10. पति–पत्नी का जोड़ा—

(a) युगल (b) दम्पति

(c) जोड़ा (d) जीवन साथी

उत्तर—(b) दम्पति

11. 11 से 15 वर्ष के बालक को कहेंगे— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) किशोर (b) तरुण
(c) बालक (d) शिशु

उत्तर—(a) किशोर

12. सूर्योदय से पूर्व का समय—

(a) पूर्वाह्न (b) उषाकाल
(c) प्रदोष काल (d) मध्याह्न

उत्तर—(b) उषाकाल

YUKTI *ज्ञान—सूर्योदय से पूर्व का काल जब आकाश में लालिमा होती है।*

13. वर्षा की अधिकता को कहेंगे—

(a) बाढ़ (b) अनावृष्टि
(c) अतिवृष्टि (d) आक्रान्त

उत्तर—(c) अतिवृष्टि

14. जो इन्द्रियों से परे हो—

(a) अगोचर (b) इन्द्रियातीत
(c) जितेन्द्रिय (d) ये सभी

उत्तर—(b) इन्द्रियातीत

15. कमल से युक्त जलाशय—

(a) सरोवर (b) जलाशय
(c) पुष्कर (d) नीरज

उत्तर—(c) पुष्कर

16. बहुत सी भाषाओं को जानने वाला—

(a) बहुभाषाविद् (b) विद्वान्
(c) बहुश्रुत (d) बुद्धिजीवी

उत्तर—(a) बहुभाषाविद्

YUKTI *ज्ञान—बहुत सी भाषाओं का जानकार, बहुश्रुत = जिसने बहुत सारे शास्त्र सुने हों, बुद्धिजीवी = बुद्धि पर जीवन-यापन करने वाला, विद्वान = जिसे विविध विषयों की जानकारी हो।*

17. मोक्ष का इच्छुक—

(a) मुमूर्ष (b) मुमुक्षु
(c) बुभुक्षु (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) मुमुक्षु

YUKTI *ज्ञान—मुमूर्ष= मरने की इच्छा वाला, बुभुक्षु = भूखा, मुमुक्षु = मोक्ष की इच्छा वाला।*

18. जीतने की इच्छा वाला—

(a) जिगीषा (b) जिगीषु
(c) जिज्ञासा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) जिगीषु

YUKTI *ज्ञान—जिगीषा = जीतने की इच्छा, जिगीषु = जीतने की इच्छा वाला, जिज्ञासु = जानने की इच्छा वाला।*

19. आधी रात का समय—

(a) यामिनी (b) शर्वरी
(c) निशा (d) अर्द्धरात्रि

उत्तर—(d) अर्द्धरात्रि

20. आधी रात का आकाश **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**

(a) अन्तरिम (b) निशीथ
(c) जिगीषा (d) कली

उत्तर—(b) निशीथ

अध्याय 5. वर्तनी एवं विराम चिह्न

5.1 वर्तनी

वर्तनी का तात्पर्य स्पेलिंग या हिज्जे से है। भाषा में कोई शब्द जिस 'वर्णानुक्रम' में लिखा जाता है, उसे **वर्तनी** (spelling) कहते हैं। उच्चारण की अशुद्धता एवं व्याकरणिक अज्ञान के कारण अधिकतर वर्तनी की भूलें होती हैं। वर्तनी यदि अशुद्ध है तो वाक्य भी अशुद्ध हो जाता है, अतः वाक्य शुद्धि के लिए वर्तनी की शुद्धता भी परम आवश्यक है।

यहाँ प्रमुख शब्दों की सूची प्रस्तुत है, जिनमें वर्तनी की अशुद्धि है—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अध्यन	अध्ययन	अनाधिकार	अनधिकार
आधुनीक	आधुनिक	आध्यात्म	अध्यात्म
अध्यात्मिक	आध्यात्मिक	अध्यात्मक	आध्यात्मिक
अनुसूया	अनसूया	आधीन	अधीन
आदिकवी	आदिकवि	अन्तर्ध्यान	अन्तर्धान
आर्शिवाद	आशीर्वाद	अत्योक्ति	अत्युक्ति
अतिश्योक्ति	अतिशयोक्ति	अल्हाद	आह्लाद
अरुड़	अरुण	अधोपतन	अधःपतन
अधीनस्त	अधीनस्थ	अनुवादित	अनूदित
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	अनुगृह	अनुग्रह
अनुषंगिक	आनुषंगिक	अहार	आहार
आहिल्या	अहल्या	अन्तर्राष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय
आयुर्वैदिक	आयुर्वेदिक	अवश्यक	आवश्यक
अजमाइश	आजमाइश	अर्ध	अर्द्ध
आर्यवेद	आयुर्वेद	अच्छर	अक्षर
अन्त्यक्षरी	अन्ताक्षरी	अभीमान	अभिमान
अर्थिक	आर्थिक	अतिथी	अतिथि
आजकाल	आजकल	अभ्यारण्य	अभयारण्य
अभीनेता	अभिनेता	अधिग्रहीत	अधिगृहीत
अनाथिनी	अनाथा	आर्द	आर्द्र
आवश्यकीय	आवश्यक	अजस्त्र	अजस्र
अन्तर्द्वन्द	अन्तर्द्वन्द्व	अध्यावसाय	अध्यवसाय
अपन्हुति	अपह्नुति	अनिष्ठ	अनिष्ट

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभिसेक	अभिषेक	अहर्निशि	अहर्निश
अर्थात	अर्थात्	अष्टवक्र	अष्टावक्र
अनुस्थान	अनुष्ठान	अंधेरा	अँधेरा
अनभिग्य	अनभिज्ञ	आकांछा	आकांक्षा
अगामी	आगामी	इसलिये	इसलिए
इंदोर	इंदौर	इन्द्रा	इन्दिरा
ईर्षा	ईर्ष्या	ईर्षालु	ईर्ष्यालु
इकटठा	इकट्ठा	इतवार	इतबार
ईमारत	इमारत	इमान	ईमान
इन्द्रीय	इन्द्रिय	इस्त्री	स्त्री
इश्वर	ईश्वर	उन्यासी	उनासी
ऊषा	उषा	उर्मि	ऊर्मि
उच्छिष्ठ	उच्छिष्ट	ऊंट	ऊँट
उन्नती	उन्नति	उन्नतिशील	उन्नतशील
उष्मा	ऊष्मा	उज्जयनी	उज्जयिनी
उपलच्छ	उपलक्ष्य	उत्तरदाई	उत्तरदायी
उद्योगीकरण	औद्योगीकरण	उदार्य	औदार्य
ओषधि	औषध	आभूषड़	आभूषण
उज्जवल	उज्ज्वल	उपरोक्त	उपर्युक्त
एकतारा	इकतारा	एश्वर्य	ऐश्वर्य
एतिहासिक	ऐतिहासिक	एकत्रित	ऐतरेय
एच्छिक	ऐच्छिक	ऐक्यता	ऐक्य
एक्ट	ऐक्ट	एकचित्र	एकत्र
ओकात	औकात	ओचित्य	औचित्य
कवी	कवि	कालीदास	कालिदास
कविन्द्र	कवीन्द्र	कुशाड़	कुषाण
क्रषी	कृषि	क्रति	कृति
क्रपा	कृपा	कुष्ट	कुष्ठ
कोमुदी	कौमुदी	कृतघ्नी	कृतघ्न
करूणा	करुणा	कामनी	कामिनी
कालंदी	कालिन्दी	कदम	कदम्ब
कीजिये	कीजिए	क्योंकी	क्योंकि
कनिष्ट	कनिष्ठ	कवियत्री	कवयित्री
कविओं	कवियों	कोमलांगिनी	कोमलांगी
कोतूहल	कौतूहल	कृत्यकृत्य	कृतकृत्य
क्रियायें	क्रियाएँ	किचिंत	किंचित
कृशंगिनी	कृशांगी	क्रियाक्रम	क्रियाकर्म
कीर्ती	कीर्ति	कविन्द्र	कवीन्द्र
कवित्री	कवयित्री	कलेश	क्लेश
कंटीला	कँटीला	कंगा	कंघा

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
क्रतग्य	कृतज्ञ	खुस	खुश
खेतीहार	खेतिहर	खम्ब	खंभा
खीजना	खीझना	खावेंगे	खाएँगे
गत्यावरोध	गत्यवरोध	गीतांजली	गीतांजलि
गांधी	गाँधी	घोसड़ा	घोषणा
गोतम	गौतम	ग्रहस्थी	गृहस्थी
गोष्टी	गोष्ठी	गरुण	गरुड़
गृहणी	गृहिणी	गरिष्ट	गरिष्ठ
गोरव	गौरव	घोषड़ा	घोषणा
गर्भीणी	गर्भिणी	गृहण	ग्रहण
गौरवता	गौरव	गोतम	गौतम
गीध	गिद्ध	गोप्यनीय	गोपनीय
शून्य	शून्य	घ्रणा	घृणा
घ्रत	घृत	घन्टा	घंटा
घनिष्ट	घनिष्ठ	घोश	घोष
चाक्षुस	चाक्षुष	चातुर्यता	चतुराई, चातुर्य
चाहिये	चाहिए	चिन्ह	चिह्न
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष	चच्छु	चक्षु
चक्षुष	चाक्षुष	छिपकिली	छिपकली
चन्चल	चंचल	दूकान	दुकान
चामर	चावल	चिकिर्षा	चिकीर्षा
छमा	क्षमा	छिद्रान्वेशी	छिद्रान्वेषी
छठवाँ	छठा	छिप्र	क्षिप्र
छुद्र	क्षुद्र	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
जबरजस्ती	जबरदस्ती	जरुरत	जरूरत
जमना	यमुना	जागृत	जाग्रत
जागरित	जागृति	जोग	योग, योग्य
जेस्ठ	ज्येष्ठ	जिभ्या	जिह्वा
तदोपरान्त	तदुपरान्त	तत्कालिक	तात्कालिक
त्रिपुरारी	त्रिपुरारि	तमाखू	तम्बाकू
तड़ित	तडित	तेजमय	तेजोमय
तिरष्कार	तिरस्कार	दीवाली	दीपावली
तिथी	तिथि	तिर्थंकर	तीर्थंकर
तितालिस	तैंतालीस	तपश्या	तपस्या
तदनुसारी	तद्नुसार	तत्वाध्वन	तत्वावधान
तनखा	तनख्वाह	तदंतर	तदनंतर
देविक	दैविक	दोगुना	दुगुना
द्वेश	द्वेष	दुख	दुःख
दुःखी	दुखी	दिनाँक	दिनांक
दाइत्व	दायित्व	दारिद्रता	दरिद्रता

@UPSC_THOUGHT

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दंडायन	दाण्डायन	दीच्छा	दीक्षा
दुसाध्य	दुस्साध्य	दृष्टा	द्रष्टा
द्वन्द	द्वन्द्व	दधीच	दधीचि
द्वारिका	द्वारका	धुरंदर	धुरंधर
धातव्य	ध्यातव्य	धैर्यता	धैर्य
नर्वदा	नर्मदा	नराज	नाराज
निरभिमानी	निरभिमान	निरूत्साह	निरुत्साहित
निःस्तर	निस्सार	नही	नहीं
नयी	नई	निसंदेह	निस्संदेह
पौरुषत्व	पौरुष	न्यूनधिक	न्यूनाधिक
निर्दयी	निर्दय	निर्धनी	निर्धन
निस्प्राण	निष्प्राण	निर्लोभी	निर्लोभ
निरपराधी	निरपराध	नीलमा	नीलिमा
नुपुर	नूपुर	नायका	नायिका
निस्वार्थ	निःस्वार्थ	निरोग	नीरोग
निर्पेक्ष	निरपेक्ष	नरायण	नारायण
नराच	नाराच	नदिओं	नदियों
पड़ोसन	पड़ोसिन	परिवेक्षक	पर्यवेक्षक
परिमाजित	परिमार्जित	परणीता	परिणीता
पाली भाषा	पालि भाषा	पुरुस्कार	पुरस्कार
पुनरावलोकन	पुनरवलोकन	पुनरोत्थान	पुनरुत्थान
पतञ्जली	पतञ्जलि	पत्नि	पत्नी
प्रमाणिक	प्रामाणिक	प्रोद्योगिकी	प्रौद्योगिकी
प्रागेतिहासिक	प्रागैतिहासिक	परिस्तिथि	परिस्थिति
परियाय	पर्याय	पुनजन्म	पुनर्जन्म
पकोड़ी	पकौड़ी	परिच्छा	परीक्षा
परीचित	परिचित	पिताम्बर	पीताम्बर
पितरऋण	पितृऋण	पिजड़ा	पिंजरा
पातंजल	पातंजलि	पांडे	पांडेय
पुरौहित	पुरोहित	पौदा	पौधा
पैत्रिक	पैतृक	परिप्रेक्ष	परिप्रेक्ष्य
परिणित	परिणत	परणीता	परिणीता
परंतू	परंतु	पट्ट	पट
पट्टु	पटु	परमाण	परिमाण
पुत्रेषण	पुत्रैषणा	पूँछना	पूछना
पृष्ट	पृष्ठ	प्रसंशा	प्रशंसा
पूज्यनीय	पूजनीय	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
परिशिष्टि	परिशिष्ट	परिषद	परिषद्
फटकरी	फिटकरी	वंधू	बंधु
बन	वन	बंजारन	बंजारिन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बहोत	बहुत	बनस्पति	वनस्पति
विचारा	बेचारा	बेजती	बेइज्जती
ब्रहत्तर	बृहत्तर	वृहद्	बृहत्
बाधा	वाधा	बाहुल्यता	बहुलता
बंदना	वंदना	वाहु	बाहु
वेईमान	बेईमान	बिन्दू	बिन्दु
बृज	ब्रज	बारात	बरात
ब्रम्ह	ब्रह्म	ब्राम्हण	ब्राह्मण
बेफिजूल	फिजूल	बजार	बाजार
ब्रहस्पति	बृहस्पति	भाग्यमान	भाग्यवान्
भरतरी	भर्तृहरि	भगन	भग्न
भंगन	भंगिन	भरथ	भरत
भारथ	भारत	भरम	भ्रम
भोगोलिक	भौगोलिक	भ्रत्य	भृत्य
भ्रांती	भ्रांति	भूमी	भूमि
भिच्छा	भिक्षा	भिभीषण	विभीषण
भगीरथी	भागीरथी	भाषायें	भाषाएँ
भृकुटी	भृकुटि	भगवत गीता	भगवद्गीता
भाग्यवान	भाग्यवान्	भिकारी	भिखारी
भाष्कर	भास्कर	माधुर्यता	माधुर्य
मधू	मधु	महत्व	महत्त्व
मंजू	मंजु	मिथलेशकुमारी	मिथिलेशकुमारी
मैथलीशरण	मैथिलीशरण	मेघनाथ	मेघनाद
मजूरी	मजदूरी	मान्यनीय	माननीय
मुरारी	मुरारि	मृन्मय	मृण्मय
मत्सेन्द्र	मत्स्येन्द्र	महात्म	माहात्म्य
मानवीयकरण	मानवीकरण	मर्तक	मृतक
मरीच	मारीच	मिठायी	मिठाई
मक्षर	मच्छर	मनुस्य	मनुष्य
मतबल	मतलब	मर्तक	मृतक
मध्यान्ह	माध्याह्न	मद्घम	मद्धिम
मिष्टान्न	मिष्ठान्न	मिहरि	मिहिर
मिलित	मीलीति	मंत्रीमण्डल	मंत्रिमण्डल
मनःकामना	मनोकामना	मात्रभूमि	मातृभूमि
मायाबी	मायावी	मॉसाहारी	मांसाहारी
मार्दवता	मार्दव	मानों	मानो
मुकंद	मुकुंद	संगृह	संग्रह
यशगान	यशोगान	यच्छ	यक्ष
यग्य	यज्ञ	युधिष्ठर	युधिष्ठिर
यथेष्ठ	यथेष्ट	यक्रत	यकृत

@UPSC_THOUGHT

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
यर्थाथ	यथार्थ	रमायन	रामायण
राज्यकीय	राजकीय	रचैता	रचयिता
रचियता	रचयिता	रुची	रुचि
रुक्ष	रूक्ष	राजाभिषेक	राज्याभिषेक
रितु	ऋतु	रिषी	ऋषि
रिण	ऋण	रात्री	रात्रि
रवी	रबी, रवि	रविन्द्र	रवीन्द्र
रागनी	रागिनी	रमन	रमण
राच्छस	राक्षस	रघू	रघु
रंगाई	रँगाई	रच्छक	रक्षक
लब्ध प्रतिष्ठित	लब्ध प्रतिष्ठ	लीजिये	लीजिए
लोकेषणा	लोकैषणा	बाल्मीक	बाल्मीकि
बृजभाषा	ब्रजभाषा	व्यवहारिक	व्यावहारिक
व्योपार	व्यापार	वस्तुयें	वस्तुएँ
विसाद	विषाद	विक्षू	विच्छू
विमर्ष	विमर्श	विछुब्ध	विक्षुब्ध
विजई	विजयी	विधी	विधि
वधु	वधू	व्यंग	व्यंग्य
वृद्धी	वृद्धि	वस्तू	वस्तु
वेशभूशा	वेशभूषा	विशाद	विषाद
वाकपटु	वाक्पटु	शाशक	शासक
वरिष्ट	वरिष्ठ	विप्रीत	विपरीत
वाहनी	वाहिनी	व्यस्क	वयस्क
विपच्छ	विपक्ष	विदीत	विदित
विभीषन	विभीषण	वहिरंग	बहिरंग
विरहणी	विरहिणी	विदेशिक	वैदेशिक
विदयार्थी	विद्यार्थी	वृद्धिकरण	वृद्धीकरण
शाशकीय	शासकीय	शूपनखाँ	शूर्पणखा
श्रंगार	शृंगार	श्रगाल	शृगाल
श्रंखला	शृंखला	षटमास	षण्मास
षष्ठी	षष्ठ	सुलोचनी	सुलोचना
सन्मान	सम्मान	सौजन्यता	सौजन्य
सामिग्री	सामग्री	सरोजनी	सरोजिनी
साच्छी	साक्षी	स्त्रीण	स्त्रैण
सुकेशिनी	सुकेशी	सदृश्य	सदृश
सदोपदेश	सदुपदेश	सलज्जित	सलज्ज
सप्ताहिक	साप्ताहिक	साच्छर	साक्षर
सहित्यिक	साहित्यिक	सिंघासन	सिंहासन
सीधा-साधा	सीधा-सादा	सृष्टा	स्रष्टा
स्रष्टि	सृष्टि	श्राप	शाप

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
स्त्रोत	स्रोत	श्रोत	स्तोत्र
स्वास्तिक	स्वस्तिक	स्वस्थ्य	स्वस्थ
सौन्दर्यता	सुन्दरता	स्वादिष्ठ	स्वादिष्ट
संस्कर्ण	संस्करण	संसंदसदस्य	संसत्सदस्य
सतगुण	सद्गुण	सम्मती	सम्मति
संधी	संधि	समर्पन	समर्पण
सवी	सब, सभी	सहास	साहस
सिन्दुर	सिंदूर	सीड़ी	सीढ़ी
हिरणाकश्यप	हिरण्यकशिपु	हिन्दुस्थान	हिन्दुस्तान
हितेषी	हितैषी	हरद्वार	हरिद्वार
हिमालया	हिमालय	हतभागिनी	हतभाग्या
ह्रदय	हृदय	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
हिंस्त्र	हिंस्र	हिरास	ह्रास
हितैशी	हितैषी	हिन्दुस्थान	हिन्दुस्तान
हिंदुवों	हिंदुओं	हिंदु	हिन्दु
इक्षा	इच्छा	त्रिमासिक	त्रैमासिक
क्षती	क्षति	अनेकों	अनेक
अन्तरजातीय	अन्तर्जातीय	अन्तर्साक्ष्य	अन्तःसाक्ष्य
बहिद्वन्द	बहिर्द्वन्द्व	स्वास्थ	स्वास्थ्य
कुसलक्षेम	कुशलक्षेम	नखलऊ	लखनऊ
प्रड़ाम	प्रणाम		

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्न शब्दों की सही वर्तनी का चयन कीजिए—

1. (a) कवियत्री (b) कवित्री **उ.प्र. टी.ई.टी.**
(c) कवयित्री (d) कवियित्री
उत्तर—(c) कवयित्री

2. (a) उज्जवल (b) उज्ज्वल
(c) उज्जल (d) उज्वल
उत्तर—(b) उज्ज्वल

YUKTI *ज्ञान—उत् + ज्वल = व्यंजन संधि है।*

3. (a) श्राप (b) शाप
(c) साप (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(b) शाप

4. (a) ज्योत्सना (b) ज्योतिस्ना
(c) ज्योत्स्ना (d) ज्योतिसना
उत्तर—(c) ज्योत्स्ना

5. (a) जजीविशा (b) जिजीविषा
(c) जिजिविशा (d) जिजविषा
उत्तर—(b) जिजीविषा

6. (a) अतियुक्ति (b) अत्युक्ति **हरियाणा टी.ई.टी.**
(c) अत्योक्ति (d) अतिउक्ति
उत्तर—(b) अत्युक्ति

7. (a) अन्तर्ध्यान (b) अन्तर्धान
(c) अर्न्तध्यान (d) अन्तरध्यान
उत्तर—(b) अन्तर्धान

8. सही वर्तनी कौन-सी है?
(a) सुश्रूषा (b) शुश्रुषा
(c) शुश्रूषा (d) सुश्रूसा
उत्तर—(a) सुश्रूषा

9. (a) सौहार्द (b) सौहाद्र
(c) सौहार्द्र (d) सौर्हाद
उत्तर—(a) सौहार्द

10. (a) प्रसंशा (b) प्रशंसा
(c) प्रशंशा (d) प्रशन्सा
उत्तर—(b) प्रशंसा

11. निम्न में से कौन-सा शब्द शुद्ध है?
(a) इक्षा (b) रचैता
(c) हरद्वार (d) सौजन्य
उत्तर—(d) सौजन्य

12. कौन-सा शब्द अशुद्ध है?
(a) रचयिता (b) अन्तराष्ट्रीय
(c) सलज्ज (d) प्रदर्शनी
उत्तर—(b) अन्तराष्ट्रीय

13. कौन-से शब्द की वर्तनी शुद्ध है?
(a) शाप (b) हतभागिनी
(c) माधुर्यता (d) हितेषी
उत्तर—(a) शाप

YUKTI ***ज्ञान***—*माधुर्यता के स्थान पर माधुर्य, हितेषी के स्थान पर हितैषी, हतभागिनी के स्थान पर हतभाग्या शुद्ध होगा, परन्तु शाप शुद्ध वर्तनी है।*

14. सही वर्तनी वाला शब्द चुनिए—
(a) कालीदास (b) युधिष्ठिर
(c) बाल्मीक (d) मैथलीशरण
उत्तर—(b) युधिष्ठिर

YUKTI ***ज्ञान***—*कालीदास के स्थान पर कालिदास, बाल्मीक के स्थान पर बाल्मीकि, मैथलीशरण के स्थानपर मैथिलीशरण शुद्ध है। युधिष्ठिर शुद्ध बर्तनी है*

15. सही बर्तनी बताइए—
(a) सम्बत (b) संवत्
(c) समवत् (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(b) संवत्

5.2 विराम चिह्न

विराम का अर्थ है—ठहरना। ये भाषा के आवश्यक अंग हैं, क्योंकि लिखित भाषा में अर्थ की स्पष्टता विराम चिह्नों से ही आती है।

✦ भाषा की सुस्पष्टता एवं अर्थ की उचित अभिव्यक्ति के लिए विराम चिह्न अत्यावश्यक हैं। इनके अभाव में भाषा अपूर्ण है। एक उदाहरण से बात स्पष्ट होगी—

रोको, मत जाने दो। — अर्थात् रोकना है, जाने नहीं देना है।

रोको मत, जाने दो। — अर्थात् रोकना नहीं है, जाने देना है।

ऊपर लिखे दोनों वाक्यों में शब्द एक से हैं केवल अल्प विराम (,) का स्थान बदल दिया गया है, किन्तु दोनों वाक्यों का अर्थ एक-दूसरे के विपरीत हो गया है।

हिन्दी में विराम चिह्नों के प्रयोग को 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने प्रोत्साहित किया। उन्होंने लेखकों और कवियों को विराम चिह्नों की महत्ता से अवगत कराया।

हिन्दी में प्रयुक्त विराम चिह्न

विराम चिह्न का नाम	चिह्न	अंग्रेजी नाम
• अल्प विराम	,	Comma
• अर्द्ध विराम	;	Semicolon
• पूर्ण विराम	।	Full Stop
• प्रश्नवाचक चिह्न	?	Sign of Interrogation
• विस्मयादि बोधक चिह्न	!	Sign of Exclamation
• योजक चिह्न	–	Hyphen
• निर्देशक चिह्न	—	Dash
• विवरण चिह्न	:—	Colon Dash
• उद्धरण चिह्न	‘ ’ “ ”	Single and Double inverted commas
• कोष्ठक चिह्न	( )	Brackets
• संक्षेप चिह्न	.	Dot
• हंसपद चिह्न	λ	Lamda
• लोपसूचक चिह्न	×××	Cross
• पुनरुक्ति चिह्न	" "	As on
• तारक चिह्न	*	Star

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न वाले विकल्प का चयन कीजिए—

1. नहीं तुम वहाँ नहीं जाओगे। नहीं के बाद कौन-सा चि लगेगा?
(a) अल्पविराम (b) अर्द्धविराम
(c) पूर्ण विराम (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(d) अल्प विराम—नहीं, तुम वहाँ नहीं जाओगे।

2. तुम क्या काम करते हो—वाक्य के अन्त में कौन-सा विराम चि प्रयुक्त होगा?

@UPSC_THOUGHT

(a) विस्मयादिबोधक (b) पूर्ण विराम
(c) प्रश्नवाचक चिह्न (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(c) प्रश्नवाचक चिह्न – तुम क्या काम करते हो?

3. वाह कितनी सुन्दर कविता है। में वाह के बाद कौन-सा चि लगेगा।

(a) अल्पविराम (b) अर्द्धविराम
(c) उद्धरण चिह्न (d) विस्मयादिबोधक चिह्न

उत्तर—(d) विस्मयादिबोधक चिह्न; यथा—वाह ! कितनी सुन्दर कविता है।

4. तुलसीदास ने रामचरितमानस नामक महाकाव्य लिखा। इस वाक्य में रामचरितमानस पर कौन-सा विराम चि लगेगा?

(a) अल्प विराम (b) कोष्ठक चिह्न
(c) उद्धरण चिह्न (d) विस्मयादिबोधक चिह्न

उत्तर—(c) उद्धरण चिह्न; यथा – तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की।

5. शुक्ल जी ने लिखा है—बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है, इस वाक्य में प्रयुक्त विराम चि होंगे—

(a) उद्धरण चिह्न, पूर्ण विराम
(b) प्रश्नवाचक चिह्न, पूर्ण विराम
(c) विस्मयादिबोधक चिह्न, अल्पविराम
(d) अर्द्ध विराम, अल्प विराम

उत्तर—(a) उद्धरण चिह्न, पूर्ण विराम; यथा—"बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।"

6. उचित विराम चि लगाइये—
साहित्य की अनेक विधाएँ हैं, कविता कहानी उपन्यास नाटक और आलोचना आदि

(a) साहित्य की अनेक विधाएँ हैं—कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना आदि।
(b) साहित्य की अनेक विधाएँ हैं : – कविता; कहानी; उपन्यास; नाटक और आलोचना आदि।
(c) साहित्य की अनेक विधाएँ हैं; कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना आदि।
(d) साहित्य की अनेक विधाएँ हैं? कविता—कहानी, उपन्यास—नाटक और आलोचना आदि।

उत्तर—(a) साहित्य की अनेक विधाएँ हैं—कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचना आदि।

7. 'तत्पुरुष समास' में विभक्ति लोप को सूचित करने के लिए दोनों पदों के बीच प्रयुक्त होता है—

(a) निर्देशक चिह्न (b) योजक चिह्न
(c) विवरण चिह्न (d) अल्पविराम

उत्तर—(b) योजक चिह्न; यथा—मार्ग-व्यय, पथ-भ्रष्ट, चरण-कमल।

8. प्रश्नवाचक चि कहाँ लगता है?

(a) वाक्य के प्रारम्भ में
(b) जिस वाक्य से उत्तर की अपेक्षा हो उसके अन्त में
(c) वाक्य में कहीं भी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) जिस वाक्य से उत्तर की अपेक्षा हो उसके अन्त में; यथा—तुम्हारा नाम क्या है?

9. जब वाक्य अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो गया हो तो कौन-सा विराम चि लगता है?

(a) प्रश्नवाचक (b) विस्मयादिबोधक
(c) लोप सूचक (d) पूर्ण विराम

उत्तर—(a) पूर्ण विराम; यथा मोहन घर गया।

10. हर्ष व्यक्त करने या घृणा व्यक्त करने के लिए कौन-सा चि प्रयुक्त होता है?

(a) विस्मयादिबोधक (b) प्रश्नवाचक
(c) लोपसूचक (d) हंसपद चिह्न

उत्तर—(a) विस्मयादिबोधक यथा—छिः! कितनी बदबू आ रही है।

अध्याय 6. वाक्य विचार

वाक्य सार्थक शब्दों (पदों) का व्यवस्थित क्रम है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द ही पद कहे जाते हैं। जैसे—राम पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में राम कर्ता पद, पुस्तक कर्म पद और पढ़ता है क्रिया पद है। इन तीनों की एक व्यवस्था है अतः यह एक सार्थक वाक्य है।

> YUKTI *ज्ञान—भाषा वाक्यों से बनती है। वाक्य शब्दों (पदों) से और शब्द वर्णों से तथा वर्ण ध्वनियों से। इस प्रकार भाषा की न्यूनतम इकाई ध्वनि (ध्वनि के पुनः खण्ड नहीं हो सकते) कहलाती है।*

- वाक्य के दो तत्त्व होते हैं—उद्देश्य (जिसके विषय में कुछ कहा गया हो) और विधेय (अर्थात् उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा गया हो)। जैसे—राम पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य का उद्देश्य है—राम तथा विधेय है—पुस्तक पढ़ता है।

6.1 रचना की दृष्टि से वाक्य भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(1) साधारण (सरल) वाक्य
(2) संयुक्त वाक्य
(3) मिश्रित वाक्य

(1) साधारण वाक्य—इसमें एक उद्देश्य और एक विधेय होता है। ऐसा वाक्य, जिसमें केवल एक क्रिया पद होता है, 'साधारण वाक्य' होता है। इसे सरल वाक्य भी कहते हैं। जैसे—मोहन खाना खाता है।

(2) संयुक्त वाक्य—संयुक्त वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा समानाधिकरण उपवाक्य होता है और दोनों वाक्य ऐसे संयोजक से जुड़े रहते हैं कि वे अर्थ की दृष्टि से स्वतन्त्र हों, अर्थात् एक-दूसरे पर आश्रित न हों।

संयुक्त वाक्य बनाने के लिए प्रयुक्त संयोजक चार प्रकार के हो सकते हैं—

(i) समुच्चयबोधक संयोजक—और, तथा, एवं
(ii) विकल्पसूचक संयोजक—या, अथवा
(iii) परिणामवाचक संयोजक—अतः, इसलिए, अतएव
(iv) विरुद्धतावाचक संयोजक—पर, लेकिन, परन्तु, किन्तु।

@UPSC_THOUGHT

इन संयोजकों का प्रयोग संयुक्तवाक्य में होता है।

(3) मिश्रित वाक्य—मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और शेष आश्रित उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य तीन तरह के हो सकते हैं—संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

संज्ञा उपवाक्य प्रायः कि से प्रारम्भ होता है। यथा—राम ने कहा **कि** मैं कल जाऊँगा।

विशेषण उपवाक्य में जो, जिसे, जिसने, जिन्होंने, जिनका आदि संयोजक जुड़ते हैं। जैसे—यह वही लड़का है, **जो** कल आया था। इन संयोजकों से प्रारम्भ होने वाले उपवाक्यों को विशेषण उपवाक्य कहा जाता है।

क्रिया विशेषण उपवाक्य से पहले जब, तब ज्योंही, ज्यों, जहाँ, जिधर, यद्यपि तथापि आदि संयोजक प्रयुक्त होते हैं और ये मिश्रित वाक्य बनाते हैं। जैसे–

1. वह जब आया तब मैं चला गया।
2. यह लड़का उधर ही गया है जिधर से आया था।
3. यद्यपि वह गरीब है तथापि ईमानदार है।

6.2 अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

(1) विधानार्थक—मैं जाता हूँ।
(2) निषेधवाचक—सीता ने गीत नहीं गाया।
(3) प्रश्नवाचक—वहाँ कौन गया था?
(4) विस्मयादिबोधक—वाह ! कितनी सुन्दर रचना है।
(5) आज्ञावाचक—चलो, बैठकर पढ़ो।
(6) इच्छावाचक—भगवान तुम्हारा भला करे।
(7) संदेहार्थक—शायद आज पानी बरसे।
(8) संकेतार्थक—जब गाड़ी आयेगी, तब मैं चला जाऊँगा।

6.3 वाच्य के आधार पर वाक्य भेद

वाच्य के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(i) कर्तृवाच्य—जहाँ कर्ता की प्रधानता हो—**राम** ने दूध पिया।
(ii) कर्मवाच्य—जहाँ कर्म की प्रधानता हो—**पत्र** पढ़ा गया।
(iii) भाववाच्य—जहाँ भाव की प्रधानता हो—मुझसे **चला** नहीं जाता।

6.4 प्रयोग के आधार पर वाक्य भेद

प्रयोग के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(i) कर्तरि प्रयोग—जहाँ वाक्य की क्रिया कर्तानुसार होती है—**मोहन** घर **गया**।

(ii) कर्मणि प्रयोग—जहाँ वाक्य की क्रिया कर्मानुसार होती है—मोहन ने **रोटी खाई**।

(iii) भावे प्रयोग—जहाँ वाक्य की क्रिया सदैव पुल्लिग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो—राम ने कुत्ते को **मारा**।

वाक्य शुद्धि

वाक्य भाषा की न्यूनतम इकाई है। अतः भाषा की शुद्धता के लिए वर्तनी की शुद्धता तथा वाक्य (गठन) की शुद्धता परमावश्यक है। वाक्य में वर्तनी की अशुद्धियाँ, व्याकरणिक अशुद्धियाँ, शब्द प्रयोग की अशुद्धियाँ, आदि नहीं होनी चाहिए। यहाँ अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके दिखाया गया है। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं—

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
विष्णु के **अनेकों** नाम हैं।	विष्णु के **अनेक** नाम हैं।
मैंने देवी **का** दर्शन **कर लिया**।	मैंने देवी **के** दर्शन **कर लिए**।
शेर को देखकर **मेरा** प्राण निकल **गया**।	शेर को देखकर **मेरे** प्राण निकल **गये**।
कृपया आप खड़े **रहो**।	कृपया आप खड़े **रहें**।
पिताजी आ **रहा** है।	पिताजी आ **रहे** हैं।
महादेवी जी छायावादी **कवित्री** हैं।	महादेवीजी छायावादी **कवयित्री** हैं।
साकेत का **रचैता** कौन है?	साकेत का **रचयिता** कौन है?
उसका चरित्र **उजज्वल** है।	उसका चरित्र **उज्ज्वल** है।
यहाँ **ताजा गन्ने** का रस मिलता है।	यहाँ गन्ने का **ताजा रस** मिलता है।
आप लोग **अपनी** राय दें।	आप लोग **अपनी-अपनी** राय दें।
कृपया छुट्टी देने की कृपा करें।	छुट्टी देने की **कृपा** करें।
मैं **प्रातःकाल के समय** टहलने जाता हूँ।	मैं **प्रातःकाल** टहलने जाता हूँ।
वृक्षों पर मोर बैठा **था**।	वृक्षों पर मोर बैठे **थे।**
पूज्यनीय पिताजी को प्रणाम।	**पूजनीय** पिताजी को प्रणाम।
मैंने **तेरे को बोला** तो था।	मैंने **तुझसे कहा** तो था।
हम **हमारी** माताजी को घर ले आये।	हम **अपनी** माताजी को घर ले आये।
कल **मैंने** दिल्ली जाना है।	कल **मुझे** दिल्ली जाना है।
वह घोड़े की **पीठ पर** सवार था।	वह **घोड़े पर** सवार था।
वह कमरे **के अन्दर** पढ़ रहा था।	वह **कमरे में** पढ़ रहा था।
मैं आपके **सहारे पर** जीवित हूँ।	मैं आपके **सहारे** जीवित हूँ।
पुत्री पराया धन **होता** है।	पुत्री पराया धन **होती** है।
तेरे से इतना भी नहीं खाया जाता।	**तुझसे** इतना भी नहीं खाया जाता।
मैं गाने की **कसरत** कर रहा हूँ।	मैं गाने का **अभ्यास** कर रहा हूँ।
देश में **भूख की** समस्या है।	देश में **भुखमरी** की समस्या है।
तलवार एक उपयोगी **अस्त्र** है।	तलवार एक उपयोगी **शस्त्र** है।
बन्दूक एक उपयोगी **शस्त्र** है।	बन्दूक एक उपयोगी **अस्त्र** है।
ये आकाशवाणी है।	**यह** आकाशवाणी है।
मेरे को कुछ याद नहीं।	**मुझे** कुछ याद नहीं।
हमारे प्रदेश के **मनुष्य** परिश्रमी हैं।	हमारे प्रदेश के **लोग** परिश्रमी हैं।
आपके प्रश्न का **समाधान** मिल गया।	आपके प्रश्न का **उत्तर** मिल गया।
आपकी समस्या का **उत्तर** मेरे पास है।	आपकी समस्या का **समाधान** मेरे पास है।
विंध्याचल पर्वत मध्य भारत में है।	**विंध्याचल** मध्य भारत में है।
यह **आगरा की मिठाई** है।	यह **आगरे की मिठाई** है।
सोनों के भाव बढ़ गए हैं।	**सोने** के भाव बढ़ गए हैं।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
देश की **वर्तमान मौजूदा** हालत ठीक नहीं है।	देश की **वर्तमान** हालत ठीक नहीं है।
प्रत्येक बालक को **चार-चार** केले दें।	प्रत्येक बालक को **चार** केले दें।
हम खाना खाए हैं।	**हमने** खाना खाया है।
दूध में **कौन** पड़ा है।	दूध में **क्या** पड़ा है?
साहित्य और जीवन का **घोर** सम्बन्ध	साहित्य और जीवन का **घनिष्ठ** सम्बन्ध है
उमंग **एक प्रकार** का मराठी छन्द होता है	उमंग **एक** मराठी छन्द है।
आपका पत्र **धन्यवाद सहित** मिला।	आपका पत्र मिला, **धन्यवाद**
वहाँ **भारी–भरकम** भीड़ लगी थी।	वहाँ **भारी भीड़** लगी थी।
भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री **अर्पित** की।	भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री **प्रदान** की।
मेरे को **तेरी** पुस्तक चाहिए।	**मुझे तुम्हारी** पुस्तक चाहिए।
मेरे लिए **ठण्डी बर्फ** लाओ।	मेरे लिए **बर्फ** लाओ।
मुझे उनसे **आवश्यकीय** काम था।	मुझे उनसे **आवश्यक** काम था।
क्रिकेट टीम प्रधानाध्यापक चुनेंगे।	प्रधानाध्यापक क्रिकेट टीम का चुनाव करेंगे।
कल **शायद** वर्षा **अवश्य** होगी।	कल वर्षा **अवश्य** होगी।
मैं इस बात का **स्पष्टीकरण करने के लिए** तैयार हूँ।	मैं इस बात के **स्पष्टीकरण के लिए** तैयार हूँ।
यह कार्य आप पर ही **निर्भर करता** है।	यह कार्य आप पर ही **निर्भर** है।
आजकल वहाँ काफी **सरगर्मी दिख रही** है।	आजकल वहाँ काफी **सरगर्मी** है।
आपका, भवदीय	दोनों में से एक का ही प्रयोग होगा।
भारत पाक के बीच पिछले वर्षों में बहुत कटुता **उत्पन्न हुई है**	भारत–पाक के बीच पिछले वर्षों में बहुत कटुता **बढ़ गई है।**
नारायण, जिसे छः वर्ष की सजा हुई थी वास्तव में कातिल नहीं था।	छः वर्ष की सजा काट रहा नारायण वास्तव में कातिल नहीं था।
कल में **कलकत्ते** गया था	कल मैं **कलकत्ता** गया था
यह **मेरा** हस्ताक्षर नहीं है	ये **मेरे** हस्ताक्षर नहीं हैं।
भूकम्प में उसकी **भारी** हानि हुई है।	भूकम्प में उसकी **बड़ी** हानि हुई है।
जो सोता है **वह** खोता है।	जो सोता है **सो** खोता है।
आप हस्ताक्षर **कर दो**।	आप हस्ताक्षर **कर दीजिए**।
कुलपति ने **डिग्रियाँ वितरित** कीं।	कुलपति ने **डिग्रियाँ प्रदान** कीं।
वह जाता **होएगा**।	वह जाता **होगा**।
उसके गले में **एक फूल की माला** थी।	उसके गले में **फूलों की एक माला** थी।
पाँच आदमी का खाना बनाना है।	**पाँच आदमियों** का खाना बनाना है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
वहाँ **कोई खड़े हैं।**	वहाँ **कोई खड़ा है।**
कृपया इसका **स्पष्टीकरण करने की कृपा करें।**	कृपया इसका **स्पष्टीकरण दें।**
इसके बाद वह **वापस लौट** गया।	इसके बाद वह **वापस चला** गया।
रोगी से खिचड़ी खाई गई।	**रोगी ने** खिचड़ी खाई।
वह **धर्मार्थ के लिए** दान देता है।	वह **धर्मार्थ** दान देता है।
किताब के अन्दर दो सौ पृष्ठ हैं।	**किताब में** दो सौ पृष्ठ हैं।
अपन ठीक रास्ते पर हैं।	**हम लोग** ठीक रास्ते पर हैं।
अभी तुम्हें कई बातें **सीखना** है।	अभी तुम्हें कई बातें **सीखनी** हैं।
मैं **मेरे** घर जा रहा हूँ।	मैं **अपने** घर जा रहा हूँ।
मुझे **आवश्यकीय** कार्य है।	मुझे **आवश्यक** कार्य है।
मैं **मन ही मन में** पछताया।	मैं **मन ही मन** पछताया।
तुम **कहाँ पर** रहते हो?	तुम **कहाँ** रहते हो?
उसके **चाचा को** लड़की हुई है।	उसके **चाचा के** लड़की हुई है।
लेकिन फिर भी आपको आना पड़ेगा।	**लेकिन** आपको आना पड़ेगा।
उसे अंग्रेजी का अच्छा **बोध** है।	उसे अंग्रेजी का अच्छा **ज्ञान** है।
वह कक्षा का **सर्वश्रेष्ठ अच्छा** छात्र है।	वह कक्षा का **सर्वश्रेष्ठ** छात्र है।
शरणागत में आए व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।	**शरण में आए** व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।
नीचे **को मत** देखो।	नीचे **मत** देखो।
पति-पत्नी **आई है**।	पति-पत्नी **आये हैं**।
मैंने **बोला**।	मैंने **कहा**।
वे **विद्वान्** महिला हैं।	वे **विदुषी** महिला हैं।
गाय का **दूध गरम पिओ**।	गाय का **गरम दूध पीयो**।
शायद वह **जरूर** आएगा।	**शायद** वह आयेगा।
आपका कमीज फट **गया**।	**आपकी** कमीज फट **गई**।
वह **निरपराधी** है।	वह **निरपराध** है।
अपराधी दण्ड **देने** योग्य है।	अपराधी दण्ड **पाने** योग्य है।
मैं **तुम्हारा** हाथ-पाँव तोड़ दूँगा।	मैं **तुम्हारे** हाथ-पाँव तोड़ दूँगा।
उसकी **माधुर्यता** अवर्णनीय है।	उसकी **मधुरता** अवर्णनीय है।
आपने मुस्करा दिया।	**आप मुस्करा दिये।**
दही **खट्टी** है।	दही **खट्टा** है।
तौलिया **सूख रहा** है।	तौलिया **सूख रही** है।
वह **निर्दयी** है।	वह **निर्दय** है।
वह **निर्धनी** है।	वह **निर्धन** है।
उसकी शौर्यता दर्शनीय **थी**।	**उसका शौर्य** दर्शनीय **था**।
पूज्यनीय पिताजी को प्रणाम	**पूजनीय** पिताजी को प्रणाम।
तुलसी श्रेष्ठ कवि था।	तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।
सूर रामभक्त कवि थे।	सूर कृष्णभक्त कवि थे।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
• **मैने तेरे को बोला** तो था।	**मैंने तुमसे कहा** तो था।
• उसके तीन **चाचे हैं**।	उसके तीन **चाचा** हैं।
• **चांदियों** के दाम बढ़ गए हैं।	**चांदी** के दाम बढ़ गए हैं।
• मै **आपसे** श्रद्धा करता हूँ।	मै **आप पर** श्रद्धा करता हूँ।
• वह **वापिस** आ गया।	वह **वापस** आ गया।
• मैं मेरी माताजी को दिखाने गया था।	मैं अपनी माताजी को दिखाने गया था।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. वह कुर्सी में बैठा था।	वह कुर्सी पर बैठा था।
2. उन्होंने हाथ जोड़ा।	उन्होंने हाथ जोड़े।
3. बेटी पराया धन होता है।	बेटी पराया धन होती है।
4. मैंने बोला।	मैं बोला।
5. मेरा प्राण संकट में है।	मेरे प्राण संकट में हैं।

YUKTI ***ज्ञान***—*प्राण शब्द का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है अतः मेरा प्राण के स्थान पर मेरे प्राण और है के स्थान पर हैं होगा।*

6. वहाँ अनेकों लोग थे।	वहाँ अनेक लोग थे।	**उ.प्र. टी.ई.टी.**

YUKTI ***ज्ञान***—*अनेकों शब्द अशुद्ध है। इसका युद्ध रूप अनेक है जो एक का बहुवचन है।*

7. मैंने कार्य करा है।	मैंने कार्य किया है।

YUKTI ***ज्ञान***—*करा है के स्थान पर किया है होना चाहिए।*

8. वह प्रात:काल के समय आया था।	वह प्रातःकाल आया था।

YUKTI ***ज्ञान***—*प्रातःकाल के समय में पुनरावृत्ति है क्योंकि काल, समय समानार्थी है अतः समय शब्द हट जाएगा।*

9. यह कहानी जो है सुदर्शन की लिखी है।	यह कहानी सुदर्शन की लिखी है।
10. बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती है।	बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।

YUKTI ***ज्ञान***—*क्रिया बहुवचन की होगी अतः पीती है के स्थान पर पीते हैं का प्रयोग शुद्ध है।*

11. इनमें से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(a) मेरे को कल छुट्टी जाना है।

(b) आप ही तो मना किए थे।

(c) मुझे लौटने में विलम्ब होगा।

(d) कपड़े डालकर तुमने क्या करा?

उत्तर—(c) मुझे लौटने में विलम्ब होगा।

YUKTI ***ज्ञान***—*(a) 'मेरे को' अशुद्ध है इसके स्थान पर 'मुझे' होना चाहिए।*

(b) आप ने ही तो मना किया था – शुद्ध वाक्य है।

(d) कपड़े पहनकर तुमने क्या किया? डालकर के स्थान पर पहनकर होना चाहिए तथा करा के स्थान पर किया होना चाहिए।

12. इनमें से शुद्ध वाक्य छाँटिए—

(a) जीवन और साहित्य का घोर सम्बन्ध है।

(b) जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(c) जीवन और साहित्य का गम्भीर सम्बन्ध है।

(d) जीवन और साहित्य का अपार सम्बन्ध है।

उत्तर—(b) जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

YUKTI ***ज्ञान***—*जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है– शुद्ध वाक्य होगा, शेष तीनों वाक्यों में प्रयुक्त घोर, गंभीर, अपार शब्द ठीक (उपयुक्त) नहीं हैं।*

13. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

(a) मैं आपके प्रति श्रद्धा करता हूँ।

(b) मैं आपके प्रति श्रद्धा रखता हूँ।

(c) मैं आपकी श्रद्धा करता हूँ।

(d) मैं आपके प्रति श्रद्धा मानता हूँ।

उत्तर—(b) मैं आपके प्रति श्रद्धा रखता हूँ।

14. वाक्य के जिस भाग में त्रुटि हो उस पर निशान लगाएँ।

मैं <u>प्रातःकाल के समय</u> <u>टहलने</u> <u>जाता हूँ</u>।

a b c d

उत्तर—(b) प्रातःकाल के समय के स्थान पर प्रातःकाल होना चाहिए।

15. अशुद्ध वाक्य छाँटिए— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) मैं कानपुर गया था।

(b) मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करो।

(c) मेरा परीक्षाफल उत्तम है।

(d) गुरुजनों के ऊपर श्रद्धा रखो।

उत्तर—(d) गुरुजनों के ऊपर श्रद्धा रखो अशुद्ध वाक्य है इसके स्थान पर 'गुरुजनों पर श्रद्धा रखो' होना चाहिए।

अध्याय 7. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है—अभ्यास अथवा बातचीत। मुहावरे के अर्थ में लक्षणा शब्द शक्ति काम करती है, इसलिए इनका शब्दार्थ नहीं लिया जाता, अपितु लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। भाषा को सशक्त, सजीव, प्रभावोत्पादक बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

लोकोक्ति का अर्थ है, लोक की उक्ति, अर्थात् लोक प्रचलित कथन। किसी कथन को सजीव एवं रोचक बनाने में लोकोक्ति की विशिष्ट भूमिका रहती है। सम्भवतः इसी कारण वार्तालाप में लोकोक्तियों का प्रयोग अधिक होता है।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

YUKTI ज्ञान—*लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश होता है। मुहावरों के अन्त में प्रायः 'ना' लगा होता है; जैसे—ईद का चाँद होना, पर लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं। यथा—अरहर की टट्टी गुजराती ताला। मुहावरे गद्यात्मक ही होते हैं, जबकि लोकोक्तियाँ गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है। कभी-कभी जो बात एक अनुच्छेद में कर पाते हैं उसे कुशल वक्ता एक लोकोक्ति या मुहावरे के द्वारा व्यक्त कर देता है। ध्यान रहे वाक्य में लोकोक्ति या मुहावरे का प्रयोग करें, उसके अर्थ का नहीं तथा प्रयोग ऐसा हो जो सबकी समझ में आ जाये।*

यहाँ प्रमुख मुहावरे और लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं।

प्रमुख मुहावरे एवं वाक्य प्रयोग

1. **अँगूठा दिखाना** = मना कर देना।
   प्रयोग—बेटी के विवाह में जब मैं अपने भाई से आर्थिक सहायता माँगने गया तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
2. **अक्ल का अंधा होना** = मूर्ख होना।
   प्रयोग—तुम तो अक्ल के अंधे हो, चाहे जितना समझाओ पर मानते ही नहीं।
3. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** = बुद्धि भ्रष्ट होना।
   प्रयोग—कैकेयी को दशरथ ने बहुत समझाया कि वह राम को वनवास न दे, पर वह न मानी, क्योंकि उसकी अक्ल पर तो पत्थर पड़े हुए थे।
4. **अन्धे की लकड़ी होना** = एकमात्र सहारा होना।
   प्रयोग—इकलौता पुत्र माता-पिता के लिए तो अन्धे की लकड़ी जैसा होता है।
5. **अपना उल्लू सीधा करना** = अपना काम बनाना (अपना स्वार्थ सिद्ध करना)।
   प्रयोग—राजनीति में तो कोई किसी का सगा नहीं, सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।
6. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** = आत्म-प्रशंसा करना।
   प्रयोग—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से क्या लाभ, तारीफ तो तब है, जब दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें।
7. **अपने पैरों पर खड़े होना** = स्वावलम्बी बनना।
   प्रयोग—पुत्र का विवाह तभी करना चाहिए, जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाये।
8. **अमरबेल बनना** = दृढ़ता से चिपकना।
   प्रयोग—मैंने राधा और श्याम को अलग करने की बहुत कोशिश की, पर वह तो जैसे अमरबेल बन गई है।
9. **अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष** = जब अपने ही लोग बुरे हों तो पराये का क्या दोष?
   प्रयोग— पिता ने बेटे के फेल हो जाने पर कहा – जब अपना सोना खोटा हो तो परखैया का क्या दोष। तुममें अक्ल ही नहीं है, परीक्षा पद्धति को 'क्या दोष दूँ।
10. **आकाश टूट पड़ना** = अचानक विपत्ति आ जाना।
    प्रयोग—पिताजी के अचानक निधन से मेरे परिवार पर तो आकाश (आसमान) टूट पड़ा है। एकमात्र वही तो कमाने वाले सदस्य थे।
11. **आगे कुआँ पीछे खाई होना** = दोनों तरफ से विपत्तियों से घिर जाना।
    प्रयोग—खेत का अधिग्रहण सरकार ने क्या कर लिया मेरे लिए तो आगे कुआँ पीछे खाई वाली स्थिति बन गई। अगर दे देता हूँ तो करूँगा क्या और मना करता हूँ तो जेल जाना पड़ेगा, समझ में नहीं आता क्या करूँ?
12. **अपना-सा मुँह लेकर रह जाना** = शर्मिन्दा होना।
    प्रयोग—जब मोहन की पोल खुली तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।
13. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** = सबसे पृथक् रहना।
    प्रयोग—समाज में रहना है तो सबके साथ चलना पड़ेगा। यहाँ अपनी खिचड़ी अलग पकाने से काम नहीं चलता।
14. **अन्धेर नगरी होना** = धाँधली होना।
    प्रयोग—भइया यहाँ बचकर रहना, क्योंकि इस दफ्तर में तो अन्धेर नगरी है, यहाँ किसी की सुनवाई नहीं होती।
15. **आँखें लाल-पीली करना** = क्रोध करना।
    प्रयोग—शिव धनुष को टूटा देखकर परशुराम जनक की सभा में आये और आँखें लाल-पीली करने लगे।
16. **आँखों का तारा होना** = अत्यधिक प्रिय होना।
    प्रयोग—इकलौता बेटा होने से वह पूरे परिवार की आँखों का तारा है।
17. **आँखें नीची होना** = लज्जित होना।
    प्रयोग—परीक्षा में नकल करके तुमने तो मेरी आँखें नीची कर दीं।
18. **आँख में खटकना** = अच्छा न लगना।
    प्रयोग—भारत की उन्नति कई देशों की आँखों में खटकती है।
19. **आँखें बिछाना** = स्वागत हेतु प्रस्तुत रहना।
    प्रयोग—आप हमारे घर आएँ तो सही, मैं तो आँखें बिछाये बैठा हूँ।
20. **आग बबूला होना** = अत्यधिक क्रोध करना।
    प्रयोग—नौकर से नया टी सेट टूट जाने पर मालकिन आग बबूला हो गईं।
21. **आग में घी डालना** = क्रोध भड़काना।
    प्रयोग—लक्ष्मण की मुस्कान परशुरामजी के लिए आग में घी डालने का काम कर रही थी।
22. **आटे-दाल का भाव मालूम पड़ना** = असलियत सामने आना।
    प्रयोग—जब से मेरी शादी हुई है, मुझे आटे-दाल का भाव मालूम पड़ गया है।
23. **आसमान सिर पर उठाना** = अत्यधिक शोरगुल करना।
    प्रयोग—कक्षा में छात्रों का शोर सुनकर अध्यापक ने कहा, शान्त हो जाइये, आप लोगों ने तो आसमान सिर पर उठा रखा है।
24. **आसमान टूट पड़ना** = अचानक मुसीबत आ जाना।
    प्रयोग—पिताजी को हृदयाघात होने पर बेचारे मोहन के सिर पर तो मानो आसमान ही टूट पड़ा।
25. **आड़े हाथों लेना** = ताना देकर शर्मिन्दा करना।
    प्रयोग—ज्यादा बढ़-चढ़कर बोलने वालों की बोलती तभी बन्द होती है जब कोई उन्हें आड़े हाथों लेता है।
26. **ईद का चाँद होना** = बहुम कम दिखाई पड़ना।
    प्रयोग—अरे मियाँ जब से तुम्हारी शादी हुई है, तुम तो ईद के चाँद हो गये हो।
27. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** = कड़ा उत्तर देना।

@UPSC_THOUGHT

प्रयोग—पाकिस्तानी सेना की सीमा पर होने वाली गोलीबारी तभी रुकती है, जब भारत की सेना ईंट का जवाब पत्थर से देती है।

28. ईश्वर की माया, कहीं धूप तो कहीं छाया = भाग्य की विचित्रता का अनुभव करना।

प्रयोग—अभी धूप थी और अब पानी बरसने लगा। इसी को कहते है, ईश्वर की माया कहीं धूप तो कहीं छाया।

29. उड़ती चिड़िया पहचानना = अनुभवी होना।

प्रयोग—तुम किसी से प्रेम करने लगे हो तभी तो तुम्हारा यह हाल है। मुझसे सच उगल दो, क्योंकि मैं उड़ती चिड़िया पहचान लेता हूँ।

30. उधेड़बुन में पड़ना = सोच–विचार में पड़ जाना।

प्रयोग—आप किस उधेड़बुन में पड़ गए? अगर बेटे की शादी नहीं करनी है तो वैसा जवाब दे दो।

31. उंगली उठाना = दोष लगाना।

प्रयोग—किसी नेता पर उंगली उठाना तो आसान है पर स्वयं नेता बनकर देखो तब पता चलेगा।

32. उल्लू बनाना = बेवकूफ बनाना।

प्रयोग—वह देश–देशान्तर में घूमी-फिरी है अतः उसे उल्लू बनाना आसान नहीं है।

33. उंगली पर नचाना = पूरी तरह वश में कर लेना।

प्रयोग—शीला तो अपने पति को उंगली पर नचा रही है। वह किसी की बात नहीं सुनेगी।

34. उल्टे छुरे से मूँड़ना = मूर्ख बनाना।

प्रयोग—सुनार ने हार में से 30 प्रतिशत बट्टा काटा और दस प्रतिशत अन्य कटौती करके मुझे तो उल्टे छुरे से मूँड़ दिया।

35. ऊँट के मुँह में जीरा होना = आवश्यकता से बहुत कम।

प्रयोग—किसी पहलवान को 250 ग्राम दूध पिलाना ऊँट के मुँह में जीरा देना जैसा है।

36. ऐसी वैसी होना = चरित्रभ्रष्ट होना।

प्रयोग—राधा ने कहा – मैं ऐसी–वैसी लड़की नहीं हूँ जो तुम्हारे बहकाने में आ जाऊँ।

37. ऐरा गैरा नत्थू खैरा होना = कोई महत्व न देना।

प्रयोग—आपने मुझे मीटिंग से बाहर कर दिया, मैं क्या आपको ऐरा गैरा नत्थू खैरा लगता हूँ।

38. एक आँख से देखना = सबको समान समझना।

प्रयोग—मैं तो अपने बेटा–बेटी को एक आँख से देखता हूँ। अपनी वसीयत में दोनों को आधी–आधी सम्पत्ति दे जाऊँगा।

39. एड़ी चोटी का जोर लगाना = पूरा प्रयास करना।

प्रयोग—आई.ए.एस. की परीक्षा पास करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ता है, फिर भी बहुतों को निराश होना पड़ता है।

40. एक लाठी से हाँकना = अच्छे–बुरे में भेद न करना।

प्रयोग—देखो भाई मैं तो पुलिस वाला आदमी हूँ अतः सबको एक लाठी से हाँकना और कोई पक्षपात न करना मेरे प्रशिक्षण में शामिल है।

41. एक के तीन बनाना = अधिक मुनाफा कमाना।

प्रयोग—व्यापारियों की सामान्य प्रवृत्ति एक के तीन बनाने की होती है।

42. एक और एक ग्यारह होना = मेल से शक्ति बढ़ जाना।

प्रयोग—तुम दोनों भाई मिलकर फैक्ट्री चलाओ, फिर देखो कितना लाभ होता है, क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

43. एक हाथ से ताली न बजना = किसी एक पक्ष का दोष न होना।

प्रयोग—अगर तुम दोनों में मुकदमा चल रहा है तो दोनों एक-दूसरे से असंतुष्ट होंगे, क्योंकि एक हाथ से ताली कभी नहीं बजती।

44. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना = एक जैसी प्रवृत्ति वाले होना।

प्रयोग—आजकल के नेता, चाहे वे जिस पार्टी के हों, स्वार्थी हैं। देश का कल्याण कोई नहीं चाहता, क्योंकि वे सभी एक थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

45. ओखली में सिर देना = जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

प्रयोग—जब फौज में भरती हुआ हूँ तो मौत से क्या डरना। मैंने तो अपने आप ओखली में सिर दिया है।

46. औंधे मुँह गिरना = बड़ी हानि होना।

प्रयोग—शेयर मार्केट के औंधे मुँह गिरने से उसे भारी नुकसान हो गया।

47. ओठ फड़कना = क्रोध आना।

प्रयोग—शिव-धनुष को टूटा देखकर परशुराम के ओठ फड़कने लगे।

48. ओठ चबाना = क्रोध को पी लेना।

प्रयोग—नशेड़ी पिता द्वारा माँ की पिटाई देखकर युवा पुत्र ओठ चबाकर रह गया।

49. औंधी खोपड़ी का होना = मूर्ख होना।

प्रयोग—विभीषण ने तो तुम्हारे हित की बात कही थी और तुमने उसे लात मार कर भगा दिया यह तो साबित करता है कि तुम (रावण) औंधी खोपड़ी के हो।

50. कलेजे पर साँप लोटना = ईर्ष्या से जलना।

प्रयोग—जब से मेरा बेटा आई.ए.एस. बना है, तब से पड़ोसियों के कलेजे पर तो मानो साँप लोट गया है।

51. कलेजा ठण्डा होना = शान्ति मिलना।

प्रयोग—पिता के हत्यारे को फाँसी की सजा मिलने पर मोहन का कलेजा ठण्डा हो गया।

52. कान में तेल डालकर बैठना = सुनी-अनसुनी करना।

प्रयोग—मैं कब से आपसे गुहार लगा रहा हूँ, पर आप तो जैसे कान में तेल डालकर बैठे हैं।

53. कान काटना = होशियार होना।

प्रयोग—यह देखने में बच्चा है, पर क्रिकेट में बड़ों-बड़ों के कान काटता है।

54. काजल की कोठरी होना = कलंक से बच न पाना।

प्रयोग—पुलिस विभाग को आप काजल की कोठरी मानिए। बड़े-बड़े ईमानदार भी पुलिस में नौकरी करके इस काजल की कोठरी में दागदार हो गये।

55. कूप-मण्डूक होना = सीमित ज्ञान होना।

प्रयोग—तुम तो निरे कूप-मण्डूक हो, अपनी दुकान के बाहर भी कभी झाँक लिया करो, तब पता चलेगा कि दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई है।

@UPSC_THOUGHT

56. कान का कच्चा होना = सुनी हुई बातों पर विश्वास कर लेना।

प्रयोग—अधिकारी के लिए कान का कच्चा होना ठीक नहीं माना जाता।

57. कटे पर नमक छिड़कना = दुखी का दुःख और बढ़ाना।

प्रयोग—वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने से वैसे ही दुखी था अब आप उसे वज्रमूर्ख बताकर कटे पर नमक छिड़कने का काम कर रहे हैं।

58. कंठ का हार होना = अत्यंत प्रिय होना।

प्रयोग—इकलौती संतान माता–पिता के कंठ का हार बन जाती है।

59. कलेजे पर पत्थर रखना = दिल को मजबूत का लेना।

प्रयोग—युवा पुत्र की मौत को माँ–बाप कलेजे पर पत्थर रखकर ही झेल पाते हैं।

60. कलेजा धक–धक करना = भयभीत होना

प्रयोग—जब लुटेरों ने चलती बस में हथियार निकाल लिए तो सभी यात्रियों कर कलेजा धक–धक करने लगा।

61. काठ का उल्लू होना = मूर्ख होना।

प्रयोग—यार बार–बार जेब कटवा लेते हो मुझे तो तुम पूरे काठ के उल्लू लगते हो।

62. कनकौए उड़ाना = व्यर्थ की बात करना।

प्रयोग—हमेशा कनकौए उड़ाते रहते हो, कभी तो अक्ल की बात किया करो।

63. कान पर जू न रेंगना = सुनी-अनसुनी कर देना।

प्रयोग—मैंने कितनी बार आपसे अपने ऋण को चुकाने के लिए कहा है, पर आपके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

64. खयाली पुलाव पकाना = हवाई किले बनाना, असम्भव कल्पनाओं में लीन रहना।

प्रयोग—आपका यह सोचना कि मेरी चुनावी जीत होने पर मुख्यमन्त्री मेरे ही दल का बनेगा, बिलकुल असम्भव बात है। हाँ, खयाली पुलाव पकाने से भला आपको कौन रोक सकता है।

65. खटाई में पड़ना = व्यवधान आ जाना।

प्रयोग—अच्छा-भला दीक्षान्त समारोह हो रहा था, पर कर्मचारियों की हड़ताल हो गई। अब तो मामला खटाई में पड़ा जान पड़ता है।

66. खाक छानना = मारा-मारा फिरना।

प्रयोग—बेरोजगारों को नौकरी पाने के लिए दर-दर की खाक छाननी पड़ती है।

67. खून का प्यासा होना = जानी दुश्मन।

प्रयोग—अंग्रेजों के लाठी चार्ज में लाला लाजपत राय के घायल होने की खबर सुनकर भगत सिंह अंग्रेजों के खून के प्यासे हो गये।

68. गहरा हाथ मारना = अधिक लाभ कमाना।

प्रयोग—शहर के इतने बड़े रईस की लड़की से विवाह करके आपने तो गहरा हाथ मारा है।

69. गुल खिलाना = अनुचित आचरण करना।

प्रयोग—आप तो केवल व्यापार में लगे रहते हो, इसीलिए आपको नहीं पता कि आपकी पुत्री कॉलेज में क्या गुल खिला रही है।

70. गागर में सागर भरना = कम शब्दों में अधिक बात कहना।

प्रयोग—बिहारी ने दोहे जैसे छोटे छंद में अपनी प्रतिभा के बलबूते गागर में सागर भर दिया है।

71. गाल फुलाना = रूठ जाना।

प्रयोग—बहू तुम जरा-जरा सी बात पर गाल फुला लेती हो, यह अच्छी बात नहीं।

72. गाल बजाना = डींगें हाँकना।

प्रयोग—अपनी बहादुरी का बखान करके, क्यों गाल बजा रहो हो, तुम्हारी असलियत हमें पता है।

73. गूलर का फूल होना = दुर्लभ होना।

प्रयोग—आप तो लगता है गूलर के फूल हैं, आज सालों बाद दिखे हैं।

74. गड़े मुर्दे उखाड़ना = बीती बातों का पुनः स्मरण कराना।

प्रयोग—अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मामला उठाकर पाकिस्तान जब-तब गड़े मुर्दे उखाड़ता रहता है और यह भूल जाता है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन चुका है।

75. गुड़ गोबर करना = काम बिगाड़ना।

प्रयोग—शादी के लिए कितना बढ़िया पण्डाल बनवाया था, पर अचानक आई बारिश ने सारा गुड़ गोबर कर दिया।

76. घाट-घाट का पानी पीना = अत्यन्त अनुभवी होना।

प्रयोग—राजनीति में मोदी जी को पकड़ना सम्भव नहीं है, क्योंकि वे घाट-घाट का पानी पिये हुए हैं।

77. घड़ों पानी पड़ना = अत्यधिक लज्जित होना।

प्रयोग—बरात में जब मोहन को दोस्तों के साथ शराब पीते हुए पिताजी ने देखा, तब उन पर घड़ों पानी पड़ गया।

78. घाव हरा होना = भूला दुःख याद आना।

प्रयोग—करवाचौथ पर सभी स्त्रियों को शृंगार करते देखकर राधा का घाव हरा हो गया, क्योंकि पिछले माह ही तो उसके पति की दुर्घटना में मौत हुई थी।

79. घी के दिये जलाना = प्रसन्नता व्यक्त करना।

प्रयोग—राम के अयोध्या वापस आने पर जनता ने घी के दिये जलाये।

80. घोड़े बेचकर सोना = निश्चिन्त हो जाना।

प्रयोग—बेटी का विवाह हो जाने के बाद सोहन तो घोड़े बेचकर सो रहा है।

81. घाव पर नमक छिड़कना = दुखी व्यक्ति को और दुःख पहुँचाना।

प्रयोग—एक तो वह जेब कटवा कर वैसे ही दुखी है ऊपर से आप उसे मूर्ख बताकर घाव पर नमक छिड़कने का काम कर रहे हैं।

82. घोड़े, पर चढ़े आना = बहुत जल्दी मचाना।

प्रयोग—ग्राहक ने जब दुकानदार से सौदा जल्दी देने को कहा तो दुकानदार बोला–भाई जी आप तो घोड़े पर चढ़े आए हैं, पहले मुझे उन ग्राहकों को तो निपटा लेने दो जो आपसे पहले आए हैं।

83. घात लगाना = अवसर की तलाश में रहना।

प्रयोग—दुष्ट लोग सदैव घात लगाए रहते हैं अतः सावधान, सचेत रहकर ही आप बच सकते हैं।

84. घर घाट एक करना = कठिन परिश्रम करना।

@UPSC_THOUGHT

प्रयोग—नौकरी पाने के लिए उसे घर घाट एक करना पड़ा फिर यह नौकरी मिल पाई।

85. चाँदी का जूता मारना = रिश्वत देना।

प्रयोग—सरकारी दफ्तरों में चाँदी का जूता मारकर लोग अपना काम करा लेते हैं।

86. चाँद का टुकड़ा होना = अत्यन्त सुन्दर होना।

प्रयोग—अभिनेत्री हेमामालिनी अपने जमाने में इतनी सुन्दर थीं कि लोग उन्हें चाँद का टुकड़ा कहते थे।

87. चिराग तले अँधेरा होना = विद्वान् के घर मूर्ख होना।

प्रयोग—अध्यापक पुत्र होने पर भी वह निरक्षर ही रहा। यह देखकर लोगों ने टिप्पणी की कि भैया चिराग तले अँधेरा होता ही है।

88. चार चाँद लगना = शोभा बढ़ जाना।

प्रयोग—आपके आने से हमारे समारोह में चार चाँद लग गये हैं।

89. चोली-दामन का साथ होना = गहरा सम्बन्ध होना।

प्रयोग—शराब और जुए का चोली-दामन का साथ है, क्योंकि शराबी अक्सर जुआरी होते हैं और जुआरी अक्सर शराबी होते हैं।

90. चारों खाने चित्त होना = परास्त होना।

प्रयोग—क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया की टीम के आगे दुनिया की सभी टीमें चारों खाने चित्त हो चुकी हैं।

91. चल बसना = मर जाना।

प्रयोग—मैं तो उनसे ज्योतिष विद्या सीखना चाहता था, पर पता लगा कि वे पिछले महीने ही चल बसे।

92. चाँदी काटना = अधिक लाभ कमाना।

प्रयोग—आप जैसे व्यापारी ही तो युद्ध होने पर चाँदी काटने में लग जाते हैं, देशहित की चिन्ता नहीं करते।

93. चैन की वंशी बजाना = आनंदपूर्वक जीवन-यापन करना।

प्रयोग—अब तो मेरे पुत्र की सरकारी नौकरी लग गई है, इसलिए सारी उम्र चैन की वंशी बजाऊँगा।

94. छक्के छुड़ाना = हरा देना।

प्रयोग—भारतीय टीम ने विश्व कप 2011 में पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के छक्के छुड़ा दिये।

95. छठी का दूध याद आना = अत्यन्त कष्टप्रद (कठिन) होना।

प्रयोग—गणित का पेपर देखकर मुझे तो छठी का दूध याद आ गया।

96. छाती पर साँप लोटना = अत्यधिक ईर्ष्या होना।

प्रयोग—पड़ोसी की समृद्धि देखकर आपकी छाती पर साँप क्यों लोट रहा है?

97. जहर की पुड़िया होना = अत्यधिक दुष्ट होना।

प्रयोग—मेरी छोटी ननद हमेशा ताने कसती रहती है, क्योंकि वह पूरी तरह जहर की पुड़िया है।

98. जनवासे की चाल चलना = अत्यधिक सुस्त (धीमा) होना।

प्रयोग—देखो जनवासे की चाल चलकर यह काम पूरा नहीं हो सकता, जरा फुर्ती दिखाओ।

99. जी छोटा करना = निराश होना।

प्रयोग—फेल हो जाने पर जी छोटा मत करो, बल्कि दूने उत्साह से परिश्रम करो, सफलता अवश्य मिलेगी।

100. जी-का जंजाल होना = व्यर्थ का झंझट।

प्रयोग—अरे यार यह मेहमान तो जी-का जंजाल हो गया है। सात दिन से टिका है, जाने का नाम ही नहीं लेता।

101. जमीन-आसमान एक करना = अत्यधिक प्रयास करना।

प्रयोग—प्रथम श्रेणी पाने के लिए मोहन को जमीन-आसमान एक करना पड़ा है, ऐसे ही प्रथम श्रेणी नहीं आ गई।

102. जान हथेली पर रखना = प्राणों की परवाह न करना।

प्रयोग—पर्वतारोही जान हथेली पर रखना पर्वतारोहण करते हैं।

103. जहर उगलना = अपमानपूर्ण कड़वी बातें कहना।

प्रयोग—चुनाव जीतने के लिए प्रतिपक्षी नेता अपने विरोधियों के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं।

104. जमीन आसमान का अन्तर होना = अत्यधिक अन्तर होना।

प्रयोग—कांग्रेस और भाजपा की कार्य-शैली में जमीन आसमान का अन्तर है।

105. जी खट्टा होना = मन फिर जाना।

प्रयोग—तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर मेरा जी खट्टा हो जाता है।

106. जोड़-तोड़ मिलाना = अनेक उपाय करना।

प्रयोग—बेटी की शादी करने के लिए आपको जोड़-तोड़ मिलाने पड़ेंगे तब काम बनेगा।

107. जवान लड़ाना = उत्तर–प्रत्युत्तर देना।

प्रयोग—बड़ों से जवान लड़ाना तुम्हें शोभा नहीं देता।

108. जीती मक्खी निगलना = जानकर धोखा खाना।

प्रयोग—वदचलन लड़की से मैं अपने पुत्र का विवाह नहीं कर सकता। जान बूझकर जीती मक्खी नहीं निगली जाती।

109. टका-सा जवाब देना = स्पष्ट इन्कार कर देना।

प्रयोग—मैंने जब सोहन से रुपये उधार माँगे तो उसने टका-सा जवाब दे दिया।

110. टेढ़ी खीर होना = कठिन कार्य।

प्रयोग—कश्मीर समस्या सुलझाना वास्तव में टेढ़ी खीर है।

111. टोपी उछालना = बेइज्जती करना।

प्रयोग—तुम्हारे बेटे ने भरी पंचायत में मुझे अपशब्द कहकर मेरी टोपी उछालने का काम किया है।

112. ठोकर लगना = हानि उठाना।

प्रयोग—ठोकर खाकर ही युवाओं को अक्ल आती है, उससे पहले नहीं।

113. डंके की चोट पर कहना = खुले आम कहना।

प्रयोग—मेरे बेटे ने डंके की चोट पर प्रेम विवाह किया है, क्योंकि यह कोई अपराध नहीं है।

114. ढोल में पोल होना = खोखला होना।

प्रयोग—मैं तो उन्हें बड़ा आदमी समझता था, पर वे तो भारी कंजूस निकले, धर्म के नाम पर भी चन्दा नहीं दिया। तब समझ में आया कि ढोल में भी पोल होती है।

115. ढिंढोरा पीटना = सबको बता देना।

@UPSC_THOUGHT

प्रयोग—अच्छा है कि आपको खेत में गड़ी सम्पत्ति मिल गई, पर ढिंढोरा क्यों पीट रहे हो, कहीं पुलिस के कान में बात पड़ गई तो लेने के देने पड़ जाएँगे।

116. ढपोरशंख होना = डींग हाँकना।

प्रयोग—वह तो पूरा ढपोरशंख है, कहेगा कि दस हजार चंदा दूँगा, पर देगा एक रुपया भी नहीं।

117. तलवे चाटना = खुशामद करना।

प्रयोग—आज के विधायक मन्त्री बनने के लिए पार्टी मुखिया के तलवे चाटते रहते हैं।

118. तीन-तेरह होना = एकता नष्ट होना, बिखर जाना।

प्रयोग—पिताजी के मरते ही उनका परिवार तीन-तेरह हो गया।

119. तिल का ताड़ बनाना = थोड़ी-सी (छोटी-सी) बात को बड़ा कर देना।

प्रयोग—बात बच्चों की लड़ाई से शुरू हुई, पर आपने तो तिल का ताड़ बनाकर परिवार से ही अलग होने का निश्चय कर लिया।

120. तूती बोलना = प्रभाव होना।

प्रयोग—आजकल भाजपा में नरेन्द्र मोदी की तूती बोल रही है, क्योंकि उनमें चुनाव जितवा सकने की क्षमता है।

121. तलवार के घाट उतारना = मार डालना।

प्रयोग—युद्ध में सौ से अधिक सैनिक तलवार के घाट उतार दिये गये।

122. थाली का बैंगन होना = सिद्धान्तहीन होना।

प्रयोग—आप तो थाली के बैंगन हैं, कभी इस तरफ तो कभी उस तरफ। आपकी अपनी राय क्या है, इसका तो पता ही नहीं चल पाता।

123. दाँत खट्टे करना = पराजित करना।

प्रयोग—सीमा पर हमारे सैनिकों ने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिये।

124. दाँतों तले अँगुली दबाना = आश्चर्य-चकित होना।

प्रयोग—ताजमहल की सुन्दरता देखकर विदेशी सैलानी दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं।

125. दाँत तोड़ना = कड़ा दण्ड देना।

प्रयोग—देखो गाली मत दो, वरना दाँत तोड़ दूँगा।

126. दाल में काला होना = सन्देह होना।

प्रयोग—सुबह-सुबह मोहल्ले में पुलिस को आया देखकर मैं सोचने लगा जरूर कुछ दाल में काला है, लगता है कोई अनहोनी हुई है।

127. दो टूक बात कहना = स्पष्टवादी होना।

प्रयोग—वकील ने गवाह से कहा–देखो दो टूक बात करो, तभी तुम्हारी गवाही का विश्वास जज साहब करेंगे।

128. दाल न गलना = काम न बनना।

प्रयोग—इस केन्द्र पर तुम्हारी दाल न गलेगी क्योंकि यहाँ नकल नहीं होती।

129. दाँत खट्टे करना = पराजित करना।

प्रयोग—बाबा रामदेव की संस्था पतंजलि द्वारा निर्मित दन्तकान्ति टूथपेस्ट ने सभी विदेशी दंतमंजनों (टूथपेस्टों) के दाँत खट्टे कर दिए।

130. दिन दूनी रात चौगुनी = बहुत शीघ्र उन्नति करना।

प्रयोग—माताजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा–बेटा तुम दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करो।

131. दुम दबाकर भाग जाना = डर जाना।

प्रयोग—कोतवाल साहब के आते ही जाम लगाने वाले लोग दुम दुबाकर भाग गए।

132. दिन चढ़ना = गर्भवती होना।

प्रयोग—बहू के दिन चढ़ गए हैं यह जानकर सासू माँ प्रसन्न हो गयीं।

133. दिल बाग-बाग होना = खुश होना।

प्रयोग—वर्षों से बिछड़े मित्र से मिलकर मेरा दिल बाग-बाग हो गया।

134. दाग लगाना = कलंकित होना।

प्रयोग—मेरे परिवार की लड़की भाग जाने से कुल में दाग लगा गया।

135. दूध का दूध पानी का पानी करना = सच्चा इंसाफ करना।

प्रयोग—इलाहाबाद हाई कोर्ट ने तलवार दम्पति को बेटी की हत्या के जुर्म से बरी करके दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

136. दो–दो हाथ करना = लड़ना।

प्रयोग—कश्मीर समस्या का समाधान तब तक नहीं होगा जब तक भारत पाकिस्तान से दो–दो हाथ नहीं करेगा।

137. धाक जमाना = रौब होना।

प्रयोग—नये अध्यापक ने अपनी विद्वता से दो दिन में ही कक्षा में अपनी धाक जमा ली।

138. धूल में लट्ठ मारना = अनुमान लगाना।

प्रयोग—कत्ल के बारे में तुम कुछ जानते भी हो या यों ही उल्टी-सीधी बातें करके धूल में लट्ठ मार रहे हो।

139. नाक में दम होना = परेशान हो जाना।

प्रयोग—यह लड़का इतना शैतान है कि इसने दो दिनों में ही मेरी नाक में दम कर दिया है।

140. नानी याद आना = परेशानी में फँस जाना।

प्रयोग—इस बच्ची को शॉपिंग कराने में तो मुझे नानी याद आ गयी। दसियों दुकानें देखीं, पर इसे कोई ड्रेस पसन्द ही नहीं आई।

141. नाक का बाल होना = अत्यधिक प्रिय होना।

प्रयोग—एक जमाना था, जब अमर सिंह उत्तर प्रदेश के समाजवादी पार्टी के मुखिया माननीय मुलायम सिंह की नाक के बाल थे।

142. नमक हराम होना = कृतघ्न होना।

प्रयोग—मेरा नौकर इतना नमक हराम होगा, इसका मुझे अनुमान तक न था।

143. नौ दो ग्यारह होना = भाग जाना।

प्रयोग—पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गये।

144. नाक रगड़ना = विनती करना।

प्रयोग—नकलची विद्यार्थी के नाक रगड़ने पर भी अध्यापक ने उसे नहीं छोड़ा और नकल की रिपोर्ट भेज दी।

145. पौ बारह होना = लाभ ही लाभ होना।

प्रयोग—युद्ध-काल में व्यापारियों की पौ बारह हो जाती है, क्योंकि वे मुँह माँगी कीमत वसूलते हैं।

146. पेट में चूहे कूदना = बहुत भूखा होना।

प्रयोग—लाओ माँ जो कुछ हो खाने को दे दो, पेट में चूहे कूद रहे हैं।

@UPSC_THOUGHT

147. पहाड़ टूट पड़ना = भारी विपत्ति आना।

प्रयोग—अभी उसकी कच्ची गृहस्थी है और पति चल बसा। उस बेचारी पर तो पहाड़ ही टूट पड़ा है।

148. पैर उखड़ना = हार कर भागना।

प्रयोग—सेनापति के मरते ही सैनिकों के पैर उखड़ गये।

149. पाँचों अँगुली बराबर न होना = सब एक समान न होना।

प्रयोग—आगरे की लड़कियाँ चालाक होती हैं, ऐसा कहकर आप अन्याय कर रहे हैं, क्योंकि पाँचों अँगुली बराबर नहीं होतीं।

150. पीठ में छुरा भोंकना = विश्वासघात करना।

प्रयोग—तुम्हारा विश्वास पार्टी कैसे करे तुमने तो पिछले चुनाव में पार्टी की पीछ में छुरा भौंककर विपक्ष से टिकट ले ली थी।

151. फूल सूँघकर रहना = बहुत कम खाना।

प्रयोग—कहीं मोटी न हो जाऊँ इस चक्कर में लड़कियाँ तो फूल सूँघकर रहती हैं।

152. फूला न समाना = अत्यंत प्रसन्न होना।

प्रयोग—बेटे की नौकरी लग जाने पर अब तो मोहन फूला न समा रहा था।

153. फूलकर कुप्पा होना = अत्यधिक प्रसन्न होना।

प्रयोग—भाई की नौकरी लग गई। यह सुनकर शालिनी तो जैसे फूलकर कुप्पा हो गई।

154. बहती गंगा में हाथ धोना = अवसर का लाभ उठाना।

प्रयोग—परीक्षा में जब सब नकल कर रहे थे तो मैंने भी बहती गंगा में हाथ धो लिये।

155. बाल बाँका न होना = कोई नुकसान न होना।

प्रयोग—दुर्घटना तो जरूर हुई, पर मेरा तो बाल भी बाँका न हुआ।

156. बाल की खाल निकालना = बहुत छानबीन करना।

प्रयोग—वकील लोग बाल की खाल निकालकर मुकदमा जीत लेते हैं।

157. बगलें झाँकना = निरुत्तर होना।

प्रयोग—शोर मचाते बच्चों को डाँटते हुए प्रधानाचार्य ने कहा, यह क्या हो रहा है? कौन शोर मचा रहा था? तो सभी विद्यार्थी बगलें झाँकने लगे।

158. भीगी बिल्ली बन जाना = डर जाना।

प्रयोग—पिताजी के सामने तो तुम भीगी बिल्ली बन जाते हो, अब दहाड़ रहो हो।

159. भाड़े का टट्टू होना = किराये का आदमी।

प्रयोग—एस.पी. साहब ने लाश का मुआयना करके कहा, हत्या भाड़े के टट्टुओं से करवाई गई है, क्योंकि हत्यारे पेशेवर प्रतीत होते हैं।

160. मुँह की खाना = पराजित होना।

प्रयोग—2014 के लोकसभा चुनाव में काँग्रेस को पूरे देश में मुँह की खानी पड़ी।

161. मुँह में पानी आना = ललचाना।

प्रयोग—बरात में रसगुल्लों से भरा डोंगा देखकर उसके मुँह में पानी आ गया।

162. म्यान से बाहर होना = अत्यधिक क्रोध करना।

प्रयोग—शिव धनुष को टूटा हुआ देखकर परशुराम म्यान से बाहर हो गये।

163. मैदान मारना = जीत लेना।

प्रयोग—2011 का एक दिवसीय क्रिकेट विश्व-कप जीतकर भारतीय क्रिकेट टीम ने मैदान मार लिया।

164. मिली भगत होना = दुरभिसन्धि होना।

प्रयोग—मैं जानता हूँ कि मुझे नौकरी से निकलवाने में तुम दोनों की मिली भगत है।

165. मुँह पर कालिख लगाना = कलंक लगाना।

प्रयोग—रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़े जाने पर अधिकारी के मुँह पर कालिख लग गई।

166. रंग में भंग पड़ना = आनन्द में बाधा पड़ना।

प्रयोग—दूल्हे के भाई की दुर्घटना में अचानक मृत्यु होने से विवाह वाले घर में रंग में भंग पड़ गया।

167. रंगा सियार होना = कपटी मनुष्य।

प्रयोग—आजकल गेरुए वस्त्र पहनकर तमाम लोग साधु-संन्यासी बने फिरते हैं, जबकि इनमें से अधिकांश रंगे सियार होते हैं।

168. रंगे हाथ पकड़ना = मौके पर पकड़ा जाना।

प्रयोग—उस रिश्वती क्लर्क को अधिकारी ने रंगे हाथ पकड़ लिया।

169. रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना = प्रतिदिन कमाकर जीवन-यापन करना।

प्रयोग—बड़े शहरों में रहने वाले तमाम गरीब रोज कुआँ खोदकर रोज पानी पीते हैं, उनके पास जमा पूंजी नहीं होती है।

170. रोंगटे खड़े होना = भयभीत होना।

प्रयोग—भूत–प्रेत की कहानियाँ सुनकर उसके तो रोंगटे खड़े हो गए।

171. राई से पर्वत करना = छोटे से बड़ा करना।

प्रयोग—बच्चों के झगड़े को तूल देकर आपने राई में पर्वत करने का काम किया है, यह समझदारी नहीं कही जा सकती।

172. लोहा लेना = साहसपूर्वक सामना करना।

प्रयोग—शिवाजी ने जीवनपर्यन्त मुगलों से लोहा लिया।

173. लहू का घूँट पीना = क्रोध को दबाना।

प्रयोग—तुम्हारी कड़वी बातों को सुनकर मैं लहू का घूँट पीकर रह गया, अन्यथा झगड़ा हो जाता।

174. लीपा-पोती करना = छिपाने का प्रयास करना।

प्रयोग—अध्यापक ने पूछा सच-सच बताओ क्या हुआ था, इस तरह लीपा-पोती करने से काम न चलेगा।

175. लुटिया डुबो देना = सर्वनाश कर देना।

प्रयोग—मेरे साझीदार ने अपनी मूर्खता से मेरे व्यापार की तो लुटिया ही डुबो दी।

176. लकीर का फकीर होना = पुरानी रीति पर चलना।

प्रयोग—इस वैज्ञानिक युग में भी तमाम लोग लकीर के फकीर बने हुए हैं।

177. लोहे के चने चबाना = अत्यधिक कठिन कार्य।

प्रयोग—परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक लाना लोहे के चने चबाने जैसा कार्य है।

178. श्रीगणेश करना = प्रारम्भ कर देना।

प्रयोग—मकान बनाने का श्रीगणेश तो कर दिया है, देखें कब तक काम समाप्त होता है।

179. सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना = प्रारम्भ में ही संकट आना।

प्रयोग—व्यापार प्रारम्भ करते ही पहले सौदे में ही एक लाख की हानि हो गयी, ये तो सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये।

180. सीधी अँगुली से घी न निकलना = प्रेमपूर्ण व्यवहार से काम न बनना।

प्रयोग—कई बार तगादा करने पर भी जब रुपये न मिले तो साहूकार बोला—लगता है सीधी अँगुली से घी नहीं निकलेगा।

181. सोने की चिड़िया होना = अत्यन्त समृद्ध होना।

प्रयोग—अतीत में भारत इतना समृद्ध था कि विदेशी इसे 'सोने की चिड़िया' कहते थे।

182. सिर माथे पर रखना = अत्यन्त आदर देना।

प्रयोग—गुरुजी जब भी मेरे घर आते हैं मैं उन्हें सिर माथे पर रखता हूँ।

183. सिर धुनना = पश्चाताप करना।

प्रयोग— पिताजी ने कहा फेल हो जाने पर अब सिर धुन रहे हो , जब कहता था पढ़ाई कर लो तब सुनते नहीं थे।

184. सिर पर हाथ होना = सहारा या वरद हस्त होना।

प्रयोग—जब तक नरेन्द्र मोदी का सिर पर हाथ है तब तक अमित शाह का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता।

185. हाथ का मैल होना = तुच्छ होना।

प्रयोग—यार रुपया तो हाथ का मैल है उसके लिए तुम्हारी दोस्ती कुर्बान नहीं कर सकता।

186. हवाइयाँ उड़ना = घबरा जाना।

प्रयोग—पुलिस के पकड़ लेने पर उस रिश्वती अधिकारी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

187. हक्का-बक्का रह जाना = आश्चर्य-चकित होना।

प्रयोग—पिता के निधन की खबर सुनकर वह तो हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि अभी कल ही तो उनसे बात हुई थी।

188. हथेली पर सरसों जमाना = शीघ्र चाहना।

प्रयोग—धैर्य रखो, काम हो जायेगा भैया, हथेली पर सरसों कहीं नहीं जमती।

189. हाथ धोकर पीछे पड़ना = बुरी तरह पीछे पड़ना।

प्रयोग—आप तो हाथ धोकर मुझ गरीब के पीछे पड़ गए हो, मैंने कहा तो कि चोरी मैंने नहीं की, पर आप हैं कि मानते ही नहीं।

190. हवा के घोड़े पर सवार होना = उतावली करना।

प्रयोग— आप आए हैं तो कुछ देर बैठिए, लेकिन आप तो जैसे हवा के घोड़े पर सवार रहते हो।

190. हाथ-पाँव फूलना = घबरा जाना।

प्रयोग—ट्रेन दुर्घटना का समाचार सुनकर मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए क्योंकि इसी ट्रेन से पिताजी आ रहे है।

191. हाँ में हाँ मिलाना = चापलूसी करना।

प्रयोग—मंत्री जी की हाँ में हाँ मिलाने वाले अधिकारी वास्तव में कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं होते।

कुछ प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ एवं उनके वाक्य-प्रयोग

1. **अन्धों में काना राजा** = गुणहीनों में थोड़े गुण वाला श्रेष्ठ।

   प्रयोग—अपने अशिक्षित परिवार में रमेश हाईस्कूल पास करके अन्धों में काना राजा बना हुआ है।

2. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** = अकेला आदमी कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता।

   प्रयोग—अरे भाई ! क्यों पत्थर से सिर मार रहे हो? इस अत्याचारी के विनाश के लिए तुम क्या कर सकते हो, क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

3. **अधजल गगरी छलकत जाय** = ओछा अथवा कम योग्य व्यक्ति अपना विज्ञापन अधिक करता है।

   प्रयोग—गाँव में बहुत से लड़के एम. ए., बी. ए. पास हैं, पर वे शान्त हैं। हाईस्कूल पास बलभद्र सब जगह अपने पढ़े-लिखे होने की प्रशंसा करता फिर रहा है। विवश होकर लोगों को कहना पड़ा, अधजल गगरी छलकत जाय।

4. **अपनी करनी पार उतरनी** = जैसा करना वैसा फल प्राप्त करना।

   प्रयोग—दुर्योधन के दुराग्रह से महाभारत में सब कुछ नष्ट हो जाने पर उदास दुर्योधन को देखकर विदुर ने कहा था—अपनी करनी पार उतरनी।

5. **अभी दिल्ली दूर है** = लक्ष्य मिलने में देर होना।

   प्रयोग—अभी तुम हाईस्कूल में पढ़ रहे हो। मेडिकल में प्रवेश लेने के लिए अभी दिल्ली दूर है।

6. **अरहर की टट्टी गुजराती ताला** = कम मूल्य की वस्तु की सुरक्षा के लिए अधिक व्यय करना।

   प्रयोग—रामलाल को अपने बाग से एक लाख रुपया वार्षिक लाभ होता है, पर उसकी सिंचाई और रखवाली पर डेढ़ लाख रुपया खर्च हो जाता है। इसी को कहते हैं, अरहर की टट्टी गुजराती ताला।

7. **अशर्फियाँ लुटें कोयले पर मोहर या मोहरें लुटें कोयले पर चाक** = अधिक मूल्य की वस्तु की सुरक्षा नहीं और कम मूल्य वाली पर प्रतिबन्ध।

   प्रयोग—तुम्हारा सारा घर फिजूलखर्ची करता है, पर नौकर का वेतन नहीं बढ़ाया जाता। यह तो अशर्फियाँ लुटें कोयले पर मोहर वाली बात हुई।

8. **आँख के अन्धे नाम नैनसुख** = नाम के अनुरूप गुण न होना।

   प्रयोग—शेरसिंह के नाम से उन्हें वीर मत समझो। वे आँख के अन्धे नाम नैनसुख को चरितार्थ करते हैं।

9. **आगे नाथ न पीछे पगहा** = पूरी तरह स्वतन्त्र।

   प्रयोग—श्याम अकेला है, घर में मस्त पड़ा रहता है, न उसके आगे नाथ है न पीछे पगहा है।

10. **आधा तीतर आधा बटेर** = बेमेल होना, एक-रूपता का अभाव।

    प्रयोग—खद्दर का कुर्ता और टेरेलिन का पाजामा पहनने वाला रमेश आधा तीतर आधा बटेर है।

11. **आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे अथवा आधी छोड़े एक को धावे, ऐसो डूबे थाह न पावे** = अधिक लालच करने पर अपना धन भी हाथ से निकल जाता है।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

प्रयोग—मोहन बैंक की नौकरी छोड़कर धन कमाने के लिए लॉटरी में रुपये फूँकने लगा और अपना मकान भी इसमें दे बैठा। सच है, आधी छोड़ सारी को धावै आधी मिले न सारी पावै या सही कहा है, आधी छोड़ एक को धावै, ऐसो डूबै थाह न पावै।

12. **आपका जूता आपके सिर** = जिसका सिद्धान्त उसी पर लागू करना, विरोधी के साधन से ही विरोधी को हराना या हानि पहुँचाना।

प्रयोग—मित्रगण सिनेमा का निमन्त्रण देकर आपको ले गये और आपके पैसे से सबने सिनेमा देखकर आपका जूता आपके सिर कर दिया।

13. **आम के आम गुठलियों के दाम** = एक वस्तु से दोहरा लाभ।

प्रयोग—अध्यापन कार्य से पैसा भी मिलता है और यश भी। अतः सच है आम के गाम गुठलियों के दाम।

14. **आप मरे तो जग मुआ** = स्वयं न होने पर संसार व्यर्थ।

प्रयोग—सौतेले भाई-बहनों के लिए अपने आपको तबाह मत करो, क्योंकि आप मरे तो जग मुआ।

15. **आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास** = अपने उद्देश्य से भिन्न और नीच कर्म करना।

प्रयोग—राधेलाल प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर अभिनेता बनने के लिए मुम्बई गये। वहाँ उन्हें कुलीगीरी करते देखकर एक मित्र ने कहा, आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।

16. **इमली के पात पै बरात का डेरा** = थोड़े स्थान पर अधिक लोगों को एकत्र करना।

प्रयोग—तुमने अपने छोटे से कमरे में सौ लोगों को निमन्त्रण दिया है। इमली के पात पर बरात का डेरा कैसे हो सकेगा?

17. **उठी पैंठ आठवें दिन लगती है** = कोई कार्य बन्द कर देने पर शीघ्र आरम्भ नहीं होता।

प्रयोग—नेताजी से आज ही पत्र लिखवा लो, फिर न जाने कब आयें, क्योंकि उठी पैंठ आठवें दिन लगती है।

18. **उतावला सो बावला** = हड़बड़ी में आदमी सब कुछ गलत करता है।

प्रयोग—तुमने वहाँ पहले जाकर सारा काम बिगाड़ दिया, क्योंकि उतावला सो बावला होता है।

19. **ऊँट किस करवट बैठे** = परिणाम निश्चित नहीं।

प्रयोग—पता नहीं, चुनाव का ऊँट किस करवट बैठे।

20. **ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे** = निन्दित कार्य छिपता नहीं।

प्रयोग—एक लाख का गबन नहीं छिप सकता। कभी ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे हुई है?

21. **ऊँट के मुँह में जीरा** = आवश्यकता से बहुत कम वस्तु दिया जाना।

प्रयोग—वाह बन्धु ! चौबेजी को आप पचास ग्राम रबड़ी खिला रहे हैं ! वाह, यह तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है।

22. **उल्टे बाँस बरेली को** = असंगत कार्य करना।

प्रयोग—आगरा स्वयं पेठे के लिए प्रसिद्ध है और तुम कानपुर से आगरा पेठा ले जा रहे हो। तुम तो भई, उलटे बाँस बरेली की कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

23. **ऊँची दुकान फीका पकवान** = वास्तविकता कम, दिखावा अधिक।

प्रयोग—रामू देखने में ही धनवान लगता है, अन्यथा उस पर कर्जा लदा है। यह जानकर किसी ने कहा कि यहाँ तो ऊँची दुकान पर फीका पकवान है।

24. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** = दोषी होने पर भी दूसरे को दोष देना।

प्रयोग—एक तो नकल कर रहे थे और अब मुझे ही आँखें दिखा रहे हो। यह तो वही कहावत हुई कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

26. **उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना** = धीरे–धीरे साहस बढ़ जाना।

प्रयोग—परीक्षा में निरीक्षक ने जब नकलची विद्यार्थी की छोटी सी पर्ची नजरंदाज कर दी तो उसने गैस पेपर निकाल लिया। यह देखकर निरीक्षक बोला तुम तो उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ने का काम कर रहे हो, अब नहीं छोड़ूँगा।

25. **एक अनार सौ बीमार** = कोई वस्तु आवश्यकता से बहुत कम होना।

प्रयोग—पार्टी किसी एक को टिकट देगी और पचास लोग टिकट माँग रहे हैं। पार्टी में इस समय एक अनार सौ बीमार हैं।

26. **एक चुप सौ को हराये** = मौन सबसे अच्छा है।

प्रयोग—कोई कुछ कहे, चुप रहो, इसी में आनन्द है। कहावत भी तो है कि एक चुप सौ को हराये।

27. **एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा** = बुरे को बुरे का साथ मिलना।

प्रयोग—राम चोरी तो करता ही था, शराब और पीने लगा। न जाने क्या होगा? एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

28. **एक पंथ दो काज** = एक काम करने से दो उद्देश्य पूर्ण होना।

प्रयोग—दुकान जा रहा हूँ, कहो तो रास्ते में पड़ने वाली सब्जी मण्डी से सब्जी भी लेता आऊँ। इस तरह–एक पंथ दो काज हो जायेंगे।

29. **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है** = एक बुरा व्यक्ति पूरे समाज को बदनाम करता है।

प्रयोग—इने-गिने गुण्डे छात्रों के कारण ही कॉलेज बदनाम हो गया है। कहावत जो है कि एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

30. **एक म्यान में दो तलवारें** = एक स्थान पर दो अधिकारी।

प्रयोग—एक कार्यालय में दो-दो अधिकारी। भला साथ-साथ कैसे काम कर सकते हैं? एक म्यान में दो तलवारें भला कैसे समायेंगी?

31. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** = लड़ाई एक तरफ से नहीं होती।

प्रयोग—शिकायत करने चल दिये, जैसे तुमने कुछ भी नहीं कहा। भाई, एक हाथ से ताली नहीं बजती।

32. **ऐब करने को हुनर चाहिए** = बुरे कामों में भी योग्यता आवश्यक है।

प्रयोग—नकल करके पास हुआ तो तुम्हारा कौन-सा माल मार लिया, तुम कर लेते। भाई ! ऐब करने को भी हुनर चाहिए।

33. **एक परहेज सौ इलाज** = दवा की अपेक्षा परहेज लाभ करता है।

प्रयोग—आजकल दवाओं में मिलावट चल रही है, इसलिए एक परहेज सौ इलाज पर विश्वास करो।

एक थैली के चट्टे-बट्टे होना = समान प्रकृति वाले व्यक्ति।

प्रयोग—इन नेताओं में कोई भला नहीं है। सब एक ही थैली के चट्टे–बट्टे हैं।

@UPSC_THOUGHT

34. ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर = कठिन कार्य करने के लिए संकल्प करने पर विपत्ति से क्या डरना अथवा विपत्ति में धैर्य धारण करना।

प्रयोग—भाई, सच कह रहे हो, सेना में नौकरी करके अब तो ओखली में सिर दे दिया, फिर मूसलों से डरकर क्यों भागूँ? जो होगा, सो देखा जायेगा।

35. ओछे की प्रीति बालू की भीत = ओछे व्यक्ति की मित्रता स्थायी नहीं होती।

प्रयोग—रामू आजकल मनोहर की मित्रता के भरोसे निश्चिन्त बैठा है। मनोहर बहुतों को धोखा दे चुका है। रामू से भी उसकी मित्रता अधिक नहीं चल सकती, क्योंकि ओछे की प्रीत बालू की भीत होती है।

36. ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती = थोड़ी वस्तु से आवश्यकता पूर्ण नहीं होती।

प्रयोग—दो इमरती लेकर पत्ता चाट रहे हो। भले आदमी, ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती।

37. अंगूर खट्टे हैं = वस्तु के न मिलने पर दोष निकालना।

प्रयोग—रामा से तुम्हारा विवाह नहीं हो सका, अब तुम उसे बदचलन बता रहे हो यह तो वही बात हुई कि अंगूर खट्टे हैं।

38. कंगाली में आटा गीला = विपत्ति पर विपत्ति आना।

प्रयोग—रामू के पास जीवन-निर्वाह के लिए दूध देने वाली एक भैंस थी, वह भी कल मर गई। इस प्रकार उसका कंगाली में आटा गीला हो गया।

39. कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर = समय बदलता रहता है।

प्रयोग—रामनिवासजी, गणेश को राजनीति में लाये थे। आज गणेश का पार्टी में बहुत प्रभाव है। रामनिवासजी टिकट पाने को गणेश की खुशामद कर रहे हैं। ठीक ही कहा जाता है कि कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर।

38. करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै = भाग्यहीन मनुष्य कोई भी कार्य करे, उसी में उसे घाटा या बाधा मिलती है।

प्रयोग—तोताराम जो भी कार्य करता है, उसमें हानि ही हानि होती है। उसके लिए तो सच है—करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै।

39. कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली = स्थिति में बहुत अन्तर होना।

प्रयोग—सुरेश सिंह ने मनोहर को मित्र बनाना चाहा तो मनोहर ने कहा—तुम मन्त्री के लड़के और मैं ठहरा मजदूर। भला कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली। अतः यह मित्रता निभ नहीं पायेगी।

40. कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा = इधर-उधर की बेमेल चीजें अथवा असम्बद्ध लोगों को एकत्र करना।

प्रयोग—अटल बिहारी वाजपेयी की एन. डी. ए. सरकार में तेरह दल थे जिनकी विचारधारा में भी समानता न थी। यह देखकर विपक्षी दलों ने कटाक्ष किया—कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

41. काँटे से काँटा निकलता है = दुष्ट के साथ दुष्टता करनी पड़ती है।

प्रयोग—रामेश्वरजी बहुत भले आदमी थे। जब लालसिंह ने कई बार उनके खेत उजड़वा दिये और चोरी कर ली तो रामेश्वर ने डकैती का झूठा मुकदमा चलाकर लालसिंह को जेल करा दी। रामेश्वर बेचारे क्या करते? काँटे से काँटा निकलता है।

42. कानी के ब्याह में सौ झगड़े = अपात्र मनुष्य का काम मुश्किल से बनता है।

प्रयोग—रामू कम पढ़ा-लिखा होने से बेकार था, उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती थी। नेताजी ने उसे एक जगह चपरासी का काम दिलवाया, तभी सरकार ने नई भर्ती पर रोक लगा दी। नेताजी बोले—कानी के ब्याह में सौ झगड़े होते हैं।

43. काला अक्षर भैंस बराबर = बिलकुल अशिक्षित।

प्रयोग—आज भी उत्तर प्रदेश के पिछड़े जिलों में रहने वाले 75% लोगों के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

44. कुत्ते को मुँह लगाने पर मुँह चाटता है = नीच को आदर देने पर अपनी ही बदनामी होती है।

प्रयोग—मना करने पर मनोहरलाल ने हरी जैसे प्रसिद्ध गुण्डे को मित्र बना लिया। एक बार उसने मनोहर लाल की पिटाई कर दी तो लोगों ने कहा—हम तो पहले ही कह रहे थे कि कुत्ते को मुँह लगाने पर मुँह चाटता है।

45. का वर्षा जब कृषि सुखानी = अवसर निकल जाने पर सहायता करना व्यर्थ है।

प्रयोग—परीक्षा का मेरा पेपर कल हो गया। आप पुस्तक आज दे रहे हैं। यह मेरे किस काम की? का वर्षा जब कृषि सुखानी?

46. काम का न काज का दुश्मन अनाज का = बिना काम बैठे–बैठे खाना।

प्रयोग—छोटे भाई की उम्र 40 वर्ष हो गई पर अभी तक बेकार है। यह देखकर पिताजी ने उससे कहा कि तेरी तो स्थिति ठीक वैसी है कि काम का न काज का दुश्मन अनाज का।

47. कागहिं कहा कपूर चुगाए स्वान नहवाये गंग = दुर्जन व्यक्ति अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता।

प्रयोग—चोर को चाहे जितना समझाओ वह चोरी करना नहीं छोड़ सकता– यह देखकर उपदेशक महोदय ने सिर पीटते हुए कहा– कागहिं कहा कपूर चुगाए स्वान नहवाये गंग।

48. कोठी वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे = धनी की अपेक्षा निर्धन सुखी रहता है।

प्रयोग—गाँव के प्रधानजी डाकुओं के भय से रातभर जागते हैं, जबकि गरीब लोग आराम की नींद सोते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है—कोठी वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे।

49. कोयले की दलाली में हाथ काले = बुरे काम में बुराई मिलती है।

प्रयोग—रामनिवासजी डाकुओं से सोने-चाँदी के जेवर खरीदते थे। एक बार उन्हें पुलिस पकड़कर ले गयी तो लोगों ने कहा कि कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही हैं।

50. खग जाने खग ही की भाषा = जो जहाँ और जिसके साथ रहता है, वह वहाँ और उन लोगों की बात जानता है।

प्रयोग—ब्रजभूमि के रीति-रिवाज और भाषा ब्रजवासी ही समझ सकता है, क्योंकि खग जाने खग ही की भाषा।

@UPSC_THOUGHT

51. खरी मजूरी चोखा दाम = खरे पैसे देना और पूरा काम लेना।

प्रयोग—रामाश्रय का सिद्धान्त है, खरी मजूरी चोखा काम। इसलिए मेहनती मजदूर दूसरों का काम छोड़कर रामाश्रय के यहाँ काम करना पसन्द करते हैं।

52. खेत खाये गदहा, मार खाये जुलहा = अपराध का दण्ड उसके संरक्षक को देना।

प्रयोग—चोरी रमेश ने की और पुलिस वाले उसके मालिक अब्दुल्ला को पकड़ ले गये। यह सुनकर लोगों ने कहा—खेत खाये गदहा और मार खाये जुलहा।

53. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = कठोर परिश्रम करने पर भी कुछ विशेष लाभ न होना अथवा जितना प्रचार किया जाए, तद्नुसार नगण्य उपलब्धि होना।

प्रयोग—प्रधानमन्त्री की योजनाओं का प्रचार और उसके परिणामों को देखकर यही कहना पड़ता है कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

54. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे = सबल पर जोर न चलना परन्तु दुर्बल को सताना।

प्रयोग—स्त्रियाँ पति का तो कुछ बिगाड़ नहीं पातीं, तब संतान को पीटकर वे खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे कहावत को चरितार्थ करती हैं।

55. खुदा गंजे को नाखून नहीं देता = अनधिकारी को अधिकार नहीं मिलता।

प्रयोग—यदि मुझे मुख्यमंत्री बना दें तो मैं पूंजीपतियों की सारी संपत्ति जब्त करने का आदेश दे दूँ। यह सुनकर मेरा मित्र बोला खुदा गंजे को नाखून इसीलिए नहीं देता।

56. गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज = सम्बन्धित व्यक्ति को भी स्वीकारना पड़ता है।

प्रयोग—रामेश्वर ने अछूत मंगत को घर में नौकर रखा, पर उसके लड़के से घर में घुसने पर मना कर दिया। तब उनसे लोगों ने कहा—यह क्या बात हुई? गुड़ खाये और गुलगुलों से परहेज।

57. घर की मुर्गी दाल बराबर = अपनी वस्तु का महत्त्व नहीं समझा जाता।

प्रयोग—यह रेशमी कालीन पैर पोंछने के काम आ रहा है। खरीदते तो पता चलता। अभी घर की मुर्गी दाल बराबर है।

58. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल = अनमेल बात।

प्रयोग—काले-कलूटे और बेकार रमेश को बी. ए. पास सुन्दर पत्नी क्या मिली कि लोगों ने कहा—छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

59. छोटे मुँह बड़ी बात = अपनी स्थिति से बढ़कर घोषणा करना।

प्रयोग—विपक्षी पार्टी के साधारण कार्यकर्ता ने जब मुख्यमन्त्री को चुनाव में हरा देने की बात कही तो लोगों ने इसे छोटे मुँह बड़ी बात कहा।

60. जल में रहकर मगर से बैर = स्वामी से शत्रुता नहीं कर करते।

प्रयोग—यदि कालेज में नौकरी करनी है तो प्रबंधक की बात तो माननी ही पड़ेगी, क्योंकि जल में रहकर मगर से बैर नहीं कर सकते।

61. जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई = भुक्त भोगी ही वास्तविकता को समझ सकता है।

प्रयोग—तुमने लड़की का विवाह तो किया नहीं इसलिए तुम्हें क्या पता कि सही वर ढूँढने में कितनी परेशानी होती है। सच कहा है जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई।

62. जस दूल्हा तस बनी बराता = जैसा मनुष्य वैसे उसके साथी।

प्रयोग—अयोग्य अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी अयोग्य बना देता है। सच है, जस दूल्हा तस बनी बराता।

63. जिसकी लाठी उसकी भैंस = बलशाली की चलती है।

प्रयोग—आजकल आपाधापी मच रही है। सभी लूट रहे हैं, कोई देखने वाला नहीं है; जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत सर्वत्र चरितार्थ हो रही है।

64. झूठ के पैर नहीं होते = झूठ अधिक दिन तक नहीं छिपता।

प्रयोग—सुरेन्द्र कहते हैं कि वे जिला अदालत में क्लर्क हैं। आज गाँव के एक आदमी के वहाँ जाने पर पता चल ही गया कि वे वहाँ चपरासी हैं। झूठ के कहीं पैर होते हैं।

65. टाट की गोन में पाट की थेगली = मूल्यहीन लोगों के साथ मूल्यवान का होना।

प्रयोग—लाल सिंह ने अपनी बी. ए. पास पुत्री अनपढ़ परिवार में ब्याह कर टाट की गोन में पाट की थेगली लगायी है।

66. तीन बुलाये तेरह आये = थोड़े लोगों के बुलाने पर बहुतों का पहुँचना।

प्रयोग—पण्डित परशुराम की पुत्री राधा की गोद भरने पाँच आदमी बुलाये गये थे, पर आये पचास लोग। राधा के पिता को कहना पड़ा कि 'तीन बुलाये तेरह आये' की परम्परा अभी चल रही है।

67. तेते पाँय पसारिये जेती लाँबी सौर = अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही काम करना चाहिए।

प्रयोग—आज की महँगाई में सुख से वही रह सकता है जो 'तेते पाँय पसारिये जेती लाँबी सौर' के सिद्धान्त पर चलता हो।

68. तीन कनौजिया तेरह चूल्हे = अत्यधिक पवित्रता का दिखाना।

प्रयोग—वहाँ चार प्राणी हैं पर हरेक अपना खाना स्वयं पका रहा था। यह देखकर किसी ने टिप्पणी की कि यहाँ तो तीन कनौजिया तेरह चूल्हे वाली मिसाल है।

69. तन पर नहीं लत्ता, पान खांय अलबत्ता = व्यर्थ का प्रदर्शन।

प्रयोग—घर में भुनी भांग नहीं पर दोस्तों के साथ ऐश करने में कोई कमी नहीं है। यह देखकर किसी ने टिप्पणी की कि भाई यहाँ तो तन पर नहीं लत्ता, पान खांय अलवत्ता वाली स्थिति है।

70. तबेले की बला बंदर के सिर = दोष किसी का पर दोषारोपण किसी अन्य पर।

प्रयोग—गुरु जी, नकल वह लड़का कर रहा था, पर आपने पकड़ मुझे लिया। यह तो वही बात हुई कि तबेले की बला बंदर के सिर।

71. थोथा चना बाजे घना = सारहीन (व्यक्ति) बहुत आवाज करता है। ओछे व्यक्ति बहुत बढ़-चढ़कर बातें करते हैं।

प्रयोग—आजकल अनेक नेता थोथा चना बाजे घना वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं, क्योंकि वे पार्टी को बहुमत दिलाने की बात तो करते हैं पर स्वयं अपनी सीट भी नहीं निकाल सकते।

72. दूर के ढोल सुहावने = दूर की चीजें अच्छी लगती हैं।

प्रयोग—संस्थान की बड़ी प्रशंसा सुनी थी, पर वहाँ रहकर देखा, तब सच्चाई ज्ञात हुई, कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

@UPSC_THOUGHT

73. देसी मुर्गी विलायती बोली = असंगत और बेढंगा कार्य।

प्रयोग—आज की भारतीय युवतियाँ फैशन की ऐसी दीवानी हैं कि उन्हें देखकर कभी-कभी कहना पड़ता है कि देसी मुर्गी विलायती बोली बोल रही है।

74. दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक चलाना = दूसरे के सहारे कार्य सम्पादित करना।

प्रयोग—दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक क्या चला रहे हो, दम है तो सामने आकर प्रहार करो।

75. देशी घोड़ी लाल लगाम = बेमतलब का फैशन करना।

प्रयोग—मैं बूढ़ी हो गई अब तुम मेरे लिए लिपिस्टिक लाए हो। यदि मैं इस उम्र में लिपिस्टिक लगाऊँगी तो लोग कहेंगे– देसी घोड़ी लाल लगाम।

76. दाम लगाए लगोटिया यार = व्यक्ति अपनों से ही धोखा खाता है।

प्रयोग—तुम्हारे कारण मुझे कलंकित होना पड़ा क्योंकि तुम मेरे लंगोटिया यार हो वरना आज तक मेरे ऊपर कोई उंगली तक नहीं उठा सका। सच है – दाम लगाए लंगोटिया यार।

77. दिन दूनी रात चौगुनी = अत्यधिक उन्नति करना।

प्रयोग—आजकल युद्ध में व्यापारी वर्ग दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहा है।

78. दाँत से कौड़ी पकड़ना = कंजूस होना।

प्रयोग—वह सूदखोर है अतः लड़के के ब्याह में भी कुछ खर्च न करेगा यह देखकर कोई बोला अरे भाई वह तो दांत से कौड़ी पकड़ता है।

79. दाँत कुरेदने को तिनका तक न होना = बहुत अधिक दयनीय स्थिति में का आ जाना।

प्रयोग—उनके घर लड़की दे रहे हो, क्या तुम्हें पता नहीं आजकल वहाँ दाँत कुरेदने को तिनका तक नहीं है।

80. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी = न इतने अधिक साधन होंगे और न काम होगा।

प्रयोग—रमेश ने गोपाल से कुछ ऐसी शर्त लगाई, जो पूरी न हो सके। इस पर गोपाल ने कहा कि 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।'

81. नाच न जाने आँगन टेढ़ा = अपना दोष दूसरों पर मढ़ना।

प्रयोग—रमा को गाना नहीं आता, पर बहाना बनाती है, हारमोनियम खराब होने का। इसी को कहते हैं—नाच न जाने, आँगन टेढ़ा।

82. नौ दिन चले अढ़ाई कोस = आलस्य के कारण बहुत धीरे काम करना।

प्रयोग—रघुवर को मैदान की सफाई करने के लिए कहा था, परन्तु उसने तो सात दिन में भी यह कार्य पूरा नहीं किया। यह देखकर किसी ने कहा—नौ दिन चले अढ़ाई कोस वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

83. मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते = मुफ्त में मिलने वाली वस्तु के गुण-अवगुण नहीं देखे जाते।

प्रयोग—संस्कार कराकर लौटे पण्डितजी के हाथ में खद्दर भण्डार की तौलिया देखकर मुहल्ले के चौधरी ने कहा, "पण्डितजी किस कंजूस जजमान के यहाँ गये थे?" सुनते ही पण्डितजी ने चौधरी साहब से कहा, "मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते।"

84. मन चंगा तो कठौती में गंगा = पवित्र हृदय वाले का घर तीर्थ है।

प्रयोग—शुद्ध आचरण करने वाले व्यक्ति को हर स्थान पर ईश्वर सुलभ है। सच है, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

85. मान न मान मैं तेरा मेहमान = किसी के न चाहने पर भी उससे सम्बन्ध जोड़ना।

प्रयोग—नेताजी को प्रान्त की राजधानी में कोई नहीं पूछता, पर वे सभी से घनिष्ठ सम्बन्ध बताकर वहीं जमे रहते हैं। इसी को मान न मान मैं तेरा मेहमान कहते हैं।

86. मुँह में राम बगल में छुरी = कथनी में अच्छी बात, लेकिन आचरण में ठीक उसके विपरीत बुरा काम करना।

प्रयोग—आज भारतीय नेताओं का चरित्र तो मुँह में राम बगल में छुरी जैसा ही है। कहते कुछ हैं, करते कुछ और हैं।

87. मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त = जिसे आवश्यकता है, वही सुस्त (उदासीन) है और सहायक चुस्त।

प्रयोग—आज भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन को देखकर यही कहना पड़ता है कि मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त, क्योंकि छात्र पढ़ने नहीं आते, जबकि अध्यापक नियमित कक्षा में बैठे रहते हैं।

88. मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक = व्यक्ति अपने सम्बन्धियों की ही सहायता लेता है। (अपनी सीमाओं में रहकर काम करना)

प्रयोग—प्रधानजी पुलिस के दलाल हैं। उनके घर चोरी हुई तो थानेदार के ही पास जायेंगे। मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक होती है।

89. मेढकी को भी जुकाम हुआ है = छोटे आदमी का अपनी औकात से अधिक शान दिखाना, या अपनी हैसियत भूलना।

प्रयोग—सुखिया को चमकीली रेशमी साड़ी पहने देखकर पंडिताइन ने कहा—अहा ! अब तो मेढकी को भी जुकाम हुआ है।

90. मानो तो शंकर नहीं तो पत्थर = जैसा मान लो वही है।

प्रयोग—गंगा किनारे पड़ी इस बटिया को उठा लाए हो क्या यह भगवान है। यह पूछने पर मैंने कहा– मानो तो शंकर नहीं तो पत्थर तो है ही।

91. रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना = प्रतिदिन कमाना।

प्रयोग—रामसिंह बेचारा मेले में जाकर क्या करेगा? उसे तो रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीना है।

92. लाठी के बल बँदरी नाचे = दण्ड के भय से सभी वशीभूत हो जाते हैं अथवा चंचल प्रकृति के व्यक्ति भी डर के वशीभूत हो जाते हैं।

प्रयोग—कल्लू निरन्तर उपद्रव कर रहा था, किन्तु अपने पिताजी को देखकर पढ़ने बैठ गया। सच है, लाठी के बल बँदरी नाचे।

93. साँच को आँच कहाँ = सत्य की विजय होती है।

प्रयोग—नौकर पर चोरी का आरोप लगाकर मालिक ने पुलिस बुलाने की धमकी दी, तो उसने कहा–"बुला लीजिए। साँच को आँच कहाँ।"

94. साँप मरे ना लाठी टूटे = बिना हानि के कार्य सम्पन्न करना।

प्रयोग—उसने अपने शत्रु का काम भी कर दिया और एक पैसा भी खर्च नहीं किया। वास्तव में वह इस कहावत में विश्वास करता है कि साँप मरे ना लाठी टूटें।

95. सावन हरे न भादों सूखे = सदा एक-सा रहना।

प्रयोग—दिनेशजी में कोई परिवर्तन नहीं है। भले ही अब वे रिटायर्ड हो गये हैं। उन्हें देखकर लगता है कि सावन हरे न भादों सूखे।

96. सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा = आधार बिना किसी से झगड़ा करना।

प्रयोग—पार्टी में राधेलाल को चुनाव का टिकट देने की चर्चा तक नहीं है, पर वे गाँव वालों को गालियाँ दे रहे हैं कि लोग मेरा टिकट कटवाना चाहते हैं। लोगों ने उन्हें समझाया कि 'सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठम लट्ठा' अच्छी बात नहीं होती है।

97. साप मरे ना लाठी टूटे = बिना हानि के कार्य सम्पन्न कर लेना।

प्रयोग—उसने बिना अधिक पैसा खर्च किए मुकदमा जीत लिया। इसे देखकर किसी ने टिप्पणी की कि इसे कहते है सांप मरे ना लाठी छूटें।

98. हाथ कंगन को आरसी क्या = प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।

प्रयोग—यमुना में बाढ़ आई हुई है। अविश्वास क्यों करते हो, हाथ कंगन को आरसी क्या? कौन बहुत दूर है?

99. होनहार बिरवान के होत चीकने पात = जो होनहार होते हैं, उनके गुण और उज्ज्वल भविष्य के लक्षण प्रारम्भ में ही दिखाई पड़ जाते हैं।

प्रयोग—लालबहादुर शास्त्री जी बचपन से ही साहसी और निर्भीक थे। उनको देखकर लोग कहते थे—होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्नलिखित मुहावरों का सही अर्थ दिये गये विकल्पों में से चुनिए—

1. लकीर का फकीर होना—

(a) परम्परावादी होना। (b) आधुनिक होना।

(c) आडम्बरविहीन होना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) परम्परावादी होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*लकीर का फकीर होना = परम्परावादी होना। आडम्बर विहीन होना या आधुनिक होना इस मुहावरे का अर्थ नहीं है।*

प्रयोग—*उसके पिताजी तो पूरे लकीर के फकीर हैं, अपनी जाति को श्रेष्ठ मानकर लड़के की शादी गैर जाति में नहीं कर सकते।*

2. आँख की किरकिरी होना—

(a) धोखा देना। (b) अप्रिय होना।

(c) कष्टदायक होना। (d) बहुत प्रिय होना।

उत्तर—(b) अप्रिय होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*आँख की किरकिरी होना = अप्रिय होना।*

प्रयोग—*वह तो मेरी आँख की किरकिरी बन गया है जब देखो तब रास्ते में छेड़ता है।*

3. गाँठ का पूरा होना—

(a) कुलीन (b) मालदार

(c) धैर्यवान (d) होशियार

उत्तर—(b) मालदार

YUKTI ***ज्ञान***—*गाँठ का पूरा होना = मालदार (धनवान) होना।*

प्रयोग—*राधा ने उससे इसलिए विवाह किया क्योंकि वह गाँठ का पूरा है।*

4. छठी का दूध याद आना— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) बहुत मेहरबानी होना। (b) अत्यधिक कठिन होना।

(c) अवसर से लाभ उठाना। (d) काम न बनना।

उत्तर—(b) अत्यधिक कठिन होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*छठी का दूध याद आना = अत्यधिक कठिन होना।*

प्रयोग—*गणित का पेपर देखकर मुझे तो छठी का दूध याद आ गया।*

5. माथा ठनकना—

(a) भेद खुलना। (b) शक होना।

(c) भय से घबराना। (d) पराजित होना।

उत्तर—(b) शक होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*माथा ठनकना = शक होना।*

प्रयोग—*नौकर को घर से गायब देखकर मेरा माथा ठनक गया और मुझे पता चल गया कि चोरी उसीने की है तभी वो घर से भाग गया।*

निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ दिये गये विकल्पों में से चुनिए—

6. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) पराधीनता अभिशाप है। (b) पराधीन पुत्री को सुख न मिलना।

(c) पुत्री अभिशाप है। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) पराधीनता अभिशाप है।

YUKTI ***ज्ञान***—*पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं = पराधीनता में सुख प्राप्त नहीं होता।*

प्रयोग—*तुलसी ने ठीक ही लिखा है— पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। पराधीन व्यक्ति को दूसरों की गुलामी करनी पड़ती है और गुलामी में व्यक्ति को सुख नहीं है।*

7. हाथ कंगन को आरसी क्या— **हरियाणा टी.ई.टी.**

(a) प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।

(b) अँगुली पर नाचना।

(c) फारसी पढ़ना।

(d) मूल्यवान के आगे तुच्छ का विकास न होना।

उत्तर—(a) प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।

YUKTI ***ज्ञान***—*हाथ कंगन को आरसी क्या? = प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता।*

प्रयोग—*अखबार पढ़ने वाले उस व्यक्ति से टेलीग्राम पढ़वा लें क्योंकि वह पढ़ा–लिखा है। कहा गया है — हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े लिखे को फारसी क्या?*

8. जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ—

(a) कठिन परिश्रम से लक्ष्य मिलता है।

(b) व्यर्थ की वकवास नहीं करनी चाहिए।

(c) अधिक परिश्रम का कम फल मिलना।

(d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) कठिन परिश्रम से लक्ष्य मिलता है।

YUKTI ***ज्ञान***—*जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ = कठिन परिश्रम से लक्ष्य प्राप्त होता है।*

प्रयोग—*उसने परिश्रम करके अंततः आईएएस की परीक्षा पास कर ही ली क्योंकि उसका विश्वास था कि जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।*

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

9. अधजल गगरी छलकत जाय— उ.प्र. टी.ई.टी.

(a) प्रदर्शन करना।

(b) ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।

(c) वकवादी होना।

(d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(b) ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।

YUKTI ***ज्ञान***—*अधजल गगरी छलकत जाय = ओछा व्यक्ति प्रदर्शन अधिक करता है।*

प्रयोग—*मोहन विद्वान है परन्तु वह तभी अपनी राय देता है जब कोई माँगता है जबकि श्याम हर जगह बोलकर अपनी विद्वता प्रदर्शित करता है, भले ही गलत जानकारी दे रहा हो। इसे देखकर कोई कहने लगा कि इस पर तो वही कहावत चारितार्थ होती है कि अधजल गगरी छलकत जाये।*

10. इमली के पात पै बरात का डेरा— हरियाणा टी.ई.टी.

(a) स्वयं अनुभव करना (b) स्थान थोड़ा पर भीड़ अधिक

(c) काम न करना (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) स्थान थोड़ा पर भीड़ अधिक

YUKTI ***ज्ञान***—*इमली के पात पै बरात का डेरा = स्थान छोटा पर भीड़ अधिक।*

प्रयोग—*आपने सेमीनार के लिए 100 कुर्सियों वाला हाल बुक करवाया वही मिसाल लागू कर दी कि इमली के पात पर बरात का डेरा।*

11. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' का अर्थ है— हरियाणा टी.ई.टी.

(a) काम न जानना और बहाना बनाना।

(b) नाच न जानना।

(c) तत्परता से काम न करना।

(d) काम बिगाड़ना।

उत्तर—(a) काम न जानना और बहाना बनाना।

YUKTI ***ज्ञान***—*नाच न जाने आँगन टेढ़ा = काम न जानना परन्तु बहाने बनाना।*

प्रयोग—*राधा से गाना तो आता नहीं पर गला खराब होने की बात कहने पर लोग कहने लगे कि नाच न जाने आँगन टेढ़ा वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।*

12. 'आ बैल मुझे मार' का अर्थ बताइए—

(a) जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

(b) कायर होते हुए बल प्रदर्शन करना।

(c) छेड़छाड़ करना।

(d) बलशाली के सामने वीरता दिखाना।

उत्तर—(a) जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

YUKTI ***ज्ञान***—*आ बैल मुझ मार = जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।*

प्रयोग—*उस दुष्ट से दूर रहने में ही भलाई है पर तुम हो कि उससे बारबार उलझकर आ बैल मुझे मार की कहावत चरितार्थ कर रहे हो।*

13. 'थाली का बैंगन होना' का अर्थ है— हरियाणा टी.ई.टी.

(a) थाली के बीच बैंगन होना (b) सिद्धान्तहीन होना

(c) उछलकूद करना (d) बैंगनी रंग का होना

उत्तर—(b) सिद्धान्तहीन होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*थाली का बैंगन होना = सिद्धान्तहीन होना।*

प्रयोग—*नेताजी की बात मत करो। वे तो टिकट पाने के लिए किसी भी पार्टी में जा सकते हैं क्योंकि वे तो थाली के बैंगन हैं।*

14. लोहे के चने चबाना— हरियाणा टी.ई.टी.

(a) आसानी से काम होना। (b) लोहे से बना चना खाना।

(c) कठिन परिश्रम करना। (d) चने पर लोहे का पानी चढ़ाना।

उत्तर—(c) कठिन परिश्रम करना।

YUKTI ***ज्ञान***—*लोहे के चने चबाना = कठिन परिश्रम करना।*

प्रयोग—*अध्यापक बनाना सरल नहीं है। इसके लिए बच्चू लोहे के चने चबाने पड़ते है।*

15. 'एक पंथ दो काज' का अर्थ है—

(a) बहुत से लाभ उठाना। (b) अत्यन्त लोभी होना।

(c) अलग मार्ग पर चलना।

(d) एक उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।

उत्तर—(d) एक उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।

YUKTI ***ज्ञान***—*एक पंथ दो काज = उपाय से दो कार्य सम्पन्न करना।*

प्रयोग—*इलाहाबाद में हाईकोर्ट में मुकदमे की तारीख भी कर आया और संगम स्नान भी इस प्रकार एक पंथ दो काज हो गए।*

16. तलवे चाटना—

(a) खुशामद करना। (b) प्रशंसा करना।

(c) लालची होना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) खुशामद करना।

YUKTI ***ज्ञान***—*तलवे चाटना = खुशामद करना।*

प्रयोग—*जिसने अपने मन को वश में कर लिया है और जो लोभ-लालच से दूर है उसे किसी के तलवे चाटने की क्या जरूरत है?*

17. तीन तेरह होना—

(a) नष्ट होना। (b) बिखर जाना।

(c) मुसीबत पड़ना। (d) कहीं का न रहना।

उत्तर—(b) बिखर जाना।

YUKTI ***ज्ञान***—*तीन तेरह होना = बिखर जाना।*

प्रयोग—*पिता के मरते ही उसका सारा परिवार मुकदमेबाजी में फँसकर तीन-तेरह हो गया।*

18. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली— उ.प्र. टी.ई.टी.

(a) बहुत अन्तर होना। (b) दिखावा करना।

(c) जबर्दस्ती गले पड़ना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) बहुत अन्तर होना।

YUKTI ***ज्ञान***—*कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली = बहुत अन्तर होना।*

प्रयोग—*भाई मैं सेठ बालकिशन की बराबरी नहीं कर सकता। उनकी मेरी आमदनी में कोई तुलना नहीं क्योंकि कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली।*

19. छाती पर मूँग दलना—

(a) परेशानी उठाना। (b) बुरा मानना।

(c) साथ में रहकर तंग करना। (d) कुछ भी न करना।

उत्तर—(c) साथ में रहकर तंग करना

@UPSC_THOUGHT

YUKTI ***ज्ञान***–*छाती पर मूँग दलना = पास रहकर परेशान करना।*
प्रयोग– *झगड़ालू बहू ने सास से कहा – मैं कहीं जाने वाली नहीं यहीं रहकर आपकी छाती पर मूँग दलूँगी।*

20. कुएँ में बाँस डालना– **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) बहुत खोजबीन करना। (b) परिश्रमी होना।
(c) कठिन होना। (d) लालच करना।

उत्तर—(a) बहुत खोजबीन करना।

YUKTI ***ज्ञान***–*कुएँ में बाँस डालना = बहुत खोजबीन करना*
प्रयोग– *पुलिस ने हत्या का सुराग लगाने के लिए कुएँ में बाँस डाले पर शव प्राप्त न हो सका।*

अध्याय 8. काव्यशास्त्र

8.1 रस

काव्य को पढ़ने से जो आनन्द प्राप्त होता है उसे 'रस' कहते हैं।

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक **भरत मुनि** हैं, जिन्होंने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में रस सूत्र दिया है–**विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगात् रस निष्पत्तिः।** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव का (स्थायी भाव से) संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

यद्यपि इस इस सूत्र में कहीं पर भी स्थायी भाव का उल्लेख नहीं है तथापि विभाव से स्थायी भाव जाग्रत होता है, अनुभाव से प्रतीत योग्य बनता है और व्यभिचारी भाव उसे पुष्ट करते हैं। इस प्रकार इन तीनों का स्थायी भाव से संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

इस सूत्र में संयोग, निष्पत्ति शब्द अस्पष्ट हैं। इसकी व्याख्या बाद में चार आचार्यों ने की जिन्हें रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य कहा जाता है।

भरतमुनि ने नाटक के तीन तत्व–वस्तु, नेता, रस बताए हैं, उन्होंने नाटक में इस पर विचार किया है। वे रसों की संख्या आठ मानते हैं, उनके अनुसार निर्वेद स्थायी भाव का अभिनय नहीं हो सकता अतः शान्त रस की निष्पत्ति नहीं हो सकती।

✦ इस सूत्र के व्याख्याता आचार्यों और उनके मत के नाम इस प्रकार हैं–

रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य

व्याख्याता आचार्य का नाम	संयोग का अर्थ	निष्पत्ति का अर्थ	मत का नाम	विशेष
1. भट्ट लोल्लट	उत्पाद्य–उत्पादक सम्बन्ध	उत्पत्ति	उत्पत्तिवाद, आरोपवाद	रस सूत्र के पहले व्याख्या आचार्य।
2. आचार्य शंकुक	अनुमाप्य–अनुमापक सम्बन्ध	अनुमिति	अनुमितिवाद	चित्र–तुरंग न्याय के आविष्कारक।
3. भट्टनायक	योज्य–योजक सम्बन्ध	भुक्ति	भुक्तिवाद	साधारणीकरण सिद्धान्त के प्रणेता।
4. अभिनवगुप्त	व्यंग्य–व्यंजक सम्बन्ध	अभिव्यक्ति	अभिव्यक्तिवाद	रस ध्वनि को काव्यात्मा मानते हैं।

रस के अवयव

रस के **चार अवयव** हैं–

(1) विभाव—आश्रय के हृदय में स्थायी भाव उद्बुद्ध करने के कारणों को विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं—आलम्बन विभाव, उद्दीपन विभाव।

(2) अनुभाव—अनुभावो भाव बोधकः, अर्थात् भाव के बोधक कारण अनुभाव कहे जाते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—वाचिक, कायिक, सात्विक, आहार्य।

(3) व्यभिचारी भाव—इन्हें संचारी भाव भी कहते हैं। ये सभी रसों में संचरण करते हैं। इनकी संख्या 33 बताई गयी है।

(4) स्थायी भाव—जो सहृदय में स्थायी रूप से रहते हैं और अनुकूल कारण पाना उद्बुद्ध (जाग्रत) हो जाते हैं। स्थायी भावों की संख्या 9 बताई गयी है।

सात्विक अनुभाव

ये आठ प्रकार के होते हैं—

(1) अश्रु, (2) स्वेद,
(3) रोमांच, (4) कम्प,
(5) स्वर भंग, (6) वैवर्ण्य,
(7) स्तम्भ, (8) प्रलय।

संचारी भाव

ये 33 होते हैं—इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। इनके नाम हैं—

(1) निर्वेद, (17) अपस्मार,
(2) शंका, (18) विबोध,
(3) मद, (19) अवहित्था,
(4) आलस्य, (20) यति,
(5) दैन्य, (21) उन्माद,
(6) मोह, (22) ज्ञान,
(7) ग्लानि, (23) हर्ष,
(8) असूया, (24) जड़ता,
(9) श्रम, (25) विषाद,
(10) ब्रीड़ा, (26) निद्रा,
(11) चिन्ता, (27) स्वप्न,
(12) धृति, (28) अवमर्ष,
(13) चपलता, (29) उग्रता,
(14) आवेग, (30) ब्याधि,
(15) गर्व, (31) मरण,
(16) औत्सुक्य, (32) त्रास,
(33) वितर्क।

@UPSC_THOUGHT

रसों की संख्या

रसों की संख्या 9 मानी गयी है। भरत मुनि के अनुसार, नाटक में केवल 8 रस ही सम्भव हैं। शान्त रस के स्थायी भाव 'निर्वेद' का अभिनय सम्भव नहीं है, अतः नाटक में शान्त रस नहीं हो सकता, ऐसा उनका मत है। रति भाव तीन प्रकार का होता है—दाम्पत्य रति, वात्सल्य रति, ईश्वर विषयक रति। अतः रति भाव से शृंगार रस के साथ-साथ वात्सल्य रस, भक्ति रस भी निष्पन्न हो सकता है, तब रसों की कुल संख्या 11 हो जायेगी। किन्तु मूलतः नव रस ही माने गये हैं। इन रसों के स्थायी भाव इस प्रकार हैं—

	रस	स्थायी भाव
1.	शृंगार	रति
2.	हास्य	हास
3.	करुण	शोक
4.	वीर	उत्साह
5.	अद्‌भुत	विस्मय
6.	शान्त	निर्वेद
7.	भयानक	भय
8.	वीभत्स	जुगुप्सा
9.	रौद्र	क्रोध

YUKTI ज्ञान—*वात्सल्य रस का स्थायी भाव संतान विषयक रति और भक्ति रस का स्थायी भाव भगवद् विषयक रति है, किन्तु इन्हें शृंगार में ही अन्तर्भूत कर लिया गया है अतः रसों की मूल संख्या 9 ही है। शृंगार को 'रसराज' माना गया है।*

रस का उदाहरण

राधा को देखकर कृष्ण के मन में रति भाव जाग्रत हुआ, जो यमुना का एकांत किनारा, उपवन, चाँदनी के कारण उद्दीप्त हो गया। कृष्ण मंद-मंद मुस्कराने लगे और राधा से प्रेमालाप करने लगे। हर्ष, आवेग आदि संचारी भाव इसे पुष्ट कर रहे हैं। इन सबसे मिलकर शृंगार रस की निष्पत्ति हो रही है। इस उदाहरण में

• राधा	आलम्बन विभाव
• कृष्ण	आश्रय
• स्थायी भाव	रति
• उद्दीपन विभाव	यमुना का एकान्त किनारा, उपवन।
• अनुभाव	कृष्ण का मन्द-मन्द मुस्कराना, राधा से प्रेमालाप।
• संचारी	हर्ष, आवेग
• रस	शृंगार रस की सभी सामग्री उपलब्ध होने से यहाँ उत्पन्न रति भाव शृंगार रस की निष्पत्ति कर रहा है।

8.2 काव्य सम्प्रदाय

	काव्य सम्प्रदाय	प्रवर्तक	ग्रन्थ का नाम
1.	रस सम्प्रदाय	भरत मुनि	नाट्यशास्त्र
2.	अलंकार सम्प्रदाय	भामह	काव्यालंकार
3.	रीति (गुण) सम्प्रदाय	वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
4.	वक्रोक्ति सम्प्रदाय	कुन्तक	वक्रोक्ति जीवित
5.	ध्वनि सम्प्रदाय	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
6.	औचित्य सम्प्रदाय	क्षेमेन्द्र	औचित्य विचार चर्चा

काव्य हेतु—

1. प्रतिभा, **2.** अभ्यास, **3.** व्युत्पत्ति।

काव्य प्रयोजन—मम्मट ने छः काव्य प्रयोजन बताये हैं—

1. यश प्राप्ति, **2.** धन प्राप्ति, **3.** व्यवहार ज्ञान, **4.** शिवेतर क्षतये, **5.** आत्म-शान्ति, **6.** कान्ता सम्मित उपदेश।

काव्य लक्षण—काव्य की निम्न परिभाषाएँ आचार्यों ने दी हैं—

1. तद्‌दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। —मम्मट
2. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। —भामह
3. शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली। —दण्डी
4. वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। —विश्वनाथ
5. रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। —पण्डितराज जगन्नाथ

साधारणीकरण—के सम्बन्ध में विभिन्न आचार्यों के निम्न मत हैं—

1.	भट्टनायक	भावकत्वं साधारणीकरणं तेन हि व्यापारेण विभावादय स्थायी च साधारणी क्रियन्ते।
2.	विश्वनाथ	परस्य न परस्येति ममेति न ममेति च।
3.	रामचंद्र शुक्ल	साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है।
4.	डॉ. नगेन्द्र	साधारणीकरण कवि की अनुभूति का होता है।
5.	श्यामसुन्दरदास	साधारणीकरण सहृदय के चित्त का होता है।

शब्द शक्तियाँ—

	शब्द शक्ति	अर्थ	शब्द	विशेष
1.	अभिधा	अभिधेयार्थ	वाचक	अभिधेयार्थ का बोध कराती है।
2.	लक्षणा	लक्ष्यार्थ	लक्षक	लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति है।
3.	व्यंजना	व्यंग्यार्थ	व्यंग्य	व्यंजन शब्द शक्ति व्यंग्यार्थ का बोध कराती है।

लक्षणा के भेद—

1. रूढ़ा लक्षणा, प्रयोजनवती लक्षणा
2. सारोपा, साध्यवसाना लक्षणा
3. गौणी, शुद्धा लक्षणा
4. अभिधामूला, लक्षणामूला, व्यंजनामूला लक्षणा

काव्य के भेद—

काव्य के तीन भेद हैं—

(1) ध्वनि काव्य (2) गुणीभूत काव्य (3) चित्र काव्य

(1) ध्वनि काव्य में व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से सुंदर होता है।

(2) गुणीभूत काव्य में वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ से अधिक बेहतर होता है।

(3) चित्र काव्य में केवल वाच्यार्थ होता है, व्यंग्यार्थ का पूर्ण अभाव होता है।

आनंदवर्द्धन ने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना है। वस्तुतः वह रस जो ध्वनि से व्यक्त होता है अभिनवगुप्त के अनुसार (रसध्वनि) काव्य की आत्मा है।

व्यंजना के तीन भेद हैं— अभिधामूला व्यंजना, लक्षणामूला व्यंजना, व्यंजना मूला व्यंजना।

@UPSC_THOUGHT

काव्य दोष—रस के अपकर्षक दोष कहे जाते हैं (विश्वनाथ)। काव्य दोष तीन प्रकार के होते हैं—शब्द दोष, अर्थ दोष, रस दोष। प्रमुख काव्य दोषों के नाम हैं—

1.	श्रुति कटुत्व दोष	सुनने में जो अप्रिय लगे।
2.	च्युत संस्कृति दोष	जहाँ व्याकरण के प्रतिकूल शब्द का प्रयोग हो।
3.	अप्रतीतत्व दोष	व्यवहार में न आने वाले शब्दों का प्रयोग।
4.	ग्राम्यत्व दोष	ग्राम्य शब्दों का प्रयोग।
5.	अश्लीलत्व दोष	अश्लील शब्दों का प्रयोग।
6.	क्लिष्टत्व दोष	क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग।
7.	न्यून पदत्व दोष	जहाँ पद की कमी हो।
8.	अधिक पदत्व दोष	जहाँ पद की अधिकता हो।
9.	दुष्क्रमत्व दोष	लोक या शास्त्र विरुद्ध शब्द का प्रयोग।
10.	पुनरुक्ति दोष	जहाँ शब्द की पुनरुक्ति हो।
11.	अक्रमत्व दोष	अनुचित स्थान पर शब्द प्रयोग।
12.	रस दोष	जहाँ भाव व्यंग्य रूप में न होकर स्वयं ही वर्णन करे।

8.3 पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्रमुख सिद्धान्त

	सिद्धान्त	प्रतिपादक
1.	अनुकरण सिद्धान्त	प्लेटो, अरस्तू
2.	विरेचन सिद्धान्त	अरस्तू
3.	अस्तित्ववाद	सारन कीकेगार्ड
4.	मनोविश्लेषणवाद	फ्रायड
5.	मार्क्सवाद	कार्ल मार्क्स
6.	अभिव्यंजनावाद	क्रोचे
7.	काव्य भाषा सिद्धान्त	वर्ड्सवर्थ
8.	कल्पना और फैंटेसी सिद्धान्त	कालरिज
9.	मूल्य सिद्धान्त	आई. ए. रिचर्ड्स
10.	सम्प्रेषण सिद्धान्त	आई. ए. रिचर्ड्स
11.	निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
12.	वस्तुनिष्ठ समीकरण का सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
13.	परम्परा की अवधारणा सिद्धान्त	टी. एस. ईलियट
14.	रूसी रूपवाद	वोरिस एकेनवाम
15.	संरचनावाद	सेस्यूर, स्ट्रास
16.	विखण्डनवाद एवं उत्तर संरचनावाद	जाक देरिदा
17.	आधुनिकतावाद	वर्जीनिया बुल्फ, बर्नार्ड शा, रिचर्ड्स
18.	औदात्य सिद्धान्त	लांजाइनस

पाश्चात्य समीक्षकों की प्रमुख कृतियाँ

1.	प्लेटो (427 ई. पू.–347 ई. पू.)	द रिपब्लिक, द स्टेट्स मैन, द लाज
2.	अरस्तू (374 ई. पू.–322 ई. पू.)	पोयटिक्स, रिहैट्रिक्स
3.	लांजाइनस (तीसरी शती)	ऑन–द–सबलाइम (औदात्य का विचार)
4.	क्रोचे (1866-1952 ई.)	एस्थेटिक्स (सौन्दर्यशास्त्र)
5.	आई. ए. रिचर्ड्स (1893-1979 ई.)	प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म
6.	वर्ड्सवर्थ (1770-1850 ई.)	प्रिफेस टू लिरिकल बैलेड्स (1800 ई.), बायोग्राफिया लिटरेरिया (1817 ई.)
7.	कालरिज (1722-1834 ई.)	लेक्चर्स ऑन शेक्सपीयर
8.	टी. एस. ईलियट (1885-1965 ई.)	द सेकरेड वर्ड, सलेक्टेड ऐसेज, पोयट्री एण्ड ड्रामा, ऑन पोयट्री एण्ड पोयट
9.	जाक देरिदा	ऑफ ग्रामाटोलॉजी

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. इनमें से काव्य हेतु नहीं है—

(a) प्रतिभा (b) वक्रोक्ति

(c) अभ्यास (d) व्युत्पत्ति

उत्तर—(b) वक्रोक्ति

YUKTI *ज्ञान—काव्य के तीन हेतु हैं— प्रतिभा, अभ्यास, व्युत्पत्ति। अतः वक्रोक्ति को काव्य का हेतु नहीं माना जाता। वक्रोक्ति एक काव्य सम्प्रदाय है।*

2. कवि की अनुभूति का साधारणीकरण मानते हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नगेन्द्र

(c) श्यामसुन्दरदास (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) डॉ. नगेन्द्र

YUKTI *ज्ञान—डॉ. नगेन्द्र कवि की अनुभूति का साधारणीकरण मानते हैं। भट्टनायक भावकत्व व्यापार को साधारणीकरण कहते हैं, रामचंद्र शुक्ल आलाम्बन धर्म का साधारणी–करण मानते हैं जबकि श्यामसुन्दरदास कवि के चित्त का साधारणीकरण मानते हैं।*

3. 'अभिव्यक्तिवाद' इनमें से किसका मत है?

(a) भट्टनायक (b) अभिनवगुप्त

(c) भट्टलोल्लट (d) आचार्य शंकुक

उत्तर—(b) अभिनवगुप्त

YUKTI *ज्ञान—अभिनवगुप्त काव्य सूत्र के चौथे व्याख्याता आचार्य हैं उनका मत अभिव्यक्तिवाद कहलाता है भट्टलोल्लट का मत उत्पत्तिवाद, आचार्य शंकुक का मत अनुमितिवाद कहा जाता है।*

4. 'साधारणीकरण सिद्धान्त' के आविष्कारक माने जाते हैं—

(a) भरतमुनि (b) आचार्य शंकुक
(c) भट्टनायक (d) मम्मट
उत्तर—(c) भट्टनायक

YUKTI ज्ञान—*साधारणीकरण सिद्धान्त के आविष्कारक रस सूत्र के तीसरे व्याख्याता आचार्य भट्टनायक माने जाते हैं।*

5. इनमें से काव्य प्रयोजन कौन-सा है?
(a) प्रतिभा (b) यश-प्राप्ति
(c) अभ्यास (d) व्युत्पत्ति
उत्तर—(b) यश-प्राप्ति

YUKTI ज्ञान—*मम्मट ने जो छः काव्य प्रजोयन बताए हैं उनमें यशप्राप्ति है शेष तीनों काव्य हेतु हैं, काव्य प्रयोजन नहीं।*

6. मम्मट ने किसे काव्य का अनिवार्य तत्व माना है?
(a) अलंकार को (b) ध्वनि को
(c) रस को (d) वक्रोक्ति को
उत्तर—(c) रस को

YUKTI ज्ञान—*मम्मट रसवादी आचार्य थे, अतः वे रस को काव्य की आत्मा मानते थे।*

7. 'अभिव्यंजनावाद' किस विद्वान् का सिद्धान्त है?
(a) क्रोचे का (b) अरस्तू
(c) ईलियट (d) रिचर्ड
उत्तर—(a) क्रोचे का

YUKTI ज्ञान—*अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक क्रोचे (Croce) थे। अरस्तू, ईलियट, रिचर्ड ने इसका प्रवर्तन नहीं किया।*

8. 'विरेचन सिद्धान्त' दिया है—
(a) जाक देरिदा ने (b) क्रोचे ने
(c) अरस्तू ने (d) प्लेटो ने
उत्तर—(c) अरस्तू ने

YUKTI ज्ञान—*विरेचन सिद्धान्त अरस्तू का है जिसके आधार पर उन्होंने दुखांत नाटकों (Tragedy) की व्याख्या की है।*

9. 'काव्य भाषा सिद्धान्त' के प्रणेता हैं—
(a) वर्ड्सवर्थ (b) ईलियट
(c) रिचर्ड (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(a) वर्ड्सवर्थ

YUKTI ज्ञान—*काव्य भाषा सिद्धान्त के प्रणेता हैं विलियम वर्ड्सवर्थ जिसका विवेचन उन्होंने बायोग्राफिया लिटरेरिया तथा प्रिफेस लिरिकल बैलड्स में किया है।*

10. 'विखण्डनवाद' के जनक हैं—
(a) जाक देरिदा (b) क्रोचे
(c) लांजाइनस (d) सेस्यूर
उत्तर—(a) जाक देरिदा

YUKTI ज्ञान—*विखण्डनवाद के जनक हैं जाक देरिदा, क्रोचे ने अभिव्यंजनावाद का, लांजाइनस ने औदात्यवाद और सेस्यूर ने संरचनावाद का प्रतिपादन किया है।*

11. कौन-सा सिद्धान्त अरस्तू का है—
(a) विरेचन सिद्धान्त (b) अभिव्यंजनावाद
(c) काव्यभाषा सिद्धान्त (d) ये सभी
उत्तर—(a) विरेचन सिद्धान्त

YUKTI ज्ञान—*दिए गए सिद्धान्तों में अरस्तू का सिद्धान्त है विरेचन सिद्धान्त, अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक क्रोचे हैं, काव्यभाषा सिद्धान्त के वर्ड्सवर्थ।*

12. अरस्तू का समय है—
(a) 427 ई. पू. – 347 ई. पू. (b) 374 ई. पू. – 322 ई. पू.
(c) 100 ई. पू. – 175 ई. पू. (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(b) 374 ई. पू. – 322 ई. पू.

13. 'पोयटिक्स' के रचयिता हैं—
(a) अरस्तू (b) लांजाइनस
(c) क्रोचे (d) प्लेटो
उत्तर—(a) अरस्तू

YUKTI ज्ञान—*अरस्तू की कृति है पोयटिक्स, क्रोचे ने Asthetics, लांजाइनस ने On the Sublime तथा प्लेटो ने The Republic काव्य ग्रंथ लिखे हैं।*

14. प्लेटो का ग्रन्थ कौन-सा नहीं है?
(a) On the Sublime (b) The Republic
(c) The Statesman (d) The Laws
उत्तर—(a) On the Sublime

YUKTI ज्ञान—*On the Sublime लांजाइनस की रचना है। शेष तीनों प्लेटों के ग्रंथ हैं।*

15. 'Asthetics' के रचयिता का नाम है
(a) क्रोचे (b) अरस्तू
(c) ईलियट (d) लांजाइनस
उत्तर—(a) क्रोचे

YUKTI ज्ञान—*Asthetics क्रोचे की रचना है, अरस्तू लांजाइनस या ईलियट की नहीं। अरस्तू की रचना है – Poitics,*
लांजाइनस की रचना है – On the Sublime
और ईलियट की रचना है Definition of Culture, Essays on Poets & Poetry आदि।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

8.4 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ और उनके रचयिता

संस्कृत काव्य-शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ

	रचयिता	ग्रन्थ का नाम	विशेष
1.	भरतमुनि (200 ई.पू. के आसपास)	नाट्यशास्त्र	विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगात् रस निष्पत्तिः।
2.	भामह (6वीं शती)	काव्यालंकार	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्, सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिः कोऽलंकारो अनया बिना।
3.	दण्डी (7वीं शती)	काव्यादर्श	काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।
4.	उद्भट (6वीं शती)	काव्यालंकार सार संग्रह	—
5.	आचार्य वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति	रीतिरात्मा काव्यस्य, सौन्दर्यम्ऽलंकारः, रस को कान्ति नामक गुण में समाहित किया।
6.	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	काव्यस्यआत्मा ध्वनिरितिः
7.	अभिनवगुप्त	ध्वन्यालोक लोचन, अभिनव भारती	रस सूत्र के चौथे व्याख्याता, इनका मत अभिव्यक्तिवाद कहा जाता है। ये रस-ध्वनि को काव्य की आत्मा मानते हैं। इनके अनुसार रस व्यंग्य होता है।
8.	राजशेखर	काव्य-मीमांसा	18 अभिकरणों में विभक्त ग्रन्थ था, जिसका केवल एक अभिकरण कवि रहस्य ही प्राप्त होता है।
9.	धनंजय	दशरूपक	नाटक पर लिखा ग्रन्थ।
10.	भट्टनायक	हृदय दर्पण	अभिनव भारती में इस ग्रन्थ का उल्लेख है। वे साधारणीकरण सिद्धान्त के आविष्कारक थे। भावकत्वं साधारणीकरणं तेन हि व्यापारेण विभावदय स्थायी च साधारणी क्रियन्ते। ये रस सूत्र के तीसरे व्याख्याता हैं। इनका मत 'भुक्तिवाद' कहलाता है।
11.	आचार्य कुन्तक (10वीं शती)	वक्रोक्ति जीवित	वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक, इनका कथन है—वैदग्ध्यभंगीभणिति वक्रोक्तिः। वक्रोक्ति के 6 भेद उन्होंने किये हैं।
12.	महिमभट्ट (11वीं शती)	व्यक्ति विवेक	ध्वनि सिद्धान्त के आलोचक।
13.	क्षेमेन्द्र (11वीं शती)	औचित्य विचार चर्चा	औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक, औचित्य को काव्यात्मा पद पर प्रतिष्ठित किया।
14.	भोजराज (11वीं शती)	सरस्वती कण्ठाभरण, शृंगार प्रकाश	शृंगार को रसराज मानते हैं।
15.	मम्मट (12वीं शती)	काव्य प्रकाश	1. ध्वनि संस्थापन परमाचार्य। 2. तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। 3. अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व नहीं मानते। 4. ये रसवादी आचार्य हैं। 5. इन्होंने छह काव्य प्रयोजन बताये हैं और आत्म-शान्ति को सकल मौलिभूत काव्य प्रयोजन माना है।
16.	जयदेव (12वीं शती)	चन्द्रालोक	मम्मट के अनलंकृति शब्द की तीखी आलोचना की। ये अलंकारवादी आचार्य थे।
17.	आचार्य विश्वनाथ (14वीं शती)	साहित्य दर्पण	1. वाक्यं रसात्मकं काव्यं। 2. महाकाव्य के लक्षणों के निरूपक 3. रसवादी आचार्य 4. वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली तीन रीतियाँ मानते हैं।
18.	पण्डितराज जगन्नाथ (17वीं शती)	रस गंगाधर	रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। अलंकारों, रसों, काव्य हेतुओं के विवेचक।

@UPSC_THOUGHT

हिन्दी काव्य-शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ

रचयिता	ग्रन्थ का नाम	विशेष
1. कृपाराम	हित तरंगिणी	भक्तिकालीन रीतिग्रंथ
2. आचार्य केशवदास (1560-1617 ई.)	कवि प्रिया, रसिक प्रिया, छन्दमाला	1. भूषण बिनु न विराजई कविता बनिता मित्त। 2. अलंकारवादी आचार्य
3. चिन्तामणि (1600-1680 ई.)	कवि कुल कल्पतरु, काव्य विवेक, रस विलास, श्रृंगार मंजरी	
4. मतिराम (1604-1710 ई.)	रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्त कौमुदी	रस, छन्द, अलंकार के विवेचक
5. भिखारीदास (1725-1760 ई.)	काव्य निर्णय, छन्दो वर्ण पिंगल	
6. सोमनाथ	रस पीयूष निधि, श्रृंगार विलास	रसों का विवेचन, श्रृंगार रस का पूर्ण विवेचन
7. देव (1673-1733 ई.)	भाव विलास, भवानी विलास, काव्य रसायन, शब्द रसायन, रस विलास	सर्वांग निरूपक आचार्य जिन्होंने काव्यागों के सभी पक्ष– रस, अलंकार, दोष, शब्द शक्ति, छंद का विवेचन किया है।
8. पद्माकर (1753-1833 ई.)	पद्माभरण, जगद्विनोद	अलंकारों, रस का विवेचन किया
9. ग्वाल कवि (1791-1868 ई.)	रसिकानन्द, अलंकार भ्रम भंजन, रसरंग, कवि दर्पण	कवित्व एवं आचार्यत्व का समन्वय अलंकारों से सम्बन्धित भ्रम का निवारण
10. जसवंत सिंह	भाषा-भूषण	अलंकार ग्रन्थ
11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि, रस-मीमांसा	निबंध–ग्रन्थ परन्तु इसमें काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का कहीं-कहीं समावेश हो गया है।
12. बाबू गुलाबराय	काव्य के रूप, सिद्धान्त और अध्ययन	हिन्दी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ
13. डॉ. नगेन्द्र	रस सिद्धान्त	रस का विवेचक हिन्दी ग्रंथ
14. गोविंद त्रिगुणायत	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	हिन्दी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता का नाम है–

(a) मम्मट (b) भरतमुनि

(c) जयदेव (d) विश्वनाथ

उत्तर—(b) भरतमुनि

YUKTI ***ज्ञान***–*नाट्यशास्त्र के रचयिता हैं– आचार्य भरतमुनि, मम्मट के ग्रंथ का नाम काव्य प्रकाश, जयदेव – चंद्रालोक, विश्वनाथ – साहित्य दर्पण के रचयिता हैं।*

2. 'काव्य-प्रकाश' किसका ग्रन्थ है?

(a) मम्मट का (b) विश्वनाथ का

(c) भट्टलोल्लट का (d) दण्डी का

उत्तर—(a) मम्मट का

YUKTI ***ज्ञान***–*काव्य प्रकाश – आचार्य मम्मट का ग्रंथ है। विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण, दण्डी ने काव्यादर्श की रचना की। भट्टलोल्लट का कोई ग्रंथ नहीं मिलता।*

3. दण्डी किस प्रकार के आचार्य थे?

(a) अलंकारवादी (b) रसवादी

(c) ध्वनिवादी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) अलंकारवादी

YUKTI ***ज्ञान***–*दण्डी अलंकारवादी आचार्य थे क्योंकि वे काव्यादर्श में लिखते हैं काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।*

अर्थात् अलंकार काव्य शोभा को उत्पन्न करने वाले तत्व हैं जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है अलंकार काव्य शोभा में वृद्धि तो करते हैं पर काव्य शोभा उत्पन्न नहीं कर सकते।

4. 'काव्यमीमांसा' के रचयिता हैं–

(a) विश्वनाथ (b) पण्डितराज जगन्नाथ

(c) राजशेखर (d) आचार्य मम्मट

उत्तर—(c) राजशेखर

YUKTI ***ज्ञान***–*काव्यमीमांसा – राजशेखर द्वारा रचित है। पण्डितराज जगन्नाथ ने रस गंगाधर, विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण और मम्मट ने काव्य प्रकाश नामक ग्रंथ लिखा।*

5. 'भूषन बिनु व विराजई कविता बनिता मित्त' किसका कथन है?

(a) चिन्तामणि (b) भिखारीदास

(c) केशवदास (d) देव

उत्तर—(c) केशवदास

YUKTI ***ज्ञान***–*दी गयी पंक्ति रीतिकालीन आचार्य केशवदास की है जिसमें वे अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व मानते हैं।*

6. 'साहित्य दर्पण' के रचनाकार हैं–

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) मम्मट
(c) राजशेखर (d) विश्वनाथ

उत्तर—(d) विश्वनाथ

YUKTI **ज्ञान**—*साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ (14वीं सदी) की कृति है, मम्मट ने काव्यप्रकाश, राजशेखर ने काव्यमीमांसा, रामचन्द्र शुक्ल ने चिंतामणि और रसमीमांसा की रचना की है।*

7. 'रस गंगाधर' के रचयिता हैं—

(a) विश्वनाथ (b) पण्डितराज जगन्नाथ
(c) राजशेखर (d) गुलाबराय

उत्तर—(b) पण्डितराज जगन्नाथ

YUKTI **ज्ञान**—*रस गंगाधर के रचयिता हैं पण्डितराज जगन्नाथ*
विश्वनाथ के ग्रंथ का नाम है – साहित्य दर्पण
राजशेखर के ग्रंथ का नाम है – काव्यमीमांसा
गुलाबराय के ग्रंथ का नाभ है – सिद्धान्त और अध्ययन

8. 'सिद्धान्त और अध्ययन' किसकी रचना है?

(a) गुलाबराय (b) रामविलास शर्मा
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) गोविन्द त्रिगुणायत

उत्तर—(a) गुलाबराय

YUKTI **ज्ञान**—*सिद्धान्त और अध्ययन – गुलाबराय की कृति है।*
रामचंद्र शुक्ल का ग्रंथ है – चिंतामणि
डॉ. नगेन्द्र के ग्रंथ का नाम है – रस सिद्धान्त
डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के ग्रंथ का नाम है – शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त

9. 'रस सिद्धान्त' के रचयिता हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) गुलाबराय (d) रामस्वरूप चतुर्वेदी

उत्तर—(b) डॉ. नगेन्द्र

YUKTI **ज्ञान**—*रस सिद्धान्त डॉ. नगेन्द्र की रचना है।*
रामचंद्र शुक्ल के ग्रंथ का नाम है – चिन्तामणि, रसमीमांसा
गुलाबराय के ग्रंथ का नाम है – सिद्धान्त और अध्ययन तथा काव्य के रूप
रामस्वरूप चतुर्वेदी के ग्रंथ का नाम है – भाषा और संवेदना

10. 'चिन्तामणि' के रचनाकार हैं—

(a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गुलाबराय
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

उत्तर—(a) रामचन्द्र शुक्ल

YUKTI **ज्ञान**—*चिन्तामणि के रचनाकार हैं – आचार्य रामचंद्र शुक्ल*
गुलाब राय का ग्रंथ है – सिद्धान्त और अध्ययन
डॉ. नगेन्द्र के ग्रंथ का नाम है – रस सिद्धान्त
हजारीप्रसाद द्विवेदी की कृति है – नाथ सम्प्रदाय

8.5 छन्द

वर्ण, मात्रा, पद, यति आदि के नियमानुरूप प्रयोग से युक्त रचना 'छन्द' कहलाती है।

YUKTI **ज्ञान**—*जिस प्रकार व्याकरण भाषा का नियमन करता है, उसी प्रकार छन्द 'पद्य' का नियामक है। पद्य रचना की जानकारी के लिए छन्द का ज्ञान परमावश्यक है। छन्दबद्ध रचना में स्थायित्व होता है, वे हमें सरलता से कण्ठस्थ हो जाती हैं। छन्द के कारण काव्य में गेयता आ जाती है, अतः उसका प्रभाव बढ़ जाता है।*

छन्द के प्रकार—छन्द दो प्रकार के होते हैं—

(अ) **वर्णिक छन्द**—जिनमें वर्णों की गणना की जाती है वे 'वर्णिक छन्द' कहे जाते हैं। तीन-तीन वर्णों के समूह बनाये जाते हैं, जिन्हें 'गण' कहा जाता है।

(ब) **मात्रिक छन्द**—जिनमें मात्राओं का विधान रहता है, वे 'मात्रिक छन्द' कहे जाते हैं। 'ऽ' मात्रा दीर्घ के लिए तथा '।' मात्रा ह्रस्व (लघु) के लिए लगती है।

गणों की संख्या 8 है। सभी गणों के नाम, सूत्र, उदाहरण इस सूत्र से जाने जाते हैं—

य मा ता रा ज भा न स ल गा

गणों के नाम	सूत्र	मात्राएँ
यगण	यमाता	।ऽऽ
मगण	मातारा	ऽऽऽ
तगण	ताराज	ऽऽ।
रगण	राजभा	ऽ।ऽ
जगण	जभान	।ऽ।
भगण	भानस	ऽ।।
नगण	नसल	।।।
सगण	सलगा	।।ऽ

प्रमुख वर्णिक छन्द—जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है, वे 'वर्णिक छन्द' कहे जाते हैं। प्रमुख वर्णिक छन्दों के लक्षण, उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

(1) इन्द्रवज्रा—प्रत्येक चरण में 11 वर्ण—दो तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), एक जगण (।ऽ।), दो गुरु (ऽऽ) होते हैं। यथा—
जो मैं नया ग्रन्थ विलोकता हूँ।
ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ।ऽ।ऽ ऽ

(2) उपेन्द्रवज्रा—प्रत्येक चरण में 11 वर्ण—जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।) जगण (।ऽ।), दो गुरु (ऽऽ) होते हैं। यथा—
बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै
।ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ। ऽऽ

(3) वसंततिलका—प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण—तगण (ऽऽ।), एक भगण (ऽ।।), दो जगण (।ऽ।, ।ऽ।) तथा दो गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं। यथा—
भू में रमी शरद की कमनीयता थी।
ऽ ऽ ।ऽ ।।। ऽ ।।ऽ।ऽ ऽ

(4) मालिनी—15 वर्ण प्रत्येक चरण में—दो नगण (।।।, ।।।) एक भगण (ऽ।।), दो यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं।
प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है।
।। ।। ।। ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ।ऽ ऽ

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

(5) मन्दाक्रान्ता—प्रत्येक चरण में 17 वर्ण—एक मगण (ऽऽऽ), एक भगण (ऽ।।), एक नगण (।।।), दो तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), दो गुरु (ऽऽ) होते हैं। यथा—

तारे डूबे तम टल गया छा गयी व्योम लाली
ऽ ऽ ऽऽ ।। ।। ।ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ

(6) शिखरिणी—प्रत्येक चरण में 17 वर्ण—एक यगण (।ऽऽ), एक मगण (ऽऽऽ), एक नगण (।।।), एक सगण (।।ऽ), एक भगण (ऽ।।), एक लघु एक गुरु (।ऽ), यथा—

अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से
।ऽऽ ऽऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ ।।।ऽ

(7) वंशस्थ—प्रत्येक चरण में 12 वर्ण—एक जगण (।ऽ।), एक तगण (ऽऽ।), एक जगण (।ऽ।), एक रगण (ऽ।ऽ), यथा—

न कालिमा है मिटती कपाल की।
। ऽ।ऽ । ।।ऽ ।ऽ। ऽ

(8) द्रुतबिलम्बित—प्रत्येक चरण में 12 वर्ण—एक नगण (।।।), दो भगण (ऽ।।, ऽ।।), एक रगण (ऽ।ऽ), यथा—

दिवस का अवसान समीप था
।।। ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ऽ

(9) मत्तगयन्द (मालती)—प्रत्येक चरण में 23 वर्ण—सात भगण (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।), दो गुरु (ऽ ऽ), यथा—

सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर ध्यावैं
ऽ।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।ऽ।। ऽ ऽ

(10) सुन्दरी सवैया—प्रत्येक चरण में 25 वर्ण—आठ सगण (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ) एक गुरु (ऽ), यथा—

कर बान सरासन सीस जटा सरसीरुह लोचन सोन सुहाये।
।। ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।ऽ ।।ऽ।। ऽ।। ऽ। ।ऽ।

मात्रिक छन्द—

(1) चौपाई—चार चरण प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ। चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं। यथा—

ऽ।। ।। ।। ।।। ।ऽऽ = 16 मात्राएँ
बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥
अमिय मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू॥

(2) दोहा—अर्द्ध सम मात्रिक छन्द है। चार चरण। पहले, तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे, चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं—

ऽ ।। ।।। ।ऽ। ।। ।। ।। ।।। ।ऽ। = 24 मात्राएँ
श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि॥

(3) सोरठा—यह दोहा छन्द का ठीक विपरीत होता है। इसमें भी चार चरण होते हैं। इसमें पहले तथा तीसरे में 11-11 मात्राएँ तथा समचरणों में यानि दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।।। ।।। ऽ।। ।।। = 24 मात्राएँ
नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीरसागर सयन॥

(4) कुण्डलिया—यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। पहले दो चरण दोहा के और बाद के दो चरण रोला के होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, परन्तु मात्राओं का क्रम पहले दो चरणों में 13, 11 का तथा बाद के चार चरणों में 11, 13 का रहता है। जिस शब्द से छन्द का आरम्भ होता है, उसी शब्द का प्रयोग अन्त में होता है। यथा—

ऽऽ ऽ।। ऽ।ऽ ।। ऽ।। ।। ऽ।
सांई बैर न कीजिए गुरु, पण्डित, कवि, यार।

(5) रोला—चार चरण, प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ 11, 13 पर यति। यथा—

ऽऽ ऽऽ ।ऽ ।ऽऽ ऽ।। ऽऽ = 24 मात्राएँ
जीती जाती हुई जिन्होंने मारत बाजी,

(6) हरिगीतिका—चार चरण, प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ अन्त में लघु गुरु तथा 16, 12 पर यति। यथा—

मन जाहि राँचेउ मिलहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो
।। ऽ। ऽ।। ।।। ऽ ।। ।।। ऽ।। ऽ।ऽ = 28 मात्राएँ

(7) छप्पय—छः चरण, विषम मात्रिक छन्द। प्रथम चार चरण रोला के तथा 24 मात्राओं वाले अन्तिम दो चरण उल्लाला के अतः 15, 13 यति वाले होते हैं।

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।
ऽऽ।। ।।ऽ। ।।। ।। ।। ऽ।। ऽ = 24 मात्राएँ
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की
।।ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ऽ ।।ऽऽ ।। ऽ। ऽ = 28 मात्राएँ

(8) बरवै—चार चरण, पहले, तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे, चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ। अतः प्रत्येक पंक्ति में 19 मात्राएँ। यथा—

प्रेम प्रीति को विरवा चले लगाय
ऽ। ऽ। ऽ ।।ऽ ।ऽ ।ऽ। = 19 मात्राएँ

(9) गीतिका—चार चरण, 26 मात्राएँ, 14, 12 पर यति, चरण के अन्त में लघु गुरु, यथा—

हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए।
ऽ ।ऽ ऽऽ।ऽऽ ऽ। ।।ऽ ऽ।ऽ = 26 मात्राएँ

8.6 अलंकार

जो अलंकृत करे, अर्थात् शोभा में वृद्धि करे उसे 'अलंकार' कहते हैं। जैसे सुन्दर स्त्री की शोभा आभूषणों से बढ़ जाती है, वैसे ही कविता की शोभा अलंकारों से बढ़ती है। अलंकार शोभा को बढ़ा सकते हैं, शोभा उत्पन्न नहीं कर सकते, उसी तरह जैसे–आभूषण सुन्दर स्त्री की शोभा बढ़ा सकते हैं, पर कुरूप स्त्री को सुन्दर नहीं बना सकते। अलंकार प्रमुखतः दो प्रकार के होते हैं—शब्दालंकार, अर्थालंकार। अलंकार काव्य के आभूषण होने से काव्य की सजावट तो बढ़ा सकते हैं पर उन्हें काव्य का आन्तरिक तत्व नहीं माना जा सकता है।

दण्डी, रुद्रट, भामह, जयदेव आदि संस्कृत के अलंकारवादी आचार्य हैं, जबकि हिन्दी में आचार्य केशवदास को अलंकारवादी आचार्य कहा जाता है। अलंकारवादी आचार्य अलंकार को काव्य का प्राण तत्व मानते हैं पर अब ऐसा नहीं माना जाता है। कविता का मूल तत्व (प्राण तत्व) तो रस ही है।

1. शब्दालंकार

जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो, शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, इन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

2. अर्थालंकार

कविता में जब भाषा का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि अर्थ में समृद्धि और चमत्कार उत्पन्न हो तो उसे अर्थालंकार कहते हैं।

प्रमुख शब्दालंकार

प्रमुख शब्दालंकार हैं—अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति, वीप्सा।

(1) अनुप्रास—जहाँ एक वर्ण की कई बार आवृत्ति हो यथा—

भूरि भूरि भेद भाव भूमि से भगा दिया

(2) यमक—एक शब्द अनेक बार अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त हो, यथा—

जेते तुम **तारे** तेते नभ में न **तारे** हैं।

तारे = उद्धार करना, तारे = नक्षत्र

(3) श्लेष—एक शब्द एक बार अनेक अर्थों में प्रसंग भेद से प्रयुक्त हो, यथा—

पानी गये न ऊबरे मोती मानस चून।

पानी = आभा, इज्जत, जल

(4) वक्रोक्ति—उक्ति में वक्रता का समावेश हो, यथा—

मैं सुकुमारि नाथ वन जोगू। तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू॥

यह वाक्य वक्रोक्ति है। इसका दूसरा भेद श्लिष्ट वक्रोक्ति है। यथा—

को तुम हौं घनस्याम प्रिये तौ बरसौ उत जाय।

घनस्याम = कृष्ण, काले बादल

(5) पुनरुक्ति—एक ही शब्द एक ही अर्थ में दो बार प्रयुक्त हो। यथा—

ठौर-ठौर विहार करती सुन्दरी सुकुमारियाँ

(6) वीप्सा—शब्द की पुनरुक्ति भाव संवर्धन के लिए होने पर 'वीप्सा अलंकार' होता है। यथा—

हा-हा इन्हें रोकन को टोक न लगावौ तुम

'हा-हा' में वीप्सा है, क्योंकि यह दुःख भाव की वृद्धि कर रहा है।

प्रमुख अर्थालंकार

प्रमुख अर्थालंकार हैं—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, अनन्वय, प्रतीप, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति।

(1) उपमा—जहाँ रूप, रंग, गुण, धर्म के कारण एक वस्तु (उपमेय) की तुलना दूसरी वस्तु (उपमान) से की जाती है, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।

उदाहरण—हरिपद कोमल कमल से।

स्पष्टीकरण—यहाँ हरिपद की तुलना कमल से की गई है। दोनों में कोमलता का गुण समान रूप से विद्यमान है, अतः उपमा अलंकार है। उपमा के चार अंग होते हैं—उपमेय, उपमान, वाचक, साधारण धर्म।

हरि पद कोमल कमल से।

हरिपद — उपमेय है, कमल — उपमान

कोमल — साधारण धर्म तथा से — वाचक शब्द है।

(2) रूपक—जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप स्थापित कर दिया जाये, वहाँ 'रूपक अलंकार' होता है।

अभेद आरोप का अर्थ है—भेद रहित आरोप अर्थात् उपमेय-उपमान में कोई भेद नहीं रहता। उपमेय पर उपमान इस तरह छा जाता है कि अब दर्शक, पाठक या श्रोता को केवल उपमान ही दिखाई पड़ता है। स्पष्ट है कि अब क्रिया उपमान की होगी।

अरुण गोविल यदि राम का रूप धारण करता है तो अभेद आरोप है क्योंकि वह अरुण गोविल की क्रियाएँ न करके राम की क्रियाएँ (लीलाएँ) ही करता है।

उदाहरण—अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी॥

स्पष्टीकरण—आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी स्त्री तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। आकाश पर पनघट का, उषा पर स्त्री का और तारों पर घड़े का अभेद आरोप होने से यहाँ रूपक अलंकार है।

रूपक अलंकार के तीन उपभेद हैं—सांगरूपक, परम्परित रूपक, निरंग रूपक।

(3) उत्प्रेक्षा—उत्प्रेक्षा का अर्थ है कल्पना, जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना या सम्भावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मनु, मनो, जनु, जानो शब्द आने पर 'उत्प्रेक्षा अलंकार' को पहचाना जा सकता है।

उदाहरण—सोहत ओढ़ै पीत पटु स्याम सलोने गात।

मनौ नीलमनि सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

स्पष्टीकरण—यहाँ श्रीकृष्ण का श्यामल शरीर और पीताम्बर उपमेय है। जिन पर क्रमशः नीलमणि पर्वत एवं प्रभातकालीन धूप की सम्भावना व्यक्त की गई है, अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

उत्प्रेक्षा के चार उपभेद माने गये हैं—(1) वस्तूत्प्रेक्षा, (2) हेतूत्प्रेक्षा, (3) फलोत्प्रेक्षा, (4) गम्योत्प्रेक्षा।

(4) सन्देह—रूप-रंग आदि के सादृश्य से जहाँ उपमेय में उपमान का संशय बना रहे या उपमेय के लिए दिये गये उपमानों में संशय रहे, वहाँ 'सन्देह अलंकार' होता है।

उदाहरण—सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।

सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥

स्पष्टीकरण—साड़ी के बीच नारी है या नारी के बीच साड़ी—इसका निश्चय नहीं हो पाने के कारण सन्देह अलंकार है।

(5) भ्रान्तिमान—उपमेय में उपमान का भ्रम होने पर यदि तद्नुरूप क्रिया हो तो 'भ्रान्तिमान अलंकार' होता है। भ्रान्तिमान में उपमान (भ्रांति) का

@UPSC_THOUGHT

निश्चय हो जाता है इसलिए उपमेय की क्रिया उस भ्रांति के अनुसार ही होती है।

उदाहरण—बिल विचार कर नाग शुण्ड में घुसने लगा विषैला साँप।
काली ईख समझ विषधर को उठा लिया तब गज ने आप॥

स्पष्टीकरण—हाथी की सूँड़ को काले सर्प ने बिल समझा और वह घुसने लगा तथा हाथी ने काले सर्प को काला गन्ना समझकर सूँड़ से उठा लिया, अतः यहाँ भ्रान्ति होने के कारण भ्रान्तिमान अलंकार है।

(6) अनन्वय—जहाँ उपमेय की तुलना उपमेय से की जाये वहाँ 'अनन्वय अलंकार' होता है। अनन्वय में उपमेय को ही उपमान बना दिया जाता है।

उदाहरण—भारत के सम भारत है।

स्पष्टीकरण—यहाँ भारत की तुलना भारत से ही करके अनन्वय अलंकार का विधान किया गया है।

(7) प्रतीप—प्रतीप का अर्थ है, उल्टा या विपरीत। यह अलंकार उपमा का उल्टा है, क्योंकि उपमा अलंकार में उपमान श्रेष्ठ होता है, जबकि 'प्रतीप अलंकार' में उपमेय को श्रेष्ठ दिखाया जाता है या फिर उपमान को हीन या लज्जित दिखाकर उपमेय की श्रेष्ठता प्रतिपादित की जाती है।

उदाहरण—सिय सुख समता किमि करै चन्द बापुरो रंक।

स्पष्टीकरण—बेचारा गरीब चन्द्रमा (उपमान) सीता जी के सुन्दर मुख (उपमेय) की तुलना कैसे कर सकता है? उपमेय की श्रेष्ठता प्रतिपादित होने से यहाँ प्रतीप अलंकार है।

(8) विशेषोक्ति—प्रतीप अलंकार में केवल उपमेय को श्रेष्ठ या उपमान को निकृष्ट बताया जाता है, जबकि विशेषोक्ति में यह भी बताया जाता है कि उपमेय उपमान से क्यों श्रेष्ठ है या उपमान उपमेय से क्यों हीन (निकृष्ट) है; **जैसे**—

जनम सिंधु पुनि बंधु विष दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता किमि करै चन्द बापुरो रंक।।

स्पष्टीकरण— बेचारा गरीब चंद्रमा सीता जी के मुख की तुलना कैसे कर सकता है क्योंकि चंद्रमा तो समुद्र से उत्पन्न होने से विष का भाई है, वह सीता जी के मुख की तुलना नहीं कर सकता अर्थात् सीता का मुख चंद्रमा से श्रेष्ठ है। यहाँ कारण सहित श्रेष्ठता का उल्लेख है, अतः विशेषोक्ति अलंकार है।

(9) दृष्टान्त—जहाँ उपमेय और उपमान के साधारण धर्म में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दिखाया जाये, वहाँ 'दृष्टान्त अलंकार' होता है।

उदाहरण—पापी मनुज भी आज मुख से राम-नाम निकालते।
देखो भयंकर भेड़िये भी आज आँसू ढालते॥

स्पष्टीकरण—यहाँ पापी मनुष्य का प्रतिबिम्ब भेड़िये में तथा राम-नाम का प्रतिबिम्ब आँसू से पड़ रहा है, अतः दृष्टान्त अलंकार है।

(10) अतिशयोक्ति—जहाँ किसी वस्तु का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये कि सामान्य लोक सीमा का उल्लंघन हो जाये वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।

उदाहरण—लहरें व्योम चूमती उठतीं

स्पष्टीकरण—यहाँ समुद्र की लहरों को आकाश चूमते हुए कहकर उनकी अतिशय ऊँचाई का उल्लेख अतिशयोक्ति के माध्यम से किया गया है। अतिशयोक्ति अलंकार के कई उपभेद हैं; यथा—

(i) रूपकातिशयोक्ति, (ii) सम्बन्धातिशयोक्ति, (iii) भेदकातिशयोक्ति, (iv) चपलातिशयोक्ति, (v) अतिक्रमातिशयोक्ति, (vi) असम्बन्धातिशयोक्ति।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. दोहा और रोला के संयोग से बनने वाला छन्द है—

(a) पीयूषवर्णी (b) उपेन्द्रवज्रा
(c) छप्पय (d) कुण्डलिया

उत्तर—(c) छप्पय

YUKTI ***ज्ञान***—*दोहा, रोला के संयोग से छप्पय छंद बनता है इसमें एक दोहा और एक रोला होता है। प्रत्येक चरण में 24 – 24 मात्राएँ होती हैं।*

2. दोहा का लक्षण बताइये—

(a) 48 मात्राएँ (b) 24 मात्राएँ, 13, 11 पर यति
(c) 26 मात्राएँ 14, 12 पर यति (d) 28 मात्राएँ, 14, 14 पर यति

उत्तर—(b) 24 मात्राएँ, 13, 11 पर यति

YUKTI ***ज्ञान***—*दोहा छंद में 24 मात्राएँ होती हैं 13, 11, पर यति होती है और अन्त में दोनों पंक्तियों में तुक मिलती है, शेष तीन उत्तर गलत हैं।*

3. बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोहतम पुंज जासु वचन रवि कर निकर॥ मैं कौन-सा छन्द है?

उ.प्र. टी.ई.टी.

(a) दोहा (b) सोरठा
(c) चौपाई (d) बरवै

उत्तर—(b) सोरठा

YUKTI ***ज्ञान***—*दिए गये छंद में सोरठा है क्योंकि प्रत्येक चरण में 24 – 24 मात्राएँ हैं तथा 13 – 11, 13 – 11 के क्रम से यति होती है।*

4. बरवै छन्द का लक्षण है—

(a) 19 मात्राएँ 12, 7 पर यति (b) 26 मात्राएँ, 13, 13 पर यति
(c) 23 वर्ण (d) 24 वर्ण

उत्तर—(a) 19 मात्राएँ 12, 7 पर यति

YUKTI ***ज्ञान***—*बरवै छंद में 12, 7 के क्रम से कुल 19 मात्राएँ होती हैं।*

5. इन सूचियों को सुमेलित कीजिए—

सूची–I	**सूची–II**
1. आरोपवाद	A. अभिनवगुप्त
2. अनुमितिवाद	B. भट्टलोल्लट
3. भुक्तिवाद	C. आचार्य शंकुक
4. अभिव्यक्तिवाद	D. भट्टनायक
	E. महिमभट्ट

@UPSC_THOUGHT

कोड—

	1	2	3	4
(a)	B	C	D	A
(b)	D	A	C	B
(c)	C	B	E	D
(d)	E	B	C	D

उत्तर—(a) आरोपवाद (भट्टलोल्लट), अनुमितिवाद (आचार्य शंकुक), भुक्तिवाद (भट्टनायक), अभिव्यक्तिवाद (अभिनवगुप्त)

6. भरत के अनुसार रसों की संख्या है—

(a) 9 (b) 8

(c) 10 (d) 11

उत्तर—(b) 8

YUKTI ***ज्ञान***—*भरत के अनुसार नाटक में रसों की संख्या केवल आठ मानी गयी है वे निर्वेद (स्थायी भाव) का अभिनय असंभव मानते हैं अतः शान्त रस को नाटक में स्थान नहीं देते।*

7. 'ध्वनि' सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं—

(a) भरत मुनि (b) मम्मट

(c) आनन्द वर्धन (d) अभिनवगुप्त

उत्तर—(c) आनन्द वर्धन

YUKTI ***ज्ञान***—*ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य है आनन्द वर्धन, भरतमुनि रस समप्रदाय के प्रवर्तक है, मम्मट ने किसी नए सम्प्रदाय का प्रवर्तन नहीं किया जबकि अभिनवगुप्त ने अभिनव भारती में ध्वन्यालोक की टीका प्रस्तुत की है।*

8. 'वीभत्स रस' का स्थायी भाव है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) घृणा (b) जुगुप्सा

(c) क्रोध (d) भय

उत्तर—(b) जुगुप्सा

9. 'काव्य प्रकाश' के रचयिता हैं— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) विश्वनाथ (b) महिमभट्ट

(c) मम्मट (d) कुन्तक

उत्तर—(c) मम्मट

YUKTI ***ज्ञान***—*काव्य प्रकाश के रचयिता हैं मम्मट, विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण, महिमभट्ट ने व्यक्ति विवेक और कुन्तक ने वक्रोक्ति जीवित नामक ग्रंथ लिखे।*

10. 'बिनु पग चलै सुनै बिनु काना' में कौन-सा अलंकार है ? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) विभावना (b) विशेषोक्ति

(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

उत्तर—(a) विभावना

YUKTI ***ज्ञान***—*बिनु पग चलै सुने बिनु काना में कारण (पैर का) के अभाव में कार्य (चलना, सुनना) सम्पन्न हो रहे हैं अतः विभावना अलंकार है।*

11. 'करुण रस' का स्थायीभाव है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) शोक (b) ह्रास

(c) भय (d) रति

उत्तर—(a) शोक

YUKTI ***ज्ञान***—*करुण रस का स्थायी भाव शोक है। किसी की मृत्यु हो जाने पर करुण रस होता है; यथा–*

शोक विकल सब रोवहि रानी।

रूप तेज गुण सील बखानी।।

राजा दशरथ की मृत्यु पर सभी रानियां उनके रूप, तेज, गुण, शील का बखान करते हुए रो रही थीं।

12. इनमें से कौन-सा छन्द वर्णिक है? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) दोहा (b) चौपाई

(c) वंशस्थ (d) रोला

उत्तर—(c) वंशस्थ

YUKTI ***ज्ञान***—*दोहा, चौपाई, रोला, मात्रिक छंद हैं क्योंकि इनमें मात्राएं गिनी जाती हैं जबकि वंशस्थ वर्णिक छंद है क्योंकि इसमें वर्णों की गिनती होती है।*

13. 'काली घटा का घमण्ड घटा' में कौन-सा अलंकार है? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) श्लेष (b) यमक

(c) अनुप्रास (d) उपमा

उत्तर—(b) यमक

YUKTI ***ज्ञान***—*घटा शब्द का प्रयोग दो बार अलग–अलग अर्थों में हुआ है; यथा घटा = काली बदली। घटा = कम हो गया। अतः रूपक अलंकार है।*

14. 'भारत के सम भारत है' में कौन-सा अलंकार है?

(a) उपमा (b) प्रतीप

(c) अनन्वय (d) उत्प्रेक्षा

उत्तर—(c) अनन्वय

YUKTI ***ज्ञान***—*भारत के सम भारत है में अनन्वय अलंकार है क्योंकि भारत (उपमेय) की तुलना भारत (उपमान) से ही की गयी है।*

15. 'पीपर पात सरिस मन डोला' में अलंकार है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) उपमा (b) रूपक

(c) उत्प्रेक्षा (d) प्रतीप

उत्तर—(a) उपमा

YUKTI ***ज्ञान***—*पीपर पात सरिस मन डोला में उपमा (पूर्णोपमा) अलंकार है। यहाँ उपमान के चारों अंग– उपमेय– मन, उपमान– पीपर पात, वाचक– सरिस, धर्म – डोला (चंचल) उपस्थित हैं।*

अध्याय 9. हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य के पहले इतिहास लेखक **गार्सा-द-तासी** हैं। उन्होंने फ्रेंच भाषा में पुस्तक लिखी, उसका नाम है—*इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐंदुस्तानी (1839)*।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य इतिहास ग्रन्थ हैं—

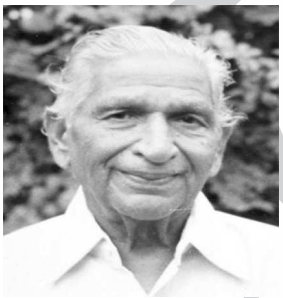
1.	शिवसिंह सरोज (1883 ई.)	शिवसिंह सेंगर
2.	मिश्र बन्धु विनोद (1913 ई.)	मिश्र बन्धु
3.	हिन्दी साहित्य का इतिहास (1929 ई.)	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल



4.	हिन्दी साहित्य की भूमिका	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी



5.	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938 ई.)	डॉ. रामकुमार वर्मा



6.	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (1965 ई.)	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त



7.	हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास	सम्पादक–नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (इसके 16 खण्ड हैं, छठवें खण्ड 'रीतिकाल' का सम्पादन डॉ. नगेन्द्र ने किया है।)



काल विभाजन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का काल विभाजन—

1.	वीरगाथा काल	(सम्वत् 1050-1375 वि.)
2.	भक्तिकाल	(सम्वत् 1375-1700 वि.)
3.	रीतिकाल	(सम्वत् 1700-1900 वि.)
4.	गद्यकाल	(सम्वत् 1900-1984 वि.)

उक्त काल विभाजन को संशोधित कर इस प्रकार सुविधाजनक बनाया गया है—

1.	आदिकाल	(1000 ई.-1350 ई.)
2.	भक्तिकाल	(1350 ई.-1650 ई.)
3.	रीतिकाल	(1650 ई.-1850 ई.)
4.	आधुनिक काल	(1850 ई.-अब तक)

नामकरण—

• आदिकाल	वीरगाथा काल, प्रारम्भिक काल, आरम्भिक काल, चारण काल, सिद्ध सामन्त युग, बीजवपन काल
• भक्तिकाल	पूर्व मध्यकाल
• रीतिकाल	उत्तर मध्यकाल, श्रृंगार काल, अलंकृत काल, कलाकाल
• आधुनिक काल	गद्यकाल, वर्तमान काल।

शुक्लजी का काल विभाजन इस सिद्धान्त पर टिका है—जनता की चित्तवृति तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर बनती है। शुक्ल जी ने कालों के नामकरण में दो बातों पर बल दिया है।

1. प्रवृत्ति की प्रधानता, 2. ग्रंथों की प्रसिद्धि।

9.1 आदिकाल (1000-1350 ई.)

आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

1.	ऐतिहासिकता का अभाव,	**2.**	कल्पना की प्रचुरता,
3.	युद्ध वर्णन में सजीवता,	**4.**	अप्रामाणिक रचनाएँ,
5.	वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता,	**6.**	आश्रयदाताओं की प्रशंसा,
7.	संकुचित राष्ट्रीयता,	**8.**	छन्दों की विविधता,
9.	डिंगल-पिंगल भाषा का प्रयोग।		

@UPSC_THOUGHT

आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ

- प्रथम कवि — राहुल सांकृत्यायन के अनुसार, सरहपा (7वीं शती) हिन्दी के पहले कवि हैं। राहुल सांकृत्यायन ने भले ही सरहपा को हिन्दी का पहला कवि माना हो पर उनका कोई स्वतंत्र ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। उनके फुटकल दोहे ही अब तक मिले हैं।
- प्रथम रचना — डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, देवसेन कृत श्रावकाचार (933 ई.) हिन्दी की पहली रचना है। इसी कारण डॉ. नगेन्द्र ने देवसेन की रचना श्रावकाचार को हिन्दी की प्रथम रचना स्वीकार किया है।

लेखक	काल	रचनाएँ
1. वीसल देव रासो	(1212 ई.)	नरपति नाल्ह
2. पृथ्वीराज रासो	(1343 ई.)	चंदबरदाई—हिन्दी का पहला महाकाव्य
3. परमाल रासो	(आल्हखण्ड)	जगनिक
4. हम्मीर रासो	(1357 ई.)	शार्ङ्गधर
5. खुमान रासो	(1729 ई.)	दलपति विजय
6. विजयपाल रासो	(16वीं सदी)	नल्ल सिंह

टिप्पणी

1. विजयपाल रासो, हम्मीर रासो अपभ्रंश में लिखे गए हैं।
2. अधिकांश रासो काव्यों में कल्पना की प्रधानता, ऐतिहासिकता का अभाव होने से वे अप्रामाणिक रचनाएँ हैं।
3. चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो हिन्दी का पहला महाकाव्य माना जाता है किन्तु वह भी अप्रामाणिक रचना मानी गयी है। मूल पृथ्वीराज रासो (बृहत रासो) में 69 सर्ग और लगभग 2500 पृष्ठ हैं। इसमें समय–समय पर यह वर्णन होता रहा है जिसके कारण इसे विकासशील महाकाव्य माना जाता है।

आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य

• संदेश रासक	(12वीं शती)	अब्दुर्रहमान
• पउम चरिउ	(8वीं शती)	स्वयम्भू (द्वारा रचित रामकाव्य) स्वयम्भू अपभ्रंश के बाल्मीकि कहे जाते हैं।
• रिट्ठणेमिचरिउ	(8वीं शती)	स्वयम्भू (द्वारा रचित रामकाव्य)
• महापुराण	(10वीं शती)	पुष्पदन्त। पुष्पदंत ने महाभारत की रचना महापुराण के नाम से अपभ्रंश में की है अतः उन्हें अपभ्रंश का व्यास कहा जाता है।
• भविसयत्तकहा	(10वीं शती)	धनपाल
• उपदेश रसायनरास	(12वीं शती)	जिनिदत्त सूरि
• पाहुड़ दोहा	(11वीं शती)	रामसिंह
• प्राकृत पैंगलम	—	संकलित रचनाएँ
• ढोला मारू रा दूहा	(11वीं शती)	कुशल लाभ

आदिकालीन गद्य

- वर्ण रत्नाकर — ज्योतिरीश्वर ठाकुर
- राउलवेल — रोडा—यह शिलांकित कृति है।
- डिंगल भाषा = अपभ्रंश + राजस्थानी,
- पिंगल भाषा = अपभ्रंश + ब्रजभाषा

आदिकाल में अमीरखुसरो ने मनोरंजक साहित्य (पहेलियाँ, कहानियाँ, दोसखुन) आदि खड़ी बोली हिन्दी में लिखे। वे फारसी के बहुत बड़े विद्वान थे खालिकवारी नामक शब्दकोश की रचना उन्होंने ही की। खड़ी बोली हिन्दी के वे पहले कवि माने जाते हैं।

विद्यापति मैथिली भाषा में पदावली की रचना करने वाले श्रृंगारी कवि हैं यद्यपि कुछ लोग उन्हें भक्त कवि भी मानते हैं।

आदिकाल में जैन साहित्य, नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य भी मिलता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल में इसे धार्मिक साहित्य (विशेषकर जैन साहित्य) मानकर साहित्य क्षेत्र से बहिष्कृत कर दिया, परन्तु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे साहित्य की कोटि में रखा है। जैन साहित्य में रास काव्य अधिक लिखे गए, यथा—

बुद्धिरास	–	मुनि शालिभद्र
चंदन वाला रास	–	आसगु कवि
स्थूलिभद्र रास	–	जिनि धर्मसूरि
रेवंतगिरि रास	–	विजय सेन सूरि
नेमिनाथ रास	–	सुमति मुनि
कच्छुली रास	–	प्रज्ञा तिलक
पंच पाण्डव रास	–	मुनि शालिभद्र
भरतेश्वर बाहुबली रास	–	मुनि शालिभद्र
उपदेश रसायन रास	–	जिनिदत्त सूरि
गौतम स्वामी रास	–	उदयवंत

9.2 भक्तिकाल (1350-1650 ई.)

भक्तिकाल की दो धाराएँ हैं—निर्गुण धारा, सगुण धारा।

निर्गुण धारा के दो उपविभाग हैं—सन्त काव्य धारा, सूफी काव्य धारा।

सगुण धारा की दो शाखाएँ हैं—कृष्ण भक्ति शाखा, राम भक्ति शाखा।

निर्गुण धारा

(i) सन्त काव्य धारा

इसे 'ज्ञानाश्रयी शाखा' भी कहते हैं। इसके प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं—

@UPSC_THOUGHT

संत काव्य धारा के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियाँ

	कवि	काल	कृतियाँ
1.	कबीर	(1398-1518 ई.)	साखी, सबद, रमैनी। इन तीनों का संकलन 'बीजक' नाम से कबीर के शिष्य धर्मदास ने किया।



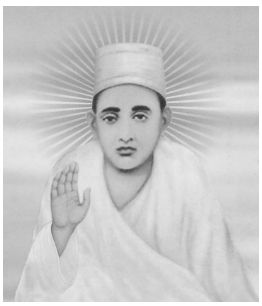
2.	रैदास	(1398-1448 ई.)	रविदास की बानी।



3.	गुरु नानक	(1469-1538 ई.)	जपुजी, रहिरास, असा-दी-वार सोहिला—गुरु ग्रन्थ साहब में नानक के पद संकलित हैं।



4.	हरिदास निरंजनी	(1455-1543 ई.)	अष्टपदी, जोगग्रन्थ, ब्रह्मस्तुति, हंस प्रबोध।
5.	दादू दयाल	(1544-1603 ई.)	हरडे वाणी, अंगवधू।



6.	मलूकदास	(1574-1682 ई.)	ज्ञानदीप, रतनखान, भक्तिविवेक, राम अवतार लीला, ध्रुव-चरित।



7.	सुन्दरदास	(1596-1689 ई.)	ज्ञानसमुद, सुन्दर विलास।

संतकाव्य की विशेषताएँ

1. निर्गुणोपासना,
2. अद्वैतवादी दर्शन,
3. बाह्याडम्बरों का खण्डन,
4. जाति-प्रथा का विरोध,
5. नारी विषयक दृष्टिकोण,
6. अपरिष्कृत भाषा,
7. शान्त रस की प्रधानता।

(ii) सूफी काव्य धारा

सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक काव्य, प्रेमगाथा काव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा भी कहा जाता है।

हिन्दी सूफी काव्य के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

प्रमुख कवि	रचना	रचनाकाल
• मुल्ला दाउद	चंदायन	1379 ई.
• कुतुबन	मृगावती	1503 ई.
• जायसी	पद्मावत	1540 ई.
• मंझन	मधुमालती	1545 ई.
• शेखनवी	ज्ञानदीप	1619 ई.
• नूर मुहम्मद	अनुराग बाँसुरी	1764 ई.
• नूर मुहम्मद	इन्द्रावती	1744 ई.

सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

1. मुसलमान कवि,
2. मसनवी शैली,
3. अलौकिक प्रेम की व्यंजना,
4. कथा संगठन का सौन्दर्य,
5. लोक पक्ष एवं हिन्दू संस्कृति का चित्रण,
6. वस्तु वर्णन,
7. भाव एवं व्यंजना,
8. खण्डन-मण्डन का अभाव
9. प्रबन्ध काव्यों की रचना
10. अरबी भाषा का प्रयोग
11. वियोग वर्णन की प्रधानता।

@UPSC_THOUGHT

सगुण धारा

(i) कृष्ण भक्ति शाखा

इस भक्ति शाखा के 5 प्रमुख सम्प्रदाय हैं।

कृष्ण भक्ति के सम्प्रदाय

	सम्प्रदाय	प्रवर्तक
1.	बल्लभ सम्प्रदाय	बल्लभाचार्य
2.	निम्बार्क सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य
3.	राधाबल्लभ सम्प्रदाय	हित हरिवंश
4.	हरिदासी (सखी) सम्प्रदाय	स्वामी हरिदास
5.	चैतन्य (गौड़ीय) सम्प्रदाय	चैतन्य महाप्रभु

अष्टछाप—अष्टछाप की स्थापना **गोस्वामी विट्ठलनाथ** ने 1565 ई. में की। इसमें जो आठ कवि थे, उनमें से चार बल्लभाचार्य के शिष्य थे—सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास और शेष चार विट्ठलनाथ के शिष्य थे—गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, नन्ददास, चतुर्भुजदास। इन आठ कवियों पर विट्ठलनाथ ने अपने आशीर्वाद की छाप लगाकर 'अष्टछाप' का गठन किया।

कृष्ण भक्त कवियों की चर्चा चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ वाबन वैष्णवन की वार्ता (दोनों के रचयिता गोकुलनाथ), भक्तमाल (नाभादास), भावप्रकाश (हरिराय), वल्लभ दिग्विजय (यदुनाथ) में की गई है।

पुष्टि मार्ग—बल्लभाचार्य का दार्शनिक मत शुद्धाद्वैत है तथा ये पुष्टिमार्गी थे। पुष्टि मार्ग की स्थापना **विष्णुस्वामी** ने की थी। पोषणं तदनुग्रह को पुष्टि कहा जाता है। ईश्वर की कृपा ही पुष्टि है। कृष्ण भक्त कवि पुष्टिमार्गी कवि थे।

कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ

1. कृष्ण लीला का वर्णन,
2. प्रेम लक्षणा भक्ति,
3. सौन्दर्य चित्रण,
4. प्रकृति चित्रण,
5. रीति तत्व का समावेश,
6. मुक्तक काव्य की रचना,
7. ब्रजभाषा का प्रयोग।

भ्रमर गीत परम्परा

उद्धव-गोपी संवाद को भ्रमर गीत नाम दिया गया है। इसमें प्रेम, भक्ति सगुणोपासना का समर्थन तथा ज्ञान, योग, निर्गुणोपासना का खण्डन है। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के बाल रूप (माधुर्य रूप) का चित्रण किया, किशोर जीवन की लीलाएँ चित्रित कीं। महाभारत के योगेश्वर कृष्ण का चित्रण इसमें नहीं हुआ।

कृष्ण भक्ति धारा के प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

कवि	काल	कृतियाँ
1. सूरदास	(1478-1583 ई.)	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी।



2. नंददास	(1533-1583 ई.)	रस मंजरी, अनेकार्थ मंजरी, रूप मंजरी, भ्रमरगीत, रास पंचाध्यायी।
3. श्रीभट्ट		युगल शतक।
4. ध्रुवदास	1573-1643 ई.)	ब्रजलीला, दानलीला, मानलीला, सिद्धान्त विचारलीला।
5. स्वामी हरिदास	(1478-1573 ई.)	केलिमाल, सिद्धान्त के पद।



6. मीराबाई	(1498-1546 ई.)	नरसीजी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, राग सोरठ के पद। रैदास इनके गुरु थे।



7. रसखान	(1533-1618 ई.)	सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दान लीला।

YUKTI

@UPSC_THOUGHT

(ii) राम भक्ति शाखा

हिन्दी राम भक्ति काव्य का मूल स्रोत संस्कृत में वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' महाकाव्य है। श्री सम्प्रदाय (रामानुजाचार्य), ब्रह्म सम्प्रदाय (मध्वाचार्य) रामभक्ति के दो सम्प्रदाय थे। रामानुजाचार्य की परम्परा में राघवानन्द और रामानंद हुए। धनुष-वाण धारी राम के लोकरक्षक स्वरूप की उपासना का प्रारम्भ उन्होंने ही किया। हिन्दी में राम काव्य के प्रमुख कवि हैं–

1. **तुलसीदास (1532—1623 ई.)**–रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, पार्वतीमंगल, जानकी मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्नावली, बरवै रामायण। रामचरितमानस (1574 ई.) तुलसी द्वारा रचित अवधी भाषा का महाकाव्य है। इसकी रचना लगभग 2 वर्ष 7 माह में हुई। यह अयोध्या, काशी, चित्रकूट में लिखा गया। रामचरितमानस में सात काण्ड हैं–बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड। विनय पत्रिका मुक्तक शैली में ब्रजभाषा में रचित काव्य ग्रन्थ है तथा इसमें 269 पद हैं।



2. **ईश्वरदास**–भरत मिलाप, अंगद पैज।
3. **लालदास**–अवध विलास।
4. **अग्रदास**–ध्यानमंजरी, अष्टयाम, रामभजन मंजरी, उपासना बावनी, पदावली।

राम काव्य की प्रवृत्तियाँ–

1. राम शक्ति शील, सौन्दर्य से युक्त मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तथा विष्णु के अवतार हैं।
2. दास्य भाव की भक्ति।
3. समन्वयवादी प्रवृत्ति।
4. नैतिक एवं पारिवारिक मूल्यों का समर्थन।
5. नारी विषयक दृष्टिकोण।
6. प्रबन्ध रचना की प्रवृत्ति।
7. विविध काव्य शैलियाँ।
8. अवधी भाषा का प्रयोग।
9. दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया, छन्दों का प्रयोग।
10. रस एवं अलंकार योजना।

तुलसी राम भक्ति काव्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे इसी कारण उनके बाद राम काव्य परम्परा क्षीण हो गयी क्योंकि कविगण सोचते थे कि यदि उन्होंने राम काव्य पर रचना की तो यहाँ कवि तुलसीदास से उनकी तुलना अवश्य की जाएगी और उनके आगे वे टिक नहीं सकेंगे।

केवल केशव ने रामचन्द्रिका नामक महाकाव्य की रचना की जो अपनी क्लिष्टता एवं हृदयहीनता के कारण 'रामचरितमानस' की बराबरी नहीं कर सकता। आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा के उपेक्षित पात्र उर्मिला के विरह का निरूपण करने हेतु 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना की।

9.3 रीतिकाल (1650-1850 ई.)

अन्य नाम–उत्तर मध्यकाल, श्रृंगार काल, अलंकृत काल, कलाकाल। रीति निरूपण (काव्यांगों के लक्षण, उदाहरण वाले ग्रन्थ-रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहे जाते हैं) की प्रधानता होने से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे **रीतिकाल** नाम दिया।

रीतिकाल को पहले उत्तर मध्यकाल कहा जाता था, परन्तु शुक्ल जी ने रीति की प्रमुखता को लक्ष्य कर इसका नाम रीतिकाल रखा। उनके अनुसार इस काल के कवियों में रीति निरूपण की प्रमुखता परिलक्षित होती है। श्रृंगार काल नाम विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया तथा अलंकृत काल – मिश्रबंधुओं ने। कला की प्रधानता देखकर कुछ विद्वानों ने इसे कला काल नाम भी दिया है।

रीतिकाल के वर्ग

रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

1. **रीतिबद्ध**–जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ (रीति ग्रन्थ) लिखकर रीति निरूपण किया, जैसे–देव, केशवदास, चिन्तामणि आदि।
2. **रीतिमुक्त**–जो रीति के बंधन से पूरी तरह मुक्त हैं, जैसे–घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर।
3. **रीति सिद्ध**–जिन्हें रीति की जानकारी थी, परन्तु उन्होंने लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखा, जैसे–बिहारी। रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी हैं। उनके ग्रन्थ का नाम है सतसई। बिहारी सतसई का सम्पादन रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' के नाम से किया है। बिहारी सतसई के दोहों की कुल संख्या 713 है। अन्य दोहे अप्रामाणिक हैं।

रीतिकाल के प्रमुख कवि

कवि	रचनाएँ
1. चिन्तामणि	कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, श्रृंगार मंजरी, रस विलास।
2. भूषण	शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक, शिवाबावनी, अलंकार प्रकाश।
3. मतिराम	ललित ललाम, मतिराम सतसई, अलंकार पंचाशिका, रसराज।

@UPSC_THOUGHT

4.	बिहारी	सतसई।



5.	देव	भावविलास, रस विलास, भवानी विलास, कुशल विलास, प्रेम तरंग, काव्य रसायन, देव शतक, राधिका विलास।
6.	घनानन्द	वियोग बेलि, सुजान हित प्रबन्ध, प्रीति पावस, कृपाकन्द निबन्ध।
7.	बोधा	विरह वारीश, इश्कनामा।
8.	पद्माकर	पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी, प्रबोध पचासा, कवि पच्चीसी।
9.	ग्वाल कवि	रसिकानन्द, यमुनालहरी, रसरंग, दूषणदर्पण, अलंकार भ्रम भंजन, दृगशतक।
10.	सेनापति	कवित्त रत्नाकर।
11.	केशव	रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका।

केशव को रीतिकाल का **पहला कवि** तथा **चिन्तामणि** को रीतिकाल का **प्रवर्तक** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने माना है। केशव को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। उन्हें सर्वाधिक सफलता संवाद निरूपण में मिली है। वस्तुतः रीतिग्रंथों की अविरल परम्परा केशव के पचास वर्षों बाद चिंतामणि से प्रारम्भ हुई। इसी कारण आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल ने चिंतामणि को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है तथा केशव को रीतिकाल का प्रथम कवि।

रीतिकाल में कुछ प्रबन्ध काव्य भी लिखे गए; यथा–

लेखक	**प्रबन्ध काव्य**
चिन्तामणि	– रामाश्वमेध, कृष्णचरित, रामायण
मण्डन	– जानकी जू को ब्याह, पुरन्दर माया
कुलपति मिश्र	– संग्राम सार
सुरति मिश्र	– रामचरित, श्रीकृष्ण चरित
गुमान मिश्र	– नैषध चरित
रामसिंह	– जुगल विलास
पद्माकर	– हिम्मत बहादुर विरुदावली
ग्वाल कवि	– हम्मीरहठ, विजय विनोद, काव्य पच्चीसी, छत्र प्रकाश
चंद्रशेखर वाजपेयी	–हम्मीर हठ

रीतिकालीन नाटक

जसवंत सिंह	– प्रबोध चंद्रोदय नाटक
नेवाज	– शकुंतला नाटक
सोमनाथ	– माधव विनोद नाटक
देव	– देवमाया प्रपंच नाटक
ब्रजवासी दास	– प्रबोध चंद्रोदय नाटक

रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ

1. रीति निरूपण, **2.** शृंगारिकता, **3.** अलंकरण की प्रधानता, **4.** चमत्कार प्रदर्शन, **5.** बहुज्ञता प्रदर्शन, **6.** भक्ति एवं नीति निरूपण, **7.** नारी भावना, **8.** प्रकृति चित्रण **9.** ब्रज भाषा का प्रयोग, **10.** मुक्तक काव्य रचना, **11.** दोहा, सवैया, कवित्त छन्दों का प्रयोग।

रीतिमुक्त काव्य-धारा के कवियों में विरह वर्णन की प्रधानता है। घनानन्द सुजान से प्रेम करते थे। उन्होंने अपने काव्य में स्वअनुभूति का चित्रण प्रमुखता से किया। भाषा के लक्षक एवं व्यंजक बल की सीमा इन्हीं को पता थी। घनानंद के काव्य में में लाक्षणिक पदावली प्रयुक्त है।

9.4 आधुनिक काल (1850 ई.- अब तक)

आधुनिक काल के **जनक** के रूप में **भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र** का नाम लिया जाता है। आधुनिक काल में गद्य की प्रधानता देखकर शुक्लजी ने इसे **गद्यकाल** नाम दिया है। आधुनिक काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है–आधुनिक काल का पद्य, आधुनिक काल का गद्य।



आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल में गद्यरचना की प्रवृत्ति प्रधान होने से इसे गद्यकाल नाम दिया है, परन्तु इस नामकरण से ऐसा आभास होता है कि इस काल में पद्य लिखा ही नहीं गया। इसलिए इसे आधुनिक काल कहना अधिक उपयुक्त है।

वस्तुतः आधुनिक काल में जितने सशक्त गद्य की रचना हुई उतने ही सशक्त पद्य की भी रचना हुई इसलिए आधुनिक काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (अ) पद्य भाग, (ब) गद्य भाग।

1. आधुनिक काल की कविता (पद्य)

आधुनिक काल की कविता (पद्य) को मोटे तौर पर निम्नलिखित 7 भागों (युगों) में विभक्त कर सकते हैं।

(i) भारतेन्दु युग (1850 – 1900 ई.)

(ii) द्विवेदी युग (1900 – 1920 ई.)

(iii) छायावादी युग (1920 – 1936 ई.)

@UPSC_THOUGHT

(iv) प्रगतिवादी युग (1936 – 1943 ई.)
(v) प्रयोगवादी युग (1943 – 1953 ई.)
(vi) नयी कविता (1953 – 1965 ई.)
(vii) नवगीत (1965 ई. के उपरान्त)

(i) भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

	कवि	काल	कृतियाँ
1.	भारतेन्दु	(1850–1885 ई.)	प्रेममालिका, प्रेमसरोवर, गीतगोविन्द, वर्षाविनोद, विनय प्रेम पचासा।
2.	बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	(1855-1938 ई.)	जीर्णजनपद, आनन्द अरुणोदय, मयंक महिमा, लालित्य लहरी, वर्षा बिन्दु।



3.	प्रतापनारायण मिश्र	(1856-1894 ई.)	प्रेमपुष्पावली, मन की लहर, लोकोक्ति शतक, शृंगार विलास।



4.	जगमोहन सिंह	(1857-1899 ई.)	प्रेम सम्पत्ति लता, श्यामलता, श्यामासरोजिनी, देवयानी।
5.	अम्बिकादत्त व्यास	(1858-1900 ई.)	पावस पचासा, हो हो होरी, बिहारी विहार।
6.	राधाकृष्णदास	(1865-1907 ई.)	भारत बारहमासा, देश दशा, रहीम के दोहों पर कुण्डलियाँ।
7.	राधाचरण गोस्वामी		नवभक्तमाल

भारतेन्दु युग आधुनिक काल का प्रवेशद्वार है, कविता रीतिकालीन विषयों को छोड़कर नये विषयों पर होने लगी। कविता की भाषा ब्रजभाषा ही रही। भारतेंदु जी ने कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र चंद्रिका, बाला बोधिनी पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त इस काल की अन्य प्रसिद्ध पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं–

पत्रिका का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशन स्थान	सम्पादक का नाम
हिन्दी प्रदीप	(1877 ई.)	इलाहाबाद	बालकृष्ण भट्ट



ब्राह्मण	(1883 ई.)	कानपुर	प्रताप नारायण मिश्र
प्रजाहितैषी		आगरा	राजा लक्ष्मण सिंह

(ii) द्विवेदी युग

महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के सम्पादक के रूप में हिन्दी (कविता) पर पर्याप्त प्रभाव डाला और तमाम कवियों को काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली को अपनाने की प्रेरणा दी। 'प्रिय प्रवास' (हरिऔध) और 'साकेत' (मैथिलीशरण गुप्त) द्विवेदी युग के दो महाकाव्य हैं। इस काल को **जागरण सुधार काल** भी कहा जाता है।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और कृतियाँ

1. **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.)**–प्रिय प्रवास (1914), वैदेही वनवास (1940 ई.), रस कलश (1940), चुभते चौपदे (1932 ई.), चोखे चौपदे (1932 ई.)।
2. **मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.)**–जयद्रथ वध (1910), भारत भारती (1912), पंचवटी (1925), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जय भारत (1952), विष्णुप्रिया (1957)।



3. **राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' (1868-1915 ई.)**–स्वदेशी कुण्डल, मृत्युंजय, बसंत वियोग, राम-रावण, विरोध।

@UPSC_THOUGHT

4. **गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' (1883-1972 ई.)**—कृषक क्रन्दन, प्रेम पचीसी, त्रिशूल तरंग, करुणा कादम्बिनी।
5. **रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)**—मिलन, पथिक, मानसी, स्वप्न।



6. **माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.)**—हिम किरीटिनी, हिमतरंगिनी, युगचारण, समर्पण।



7. **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960 ई.)**—कुंकुम, अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि, हम विषपायी जनम के।



8. **सुभद्राकुमारी चौहान (1905-1948 ई.)**—त्रिधारा, मुकुल।



9. **श्यामनारायण पाण्डेय**—हल्दी घाटी, जौहर।



10. **श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.)**—कश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत।
11. **जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (1866-1932 ई.)**—उद्धवशतक, गंगावतरण, शृंगारलहरी, हिंडोला, हरिश्चन्द्र।



द्विवेदी युग की प्रसिद्ध पत्रिकाएँ

1. नृसिंह	(1907 ई.)	कलकत्ता	अम्बिका प्रसाद वाजपेयी (साप्ताहिक)
2. अभ्युदय	(1907 ई.)	प्रयाग	मदन मोहन मालवीय (साप्ताहिक)
3. कर्मयोगी	(1909 ई.)	प्रयाग	सुन्दर लाल (साप्ताहिक)
4. मर्यादा	(1909 ई.)	प्रयाग	कृष्णकान्त मालवीय (साप्ताहिक)
5. प्रताप	(1913 ई.)	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी (साप्ताहिक)
6. प्रभा	(1913 ई.)	खण्डवा	कालूराम (मासिक)
7. सरस्वती	(1900 ई.)	पहले काशी से बाद में प्रयाग से	महावीर प्रसाद द्विवेदी (मासिक)
8. समालोचक	(1902 ई.)	जयपुर	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (मासिक)

9. इन्दु	(1909 ई.)	काशी	अम्बिका प्रसाद गुप्त (मासिक)
10. पाटलिपुत्र	(1914 ई.)	पटना	काशी प्रसाद जससवाल (मासिक)

हिन्दी का पहला समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड (1826 ई.) में कलकत्ता से बाबू जुगल किशोर के सम्पादकत्व ने प्रकाशित हुआ यह साप्ताहिक पत्र था।

द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियाँ

1. राष्ट्रीयता, **2.** इतिवृत्तात्मकता,
3. नैतिकता एवं आदर्शवाद, **4.** प्रकृति चित्रण,
5. सामाजिक समस्याओं का चित्रण, **6.** काव्य रूपों की विविधता,
7. खड़ीबोली को काव्य भाषा के रूप में अपनाना,
8. विविध छन्दों का प्रयोग।

(iii) छायावादी युग

छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है, ऐसा डॉ. नगेन्द्र का मत है।

छायावाद के प्रमुख कवि

1. जयशंकर प्रसाद	(1889-1937 ई.)	झरना (1918 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.) कामायनी (1935 ई.)।



2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	(1897-1963 ई.)	अनामिका (1923 ई.), परिमल (1930 ई.), गीतिका (1936 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), सरोजस्मृति, आराधना, गीतगुंज।



3. सुमित्रानन्दन पन्त	(1900-1977 ई.)	उच्छ्वास (1920 ई.), ग्रन्थि (1920 ई.), वीणा (1927 ई.), पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.)।



4. महादेवी वर्मा	(1907-1987 ई.)	नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), सांध्यगीत (1936 ई.), यामा (1940), दीपशिखा (1942)।



छायावादी काव्य की प्रवृत्तियाँ

1. आत्माभिव्यंजन, **2.** सौन्दर्य चित्रण, **3.** प्रकृति चित्रण, **4.** शृंगार निरूपण, **5.** नारी भावना, **6.** रहस्यवादी भावना, **7.** दुःख और वेदना का काव्य, **8.** लाक्षणिकता, **9.** प्रतीकात्मकता, **10.** खड़ी बोली का काव्य भाषा के रूप में प्रयोग।

'कामायनी' (1935) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **महाकाव्य** है, जिसमें 15 सर्ग हैं। चिन्ता कामायनी का पहला सर्ग है और आनन्द अन्तिम सर्ग। चिन्ताग्रस्त मनु ने आनन्द तक की यात्रा की है। कामायनी में तीन प्रमुख पात्र हैं—श्रद्धा, मनु, इड़ा जो क्रमशः हृदय, मन, बुद्धि के प्रतीक हैं। कामायनी में शैव दर्शन के अन्तर्गत आने वाले प्रत्यभिज्ञा दर्शन की मान्यताओं एवं शब्दावली का समावेश है। 'पल्लव' पन्तजी की सर्वश्रेष्ठ

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

छायावादी कृति है। इसमें 40 पृष्ठों की लम्बी भूमिका में पन्त जी ने छायावादी भाषा-शिल्प पर अपनी सम्मति व्यक्त की है। इसलिए इसे छायावाद का **मेनीफेस्टो** (घोषणा-पत्र) कहा जाता है। निराला ओज, औदात्य के कवि हैं। राम की शक्ति पूजा में निराला के व्यक्तिगत जीवन का सत्य भी है। यह सत्य की असत्य पर विजय का काव्य है। महादेवी जी वेदना की कवयित्री हैं। वेदना और रहस्यवाद की प्रधानता होने के कारण उनको 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। **चिदम्बरा** पर पन्त को तथा **यामा** पर महादेवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

छायावादी युगीन पत्र–पत्रिकाएँ

1.	मर्यादा	काशी	कृष्णकांत मालवीय एवं सम्पूर्णानन्द	मासिक
2.	चाँद	प्रयाग	रामरख सहगल	मासिक
3.	प्रभा	कानपुर	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	मासिक
4.	माधुरी	लखनऊ	दुलारे लाल भार्गव	मासिक
5.	सुधा	लखनऊ	सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला	मासिक
6.	विशाल भारत	कलकत्ता	बनारसीदास चतुर्वेदी	मासिक
7.	हंस	बनारस	प्रेमचंद	मासिक
8.	समन्वय	कलकत्ता	निराला जी	मासिक
9.	साहित्य संदेश	आगरा	गुलाबराय	मासिक
10.	कर्मवीर	जबलपुर	माखन लाल चतुर्वेदी	साप्ताहिक
11.	हिन्दी नवजीवन	अहमदाबाद	महात्मा गांधी	साप्ताहिक
12.	आज	वाराणसी	बाबूराम विष्णुराव पराड़कर	दैनिक

(iv) प्रगतिवादी युग

मार्क्सवाद के साहित्यिक संस्करण को प्रगतिवाद कहा गया। मार्क्स की तरह प्रगतिवादी कवि भी समाज को दो वर्गों में बाँटते हैं–शोषक और शोषित। प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनकी रचनाएँ हैं–

1. **नागार्जुन**–युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मासुर।
2. **केदारनाथ अग्रवाल**–युग की गंगा, नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आइना।
3. **शिवमंगल सिंह सुमन**-हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विंध्य हिमालय।



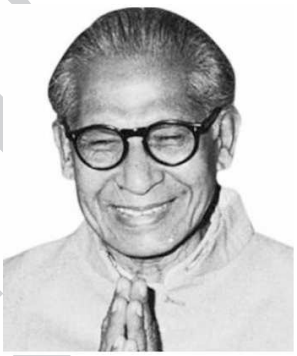
4. **त्रिलोचन शास्त्री**-धरती, मिट्टी की बारात, मैं उस जनपद का कवि हूँ।

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य का क्रमिक विकास हुआ है। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ भले ही छायावादी हैं, पर बाद में वे प्रगतिवाद की ओर मुड़ गये। पन्त की प्रगतिवादी रचनाएँ हैं–युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या।

दिनकर, निराला के काव्य में भी प्रगतिवादी स्वर है। दिनकर की हुंकार, निराला की बादल राग, कुकुरमुत्ता जैसी कविताओं में प्रगतिवादी स्वर है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि

1. **हरिवंश राय बच्चन**–मधुशाला, मधुबाला, निशा निमन्त्रण, मधुकलश, एकान्त संगीत, प्रणय पत्रिका, बंगाल का काल, जाल समेटा।



2. **रामधारी सिंह 'दिनकर'**–रेणुका, प्रणभंग, हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी, रसवंती, रश्मिरथी, हारे को हरिनाम, भृत्तितिलक। उर्वशी पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।



3. **रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'**–मधूलिका, अपराजिता, करील, किरणबेला, लाल चूनर, वर्षान्त के बादल।
4. **नरेन्द्र शर्मा**–धूल फूल, प्रभात फेरी, द्रौपदी, सुवर्ण, उत्तर जय, रक्त चन्दन, प्रवासी के गीत, पलाश वन, प्यासा निर्झर।

(v) प्रयोगवाद एवं नयी कविता

प्रयोगवाद के प्रवर्तन का श्रेय अज्ञेय को दिया जाता है, जिन्होंने तार सप्तक (1943) में सात ऐसे कवियों की रचनाएँ संकलित-सम्पादित कीं, जो नये प्रयोग में विश्वास करते थे।

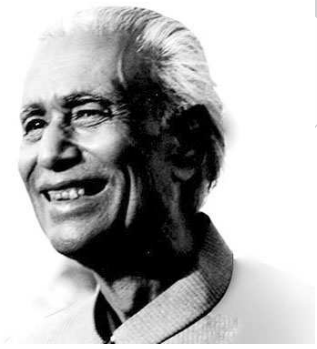
@UPSC_THOUGHT

भाषा, विषय-वस्तु, शिल्प आदि की दृष्टि से नये प्रयोग इन कवियों ने किये।

1. **तार सप्तक (1943) के कवि**—1. नेमिचन्द्र जैन, 2. मुक्तिबोध, 3. भारतभूषण अग्रवाल, 4. प्रभाकर माचवे, 5. गिरिजाकुमार माथुर, 6. रामविलास शर्मा, 7. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।
2. **दूसरा सप्तक (1951) के कवि**—1. भवानीप्रसाद मिश्र, 2. शकुन्तला माथुर, 3. हरिनारायण व्यास, 4. शमशेर बहादुर सिंह, 5. नरेश मेहता, 6. रघुवीर सहाय, 7. धर्मवीर भारती।
3. **तीसरा सप्तक (1959) के कवि**—1. प्रयागनारायण त्रिपाठी, 2. कुँवर नारायण, 3. कीर्ति चौधरी, 4. केदारनाथ सिंह, 5. मदन वात्सायन, 6. विजयदेव नारायण साही, 7. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।
4. **चौथा सप्तक (1978) के कवि**—1. अवधेश कुमार, 2. राजकुमार कुंभज, 3. स्वदेश भारती, 4. नंदकिशोर आचार्य, 5. सुमन राजे, 6. श्री राम वर्मा, 7. राजेन्द्र किशोर।

प्रयोगवाद एवं नयी कविता के प्रमुख कवि

कवि	नयी कविताएँ
1. अज्ञेय (1911-1987 ई.)	हरी घास पर क्षण भर, सागर मुद्रा, बाबरा अहेरी, चिन्ता, इन्द्र धनु रौंदे हुए ये, इत्यलम, आँगन के पार द्वार, असाध्य वीणा, अरी ओ करुणा प्रभामय, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ। अज्ञेय प्रयोगवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं।
2. मुक्ति बोध (1917-1964 ई.)	चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल।
3. धर्मवीर भारती (1926-1997 ई.)	अन्धा युग, ठण्डा लोहा, कनुप्रिया, सातगीत वर्ष।



4. नरेश मेहता (1922 ई.)	बनपांखी सुनो तो, बोलने दो चीड़ को, महाप्रस्थान, अरण्या, संशय की एक रात।
5. सर्वेश्वरदयाल सक्सैना	काठ की घण्टियाँ, बाँस का पुल, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी।
6. कुँवर नारायण	चक्रव्यूह, आत्मजयी, परिवेश–हम तुम, आमने-सामने कोई दूसरा नहीं।
7. शमशेरबहादुर सिंह	चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने,काल तुझसे होड़ मेरी, बात बोलेगी हम नहीं।
8. दुष्यन्त कुमार	साये में धूप, सूर्य का स्वागत।
9. श्रीकान्त वर्मा	दिनारम्भ।
10. विष्णु चन्द्र शर्मा	आकाश विभाजित है।
11. विजेन्द्र	त्रास।
12. धूमिल	संसद से सड़क तक।
13. लीलाधर जंगूड़ी	नाटक जारी है।

छायावादोत्तर काल की प्रमुख पत्रिकाएँ

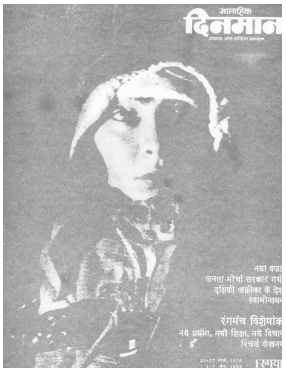
1. धर्मयुग	मुम्बई	धर्मवीर भारती	साप्ताहिक



2. साप्ताहिक हिन्दुस्तान	दिल्ली	मनोहर श्याम जोशी	साप्ताहिक

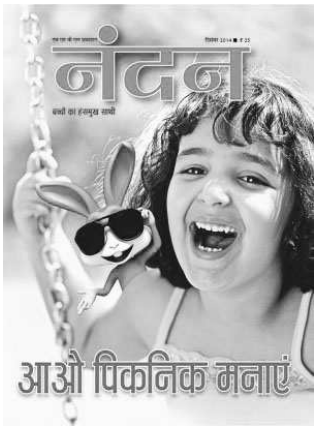


3. दिनमान	दिल्ली	घनश्याम पंकज	साप्ताहिक



@UPSC_THOUGHT

4. नंदन	दिल्ली	जय प्रकाश भारती	पाक्षिक



5. पराग	दिल्ली	कन्हैयालाल नंदन डॉ. हरि कृष्ण देवसेरे	पाक्षिक



6. कादम्बिनी	दिल्ली	राजेन्द्र अवस्थी	मासिक



7. हंस	दिल्ली	राजेन्द्र यादव	मासिक
8. सारिका	दिल्ली	कमलेश्वर, अवध नारायण मुद्गल	मासिक
9. गंगा	पटना	कमलेश्वर	त्रैमासिक
10. भाषा	दिल्ली	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय	त्रैमासिक
11. नई कहानियाँ	इलाहाबाद	भैरव प्रकाश गुप्ता	मासिक



(vi) नवगीत

नयी कविता और नवगीत एक-दूसरे के विरोधी नहीं, एक दूसरे के पूरक हैं। नवगीत विधा के प्रवर्तक डॉ. शंभू नाथ सिंह माने जाते हैं।

लेखक	नयी कविता/गीत
1. शम्भूनाथ सिंह	नवगीत दशक 1, 2, 3, नवगीत अर्द्धशती।
2. राजेन्द्र प्रसाद सिंह	आओ खुली बयार।
3. रामदरश मिश्र	पथ के गीत, बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ।
4. ठाकुर प्रसाद सिंह	वंशी और मॉडल।
5. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'	कुहरे की प्रत्यंचा, चुप्पियों की पैंजनी, यात्राएँ साथ-साथ।
6. वीरेन्द्र मिश्र	झुलसा है छाया नट धूप में।
7. उमाकान्त मालवीय	सुबह रक्त पलाश की।
8. रमाकान्त अवस्थी	बन्द न करना द्वार।
9. रवीन्द्र भ्रमर	इतिहास दुबारा लिखो, रमेश रंजक के लोक गीत, सोन मछली मन वंशी।
10. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'	मन पलाश वन और दहकती संध्या।

आधुनिक (वर्तमान) पत्रिकाएँ

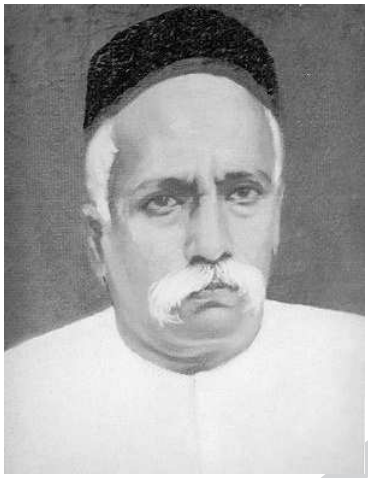
1. संचेतना	दिल्ली	डॉ. महीप सिंह	मासिक
2. आलोचना	दिल्ली	डॉ. नामवर सिंह	त्रैमासिक
3. समीक्षा	पटना	गोपाल राय	मासिक
4. आजकल	दिल्ली	प्रताप सिंह विष्ट	–
5. वैचारिकी	मुम्बई	मणिका मोहिनी	मासिक
6. विकल्प	प्रयाग	धनंजय	मासिक
7. वसुधा	जबलपुर	हरिशंकर परसाई	मासिक
8. कथान्तर	पटना	प्रताप सिंह	मासिक
9. तद्भव	लखनऊ	अखिलेश	मासिक
10. ज्ञानोदय	कलकत्ता	कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर	मासिक

@UPSC_THOUGHT

2. आधुनिक काल की विभिन्न गद्य विधाएँ

(i) उपन्यास

उपन्यासकार	उपन्यास
• लाला श्रीनिवास दास	परीक्षा गुरु (1882 ई.) हिन्दी का पहला उपन्यास (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार)
• श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती (1877 ई.)
• देवकीनन्दन खत्री	चन्द्रकान्ता (1891), चन्द्रकान्ता संतति, भूतनाथ, काजर की कोठरी



• राधाकृष्णदास	निःसहाय हिन्दू (1890)
• हरिऔध	ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल
• प्रेमचन्द	सेवा सदन (1918 ई.), प्रेमाश्रम (1922 ई.), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926 ई.), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1933), गोदान (1935) मंगलसूत्र (अपूर्ण)



• कौशिक	माँ, भिखारिणी
• जयशंकर प्रसाद	कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
• चतुरसेन शास्त्री	वैशाली की नगरवधू, वयं रक्षामः, सोमनाथ, आलमगीर, सोना और खून।
• वृंदावनलाल वर्मा	गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, झाँसी की रानी, माधव जी सिन्धिया।



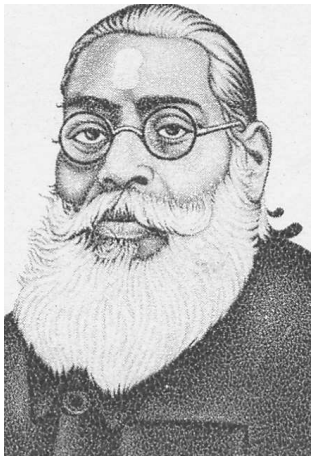
• निराला	अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती।
• जैनेन्द्र	परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत।
• इलाचन्द्र जोशी	संन्यासी, परदे की रानी, प्रेत और छाया, जहाज का पंक्षी, जिप्सी, ऋतु चक्र।
• अज्ञेय	शेखर एक जीवनी (दो भाग), अपने अपने अजनबी, नदी के द्वीप।
• यशपाल	दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, देशद्रोही, मनुष्य के रूप, अमिता, दिव्या, झूठा–सच, तेरी मेरी उसकी बात।
• अमृतलाल नागर	बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, खंजन नयन, मानस का हंस, अमृत और विष।



• हजारीप्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्र लेख, पुनर्नवा, अथ रैक्व आख्यान।
• फणीश्वरनाथ 'रेणु'	मैला आंचल (1954), परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा।
• नागार्जुन	रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, दुखमोचन, बाबा केदारनाथ, बलचनमा।

@UPSC_THOUGHT

- शिवप्रसाद गुप्त — देहाती दुनिया।



- शिवप्रसाद सिंह — अलग-अलग वैतरणी, गली आगे मुड़ती है, नीला चांद, वैश्वानर, कुहरे में युद्ध।
- श्री लाल शुक्ल — राग दरबारी, आदमी का जहर।
- निर्मल वर्मा — लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, वे दिन, एक चिथड़ा सुख।
- उषा प्रियवंदा — पचपन खंभे लाल दीवारें।
- मन्नू भण्डारी — आपका बंटी, महाभोज, एक इंच मुस्कान (राजेन्द्र यादव के साथ)।
- सुरेन्द्र वर्मा — मुझे चाँद चाहिए।



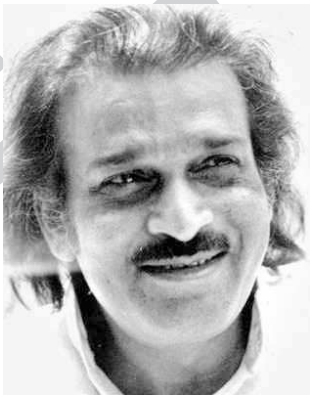
- मनोहर श्याम जोशी — कुरु कुरु स्वाहा, क्याप, लखनऊ मेरा लखनऊ।



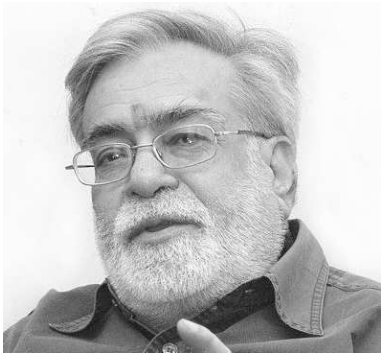
- वदी उज्जमा — एक चूहे की मौत।
- धर्मवीर भारती — गुनाहों का देवता।
- शैलेश मटियानी — बोरीबली से बोरीबन्दर।
- अमृत राय — बीज, नागफनी का देश, हाथी के दाँत, सुख-दुःख।



- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना — सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, सूने चौखटे।



- नरेन्द्र कोहली — दीक्षा, संघर्ष, युद्ध, अवसर, आतंक, महासागर (8 भाग)।



- नरेश मेहता — डूबते मस्तूल, प्रथम फाल्गुन।
- गिरिराज किशोर — पहला गिरमिटिया।

@UPSC_THOUGHT

- मृदुला गर्ग — चितकोबरा, कठगुलाब, उसके हिस्से की धूप।



- विष्णु प्रभाकर — अर्द्धनारीश्वर।
- महेन्द्र भल्ला — एक पति के नोट्स।
- ममता कालिया — दुक्खम सुक्खम, बेघर, नरक-दर-नरक।



- तुलसीराम — मणि कर्णिका।
- मृणाल पाण्डेय — षटरंग पुराण, रास्तों पर भटकते हुए।



- कमलेश्वर — डाक बँगला, काली आँधी, सुबह दोपहर शाम, एक सड़क सत्तावन गलियाँ।
- काशीनाथ सिंह — काशी का असी, रेहन पर रघु।
- ज्ञान चतुर्वेदी — नरक यात्रा।
- भीष्म साहनी — तमस, बसंती, झरोखे, कड़ियाँ।
- भगवतीचरण वर्मा — चित्रलेखा, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, भूले-बिखरे चित्र, सामर्थ्य और सीमा।



(ii) आत्मकथाएँ

आत्मकथा	लेखक
अर्द्धकथानक	बनारसीदास जैन
मेरी जीवन यात्रा	राहुल सांकृत्यायन
सिंहावलोकन	यशपाल
मेरी अन्तर्कहानी	चतुरसेन शास्त्री
मेरी असफलताएँ	बाबू गुलाबराय



- क्या भूलूँ क्या याद करूँ — हरिवंश राय बच्चन
- नीड़ का निर्माण फिर — हरिवंश राय बच्चन
- दस द्वार से सोपान तक — हरिवंश राय बच्चन
- प्रवास की डायरी — हरिवंश राय बच्चन
- चाँद सूरज के वीरन — देवेन्द्र सत्यार्थी



@UPSC_THOUGHT

- अपनी खबर — पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
- साठ वर्ष—एक रेखांकन — सुमित्रानन्दन पन्त
- गालिब छुटी शराब — रवीन्द्र कालिया
- जो मैंने जिया — कमलेश्वर

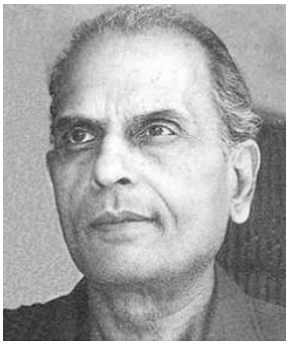


- गुड़िया भीतर गुड़िया — मैत्रेयी पुष्पा



(iii) जीवनी

जीवनी	लेखक
• भक्तमाल	नाभादास
• आवारा मसीहा (शरत चन्द्र की जीवनी)	विष्णु प्रभाकर
• कलम का सिपाही (प्रेमचन्द की जीवनी)	अमृतराय
• निराला की साहित्य साधना (निराला की जीवनी) (3 खण्ड)	रामविलास शर्मा



- गुरु नानक — मन्मथनाथ गुप्त



- प्रेमचन्द घर में — शिवरानी देवी
- दिनकर-एक सहज पुरुष — शिवसागर मिश्र
- रांगेय राघव–एक अंतरंग परिचय — सुलोचना रांगेय राघव
- बाबूजी (नागार्जुन) — शोभाकान्त
- महाप्राण निराला — गंगाप्रसाद पाण्डेय
- चम्पारन में महात्मा गाँधी — राजेन्द्र प्रसाद
- मेरे जीवन में गाँधी जी — घनश्यामदास बिड़ला



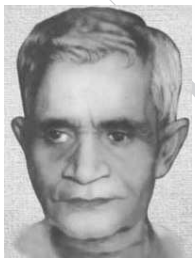
- वट वृक्ष की छाया में — कुमुद नागर
- महामानव महापण्डित — कमला सांकृत्यायन



@UPSC_THOUGHT

(iv) नाटक

लेखक	नाटक
• भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति (1873), सत्य हरिश्चन्द्र (1875), श्री चंद्रावली (1876), भारत दुर्दशा (1880), नील देवी (1881), अंधेर नगरी (1881), सती प्रताप (1883), प्रेम जोगिनी (1875), भारत जननी (1877)।
• श्रीनिवास दास	प्रहलाद चरित्र, तप्तासंवरण, रणधीर–प्रेम मोहिनी।
• राधाकृष्णदास	महाराणा प्रताप, महारानी पद्मावती, धर्मालाप, दुःखिनी बाला।
• बालकृष्ण भट्ट	दमयंती स्वयम्वर, वेणी संहार, कलिराज की सभा, शिक्षादान, रेल का विकट खेल।
• राधाचरण गोस्वामी	तन मन धन गोसाईं जी के अर्पन, बूढ़े मुँह मुहासे, लोग देखें तमासे, अमर सिंह राठौर, सती चन्द्रावली।
• जयशंकर प्रसाद	राज्यश्री (1915), विशाख (1921), अजातशत्रु (1922), कामना (1924), जनमेजय का नागयज्ञ (1926 ई.), स्कंदगुप्त (1928), एक घूँट (1930), चन्द्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)।
• हरिकृष्ण 'प्रेमी'	रक्षाबन्धन, प्रतिशोध, स्वप्नभंग, आहुति, आन का मान, अमृत पुत्री, विषपान, कीर्ति स्तम्भ, स्वर्ण विहान।
• लक्ष्मी नारायण मिश्र	संन्यासी, मुक्ति का रहस्य, राजयोग, सिन्दूर की होली, आधी रात, गरुड़ध्वज, वितस्ता की लहरें।,



• विष्णु प्रभाकर	समाधि, डॉक्टर, युगे युगे क्रान्ति, टूटते परिवेश।



• जगदीशचन्द्र माथुर	कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नन्दन।
• मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे।
• लक्ष्मीनारायण लाल	अन्धा कुआँ, दर्पण, मादा कैक्टस, सूर्य मुख, मिस्टर अभिमन्यु, कर्फ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, सगुन पंछी, सबरंग-मोहभंग।
• सुरेन्द्र वर्मा	सेतुबंध, द्रौपदी, नायक खलनायक विदूषक, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी।
• नरेश मेहता	सुनहरे घण्टे, खण्डित यात्राएँ।
• भीष्म साहनी	कबिरा खड़ा बजार में।
• मणि मधुकर	रस गन्धर्व, बुलबुल सराय।
• गिरिराज किशोर	नरमेध, प्रजा ही रहने दो।



• सुमित्रानन्दन पन्त	रजत शिखर, शिल्पी।
• बेचन शर्मा 'उग्र'	चुम्बन, डिक्टेटर।

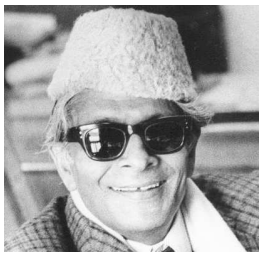


(v) एकांकी

लेखक	एकांकी
• भुवनेश्वर	कारवाँ, स्ट्राइक, प्रतिभा का विवाह, लॉटरी, ऊसर।

@UPSC_THOUGHT

- रामकुमार वर्मा — बादल की मृत्यु, औरंगजेब की आखिरी रात, दीपदान, रेशमी टाई, सप्तकिरण, कौमुदी महोत्सव।
- उपेन्द्रनाथ अश्क — चरवाहे, तूफान से पहले, कैद और उड़ान, अधिकार का रक्षक, स्वर्ग की झलक, लक्ष्मी का स्वागत, सूखी डाली।



- उदयशंकर भट्ट — एक ही कब्र में, समस्या का अन्त, आज का आदमी, स्त्री का हृदय, पर्दे के पीछे।
- मोहन राकेश — अण्डे के छिलके, सिपाही की माँ, कर्फ्यू।



- धर्मवीर भारती — नदी प्यासी थी, आवाज का नीलाम, नीली झील।
- रेवतीरमण शर्मा — मुझे जीने दो, अमावस का अन्धकार, उतार-चढ़ाव।
- चिरंजीत — दफ्तर जाने का समय, चतुर्भुज महाशय, नया जन्म, चक्रव्यूह।
- जगदीश चन्द्र माथुर — भोर का तारा, कबूतर खाना, घोंसले, ओ मेरे सपने।
- सेठ गोविन्ददास — कंगाल नहीं, सप्तरश्मि, एकादशी पंचभूत, चतुष्पथ।



- विष्णु प्रभाकर — प्रकाश और परछाईं, इंसान, बारह एकांकी, दस बजे रात, ये दायरे।
- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' — चार बेचारे।

(vi) रेखाचित्र संस्मरण

लेखक	संस्मरण
पदम सिंह शर्मा	पद्मपराग
श्री राम शर्मा	बोलती प्रतिमा
महादेवी वर्मा	अतीत के चलचित्र
महादेवी वर्मा	स्मृति की रेखाएँ
महादेवी वर्मा	पथ के साथी
महादेवी वर्मा	मेरा परिवार
रामवृक्ष बेनीपुरी	माटी की मूरतें, मील के पत्थर



- बनारसीदास चतुर्वेदी — संस्मरण, रेखाचित्र, हमारे आराध्य



- जगदीश चन्द्र माथुर — सेतुबन्ध, दस तस्वीरें

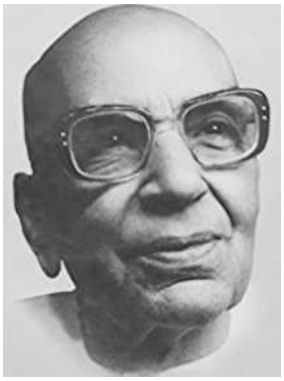


- डॉ. नगेन्द्र — चेतना के बिम्ब

YUKTI

@UPSC_THOUGHT

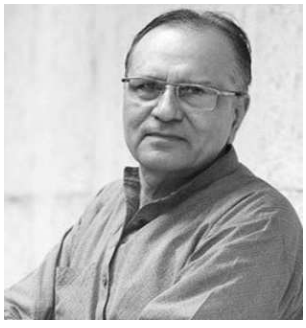
- डॉ. नगेन्द्र — कुछ शब्द कुछ रेखाएँ
- विष्णु प्रभाकर — सृजन के सेतु
- सेठ गोविन्द दास — स्मृतिकण
- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' — भूले हुए चेहरे, जिन्दगी मुस्कराई
- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' — दीप जले शंख बजे, माटी हो गई सोना



- प्रकाश चन्द्र गुप्त — रेखाचित्र, पुरानी स्मृतियाँ, विशाखा
- विनय मोहन शर्मा — रेखाएँ और रंग
- देवेन्द्र सत्यार्थी — क्या गोरी क्या साँवरी, रेखाएँ बोल उठीं
- ओंकार शरद — लंका महाराजिन
- सत्यवती मलिक — अमिट रेखाएँ



- अज्ञेय — आत्मनेपद
- श्रीराम शर्मा — सेवाग्राम की डायरी
- रवीन्द्र कालिया — सृजन के सहयात्री



- फणीश्वरनाथ 'रेणु' — वन तुलसी की गन्ध



- रामविलास शर्मा — विराम चिह्न
- राहुल सांकृत्यायन — मेरे बचपन की स्मृतियाँ
- हरिवंश राय बच्चन — नये पुराने झरोखे

(vii) यात्रावृत्त

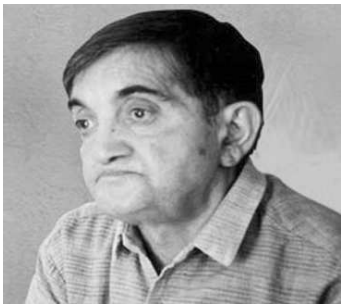
लेखक	यात्रावृत्त
भारतेन्दु	सरयू पार की यात्रा, मेरी लखनऊ यात्रा।
सत्यदेव परिव्राजक	मेरी जर्मन यात्रा, यात्री मित्र, यूरोप की सुखद स्मृतियाँ, नयी दुनिया के मेरे अद्भुत संस्मरण।
कन्हैयालाल मिश्र	हमारी जापान यात्रा।
शिवप्रसाद गुप्त	पृथ्वी प्रदक्षिणा।
राहुल सांकृत्यायन	मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, घुमक्कड़ शास्त्र, रूस में पच्चीस माह, एशिया के दुर्लभ भू-खण्डों में।



- यशपाल — राहबीती, लोहे की दीवार के दोनों ओर।
- अज्ञेय — एक बूँद सहसा उछली, अरे यायावर रहेगा याद, बहता पानी निर्मला।

@UPSC_THOUGHT

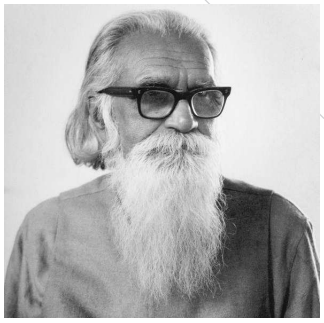
- निर्मल वर्मा — चीड़ों पर चाँदनी, हँसती घाटी दहकते निर्झर।



- डॉ. नगेन्द्र — अप्रवासी की यात्राएँ।
- डॉ. रघुवंश — हरी घाटी।
- कमलेश्वर — आँखों देखा पाकिस्तान।
- रामधारीसिंह 'दिनकर' — देश-विदेश।
- भगवत शरण उपाध्याय — कलकत्ता से पीकिंग



- मनोहरश्याम जोशी — क्या हाल हैं चीन के।
- काका कालेलकर — हिमालय की यात्रा



- मुनि कान्ति सागर — खोज की पगडण्डियाँ, खण्डहरों का वैभव

(viii) आलोचना

लेखक	आलोचना
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि, रसमीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, जायसी ग्रन्थावली।
नन्ददुलारे वाजपेयी	हिन्दी साहित्य–बीसवीं सदी, आधुनिक साहित्य, जयशंकर प्रसाद, राष्ट्रभाषा की समस्या।



हजारीप्रसाद द्विवेदी	हिन्दी साहित्य का आदिकाल, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य, मध्यकालीन बोध का स्वरूप।
रामविलास शर्मा	प्रगति और परम्परा, आस्था और सौन्दर्य, भाषा और समाज, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, नयी कविता और अस्तित्ववाद, मार्क्स और पिछड़े हुए समाज।
डॉ. नगेन्द्र	रस सिद्धान्त, साकेत एक अध्ययन, रीतिकाव्य की भूमिका, देव और उनकी कविता, नयी समीक्षा नये सन्दर्भ, शैली विज्ञान।
डॉ. नामवर सिंह	कहानी और नयी कहानी, छायावाद, कविता के नये प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज।
लक्ष्मीकान्त वर्मा	नयी कविता के प्रतिमान।
रामस्वरूप चतुर्वेदी	भाषा और संवेदना।
विद्यानिवास मिश्र	रीति विज्ञान।



डॉ. मैनेजर पाण्डेय	साहित्य और इतिहास दृष्टि।
प्रभाकर श्रोत्रिय	कविता की तीसरी आँख।
मलयज	कविता से साक्षात्कार।

YUKTI

@UPSC_THOUGHT

- निर्मला जैन — रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र।



- नन्दकिशोर आचार्य — साहित्य का स्वभाव।



- रांगेय राघव — काव्य, कला और शास्त्र।



- शान्तिप्रिय द्विवेदी — साहित्यिकी, हमारे साहित्य निर्माता।



- अमृतराय — विचारधारा और साहित्य।
- निराला — रवीन्द्र कविता कानन।
- विजयदेव नारायण साही — लघु मानव के बदले कविता पर एक बहस।



- परमानन्द श्रीवास्तव — दूसरा सौन्दर्यशास्त्र क्यों।

(ix) निबन्ध

लेखक	निबन्ध संग्रह
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	सुलोचना, परिहास वंचक, दिल्ली दरबार दर्पण, लीलावती।
बालकृष्ण भट्ट	साहित्य सुमन, भट्ट निबन्ध माला (2 भाग)।
महावीरप्रसाद द्विवेदी	रसज्ञ रंजन, साहित्य सीकर, कौटिल्य कुठार, बनिता विलास, कालिदास एवं उनकी कविता।



- पूर्णसिंह — (6 निबन्ध) अध्यापक पूर्ण सिंह के निबन्ध
- श्यामसुन्दरदास — गद्य कुसुमावली, रूपक रहस्य।



- रामचन्द्र शुक्ल — चिन्तामणि (2 भाग), रस मीमांसा।
- सम्पूर्णानन्द — चिद्विलास, जीवन और दर्शन, ज्योतिर्विनोद, पृथ्वी से सप्तर्षि मण्डल।



- हजारीप्रसाद द्विवेदी — अशोक के फूल, विचार और वितर्क, विचार प्रवाह, आलोक पर्व, कल्पलता, कुटज।
- विद्यानिवास मिश्र — तुम चन्दन हम पानी, मैंने सिल पहुँचाई, छितवन की छाँह, कदम की फूली डाल, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, हल्दी दूब, कौन तू फुलवा, बीनन हारी, कँटीले काँटों के आर-पार।

@UPSC_THOUGHT

- कुबेरनाथ राय — रस आखेटक, प्रिया नीलकण्ठी, पर्ण मुकुट, लौह मृदंग, गंधमादन, कामधेनु, त्रेता का वृहद् साम।



- गुलाबराय — ठलुआ क्लब, फिर निराशा क्यों, मेरी असफलताएँ, मन की बातें।

(x) हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ

पत्र-पत्रिका	सम्पादक
उदन्त मार्तण्ड	पं. जुगल किशोर
बंगदूत	राजा राममोहन राय
बनारस अखबार	राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'
प्रजा हितैषी	राजा लक्ष्मण सिंह
कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
हरिश्चन्द्र चन्द्रिका	भारतेन्दु हश्चिन्द्र
बाला बोधिनी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र



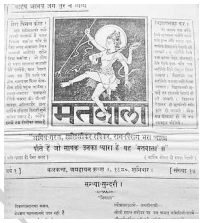
हिन्दी प्रदीप	बालकृष्ण भट्ट
ब्राह्मण	प्रताप नारायण मिश्र
भारत मित्र	बालमुकुन्द गुप्त



आनन्द कादम्बिनी	बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
भारतेन्दु	राधाचरण गोस्वामी
इन्दु	अम्बिकाप्रसाद गुप्त, रूपनारायण पाण्डेय
प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी
प्रभा	बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी
कर्मवीर	माखनलाल चतुर्वेदी



मतवाला	निराला



सुधा	दुलारेलाल भार्गव
हंस	प्रेमचंद
साहित्य संदेश	बाबू गुलाबराय
रूपाभ	सुमित्रानन्दन पन्त
आलोचना	शिवदान सिंह चौहान
नयी कविता	डॉ. जगदीश गुप्त
ज्ञानोदय	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

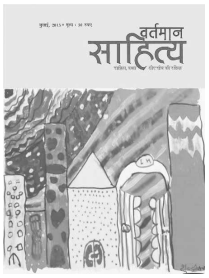


निकष	धर्मवीर भारती
धर्मयुग	धर्मवीर भारती
पराग	कन्हैयालाल नंदन
कादम्बिनी	राजेन्द्र अवस्थी
दस्तावेज	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
समालोचक	डॉ. रामविलास शर्मा
कृति	श्रीकान्त वर्मा
पहल	ज्ञानरंजन
हंस (पुनर्प्रकाशन)	राजेन्द्र यादव



@UPSC_THOUGHT

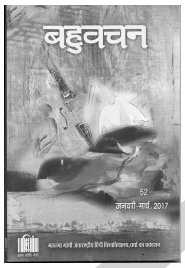
- वर्तमान साहित्य — विभूति नारायण



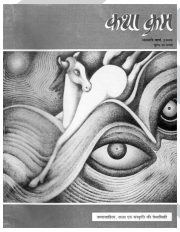
- साहित्य अमृत — विद्यानिवास मिश्र



- बहुवचन — अशोक वाजपेयी



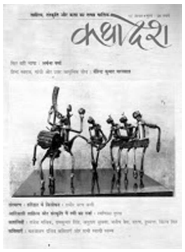
- कथाक्रम — शैलेन्द्र सागर



- पाखी — अपूर्व जोशी



- तद्भव — अखिलेश
- परख — कृष्ण मोहन
- वागर्थ — प्रभाकर श्रोत्रिय
- वाक् — सुधीश पचौरी
- कथादेश — हरिनारायण



- साप्ताहिक हिन्दुस्तान — मनोहर श्याम जोशी

पुरस्कृत रचनाएँ

ज्ञानपीठ पुरस्कार–

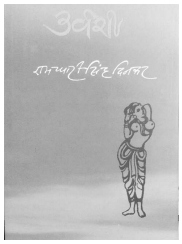
यह पुरस्कार साहू शांतिप्रसाद जैन ने 1961 में प्रारम्भ किया जिसमें भारत की सभी भाषाओं में श्रेष्ठ समझी जाने वाली रचना को पुरस्कृत किया जाता है। सभी भारतीय भाषाओं से तात्पर्य है– संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ। इसमें अब 11 लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिन्दी रचनाएँ

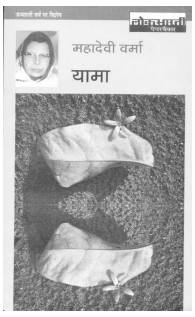
	रचना	लेखक	वर्ष
1.	चिदम्बरा	सुमित्रानन्दन पन्त	1968 ई.



2.	उर्वशी	रामधारी सिंह 'दिनकर'	1972 ई.



3.	कितनी नावों में कितनी बार	अज्ञेय	1978 ई.
4.	यामा	महादेवी वर्मा	1982 ई.



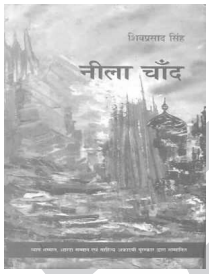
5.	सम्पूर्ण साहित्य	नरेश मेहता	1992 ई.
6.	सम्पूर्ण साहित्य	निर्मल वर्मा (पंजाबी लेखक गुरुदयाल सिंह के साथ)	1999 ई.
7.	सम्पूर्ण साहित्य	कुँवर नारायण	2005 ई.
8.	सम्पूर्ण साहित्य	श्रीलाल शुक्ल (अमरकान्त के साथ)	2009 ई.
9.	हिन्दी साहित्य	केदार नाथ सिंह	2013 ई.
10.	हिन्दी साहित्य	कृष्णा सोबती	2017 ई.

व्यास सम्मान–

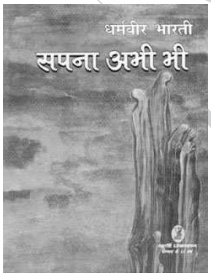
यह ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद हिन्दी में प्राप्त दूसरा सबसे बड़ा सम्मान है, जो हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ रचना के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। इस पुरस्कार को के. के. बिड़ला ने 1991 में प्रारम्भ किया था। इसमें 3 लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाता हैं।

व्यास सम्मान प्राप्त रचनाएँ

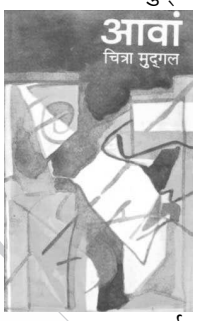
	रचना	लेखक	वर्ष
1.	भारत के भाषा परिवार और हिन्दी	रामविलास शर्मा	1991 ई.
2.	नीला चाँद (उपन्यास)	शिवप्रसाद सिंह	1992 ई.



3.	मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य)	गिरिजा कुमार माथुर	1993 ई.
4.	सपना अभी भी (काव्य)	धर्मवीर भारती	1994 ई.



5.	आत्मजयी (काव्य)	कुँवर नारायण	1955 ई.
6.	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (आलोचना)	रामस्वरूप चतुर्वेदी	1965 ई.
7.	उत्तर कबीर, अन्य कविताएँ (काव्य)	केदारनाथ सिंह	1997 ई.
8.	पाँच आँगनों वाला घर (उपन्यास)	गोविंद मिश्र	1998 ई.
9.	विश्रामपुर का सन्त (उपन्यास)	श्रीलाल शुक्ल	1999 ई.
10.	पहला गिरिमिटिया (उपन्यास)	गिरिराज किशोर	2000 ई.
11.	आलोचना का पक्ष (आलोचना)	रमेशचन्द्र शाह	2001 ई.
12.	पृथ्वी का कृष्ण पक्ष (काव्य)	कैलाश वाजपेयी	2002 ई.
13.	आवाँ (उपन्यास)	चित्रा मुद्गल	2003 ई.



14.	कठगुलाब (उपन्यास)	मृदुला गर्ग	2004 ई.



15.	कथा सतीसर (उपन्यास)	चन्द्रकान्ता	2005 ई.
16.	कविता का अर्थात् (आलोचना)	परमानन्द श्रीवास्तव	2006 ई.



17.	समय सरगम	कृष्णा सोबती	2007 ई.
18.	एक कहानी यह भी (आत्मकथा)	मन्नू भण्डारी	2008 ई.
19.	इन्हीं हथियारों से (उपन्यास)	अमरकान्त	2009 ई.
20.	फिर भी कुछ रह जायेंगे (काव्य)	विश्वनाथ तिवारी	2010 ई.
21.	आम के पत्ते (काव्य संग्रह)	रामदरश मिश्र	2011 ई.
22.	न भूतो न भविष्यति (उपन्यास)	नरेन्द्र कोहली	2012 ई.
23.	व्योमकेश दरवेश (उपन्यास)	विश्वनाथ त्रिपाठी	2013 ई.

@UPSC_THOUGHT

24. प्रेमचन्द की कहानियों का कालक्रम अनुसार अध्ययन	कमलकिशोर गोयनका	2014 ई.
25. क्षमा (काव्य संग्रह)	डॉ. सुनील जैन	2015 ई.
26. शमी का वृक्ष (काव्य) पद्म पंखुरी की धार से (उपन्यास)	सुरेन्द्र वर्मा	2016 ई.
27. दुक्खम सुक्खम (उपन्यास)	ममता कालिया	2017 ई.

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. कवि 'जगनिक' की रचना का नाम है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) खुमान रासो (b) मृगावती

(c) आल्हखण्ड (d) पद्मावत

उत्तर—(c) आल्हखण्ड

YUKTI *ज्ञान—कवि जगनिक आदिकाल के कवि थे उन्होंने परमाल रासो की रचना की जिसे आल्हखण्ड भी कहा जाता है।*

2. 'पद्मावत' के रचनाकार हैं— **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुर्रहमान

(c) मोहम्मद इकबाल (d) जायसी

उत्तर—(d) जायसी

YUKTI *ज्ञान—पद्मावत के रचनाकर हैं मलिक मोहम्मद जायसी। यह आदिकाल में लिखा गया महाकाव्य है।*

3. निम्नलिखित रचनाओं को कवियों के साथ सुमेलित कीजिए—

रचना	कवि
A. मृगावती	1. जायसी
B. मधुमालती	2. मुल्ला दाउद
C. चंदायन	3. उसमान
D. अखराबट	4. कुतुबन
	5. मंझन

कूट—

	A	B	C	D
(a)	2	3	5	4
(b)	3	2	1	4
(c)	4	5	2	1
(d)	1	2	3	4

उत्तर—(c)

YUKTI *ज्ञान—मृगावती (कुतुबन), मधुमालती (मंझन), चंदायन (मुल्ला दाउद), अखराबट (जायसी) की रचनाएँ हैं।*

4. इन कवियों को काल के आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए—

(a) दादू, कबीर, सुन्दरदास, मलूकदास

(b) मलूकराम, सुन्दरदास, कबीर, दादू

(c) सुन्दरदास, मलूकदास, दादू, कबीर

(d) कबीर, दादू, सुन्दरदास, मलूकदास

उत्तर—(d) कबीर, दादू, सुन्दरदास, मलूकदास।

YUKTI *ज्ञान—कबीर (1938 ई.), दादू (1544 ई.), सुन्दरदास (1596 ई.), मलूकदास (1689 ई.)*

5. इनमें से किस कवि ने 'लक्षण ग्रन्थ' नहीं लिखा—

(a) देव (b) भूषण

(c) पद्माकर (d) बिहारी

उत्तर—(d) बिहारी

YUKTI *ज्ञान—बिहारी रीतिसिद्ध कवि थे। उन्होंने कोई लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा। देव ने भवानी विलास, भाव विलास जैसे लक्षण ग्रंथ लिखे, भूषण ने शिवाबावनी नामक अलंकार ग्रंथ लिखा और पद्माकर ने पद्माभरण नामक अलंकार ग्रंथ लिखा।*

6. 'कविप्रिया' के रचनाकार हैं—

(a) केशव (b) भूषण

(c) पद्माकर (d) मतिराम

उत्तर—(a) केशव

YUKTI *ज्ञान—कविप्रिया केशव के द्वारा रचित रीतिग्रंथ है।*

7. 'केशव कहि न जाय का कहिए' पंक्ति किस कवि की है? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) सूर (b) केशव

(c) तुलसी (d) रहीम

उत्तर—(c) तुलसीदास (विनय–पत्रिका से)

8. 'धर्मवीर भारती' किस सप्तक के कवि हैं? **उ.प्र. टी.ई.टी.**

(a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक

(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

उत्तर—(b) दूसरा सप्तक

9. सर्वेश्वरदयाल सक्सैना को किस सप्तक में स्थान मिला है?

(a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक

(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

उत्तर—(c) तीसरा सप्तक

YUKTI *ज्ञान—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरा सप्तक (1959 ई.) के कवि हैं।*

10. 'आवारा मसीहा' के रचनाकार हैं—

(a) अमृतराय (b) विष्णु प्रभाकर

(c) रामविलास शर्मा (d) प्रेमचन्द

उत्तर—(b) विष्णु प्रभाकर

YUKTI *ज्ञान—आवारा मसीहा के रचनाकार हैं— विष्णु प्रभाकर, यह बंगला उपन्यास शरतचंद्र की जीवनी है।*

11. 'कबीर' किस काव्य धारा के कवि हैं?

(a) ज्ञानमार्गी (b) प्रेममार्गी

(c) कृष्णमार्गी (d) राममार्गी

उत्तर—(a) ज्ञानमार्गी

12. 'भारत–भारती' के रचयिता का नाम है—

@UPSC_THOUGHT

(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) हरिऔध
(c) नागार्जुन (d) दिनकर
उत्तर—(a) मैथिलीशरण गुप्त

YUKTI **ज्ञान**—*भारत–भारती के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह रचना देश प्रेम से ओतप्रोत कविताओं के कारण तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर ली थी।*

13. 'मुक्त छन्द' के प्रणेता हैं— उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) निराला (b) नागार्जुन
(c) अज्ञेय (d) हरिऔध
उत्तर—(a) निराला

14. 'अन्धा युग' किसकी रचना है?
(a) नरेश मेहता (b) मोहन राकेश
(c) दुष्यन्त कुमार (d) धर्मवीर भारती
उत्तर—(d) धर्मवीर भारती

YUKTI **ज्ञान**—*अन्धा युग धर्मवीर भारती का गीतिनाट्य है।*

15. सखि वे मुझसे कहकर जाते, किस कवि की पंक्ति है?
(a) सियारामशरण गुप्त (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) हरिऔध (d) जगदीश गुप्त
उत्तर—(b) मैथिलीशरण गुप्त

YUKTI **ज्ञान**—*सखि वे मुझसे कहकर जाते– यह पंक्ति मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'यशोधरा' की है।*

16. 'कामायनी' में कितने सर्ग हैं? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) 10 (b) 12
(c) 15 (d) 11
उत्तर—(c) 15

17. छायावादी महाकाव्य कौन-सा है? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) पल्लव (b) कामायनी
(c) यामा (d) साकेत
उत्तर—(b) कामायनी

YUKTI **ज्ञान**—*कामायनी (जयशंकर प्रसाद) छायावादी महाकाव्य है। साकेत की रचना द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त ने की। पल्लव (पंत) की और यामा (महादेवी वर्मा) की काव्य कृतियाँ हैं, महाकाव्य नहीं हैं।*

18. खड़ी बोली हिन्दी का पहला महाकाव्य है— उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) रामचरितमानस (b) साकेत
(c) प्रियप्रवास (d) कामायनी
उत्तर—(c) प्रियप्रवास

YUKTI **ज्ञान**—*खड़ी बोली हिन्दी के महाकाव्य प्रियप्रवास की रचना अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 1914 ई. में की।*

19. संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग किस हिन्दी कवि ने अपने महाकाव्य में किया? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) जयशंकर प्रसाद
(d) सुमित्रानन्दन पन्त
उत्तर—(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

YUKTI **ज्ञान**—*संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अपने महाकाव्य प्रियप्रवास में किया।*

20. इन कवियों को काल के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करें—
(a) हरिऔध, प्रसाद, पन्त, निराला
(b) निराला, प्रसाद, पन्त, हरिऔध
(c) हरिऔध, प्रसाद, निराला, पन्त
(d) पन्त, प्रसाद, निराला, हरिऔध
उत्तर—(c) हरिऔध, प्रसाद, निराला, पन्त

YUKTI **ज्ञान**—*हरिऔध (1865 ई.), प्रसाद (1890 ई.), निराला (1897 ई.), पन्त (1900 ई.) – सही क्रम है।*

अध्याय 10. अपठित बोध

अपठित अवतरण को पढ़कर उसके अर्थ को समझना 'अपठित बोध' कहलाता है। अपठित अनुच्छेद में कुछ ऐसे शब्द भी हो सकते है जिनके अर्थ से आप सुपरिचित न हों, किन्तु आपको बिना घबराये हुए पूरे अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि इस अवतरण का मूल विषय क्या है और उसमें क्या बात कही गई है। यदि आपने अपठित अवतरण के विचारों को समझ लिया तो अवतरण पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकेंगे। अपठित अवतरण को दो–तीन बार पढ़ने से अनुच्छेद में आए हुए भावों एवं विचारों को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता व्यक्ति में आ जाती है। इससे विद्यार्थियों की बोध शक्ति (समझ) एवं भाषा पर उनके अधिकार की भी परीक्षा हो जाती है।

अपठित अवतरण पर कई तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं, यथा—
1. अपठित अवतरण का सार या भावार्थ
2. अपठित अवतरण से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर
3. अपठित अवतरण का शीर्षक
4. अपठित अवतरण में आए कुछ शब्दों के अर्थ
5. अपठित अवतरण के कुछ वाक्यों की व्याख्या

अपठित अवतरण को हल करने की विधि

1. अवतरण को कम–से–कम दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि अपठित अवतरण की विषय–वस्तु क्या है।
3. अवतरण के मूलभाव को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।
4. अवतरण को पढ़कर उसके प्रमुख विचारों को रेखांकित कर अलग से लिख लेना चाहिए।
5. अवतरण का केन्द्रीय भाव (Central Idea) ही उसका शीर्षक होता है।

@UPSC_THOUGHT

6. अवतरण का शीर्षक यथासम्भव संक्षिप्त, सटीक एवं अवतरण से सुसम्बद्ध होना चाहिए।
7. पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अवतरण में से ही छाँटकर देने चाहिए अपनी ओर से व्यक्त विचार ठीक नहीं माने जाते।
8. उत्तर संक्षिप्त एवं सारगर्भित हो, भाषा सरल हो तथा उत्तरों में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
9. काले छपे अंशों की व्यख्या इस प्रकार करनी चाहिए जिससे उनका मन्तव्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाए।

अपठित अवतरण का सार लेखन

1. अपठित अवतरण का सार लेखन करने के लिए दिए गए अवतरण को कम–से–कम दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. सार लेखन के लिए विद्यार्थियों को अपनी सूझ–बूझ एवं विवेक से यह निर्णय करना होता है कि इस अवतरण के अनावश्यक अंश को हटा दें तथा आवश्यक अंग छूटने न पावें।
3. मूल अवतरण को पढ़कर उसके केन्द्रीय भाव को समझने का प्रयास करें।
4. अवतरण में जो वाक्य, अंश, बातें महत्वपूर्ण लगें उन्हें रेखांकित कर लें।
5. अवतरण का सार मूल अवतरण का लगभग एक–तिहाई होना चाहिए। अवतरण में आए शब्दों की संख्या जानने के लिए यदि एक पंक्ति में 15 शब्द हों तथा पंक्तियों की कुल संख्या 12 हो तो अवतरण की शब्द संख्या 15 × 12 = 180 होगी। इसका सार लगभग 60 शब्दों में लिखा जाना चाहिए।
6. सार लेखन अपनी भाषा में होना चाहिए। भाषा सरल हो तथा उसमें कम–से–कम शब्दों में अधिक बात कह सकने की क्षमता भी होनी चाहिए।
7. अवतरण की जो बातें आपको आवश्यक लगें उन्हें अलग से लिख लेना चाहिए। यह सार का प्रथम प्रारूप है।
8. प्रथम प्रारूप को पूरा पढ़कर अनावश्यक अंश काट दें और जो अनावश्यक शब्द हों उन्हें निकाल दें। इस प्रकार दूसरा प्रारूप तैयार करें और यह सुनिश्चित कर लें कि इसमें सभी महत्वपूर्ण बातें आ गई हैं या नहीं, यदि कोई बात छूट गई हो तो जोड़ लें। यह दूसरा प्रारूप है।
9. 'सार' की शब्द संख्या गिनें और देखें कि यह मूल अवतरण की लगभग एक–तिहाई है या नहीं। यदि अधिक हो तो पुनः इनका सम्पादन कर अनावश्यक शब्द काट दें और कम हो तो कुछ और जोड़ दें। इस प्रकार अन्तिम प्रारूप तैयार करें।
10. सार रूप में लिखा गया अवतरण एक स्वतन्त्र, सुगठित और प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद होना चाहिए।

शीर्षक लेखन

1. मूल अवतरण का केन्द्रीय भाव ही अपठित का शीर्षक होता है।
2. शीर्षक संक्षिप्त, सारगर्भित एवं मूल अवतरण से जुड़ा होना चाहिए।
3. शीर्षक सरल एवं आकर्षक भी होना चाहिए।
4. शीर्षक अवतरण के मूल भाव या मूल विचार का द्योतक होना चाहिए।
5. शीर्षक अपठित अनुच्छेद के सभी विचारों का प्रतिनिधित्व करने पर श्रेष्ठ माना जाता है।
6. अवतरण को ध्यानपूर्वक दो तीन बार पढ़ने से यह पता चल जाता है कि इसका मूल विषय क्या है तथा उसी से शीर्षक बनाना चाहिए।
7. अवतरण के लिए जो शीर्षक समझ में आएं उन्हें लिख लें तथा लिखे हुए शीर्षकों में से जो सर्वोत्तम लगे चुनाव शीर्षक के रूप में करें।

गद्यांश 1

गाँधी जब स्वदेश लौटे उस समय भारत में बहुत से बड़े नेता मौजूद थे। फिर भी देश के दुखी मजदूर किसान और जनता मदद के लिए दक्षिण अफ्रीका के यशस्वी सेनानी गांधी के ही पास आई। गाँधीजी द्वारा की गई कोशिश से बिहार में सौ वर्ष से चली आ रही नील की मजबूरन खेती की प्रथा खत्म हुई और गिरमिटिया या शर्तबन्ध मजदूरों को विदेशों में भेजना रोक दिया गया। अगर किसी क्षेत्र में लोगों को कोई अन्याय की शिकायत होती तो गांधी उसे दूर करने के लिए लोगों को स्वयं प्रयत्न करने को कहते थे। गांधी ने इस प्रकार अन्याय और जबरदस्ती के विरुद्ध जो भी आन्दोलन किए, उसकी प्रतिध्वनि सारे भारत में हुई।

भारत में गाँधी ने जो भी जन–आन्दोलन चलाया, उन सबमें उनका तरीका एक ही था–शान्ति और दृढ़ता से अपनी बात कहना और उसके लिए अहिंसात्मक आन्दोलन करना। चम्पारन, खेड़ा और बारडोली के प्रसिद्ध आन्दोलनों के अलावा उन्होंने तीस वर्षों में भारत में चार बड़े आन्दोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने पूरे भारत का दौरा किया और लोगों से मिलकर अपनी आंखों से उनकी दशा देखी और उनकी समस्याओं को समझा।

जब भी वह सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते वह हजारों व्यक्तियों से भेंट करते थे और सारी सूचनाएं और तथ्य एकत्र करने के लिए रोजाना अठारह–बीस घण्टे काम करते थे। उन्होंने हजारों सभाओं में भाषण दिए और लोगों को अनुशासन का पाठ पढ़ाया। गांधी ने लोगों को अहिंसा का महत्व समझाया। उन्होंने कहा ''देश के सामने एक दूसरा रास्ता भी है– तलवार खींचकर लड़ना। यदि यह तरीका सम्भव होता तो भारत के लोग अहिंसा के संदेश को नहीं सुनते। सिर्फ भाषणों और जुलूसों से हमें स्वराज नहीं प्राप्त होगा, उसके लिए हमें काम हासिल करने की शक्ति और दृढ़ता दिखानी होगी। हमें ऐसे वीर सैनिक बनाना होगा जो मैदान छोड़कर भागते नहीं। हमें अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहना होगा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मर्दानगी जरूरी है। मारने के बजाय जरूरत हो तो खुद मर जाइए। आखिर किसी को मारने के लिए भी तो मरने की जोखिम उठानी पड़ती है, तो किसी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालना कठिन क्यों लगे? दूसरों की जान लेने में बहादुरी नहीं है। बहादुरी है अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए मरने में।''

गाँधी की अहिंसा सेना में स्त्री, बच्चे और बूढ़े भी शामिल थे। बच्चों की सेना 'वानर सेना' कहलाती थी। गांधी अहिंसा पर इतने दृढ़ थे कि आन्दोलन में कहीं भी हिंसा हो जाने पर अपने सत्याग्रह को वापस ले लेते थे। वह छिपी लड़ाई नहीं खुली लड़ाई लड़ते थे और डंके की चोट

@UPSC_THOUGHT

पर घोषित कर देते थे कि वह क्या करने जा रहे हैं। वह अपने अनुयायियों से आशा करते थे कि अपने मन से भय, क्रोध, घृणा और प्रतिशोध की भावना निकाल दें।

गांधी लोगों को झूठी आशा कभी नहीं बंधाते थे। अपने सैनिकों को बता देते थे ''आपको लाठियों और गोलियों का सामना करना पड़ेगा। जेल जाना होगा, आपकी सम्पत्ति जब्त हो सकती है और आपको फांसी पर भी चढ़ना पड़ सकता है। यह सब शान्त भाव से बिना विरोध किए सहना होगा।'' उनके मन्त्र 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ था 'कष्टों को सहन करना' और वह जानते थे कि कष्टों के सहने से विरोधी हृदय पिघलेगा।

प्रश्न–

1. उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्ष बताइए।
2. गांधीजी ने नील की खेती कहाँ बन्द करवाकर किसानों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्ति दिलाई?
3. 'गिरमिटिया' का क्या अर्थ है?
4. गाँधीजी जब भी सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते तब क्या करते थे?
5. गाँधीजी ने स्वतन्त्रता पाने के लिए क्या आवश्यक माना?
6. गाँधीजी के अनुसार बहादुरी क्या है?
7. गाँधीजी की अहिंसक सेना में शामिल बच्चों की सेना को क्या कहा जाता था?
8. गाँधीजी अपने अनुयायियों से क्या आशा करते थे?
9. गाँधीजी अपने सैनिकों को क्या समझाकर आन्दोलन के लिए भेजते थे?
10. 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ वे क्या मानते थे?
11. गाँधीजी कहाँ से स्वदेश लौटकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे?
12. भारत के लोग गांधीजी की ओर आशाभरी नजरों से क्यों देख रहे थे?

उत्तर–

1. उक्त अवतरण का शीर्षक है– 'अहिंसक सेनानी'।
2. गांधीजी ने बिहार के चम्पारण में होने वाली नील की खेती बन्द करवाकर किसानों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्ति दिलवाई।
3. 'गिरमिटिया' शब्द 'एग्रीमेंट (Agreement) से बना है। भारत से विदेशों में जो मजदूर (कुली) 'एग्रीमेंट' या शर्तबन्दी (करार) के अन्तर्गत भेजे जाते थे, उन्हें 'गिरमिटिया' कहा जाता था।
4. गाँधीजी जब भी अंग्रेजी सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते थे वह हजारों व्यक्तियों से भेंट करते थे और सारी सूचनाएं एकत्र करने लिए रोजाना अठारह–बीस घण्टे काम करते थे।
5. गांधीजी के अनुसार स्वतन्त्रता पाने के लिए हमें कठिन संघर्ष करना होगा, अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहना होगा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लए मर्दानगी (वीरता) जरूरी है।
6. गाँधीजी के अनुसार अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए मरने में ही बहादुरी है, दूसरों की जान लेने में बहादुरी नहीं है।
7. गाँधीजी की अहिंसक सेना में शामिल बच्चों की सेना को 'वानर सेना' कहा जाता था।
8. गाँधीजी अपने अनुयायियों से आशा करते थे कि वे अपने मन से भय, क्रोध, घृणा और प्रतिरोध की भावना निकाल दें।
9. गाँधीजी स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले सैनिकों (अनुयायियों) को यह बता देते थे कि तुम्हें लाठियों, गोलियों का सामना करना पड़ेगा, जेल जाना होगा, सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ सकता है तथा फाँसी पर भी चढ़ाया जा सकता है। आप लोगों को यह सब बिना विरोध किए सहना होगा।
10. 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ था कष्टों को सहन करना।
11. गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे।
12. भारत के लोग गांधीजी की ओर आशा भरी नजरों से इसलिए देख रहे थे, क्योंकि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करके भारतीयों को बहुत से अधिकार दिलाए थे।

गद्यांश 2

प्रेम की भाषा शब्द रहित है, नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की, भाषा भी शब्द रहित है। जीव का तत्व भी शब्दों से परे है। सच्चा आचरण– प्रभावशील आचरण न तो साहित्य के लम्बे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है; न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अंजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद–मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

बर्फ का दुपट्टा बांधे हुए हिमालय इस समय तो अति सुन्दर, अति ऊँचा और अति रूप प्रत्यक्ष मालूम होता है, परन्तु प्रकृति ने अगणित शताब्दियों के परिश्रम से रेत का एक–एक परमाणु समुद्र के जल में डुबो–डुबोकर और उनको अपने विचित्र हथौड़े से सुडौल करके इस हिमालय के दर्शन कराए हैं। आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊंचे कलश वाला मन्दिर है। यह वह आम का पेड़ नहीं जिसको मदारी एक क्षण में, तुम्हारी आंखों में मिट्टी डालकर, अपनी हथेली पर जमा दे। इसके बनने में अनन्त काल लगा है पृथ्वी बन गई, सूर्य बन गया, तारागण आकाश में दौड़ने लगे, परन्तु अभी तक आचरण के सुन्दर रूप के पूर्ण दर्शन नहीं हुए। कहीं–कहीं उसकी अत्यल्प छटा अवश्य दिखाई देती है।

पुस्तकों में लिखे हुए नुस्खों से तो और भी अधिक बदहजमी हो जाती है। सारे वेद और शास्त्र भी यदि घोलकर पी लिए जायें तो भी आदर्श आचरण की प्राप्ति नहीं होती। आचरण प्राप्ति की इच्छा रखने वाले को तर्क–वितर्क से कुछ भी सहायता नहीं मिलती। शब्द और वेद तो साधारण जीवन के चोचले हैं। यह आचरण की गुप्त गुहा में प्रवेश नहीं कर सकते। वहाँ इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वेद इस देश के रहने वालों के विश्वासानुसार ब्रह्म–वाणी है, परन्तु काल व्यतीत हो जाने पर भी आज तक वे समस्त जगत् की भिन्न–भिन्न जातियों को संस्कृत भाषा न बुला सके–न समझा सके–न सिखा सके। यह बात हो कैसे? ईश्वर तो सदा मौन है। ईश्वरीय मौन शब्द और भाषा का विषय नहीं।

@UPSC_THOUGHT

@UPSC_THOUGHT

वह केवल आचरण के कान में गुरु–मन्त्र फूंक सकता है। वह केवल ऋषि के दिल में वेद का ज्ञानोदय कर सकता है।

किसी का आचरण वायु के झोंके से हिल जाय, तो हिल जाय, परन्तु साहित्य और शब्द की गोलन्दाजी और आंधी से उसके सिर के एक बाल तक का बांका न होना एक साधारण बात है। पुष्प की कोमल पंखुड़ी के स्पर्श से किसी को रोमाञ्च हो जाय; जल की शीतलता से क्रोध और विषय–वासना शांत हो जाएं; बर्फ के दर्शन से पवित्रता आ जाये; सूर्य की ज्योति से नेत्र खुल जाएं–परन्तु अंगरेजी भाषा का व्याख्यान–चाहे वह कारलायल ही का लिखा हुआ क्यों न हो–बनारस के पण्डितों के लिए रामरोला ही है। इसी तरह न्याय और व्याकरण की बारीकियों के विषय में पण्डितों के द्वारा की गई चर्चाएं और शास्त्रार्थ संस्कृत–ज्ञान–हीन पुरुषों के लिए स्टीम इंजन के फप्–फप् शब्द से अधिक अर्थ नहीं रखते। यदि आप कहें व्याख्यानों द्वारा, उपदेशों द्वारा, धर्मचर्चा द्वारा कितने ही पुरुषों और नारियों के हृदय पर जीवन–व्यापी प्रभाव पड़ा है, तो उत्तर यह है कि प्रभाव शब्द का नहीं पड़ता–प्रभाव तो सदा सदाचरण का पड़ता है। साधारण उपदेश तो हर गिरजे, हर मन्दिर और हर मस्जिद में होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव तभी हम पर पड़ता है जब गिरजे का पादरी स्वयं ईसा होता है–मन्दिर का पुजारी स्वयं ब्रह्मर्षि होता है–मस्जिद का मुल्ला स्वयं पैगम्बर और रसूल होता है।

प्रश्न–

1. उक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
2. किसकी भाषा शब्द रहित है?
3. 'प्रेम की भाषा शब्द रहित है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. आचरण की तुलना किससे की गई है?
5. आदर्श आचरण की प्राप्ति किससे नहीं होती?
6. इस अवतरण में प्रयुक्त शैली है:
   (अ) विवरणात्मक, (ब) विवेचनात्मक, (स) गवेषणात्मक, (द) भावात्मक।
7. लेखक की भाषा किस प्रकार की है :
   (ब) लाक्षणिक, (ब) व्यंग्यात्मक, (स) साधारण, (द) संस्कृतनिष्ठ।
8. निम्न शब्दों के अर्थ बताइए:
   कपोल, व्याख्यान, गौरवान्वित, सदाचरण।
9. निम्न शब्दों के विलोम बताइए:
   सदाचरण, सुन्दर, ऊँचा, शीतलता।
10. 'बाल तक बांका न होना' का क्या अर्थ है?
11. जीवन पर किसका प्रभाव पड़ता है?
12. 'साहित्य और शब्द की गोलंदाजी' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर–

1. उक्त अवतरण का शीर्ष है– 'आचरण की सभ्यता'।
2. लेखक के अनुसार प्रेम की भाषा शब्द रहित है। इसके साथ–साथ नेत्रों की, कपोलों की और मस्तक की भाषा भी शब्द राहित है।
3. ''प्रेम की भाषा शब्द रहित है'' का अभिप्राय यह है कि प्रेम को शब्दों से व्यक्त न करके अन्य प्रकारों से व्यक्ति किया जाता है।
4. आचरण की तुलना एक ऊँचे कलश वाले मन्दिर से की गई है जो हिमालय की भांति दूर से ही चमकता है।
5. वेदशास्त्रों को घोलकर पी लेने (कण्ठस्थ कर लेने) से आदर्श आचरण की प्राप्ति नहीं हो सकती है।
6. इस अवतरण में प्रयुक्त शैली है–(द) भावात्मक।
7. लेखक की भाषा है–(अ) लाक्षणिक।
8. शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं :
   कपोल = गाल, व्याख्यान = भाषण, गौरवान्वित = गौरव से युक्त, सदाचरण = अच्छा आचरण।
9. विलोम शब्द इस प्रकार हैं :
   (i) सदाचरण = दुराचरण, (ii) सुन्दर = असुन्दर (कुरूप), (iii) ऊँचा = नीचा, (iv) शीतलता = उष्णता।
10. 'बाल तक बांका न होना' का अर्थ है–कुछ भी हानि न होना।
11. जीवन पर सदाचरण का प्रभाव पड़ता है, शब्द का नहीं।
12. साहित्य और शब्द की गोलंदाजी का तात्पर्य है किसी व्यक्ति के आचरण को बदलने के लिए साहित्य एवं नीति के शब्दों द्वारा बार–बार प्रहार करना।

निर्देश– निम्न अवतरणों को ध्यान से पढ़कर उन पर पूछे गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर का चयन कीजिए।

गद्यांश 3

प्रेम और श्रद्धा में अन्तर यह है कि प्रेम स्वाधीन कार्यों पर उतना निर्भर नहीं, कभी–कभी किसी का रूप मात्र, जिसमें उसका कुछ भी हाथ नहीं, उसके प्रति प्रेम उत्पन्न होने का कारण होता है पर श्रद्धा ऐसी नहीं है। किसी की सुन्दर आँख या नाक देखकर उसके प्रति श्रद्धा नहीं उत्पन्न होगी, प्रीति उत्पन्न हो सकती है। प्रेम के लिए इतना ही बस है कि कोई मनुष्य हमें अच्छा लगे, पर श्रद्धा के लिए आवश्यक यह है कि कोई मनुष्य किसी बात में बढ़ा हुआ होने कारण हमारे सम्मान का पात्र हो। श्रद्धा का व्यापार–स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार। किसी मनुष्य से प्रेम रखने वाले दो ही एक मिलेंगे, पर उस पर श्रद्धा रखने वाले सैकड़ों–हजारों, लाखों क्या करोड़ों मिल सकते हैं। सच पूछिए तो इसी श्रद्धा के आश्रय से उन कर्मों के महत्व का भाव दृढ़ होता रहता है जिसे धर्म कहते हैं और जिनमें मनुष्य समाज की स्थिति है। कर्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिए बार–बार कर्ता ही की ओर आंख उठती है। कर्मों से कर्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है। जिस समाज में किसी ज्योतिष्मान शक्ति केन्द्र का उदय होता है, उस समाज में भिन्न–भिन्न हृदयों से शुभ भावनाएं मेघ–खण्डों के समान उठकर तथा एक ओर एक साथ अग्रसर होने के कारण परस्पर मिलकर इतनी घनी हो जाती हैं कि उनकी घटा–सी उमड़ पड़ती है और मंगल की ऐसी वर्षा होती है कि सारे दुःख और क्लेश बह जाते हैं।

@UPSC_THOUGHT

1. इस अवतरण का उपयुक्त शीर्षक है:

(a) श्रद्धा और प्रेम (b) श्रद्धा और भक्ति

(c) प्रेम और भक्ति (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) श्रद्धा और भक्ति

2. श्रद्धा के कारण किन कर्मों का महत्व बढ़ जाता है?

(a) जिन्हें अधर्म कहा जाता है (b) जिन्हें धर्म कहा जाता है।

(c) जिन्हें सत्पुरुष करते हैं। (d) जिन्हें दुर्जन करते हैं।

उत्तर—(b) जिन्हें धर्म कहा जाता के।

3. कर्म का सबसे बड़ा स्मारक लेखक किसे मानता है?

(a) श्रद्धा को (b) धर्म को

(c) कर्ता को (d) इन सबको

उत्तर—(c) कर्ता को

4. ज्योतिष्मान शक्ति केन्द्र का अभिप्राय है :

(a) ज्ञानमार्गी (b) प्रेममार्गी

(c) कृष्णमार्गी (d) राममार्गी

उत्तर—(b) प्रेममार्गी

5. अपने सत्कर्म द्वारा मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का केन्द्र कौन बन जाता है।

(a) कर्ता (b) भक्त

(c) श्रद्धालु (d) प्रेमी

उत्तर—(c) श्रद्धालु

गद्यांश 4

हमारे विशाल देश में हिमालय की अनन्त हिमराशि वाले ग्लेशियरों ने जिन नदियों को जन्म दिया है, उनमें गंगा और यमुना नाम की नदियाँ हमारे जीवन की धमनियों की तरह रही हैं, उनकी गोद में हमारे पूर्वजों ने सभ्यता के प्रांगण में अनेक नये खेल खेले। उनके तटों पर जीवन का जो प्रवाह प्रचलित हुआ, वह आज तक हमारे भूत और भावी जीवन को सींच रहा है। भारत हमारा देश है और हम उसके नागरिक हैं यह एक सच्चाई हमारे रोम–राम में बिंधी हुई है। नदियों की अन्तर्वेदी में पनपने वाले आदि युग के जीवन पर हम अब जितना अधिक विचार करते हैं हमको अपने विकास और वृद्धि की सनातन जड़ों का पृथ्वी के साथ सम्बन्ध उतना ही अधिक घनिष्ठ जान पड़ता है। हमारे धार्मिक पर्वों पर लाखों लोग नदी और जलाशयों के तटों पर एकत्र होते हैं। पृथ्वी के एक–एक जलाशय और सरोवर को भारतीय भावना ने ठीक प्रकार से समझने का प्रयत्न किया, उनके साथ सौहार्द का भाव उत्पन्न किया जो हर एक पीढ़ी के साथ नये रूप में बँधा रहा, किन्तु आज स्थिति बड़ी विचित्र और एक सीमा तक चिन्ताजनक हो गई है। हमारी औद्योगिक क्रान्ति ने इन्हें प्रदूषित कर विषैला बना दिया है। जीवनदायिनी नदियाँ आज प्राणघातिनी होती जा रही हैं। मिल–बैठकर सोचने की आवश्यकता है कि क्या करें कि ये पुनः जीवनदायिनी हों और उन सोची हुई योजनाओं को अमल में लाने की भी आवश्यकता है। **(CTET 2015)**

1. गंगा–यमुना को जल कहाँ से मिलता है?

(a) अनन्त जलराशि से (b) मानसरोवर से

(c) ग्लेशियरों से (d) हिमालय से

उत्तर—(c) ग्लेशियरों से

2. लेखक के अनुसार हमारी सभ्यता का जन्म हुआ है।

(a) नदियों की गोद में (b) गंगा–यमुना में

(c) प्रकृति के प्रांगण में (d) हिमालय में

उत्तर—(a) नदियों की गोद में

3. स्थिति चिन्ताजनक क्यों हो गई है?

(a) नदियाँ कम हो गई हैं (b) नदियाँ वेग से बहने लगी हैं।

(c) नदियाँ बाढ़ लाने लगी हैं। (d) नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।

उत्तर—(d) नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।

4. 'जीवनदायिनी' का विलोम है।

(a) प्राणघातिनी (b) अजीवनदायिनी

(c) प्राणान्तक वाहिनी (d) जीवप्रदायिनी

उत्तर—(a) प्राणघातिनी

5. 'औद्योगिक' शब्द का मूल शब्द है

(a) उदयोग (b) औद्योग

(c) उद्योग (d) योगिक

उत्तर—(c) उद्योग

6. जिसका कोई अन्त न हो उसे कहते हैं

(a) आनन्द (b) अनन्त

(c) अखण्ड (d) असीम

उत्तर—(b) अनन्त

गद्यांश 5

आसमान में मुक्का मारना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं समझा जाता । बिना लक्ष्य के तर्क करना भी बुद्धिमानी नहीं है। हमें भली–भाँति समझ लेने की आवश्यकता है कि हमारा लक्ष्य क्या है? हम जो कुछ प्रयत्न करने जा रहे हैं वह किसके लिए है? साहित्य हम किसके लिए रचते हैं, इतिहास और दर्शन क्यों लिखते और पढ़ते हैं? राजनीतिक आन्दोलन किस महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए करते हैं? मनुष्य ही वह बड़ी चीज है जिसके लिए सब यह किया करते हैं। हमारे सब प्रयत्नों का एक लक्ष्य है, मनुष्य वर्तमान दुर्गति के पंक से उद्धार पाए और भविष्य में सुख और शान्ति से रह सके। वह शास्त्र, वह ग्रन्थ, वह कला, वह नृत्य, वह राजनीति, वह समाज–सुधार जंजाल–मात्र है जिससे मनुष्य का भला न होता हो। मनुष्य आज हाहाकार के भीतर त्राहि–त्राहि पुकार रहा है। हमारे राजनीतिक और सामाजिक सुधार से अन्न–वस्त्र की समस्या सुलझ सकती है फिर भी मनुष्य सुखी नहीं बनेगा। उसे सिर्फ अन्न–वस्त्र से ही सन्तोष नहीं होगा। इसके बाद भी उसका मनुष्य बनना बाकी रह जाता है। साहित्य वही काम करता है। मनुष्य नामक प्राणी तो पशुओं में ही एक विकसित प्रजाति है और यदि मनुष्यता के गुण और मूल्य उसमें नहीं हैं, तो वह मनुष्य नामक पशु ही है, मनुष्य नहीं। भोजन करना, सोना

@UPSC_THOUGHT

और वंश–वृद्धि जैसे काम प्रकृति के द्वारा तय हैं, सच्चा मानव बनने के लिए उसे जो दृष्टि चाहिए उसे पाने में साहित्य सहायक हो सकता है।

1. आसमान में मुक्का मारने से आशय है :
(a) लोगों का ध्यान आकर्षित करना
(b) अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना
(c) वीरतापूर्ण कार्य करना
(d) निरर्थक कार्य करना
उत्तर—(d) निरर्थक कार्य करना

2. बुद्धिमानी नहीं है :
(a) निरुद्देश्य तर्क करना (b) राजनीतिक आन्दोलन करना
(c) आसमान में मुक्का मारना (d) निष्फल कार्य करना
उत्तर—(c) आसमान में मुक्का मारना

3. साहित्य, कला, नृत्य आदि व्यर्थ हैं यदि उनसे :
(a) मनुष्य का हित न हो सके (b) लक्ष्य न पाया जा सके
(c) धन न कमाया जा सके। (d) यश प्राप्त न हो सके।
उत्तर—(a) मनुष्य का हित न हो सके।

4. अन्न वस्त्र आदि की समस्याएँ हल हो सकती हैं :
(a) अच्छे साहित्य से (b) आवश्यकताओं की पूर्ति से
(c) सामाजिक सुधारों से (d) राजनीतिक आन्दोलनों से
उत्तर—(b) आवश्यकताओं की पूर्ति से।

5. मनुष्य के लिए प्रकृति द्वारा तय कामों में नहीं है :
(a) अन्न–वस्त्र की पूर्ति (b) वंश वृद्धि
(c) सोना (d) भोजन करना
उत्तर—(c) सोना

6. मनुष्य एक पशु ही है यदि उसमें :
(a) साहित्य के प्रति रुचि न हो (b) मानवीय मूल्य न हों
(c) सम्पन्नता न हो (d) सामाजिकता न हो
उत्तर—(b) मानवीय मूल्य न हों

7. दिए गए शब्दों में से अर्थ की दृष्टि से भिन्न शब्द छाँटिए।
(a) निशाना (b) लक्ष्य
(c) उद्देश्य (d) उद्धार
उत्तर—(d) उद्धार

8. अनुच्छेद में 'जंजाल' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?
(a) त्राहि–त्राहि (b) झंझट
(c) समस्या (d) प्रयत्न
उत्तर—(b) झंझट

9. 'बुद्धिमानी' शब्द है
(a) विशेषण (b) क्रिया
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम
उत्तर—(c) संज्ञा

गद्यांश 6

यह तो आप जानते हैं कि पृथ्वी प्रारम्भ में आग का गोला थी। मुझे ठीक–ठीक नहीं पता कि ऐसी आग में मुझ पानी का जन्म कैसे हुआ। लगता यह है कि हमारी पृथ्वी ज्यों–ज्यों ठण्डी होती गई तो उसमें मौजूद गैसों में क्रियाएँ हुईं। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रियाओं से मेरा जन्म हुआ है। इन दोनों ने अपना अस्तित्व मिटाकर मुझे बनाया। पहले मैं पृथ्वी के ऊपर के भाप रूप में ही था। फिर जाने क्या हुआ कि मैं ठोस बर्फ बन गया। कल्पना करो चारों ओर बर्फ ही बर्फ। जब सूर्य की किरणें हम पर पड़तीं तो चारों और सौन्दर्य बिखर पड़ता। लाखों वर्षों तक इस रूप में रहने के बाद मैं फिसलने लगा क्योंकि बर्फ के ही दबाव से निचली परत पिघलने लगी थी। फिसलकर हम पहुँचे सागर में। वहाँ की तो बात ही निराली थी। वहाँ अब तक हमसे पहले पहुँचे पानी में छोटे–छोटे जीव तैरने लगे थे। घोंघे, मछलियाँ और कछुवे भी। धीरे–धीरे सृष्टि का विस्तार हुआ। जल के बाद स्थल में जीव बनने लगे और आज आप उसी शृंखला के अंग हैं और अपने को मनुष्य कहते हैं।

(CTET 2014)

1. यह आत्मकथा किसकी है?
(a) बर्फ की (b) पानी की
(c) मनुष्य की (d) पृथ्वी की
उत्तर—(b) पानी की

2. सबसे पहले जीवधारी कहाँ पैदा हुए?
(a) बर्फ में (b) भाप में
(c) जल में (d) स्थल में
उत्तर—(c) जल में

3. बर्फ क्यों फिसलने लगी थी?
(a) अपनी गर्मी से पिघल रही थी
(b) बर्फ के बोझ और दबाव से निचली परत पिघल रही थी
(c) पिघला दिया था
(d) समुद्र की लहरें आ गई थीं।
उत्तर—(b) बर्फ के बोझ और दबाव से निचली परत पिघल रही थी

4. मनुष्य किस शृंखला का अंग है?
(a) जीवधारियों की शृंखला का (b) जलजीवों की शृंखला का
(c) प्राकृतिक शृंखला का (d) प्राकृतिक परिवर्तन शृंखला का
उत्तर—(a) जीवधारियों की शृंखला का

5. चारों और सौन्दर्य ..... पड़ता।
रिक्त स्थान के लिए शब्द होगा।
(a) चमक (b) दमक
(c) बिफर (d) बिखर
उत्तर—(d) बिखर

6. कौन-से वाक्य में संज्ञा बहुवचन में नहीं है?
(a) घर बनने लगे हैं। (b) जीव जल में तैर रहे है।
(c) घोंघे चल रहे हैं। (d) कछुवे की चाल देखें
उत्तर—(d) कछुवे की चाल देखें

@UPSC_THOUGHT

गद्यांश 7

अधिकतर लोगों की यही शिकायत होती है कि उन्हें पनपने के लिए सटीक माहौल व संसाधन नहीं मिल पाए, नहीं तो आज वे काफी आगे होते और आज भी ऐसे कई लोग हैं, जो संसाधन और स्थितियों के अनुकूल कभी होने के इन्तजार में खुद को रोके हुए हैं। ऐसे लोगों के लिए ही किसी विद्वान ने कहा है–इन्तजार मत कीजिए और आगे सब बेहतर होता जाएगा। जिनके इरादे दृढ़ होते हैं, वे सीमित संसाधनों में भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाते हैं।

नारायणमूर्ति ने महज दस हजार रुपये में अपने छः दोस्तों के साथ इन्फोसिस की शुरुआत की और आज इन्फोसिस आईटी के क्षेत्र की एक बड़ी कम्पनी है। करौली टैकस, पहले अपने दाएँ हाथ से निशानेबाजी करते थे, मगर उनका दायां हाथ एक विस्फोट में चला गया। फिर उन्होंने अपने बाएँ हाथ से शुरुआत की और 1948 व 1950 में ओलम्पिक स्वर्ण पदक अपने नाम किया। लिओनार्दो द विंची, रवीन्द्रनाथ टैगोर, टॉमस अल्वा एडिसन, टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल वॉल्ट डिज्नी–ये सब अपनी शुरुआती उम्र में डिस्लेक्सिया से पीड़ित रह चुके हैं, जिसमें पढ़ने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी ये सभी अपने–अपने क्षेत्र के शीर्ष पर पहुँचे। अगर ये लोग भी इसी तरह माहौल या संसाधनों की शिकायत और इन्तजार करते, तो क्या कभी उस मुकाम पर पहुँच पाते, जहाँ वे मौजूद हैं? अगर हमने अपना लक्ष्य तय कर लिया है, तो हमें उस तक पहुँचने की शुरुआत अपने सीमित संसाधनों से ही कर देनी चाहिए। किसी इन्तजार में नहीं रहना चाहिए। ऐसे में इन्तजार करना यह दर्शाता है कि हम अपने लक्ष्य को पाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध नहीं हैं। इसलिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत कर जुट जाना होगा। इन्तजार करेंगे तो करते रह जाएँगे।

1. 'समय एकदम अनुकूल कभी नहीं होता' यहाँ 'एमदम' का अर्थ है।

(a) पूर्णतः (b) अचानक

(c) तुरन्त (d) तत्काल

उत्तर—(a) पूर्णतः

2. 'हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत कर जुट जाना होगा।' उपयुक्त वाक्य से बना संयुक्त वाक्य होगा।

(a) हमें इच्छाशक्ति को मजबूत करना है इसलिए जुट जाना होगा।

(b) यदि हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना है तो जुट जाना होगा।

(c) हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना होगा और जुट जाना होगा।

(d) हमें जुट जाना होगा और फिर इच्छाशक्ति को मजबूत करना होना।

उत्तर—(c) हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना होगा और जुट जाना होगा।

3. 'डिस्लेक्सिया' शब्द है :

(a) देशज (b) आगत

(c) तत्सम (d) तद्भव

उत्तर—(b) आगत

4. 'ऐसे लोगों के लिए ही किसी विद्वान ने कहा है' रेखांकित अंश का संकेत है :

(a) प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बनाते लोग

(b) दृढ़ इरादों वाले लोग

(c) अनुकूल परिस्थितियों में बढ़े लोग

(d) अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा कर रहे लोग

उत्तर—(a) प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बनाते लोग

5. नारायणमूर्ति, ग्राहम बेल आदि के उदाहरण क्यों दिए गए हैं?

(a) डिस्लेक्सिया से ग्रस्त होने के कारण

(b) सीमित संसाधन होने के कारण

(c) सफल अमीन होने के कारण

(d) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता पाने के कारण

उत्तर—(d) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता पाने के कारण

6. 'इन्तजार करेंगे तो करते रह जाएँगे' कथन का तात्पर्य है :

(a) स्थिति अनुकूल होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है

(b) प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य होना आवश्यक है

(c) प्रतीक्षा कभी समाप्त नहीं होती

(d) प्रतीक्षा करना ठीक नहीं

उत्तर—(a) स्थिति अनुकूल होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है।

7. बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि है :

(a) पढ़ी गई कहानी को संक्षेप में लिखना

(b) भूकम्प आने पर जो तबाही हुई उसके बारे में अपने अनुभव लिखना

(c) दो दिन के अवकाश के लिए पत्र लिखवाना

(d) मेरा आदर्श विद्यालय पर निबन्ध लिखवाना

उत्तर—(b) भूकम्प आने पर जो तबाही हुई उसके बारे में अपने अनुभव लिखना।

8. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में किसकी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है?

(a) अभ्यास–पत्रक (b) प्रश्न–पत्र

(c) संचार–माध्यम (d) पाठ्य–पुस्तक

उत्तर—(c) संचार–माध्यम

गद्यांश 8

'आदमी की तलाश' यह स्वर अकसर सुनने को मिलता है। यह भी सुनने को मिलता है कि आज आदमी, आदमी नहीं रहा। इन्हीं स्थितियों के बीच दार्शनिक राधाकृष्णन की इन पंक्तियों का स्मरण हो आया, ''हमने पक्षियों की तरह उड़ना और मछलियों की तरह तैरना तो सीख लिया है, पर मुनष्य की तरह पृथ्वी पर चलना और जीना नहीं सीखा।'' जिन्दगी के सफर में नैतिक और मानवीय उद्देश्यों के प्रति मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है। कहा जाता है–आदमी नहीं चलता, उसका विश्वास चलता है। आत्मविश्वास सभी गुणों को एक जगह बाँध देता है,

@UPSC_THOUGHT

यानी कि विश्वास की रोशनी में मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व और आदर्श उजागर होता है। गेटे की प्रसिद्ध उक्ति है कि जब कोई आदमी ठीक काम करता है तो उसे पता तब नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है पर गलत काम करते समय उसे हर क्षण यह ख्याल रहता है कि वह जो कर रहा है, वह गलत है। गलत को गलत मानते हुए भी इंसान गलत किए जा रहा है। इसी कारण समस्याओं एवं अँधेरों के अंबार लगे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। कुछ अच्छे लोग भी हैं, शायद उनकी अच्छाइयों के कारण ही जीवन बचा हुआ है। ऐसे लोगों ने नैतिकला और सच्चरित्रता का खिताब ओढ़ा नहीं, उसे जीकर दिखाया। वे भाग्य और नियति के हाथों खिलौना बनकर नहीं बैठे, स्वयं के पसीने से अपना भाग्य लिखा। महात्मा गाँधी ने इसलिए कहा कि हमें वह परिवर्तन खुद बनना चाहिए, जिसे हम संसार में देखना चाहते हैं। जरूरत है कि हम दर्पण जैसा जीवन जीना सीखें। उन सभी खिड़कियों को बन्द कर दें जिनसे आने वाली गन्दी हवा इंसान को इंसान नहीं रहने देती। मनुष्य के व्यवहार में मनुष्यता को देखा जा सकें यही 'आदमी की तलाश' है।

1. 'मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है।' उपयुक्त वाक्य में 'अटूट' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है :

(a) विशेषण (b) क्रिया–विशेषण
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम

उत्तर—(a) विशेषण

2. मुख्य भाव के अनुसार गद्यांश का सबसे उपयुक्त शीर्षक हो सकता है :

(a) जीवन यात्रा (b) आदमी की तलाश
(c) मानवीय उद्देश्य (d) सच्ची मानवता

उत्तर—(b) आदमी की तलाश

3. सभी गुणों को एक स्थान पर जोड़ने की शक्ति किसमें बताई गई है?

(a) सच्चरित्रता में (b) आत्मविश्वास में
(c) मनुष्य में (d) नैतिकता में

उत्तर—(b) आत्मविश्वास में

4. कौन-सा शब्द लिंग की दृष्टि से शेष से भिन्न है :

(a) मछली (b) पृथ्वी
(c) पक्षी (d) नदी

उत्तर—(c) पक्षी

5. 'आदमी आदमी नहीं रहा' कथन का भाव है :

(a) मानव प्रगतिशील हो गया (b) मनुष्य में मनुष्यता नहीं रही
(c) आदमी देवता बन गया (d) मनुष्य राक्षस जैसा बन गया

उत्तर—(b) मनुष्य में मनष्यता नहीं रही

6. अनुचित कार्य करते समय मनुष्य को :

(a) विश्वास रहता है कि किसी को पता नहीं चलेगा।
(b) अच्छे मार्ग से कुछ पाने का भरोसा नहीं होता।
(c) पता ही नहीं होता है कि वह अनुचित कर रहा है।
(d) मालूम रहता है कि ठीक नहीं कर रहा।

उत्तर—(d) मालूम रहता है कि वह ठीक नहीं कर रहा।

7. 'अँधेरों के अंबार लगे हैं' रेखांकित का भाव है :

(a) विध्न–बाधाओं के (b) दुर्भाग्य के
(c) अन्धकार के (d) बुराइयों के

उत्तर—(d) बुराइयों के

अपठित काव्यांश–1

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

खेत और खलिहान तुम्हारे,
ये पहाड़, जंगल, उपवन,
यह नदियाँ, ये ताल सरोवर,
गाते हैं विप्लव गायन!
उत्तर में गा रहा हिमाचल,
दक्षिण में वह सिन्धु गहन
सभी गा रहे हैं, लो आया!
यह लोलित जागरण प्रहर!

गंगा गाती कल–कल ध्वनि में,
भारत के कल की बातें,
यमुना गाती है कल–कल कर
बीत गईं कल की रातें,
साबरमती गरज कर बोली
अब कैसी निशि की छातें
दिन आया, अपना दिन आया
यों गाती है लहर–लहर!

उत्तर से दक्खिन पूरब से
पश्चिम तक तुम एक, अरे!
भेदभाव से परे एक ही
रही तुम्हारी टेक अरे!
एक देश, एक प्राण तुम,
तुम हो नहीं अनेक अरे!
खोलो निज लोचन, देखो यह
खिली एकता ज्योति प्रखर!

1. सम्पूर्ण प्रकृति गा रही है–

(a) प्रेम के गीत (b) विनाश के गान
(c) जागृति के गीत (d) क्रांति के गीत

उत्तर—(c) जागृति के गीत

2. गंगा, यमुना और साबरमती नदियाँ कल-कल ध्वनि में संदेश देती हैं कि–

(a) वर्तमान एवं भविष्य की चिंता करो।
(b) अतीत के गौरव को मल भूलो।
(c) अतीत और भविष्य दोनों ही वर्तमान से दूर हैं।
(d) भावी पीढ़ी के लिए कार्य करो।

उत्तर—(a) वर्तमान एवं भविष्य की चिंता करो।

@UPSC_THOUGHT

3. 'एकता की ज्योति प्रखर' का आशय है–

(a) एकता की ज्योति तेज का प्रखर है।

(b) एकता का प्रकाश बहुत शक्तिशाली है।

(c) एकता की ताकत को जानो।

(d) भेदभावों को भूल एकता को महसूस करो।

उत्तर—(d) भेदभावों को भूल एकता को महसूस करो।

4. एक काव्यांश का संदेश है–

(a) देशवासियो देश की एकता को मजबूत करो।

(b) भेद होते हुए भी पूरा भारत एक है।

(c) शरीर में अंग और प्राणों में जीवन है।

(d) आँखें खोलकर देश की अभिन्नता को पहचानो।

उत्तर—(b) भेद होते हुए भी पूरा भारत एक है।

5. ''गंगा गाती कल-कल ध्वनि में'' में अलंकार है–

(a) यमक (b) रूपक

(c) अनुप्रास (d) उपमा

उत्तर—(c) अनुप्रास

अपठित काव्यांश–2

निजता की संकीर्ण क्षुद्रता
तेरे सुविपुल में सो जाय।
ओ दुस्सह तेरी दुस्सहता
सहज सह्य हमको हो जाय।
ओ कृतान्त हमको भी दे जा
निज कृतान्तता का कुछ अंश,
नई सृष्टि के नवोल्लास में,
फूट पड़े तेरा विभ्रंश!

नव भूखंड अमृत के घट–सा
दे ऊपर की ओर उछाल
सागर का अन्तस्तल मथ कर
तेरे विप्लव का भूचाल।
जीर्ण शीर्णता के दुर्गों को
कुसंस्कार के स्तूपों को
ढा दे एक साथ ही उठकर
दुर्जय तेरा क्रोध कराल।

कुछ भी मूल्य नहीं जीवन का
हो यदि उसके पास न ध्वंस;
ओ कृतान्त हमको भी दे जा
निज कृतान्तता का कुछ अंश।
ओ भैरव, कवि की वाणी का
मृदु माधुर्य लजा दे आज,
वंशी के ओठों पर अपना,
निर्मम शंख बजा दे आज।

1. 'संकीर्ण क्षुद्रता' में सम्मिलित होते हैं–

(a) स्वार्थपूर्ण समाज के बुरे रीति–रिवाज।

(b) पतले–दुबले नाटे कद के लोग।

(c) छोटे शहरों की सँकरी गलियाँ।

(d) समाज में फैले नीच प्रकृति के लोग।

उत्तर—(a) स्वार्थपूर्ण समाज के बुरे रीति–रिवाज

2. 'नव भूखंड अमृत के घट-सा, दे ऊपर की ओर उछाल' का आशय है–

(a) धरती के नये टकड़े को ऊपर ऐसे उछालो जैसे अमृत का घड़ा हो।

(b) जमीन के छोटे–छोटे नौ टुकड़ों को चारों ओर बिखेर दो।

(c) धरती को ऐसा नया बनाओ जैसे अमृत का घट।

(d) अपने नवीन उत्साह व आत्मविश्वास से लोगों को नया जीवन दो।

उत्तर—(d) अपने नवीन उत्साह व आत्मविश्वास से लोगों को नया जीवन दो।

3. क्रोध ऐसा हो–

(a) इतना भयंकर कि उसे जीतना कठिन हो।

(b) इतना अधिक जिसे जीतकर शांत किया जा सके।

(c) क्रोध इतना अधिक हो कि चेहरा काला हो जाए।

(d) क्रोध और जीत दोनों का साथ सरल नहीं है।

उत्तर—(a) इतना भयंकर कि उसे जीतना कठिन हो।

4. जीवन मूल्यवान उसका होता है, जिसने–

(a) क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हों। (b) कोई कष्ट सहन न किए हों

(c) कोई नया कार्य किया हो। (d) बहुत सुख झेला हो।

उत्तर—(a) क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हों।

5. 'कुसंस्कार' का विलोम है–

(a) संस्कार (b) परिष्कार

(c) आविष्कार (d) सुसंस्कार

उत्तर—(d) सुसंस्कार

प्रतियोगी परीक्षाओं में निश्चित सफलता हेतु

